ग्राम-साहित्य

[तीसरा भाग]

लेखक

रामनरेश त्रिपाठी

प्रकाशक

आत्माराम एण्ड सन्स

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता, काश्मीरीगेट

दिल्ली

प्रकाशक

रामलालपुरी

आत्माराम एण्ड सन्स

दिल्ली

प्रथम संस्करण १९५२

मुद्रक

श्री चमनलाल कतियाल,

"अमर भारत" प्रेस,

दरियागंज दिल्ली

भूमिका

मैंने सन् १९२५ से प्रारम्भ करके आठ-दस वर्षों तक ग्रामगीतों के संग्रह का काम किया था। उसी समय मैंने कुछ कहावतें भी एकत्र कर ली थीं। सन् १९३१ में मैंने घाघ और भड्डरी की कहावतों का एक छोटा सा संग्रह हिंदुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद से प्रकाशित कराया था। उसके बाद गत उन्नीस वर्षों में दो ही तीन हिन्दी-साहित्यकारों ने संग्रह का काम आगे बढ़ाया है। साहित्यकारों की यह दीर्घसूत्रता चिन्तनीय है। भारत की कई बोलियां और भाषाओं, जैसे बँगला, मराठी, मेवाड़ी और मालवी आदि के संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं; पर हिन्दी में विद्वानों का ध्यान अभी इस ओर आकर्षित नहीं हुआ है। अतएव मैं हिन्दी के युवक साहित्यकारों से अनुरोध करता हूँ कि वे एक एक बोलियों का प्रांत छाँट लें और गांव गांव में घूमकर देहातियों की बातों से कान लगाकर उनमें से कहावतें निकाल लें, और उन्हें प्रकाशित कराके साहित्य की एक बड़ी कमी की पूर्ति कर दें। इससे हिन्दी साहित्य और साहित्यकार दोनों पर उनका स्थायी उपकार होगा और कहावतों ही की तरह उनका यश भी अजर-अमर हो जायगा। कहावतें और पहेलियां बिना कुछ घटाये-बढ़ाये मैंने ज्यों की त्यों दे दी हैं।

मेरे पास अबतक कहावतों का जो संग्रह था, मैंने उसे इस संग्रह में दे दिया है; पर यह दाल में नमक के बराबर भी नहीं है। कहावतों का भण्डार तो अपरम्पार समुद्र जैसा है।

इस संग्रह से ज्ञान-वर्द्धन और मनोरंजन के सिवा एक लाभ यह भी होगा कि कहावतों की उपादेयता पर शिक्षित जनता का ध्यान आकर्षित होगा और वे इनका उपयोग करके हिन्दी भाषा का सौंदर्य बढ़ायेंगे।

बसंत-निवास,
सुल्तानपुर [अवध]
१ जनवरी, १९५२

रामनरेश त्रिपाठी

विषय-सूची :—

ग्राम-साहित्य

[तीसरा भाग]

किसानों का वर्षा-विज्ञान

हमारे देश की मुख्य जीविका खेती है। यहां सौ में अस्सी मनुष्य खेती करते हैं। उनको अपने सामाजिक रहन-सहन और लोकव्यवहार के अनुभवों के साथ-साथ कृषि-संबंधी अनुभव भी हैं, जो अगणित शताब्दियों से उनके पास हैं; और जिन्हें स्मरण रखने के लिये उन्होंने छोटे-छोटे छंदों में बाँधकर अगली पीढ़ियों के लिये सुरक्षित और सुलभ कर दिया है।

वर्षा खेती का एक मुख्य अंग है। बल्कि यों कहना चाहिये कि वर्षा ही खेती का प्राण है। इससे किसानों ने वर्षा के विज्ञान को जानने की ओर बहुत ध्यान दिया; और अनुभव पर अनुभव करके उन्होंने नक्षत्रों और राशियों में सूर्य और चंद्रमा के प्रवेश से पृथ्वी के वायुमंडल पर जो प्रभाव पड़ता है उसका और ऋतुओं में वायु की गति से जो परिणाम होता है, उसका सूक्ष्म निरीक्षण किया। उनके अनुभूत ज्ञान की कितनी भी उपेक्षा की जाय, पर उनकी सचाई को कोई मिटा नहीं सकता।

यह ज्ञान किसानों को कबसे है, इसका कोई ठीक समय नहीं बतलाया जा सकता। पूर्वकाल में जब इस देश की भाषा संस्कृत थी, तब यह ज्ञान श्लोक-बद्ध था, और किसानों में उन्हीं का प्रचार रहा होगा।

वराहमिहिर (५०५ ई० के लगभग) की वृहत्संहिता से पता चलता है कि पूर्वकाल में गर्ग, पराशर, काश्यप और वात्स्य आदि मुनियों को वर्षा के बारे में काफी जानकारी थी, और उनके लिखे हुये ग्रंथ भी थे। पर वे ग्रंथ अब अप्राप्य हैं। यहाँ वृहत्संहिता के कुछ श्लोक दिये जाते हैं:—

अन्नं जगतः प्राणाः प्रावृट्कालस्य चान्नमायत्तम्।
यस्मादतः परीक्ष्यः प्रावृट्कालः प्रयत्नेन ॥

अन्न ही जगत् का प्राण है; और वह वर्षा के अधीन है। इस कारण से यत्न करके वर्षाकाल की परीक्षा करनी चाहिये।

तल्लक्षणानि मुनिभिर्यानि निबद्धानि तानि दृष्ट्वेदम् ।
क्रियते गर्ग पराशर काश्यप वात्स्यादि रचितानि ॥

गर्ग, पराशर, काश्यप और वात्स्य आदि मुनियों ने वर्षा के जो लक्षण लिखे हैं, उनको देखकर यह ग्रंथ रचा गया है ।

केचिद्वदन्ति कार्तिक शुक्लान्तमतीत्य गर्भदिवसाः स्युः ।
न तु तन्मतं बहूनां गर्गादीनां मतं वक्ष्ये ॥

कोई-कोई कहते हैं कि कार्तिक मास के शुक्लपक्ष को लाँघकर वर्षा के गर्भ के दिन होते हैं; इसलिये गर्ग आदि बहुत से मुनियों का मत प्रकट करता हूं ।

मार्गशिर शुक्लपक्ष प्रतिपत्प्रभृति क्षपाकरेऽषाढ़ाम् ।
पूर्वां वा समुपगते गर्भाणाम् लक्षणं ज्ञेयम् ॥

अगहन महीने के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा मे जिस दिन चंद्रमा पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में होता है, उसीदिन से सब गर्भों के लक्षण जान लेने चाहियें ।

वर्षा का भी गर्भ पड़ता है, यह वर्तमान विज्ञान के लिये एक नई बात है । इस संबंध में बृहत्संहिता में विस्तार के साथ लिखा गया है; उसमें से कुछ श्लोक आगे दिये जा रहे हैं :—

यन्नक्षत्रमुपगते गर्भश्चन्द्रे भवेत स चन्द्रवशात ।
पञ्चनवते दिन शते तत्रैव प्रसवमायाति ॥

चन्द्रमा के जिस नक्षत्र में प्रवेश करने से मेघ को गर्भ होता है, चन्द्रमा के वश से १९५ दिनमें उस गर्भ का प्रसव होता है ।

सितपक्षभवाःकृष्णे शुक्ले कृष्णा द्युसंभवा रात्रौ ।
नक्तं प्रभवश्चाह्नि सन्ध्याजाताश्च सन्ध्यायाम ॥

जो गर्भ शुक्ल पक्ष में पड़ता है, वह कृष्ण पक्ष में, जो कृष्ण पक्ष में पड़ता है, वह शुक्ल पक्ष में, जो दिन में पड़ता है, वह रात में, जो रात में पड़ता है वह दिन के किसी भाग में और जो संध्या को पड़ता है वह संध्या को प्रसव होता है ।

मृगशीर्षाद्या गर्भा मन्दफला : पौषशुक्लजाताश्च ।
पौषस्य कृष्णपक्षेण निर्दिशेच्छ्रावणस्य सितम् ॥

मगसिर आदि और पौष शुक्लपक्ष का गर्भ साधारण फल देनेवाला होता है । पौष कृष्णपक्ष में पड़े हुए गर्भ का फल सावन के शुक्लपक्ष में बताना चाहिये ।

माघसितोत्था गर्भाः श्रावणकृष्णे प्रसूतिमायान्ति ।
माघस्य कृष्णपक्षेण निर्दिशेत् भाद्रपद शुक्लम् ॥

माघ मास के शुक्लपक्ष का गर्भ श्रावण कृष्णपक्ष में और माघ कृष्णपक्ष का गर्भ भाद्रपद के शुक्लपक्ष में प्रसव होता है ।

फाल्गुनशुक्लसमुत्था भाद्रपदस्यासिते विनिर्देश्याः ।
तस्यैव कृष्णपक्षोद्भवास्तु ये तेऽश्वयुक् शुक्ले ॥

फागुन के शुक्लपक्ष के गर्भ का प्रसव भाद्रपद के कृष्णपक्ष में और कृष्णपक्ष के गर्भ का प्रसव आश्विन मासके शुक्लपक्ष में बताना चाहिये ।

चैत्रसितपक्षजाताः कृष्णेऽश्वयुजस्य वारिदा गर्भाः
चैत्रासितसंभूताः कार्तिकशुक्लेऽभि वर्षन्ति ॥

चैत्र के शुक्लपक्ष का गर्भ आश्विन के कृष्णपक्ष में जल देता है और चैत्र के कृष्णपक्ष का गर्भ कार्तिक के कृष्णपक्ष में बरसता है ।

पौषे समार्गशीर्षे सन्ध्यारागोऽम्बुदाः सपरिवेषाः ।
नात्यर्थं मृगशीर्षे शीतं पौषेऽति हिमपातः ॥

अगहन और पौष में संध्या की ललाई से युक्त और चक्करदार मेघ हों तो। अगहन में अति शीत और पौष में हिमपात होने से गर्भ पुष्ट नहीं होता ।

माघे प्रबलो वायुस्तुषारकलुशद्युती रविशशाङ्कौ ।
अतिशीतं सघनस्य च भानोरस्तोदयौ धन्यौ ॥

माघ में यदि प्रबल वायु हो, सूर्य चंद्रमा की किरणें तुषार के समान मलिन चमकवाली और अत्यंत शीतल हों तो बादलों सहित सूर्य का उदय और अस्त वांछनीय है ।

भद्रपदाद्वयविश्वाम्बुदैव पैतामहेष्वथर्क्षेषु ।
सर्वेष्वृतुषु विवृद्धो गर्भो बहुतोयदो भवति ॥

पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद, पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ और रोहिणी नक्षत्रों में बढ़े हुये गर्भ बहुत जल देते हैं ।

शतभिषगाश्लेषार्द्रास्वाति मघासंयुतः शुभो गर्भः।
पुष्णाति बहून्दिवसान् हन्त्युत्पातैर्हता स्त्रिविधैः ॥

शतभिषा, आश्लेषा, आर्द्रा, स्वाति और मघासंयुक्त गर्भ शुभ होते हैं और बहुत दिनों तक जल से पोषण देते हैं। पर तीन उत्पातों से बने हुए हों, तो हनन करते हैं।

मृग मासादिष्वष्टौ षट् षोड़श विंशतिश्चतुर्युक्ता।
विंशतिरथ दिवस त्रयमेकतमर्क्षेण पञ्चभ्यः ॥

जब चंद्रमा इन पांच नक्षत्रों में से किसी एक में रहता है तब अगहन से बैसाख तक छः महीनों में क्रमसे ८, ६, १६, २४, २० और ३ दिनों तक बराबर वर्षा हुआ करती हैं।

गर्भ समयेऽतिवृष्टि गर्भाभावाय निर्निमित्तकृता।
द्रोणाष्टांशेऽभ्यधिके वृष्टे गर्भः स्रुतो भवति ॥

यदि गर्भ समय में बिना कारण ही बहुत-सी वर्षा होवे तो गर्भ नहीं पड़ता और एक द्रोण (तौल) का आठवां भाग भी जल बरस जाता है तो पड़ा हुआ गर्भ नष्ट हो जाता है।

पवन सलिल विद्युद्गर्जिताभ्रान्वितो यः
स भवति बहुतोयः पञ्चरूपाभ्युपेतः।
विसृजति यदि तोयं गर्भ कालेऽति भूरि,
प्रसवसमयमित्वा शीकराम्भः करोति ॥

पवन, जल, बिजली, गर्जन और बादल इत्यादि इन पाँच निमित्तों से युक्त गर्भ बहुत जल देता है। यदि गर्भकाल में बहुतसा जल वर्षे तो प्रसवकाल के बाद जलकणों की वर्षा होती है।

वर्षा-विज्ञान की इन्हीं बातों को और इनके बाद जो अनुभव और हुये उन सबको संग्रह करके किसानों ने अपने समय की बोलचाल में कहावतें बनालीं। यह एक विलक्षण बात है कि इस काम में किसानों ने किसी कवि से सहायता नहीं ली। किसानों ने वर्षा-विज्ञान को समझा भी खूब, और उसे व्यक्त करने में भी उन्हों ने बड़ी प्रतिभा दिखलाई। केवल वर्षा-विज्ञान ही नहीं, खेती-विषयक प्रायः सब जानने योग्य बातों को उन्होंने छोटी-छोटी तुकबंदियों में गूँथ लिया है, जो खेती की कहावतें कहलाती हैं।

वर्षा के संबंध में किसानों का अनुभव बड़े ही काम का है। वे पौष, माघ ही से अगले वर्ष की वर्षा की भविष्यवाणी करने लगते हैं और बरसात के दिनों में आकाश का रंग, हवा का रुख, चींटी, गौरैया, बकरी, सियार, कुत्ता, मेढक, साँप, गिरगिट और बनमुर्गी आदि जीवों की शारीरिक हलचलों को देखकर भी वे जान जाते हैं कि वर्षा होगी या नहीं और कब होगी? अकाल पड़ेगा या सुकाल? वास्तव में उनकी प्रकृति-निरीक्षण शक्ति अद्भुत है।

सूर्य-चन्द्रमा के नक्षत्रों और राशियों में प्रवेश करने के बारे में ज्योतिष से कुछ खुलासा कर देना यहाँ आवश्यक जान पड़ता है, वर्षा की कहावतों का अर्थ समझने में सहायता मिलेगी। प्रत्येक राशि में नौ चरण और प्रत्येक नक्षत्र में चार चरण होते हैं। सूर्य को एक नक्षत्र को पारकर दूसरे नक्षत्र में पहुँचने में लगभग चौदह दिन लग जाते हैं।

सन् १९५०–५१ में सूर्य और चन्द्रमा का प्रवेश राशियों और नक्षत्रों में कब हुआ इसकी सारिणियाँ आगे दी जाती हैं—

सारिणी १—राशियों में प्रवेश

राशियाँ	सूर्य कब आया?	चंद्रमा किस नक्षत्र पर था?
मेष	१३-४-५०	अश्विनी
वृष	१४-५-५०	रेवती
मिथुन	१४-६-५०	कृत्तिका
कर्क	१६-७-५०	पुष्य
सिंह	१६-८-५०	पूर्वा फाल्गुनी
कन्या	१६-९-५०	स्वाती
तुला	१७-१०-५०	मूल
वृश्चिक	१६-११-५०	श्रवण
धनु	१५-१२-५०	शतभिषा
मकर	१४-१-५१	उत्तर भाद्रपद
कुम्भ	१२-२-५१	अश्विनी
मीन	१४-३-५१	कृत्तिका

सारिणी २—नक्षत्रों में प्रवेश

नक्षत्र	
श्विअनी	१३-४-५०
भरणी	२७-४-५०
कृत्तिका	११-५-५०

रोहिणी	२५-५-४०
मार्गशीर्ष	७-६-४०
आर्द्रा	२१-६-४०
पुनर्वसु	५-७-४०
पुष्य	१६-७-४०
आश्लेषा	२-८-४०
मघा	१६-८-४०
पूर्वा फाल्गुनी	३०-८-४०
उत्तरा ,,	१३-९-४०
हस्त	२६-९-४०
चित्रा	१०-१०-४०
स्वाती	२३-१०-४०
विशाखा	६-११-४०
अनुराधा	१६-११-४०
ज्येष्ठा	२-१२-४०
मूल	१५-१२-४०
पूर्वाषाढ़	२८-१२-४०
उत्तराषाढ़	११-१-४१
श्रवण	२४-१-४१
धनिष्ठा	६-२-४१
शतभिषा	१९-२-४१
पूर्व भाद्रपद	४-३-४१
उत्तर भाद्रपद	१८-३-४१
रेवती	३१-३-४१

सूर्य की कक्षा बारह भागों में विभक्त है, जो राशि कहलाते हैं। राशियों को सत्ताइस भागों में बाँटा गया है, जो नक्षत्र कहलाते हैं। आकाशीय पिंडों का क्या और कैसे प्रभाव पृथ्वीपर पड़ता है, उसका कोई ठीक उत्तर नहीं दे सकता। केवल चंद्रमा के बारे में यह प्रत्यक्ष देखा गया है कि लकड़ी और बाँस जो शुक्लपक्ष में काटे जाते हैं, वे जल्दी घुनने लगते हैं। इसी से किसान उन्हें कृष्ण पक्ष ही में काटते हैं। विशेषज्ञों का अनुभव है कि सूर्य जब एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र में जाता है, तब पृथ्वी के वायु-मंडल में कुछ परिवर्तन अवश्य होता है।

बहुत पुराने समय से लोगों में यह विश्वास चला आ रहा है कि पौष और माघ के महीने में वर्षा का गर्भ पड़ता है, जो १९५ दिनों बाद प्रसव होता है। यह भी कहा जाता है कि अगहन या पौष महीने के शुक्लपक्ष में जो गर्भाधान होता है, उसका साढ़े छः महीने बाद जो प्रसव होगा, उसकी संतान निर्बल होगी, अर्थात् वृष्टि कम होगी।

वर्षा के गर्भ के पाँच कारण होते हैं:—हवा, वृष्टि, बिजली, गर्जन और बादल। गर्भ के समय जब ये पाँचों लक्षण उपस्थित होते हैं, तब अत्यन्त विस्तार के साथ वर्षा होती है।

यहाँ बारहों महीनों की वृष्टि के लक्षण और फल कहावतों के अनुसार संक्षेप में दिये जाते हैं:—

मास	तिथि	लक्षण	फल
कातिक	११ सुदी	बादल और बिजली	असाढ़ में अच्छी वृष्टि
,,	१२ ,,	बादल गरजे	चौमासाभर अच्छी वृष्टि
,,	१५ ,,	कृत्तिका में बादल बिजली	,, ,, ,,
अगहन	८ बदी	बादल दिखाई पड़ें, बिजली चमके	सावनभर वर्षा
,,	बदी या सुदी	सवेरे कुहरा पड़े	ज़माना अच्छा होगा।
पूस	१० बदी	वर्षा हो	सावन बदी दशमी को वर्षा हो
,,	७ बदी	पानी न बरसे	आर्द्रा बरसेगा
,,	७ बदी	बादल हो, पानी न बरसे	सावन की पूर्णमासी को वर्षा अवश्य होगी।
,,	१० बदी	बादल हों, बिजली चमके	भादोंभर वर्षा होगी।
,,	१३ बदी	बादल चारोंओर घेरे हों	सावन में पूर्णमासी और अमावस्या को बड़ी वर्षा होगी।
,,	अमावस	चारोंओर से हवा चले	वर्षा ऋतु में बड़ी वर्षा होगी।

,,	७,८,९ सुदी	बादल गरजें, बिजली चमके, हवा बहे, पानी बरसे	सब काम सिद्ध होंगे।
माघ	७ बदी	बादल बिजली हों	चौमासेभर वृष्टि
,,	९ बदी	मूल नक्षत्र हो	भादों की नौमी को वृष्टि
,,	अमावस	बादल, बिजली, वायु, वृष्टि	भादों की पूर्णमासी को चार पहर वर्षा।
,,	१ सुदी	बादल वायु,	तेल और घी महँगा होगा।
,,	२ सुदी	बादल, बिजली	अन्न महँगा
,,	३ सुदी	,, ,,	गेहूँ जौ महँगा
,,	४ सुदी	बादल और वृष्टि	पान और नारियल महँगा
,,	५ सुदी	उत्तर की हवा चले	भादोंभर सूखा
,,	६ सुदी	बादल न गरजें	कपास महँगा होगा।
,,	७ सुदी	आकाश निर्मल हो	कुछ भी आशा नहीं।
,,	,, ,,	बादल, वृष्टि	असाढ़ में बड़ी वृष्टि
माघ	७ सुदी	बादल, वृष्टि, सरदी	चौमासेभर वृष्टि
,,	७, ८ सुदी	बादल	असाढ़ में वर्षा
,,	९ सुदी	बादलों का घेरघार	भादों में तालाब बह चलेंगे
,,	९ ,,	बादल न हों	तालाब भी सूख जायेंगे
,,	पूर्णमासी	चंद्रमा स्वच्छ हो	भयंकर काल पड़ेगा।
फागुन	२ सुदी	बादल हों, पर बिजली न हो	सावन भादों में वृष्टि
,,	७, ८, ९ सुदी	बादल, बिजली, हवा, वृष्टि	भादों में अमावस को वृष्टि
चैत	८ सुदी	आकाश मे धूल बरसे	जिधर बिजली चमके, उधर अकाल पड़ेगा।
,,	९ सुदी	पानी बरसे	वर्षा का गर्भ गल जायगा।
,,	१० सुदी	बादल बिजली	चौमासेभर वृष्टि
,,	महीने में किसी	बिजली चमके	वैशाख में वर्षा

	दिन		
,,	८, १४ बदी	जिस दिशा में बादल हों	उसी दिशा में वर्षा होगी।
,,	१ से ६ तक सुदी	बिजली न चमके और ८, ६ को वर्षा हो,	जहाँ वर्षा होगी, वहाँ अकाल पड़ेगा।
,,		अश्विनी में वृष्टि	अंत में सूखा
		रेवती में वृष्टि	अवर्षण
		भरणी में वृष्टि	तृण भी न उगेगा।
		कृतिका में वृष्टि	अंत में बड़ी वृष्टि
बैसाख	१ सुदी	बादल और बिजली	अच्छी फसल
जेठ	३ सुदी	वर्षा हो	दुर्भिक्ष पड़ेगा
,,	सुदी भर	आर्द्रा आदि दश नक्षत्र बरस जायँ	चौमासेभर सूखा
	महीने भर	स्वाती, विशाखा, चित्रा बिना बादल के बीत जायँ	वर्षा का पिछला गर्भ गल जायगा
जेठ	महीनेभर	पूरा महीना तपे	वर्षा की आशा
,,	१ से १० सुदी (दस तपा)	पानी की बूँद गिरे	सूखा पड़े
,,	महीने के अंत में	मेढक बोलें	वर्षा हो
,,	पूर्णमासी	छींटें पड़ें	लक्षण अच्छा नहीं आसाढ़ और सावन सूखे जायेंगे,
असाढ़	१ बदी	बादल गरजे	भादों में वर्षा होगी
,,	१ बदी	बादल गरजे	काल पड़ेगा
,,	बदी भर	सोम, शुक्र, बृहस्पति-वार को लगातार बिजली चमके	भारी वृष्टि हो
,,	४ बदी	न बादल हो, न बिजली	अकाल पड़ेगा

,,	७ बदी	चंद्रमा पर बादल न हों	सूखा पड़ेगा
,,	९ बदी	बादल जोर से गरजे	चारोंओर अकाल
	१० बदी	मंगल और रोहिणी हो	सुकाल होगा
,,	सुदी में	बुध का उदय हो सावन में शुक्रास्त	महा अकाल पड़ेगा
,,	५ सुदी	घोर गर्जन हो	वर्षा अच्छी होगी
,,	९ सुदी	चंद्रमा पर बादल हो	आनंद होगा
,,	महीने में	चित्रा, स्वाती. बिशाखा बरसे	अकाल पड़ेगा
,,	पूर्णमासी	चंद्रमा पर बादल हों	सब सुखी होंगे
,,	,,	चंद्रमा निर्मल हो	अकाल पड़ेगा
,,	,,	बादल गरजे, बिजली चमके, पानी बरसे	सुकाल होगा
असाढ़	८ बदी	चंद्रमा बादलों में से निकले	साढ़े तीन महीने वर्षा होगी
,,	९ बदी	रविवार हो	अकाल पड़ेगा
		मंगलवार हो	भूकम्प आयेगा
		बुधवार हो	समभाव रहेगा
		सोम, शुक्र, बृहस्पति वार हो	पृथ्वी आनंद से भर जायगी।
,,	९ सुदी	घने बादल हों, बिजली खूब चमके	सब अन्न बो दो, उपज खूब होगी।
,,	९ ,,	न बादल हों, न बिजली	वर्षा न होगी, हल को ईंधन कर लो
,,	१५ सुदी	पूरब, उत्तर और ईशान की हवा बहे	समय अच्छा
		पूर्व-दक्षिण की हवा बहे	अकाल होगा
		नैऋत कोन की हवा बहे	एक बूँद भी न बरसेगा

		उत्तर-पश्चिम की हवा बहे	चूहे और साँप पैदा होंगे
		पूर्व की हवा बहे	अन्न बहुत उत्पन्न होगा
		दक्खिन की हवा बहे	पानी बहुत बरसेगा
		उत्तर की हवा बहे	धन-धान्य की उपज बहुत होगी
		पश्चिम की हवा बहे	सुकाल होगा, लेकिन पाला पड़ेगा
		पूर्व-उत्तर की हवा बहे	उपज बहुत कम होगी
		हवा आकाश की ओर जाय	बूँद भी नहीं पड़ेगी
		दक्षिण-पश्चिम की हवा बहे	पैदावार आधी होगी
श्रावन	४ बदी	बादल बरसे	उपज सवाई होगी
,,	१० बदी	रोहिणी हो	उपज कम होगी
,,	११ बदी	रोहिणी हो	सुकाल होगा
,,	११ बदी	आधी रात में बादल गरजें	अकाल पड़ेगा
,,	११ बदी	कृत्तिका हो	अन्न का भाव साधारण
		रोहिणी हो	सुकाल
		मृगशिर हो	निश्चय अकाल
,,	७ सुदी	सूर्य बादलों में छिपा हुआ उदय हो	देवोत्थान एकादशी तक वृष्टि होगी
,,	७ सुदी	चँद्रमा की चाँदनी छिटकी हो	अनावृष्टि
,,	१ बदी	सूर्य उदय होते हुये न दिखाई पड़े	चौमासेभर वृष्टि
,,	४ बदी	जोर की हवा चले	सूखा
,,	महीने भर	पछुवाँ हवा चले	सुकाल

,,	७ सुदी	आधी रात को बरसे	सूखा पड़े
,,	पहला पक्ष	तिथि टूटी हो	घोर अकाल, माँ बच्चे को बेंच देगी
भादों	महीने भर	जितने दिन पछवाँ हवा बहेगी	उतने दिन माघ में पाला पड़ेगा
,,	११ बदी	बादल जमे रहें	चौमासेभर बर्षा न होगी
कुवार	१५ बदी	शनिवार को हो	समय अच्छा नहीं
,,	मलमास हो	,, ,,	अकाल पड़ेगा।

वर्षा-विज्ञान की सारी छंदरचना भड्डरी की बनाई जाती है, पर भड्डरी कौन थे ? और कहाँ और कब पैदा हुये ? इसका ठीक-ठीक पता नहीं चलता। कहा जाता है कि कोई एक पंडित काशी से ऐसा मुहूर्त्त शोधकर घर को चले, जिसमें गर्भाधान होने से बड़ा विद्वान् पुत्र उत्पन्न होता। पर घर तक पहुँच न पाये और रास्ते ही में शाम हो गई। विवश होकर वे एक अहीर के दरवाजे पर टिक गये। यह भी प्रवाद है कि वे गड़रिये के घर पर टिके थे। भोजन बनवाते समय उनको उदास देखकर अहीरिन ने उनकी उदासी का कारण पूछा और उनके मन का भेद जानकर उसने स्वयं उनसे पुत्र की कामना की। उसी के फलस्वरूप भड्डरी का जन्म हुआ। अतएव ब्राह्मण पिता और अहीरिन माता से भड्डरी का जन्म माना जाता है।

अब तो भड्डरी के नामपर भडरिया नाम की एक जाति पाई जाती है, जो कहावतों के आधार पर वर्षा का भविष्य बताया करती है। इस जाति के लोग गोरखपुर ज़िले में अधिक हैं। कुछ सुलतानपुर (अवध) में भी हैं।

राजपुताने में भड्डरी नामकी एक स्त्री प्रसिद्ध है। जिसके पतिका नाम डंक कहा जाता है। भड्डरी भंगिन और डंक ब्राह्मण था। उनकी संतान डाकोत कहलाती है।

एक कहानी यह भी है कि भड्डरी सुप्रसिद्ध ज्योतिषी बराहमिहिर के पुत्र थे, जो ऊपर की कहानी के अनुसार एक गड़रिन के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

भाषा को देखते हुये तो भड्डरी या भदुली बराहमिहिर के समय के नहीं जान पड़ते हैं। यह भी कहना कठिन है कि वे राजपुताने के थे, या उत्तर प्रदेश या बिहार के। क्योंकि भड्डरी की कहावतें मारवाड़ी बोली में भी मिलती हैं, और पूर्बी हिन्दी में भी। उनमें बातें तो करीब-करीब एकसी हैं, केवल भाषा की पोशाकें अलग अलग हैं।

भड्डरी अपने विषय के बड़े पंडित थे, इसमें तो संदेह ही नहीं। वर्षा-विषयक ज्ञान को उन्होंने गांव के अपढ़ किसानों के लिये सुलभ कर दिया, यह उनका साधारण उपकार नहीं है।

भड्डरी की कुछ कहावतें नीति विषयक भी मिलती हैं; और किसी किसी कहावत में घाघ भड्डरी को संबोधन करके कहते हुये भी मिले हैं। संभव है, दोनों समकालीन रहे हों; और यह भी संभव है कि घाघ ने अपना अनुभव बताने के लिये भड्डरी को ललकारा हो।

आश्चर्य की बात है कि अंग्रेजों ने इस देश पर डेढ़ सौ वर्षों तक शासन किया, पर उन्होंने हमारे किसानों के वर्षा-विषयक ज्ञान की कुछ भी कदर नहीं की। उनको उस पर विश्वास ही न हुआ होगा। उन्होंने सन् १८७५ में कलकत्ते के पास अलीपुर में एक वेधशाला स्थापित की, जहाँ से देश के जल-वायु का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाने लगा।

इसके बाद शिमले में दूसरी वेधशाला तैयार कराई गई, जो १९२७ में पूना में उठा लाई गई। इसी तरहकी एक वेधशाला कोदईकनाल (मद्रास प्रांत) में भी है। इनके सिवा दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में प्रांतीय जलवायु केन्द्र भी हैं, जहां से प्रतिदिन जलवायु की स्थिति और गति का ज्ञान प्राप्त करके प्रकाशित होता रहता है। इन वेधशालाओं और केन्द्रों में खेती से संबंध रखनेवाले जलवायु का निरीक्षण होता है।

प्रति दिन सवेरे ८॥ बजे और शाम को ५॥ बजे पृथ्वी के धरातल के पास के जलवायु का निरीक्षण किया जाता है। कहीं-कहीं और कभी-कभी दोपहर के ११॥ बजे और रात के ११॥ बजे भी निरीक्षण होता है।

पृथ्वी से अधिक ऊँचाई के वायुमंडल का ज्ञान प्राप्त करने के लिये हाइड्रो-जन गैस का गुब्बारा प्रतिदिन एक निश्चित समय पर उड़ाया जाता है। इस गुब्बारे से ऊँचाई पर बहने वाली हवा का रुख, बहाव और सरदी-गरमी का पता लगाया जाता है। गुब्बारे में ऐसे यँत्र एक पिंजड़े में रख दिये जाते हैं, जो हवा की गति, तापमान और हवा के बहाव को सांकेतिक अक्षरों में नोट करते रहते हैं। गुब्बारा एक निश्चित ऊँचाई पर जाकर आप से आप फट जाता है और पिंजड़ा गिर पड़ता है, पर यंत्र को धक्का नहीं लगता। पिंजड़े को, जहाँ वह गिराता है, वहाँ से उठा लाने की व्यवस्था रहती है। गाँव का कोई आदमी उसे उठाकर वेधशाला में पहुँचा आता है तो उसे इनाम भी दिया जाता है।

हवा की गति और उसकी नमी आदि का बारीकी से विचार करके और पिछले अनुभवों के आधार पर उक्त वेधशालाओं और केन्द्रों के विशेषज्ञ अधिकारी वर्षा होने या न होने और कब होने का विवरण तैयार करते हैं और समाचार-पत्रों द्वारा उसका प्रचार कर देते हैं।

अंग्रेजों के जाने के बाद अब भारत की स्वराज्यसरकार भी इन्हीं साधनों का उपयोग कर रही है।

इसके मुकाबले में हमारा हरएक किसान एक-एक वेधशाला है। वह पौष और माघ से ही वायु की गति, वृष्टि, बिजली, बादल और गर्जन, जो वर्षा के गर्भ के लक्षण हैं, देख-सुनकर बता सकता है कि १६५ दिन बाद कब वर्षा होगी, अथवा नहीं होगी। यदि जेठ में वर्षा हो जाती है, तो वर्षा का गर्भपात हो जाता है, तब वह वर्षा-ऋतु में वर्षा न होने या कम होनेकी घोषणा पहले ही से कर देता है और स्वयं भी सावधान हो जाता है।

यह एक दुर्भाग्य की बात है कि हम स्वयं अपने पूर्वजों के अनुभवों से लाभ न उठावें और ऐसे खर्चीले साधनों का उपयोग करें, जो केवल अनुमान पर चलते हैं।

यहाँ वर्षा विषयक कुछ कहावतें—जो किसानों में प्रचलित हैं, दी जाती हैः—

वर्षा के गर्भ के साधारण लक्षण

बादल वायु बिज्जु बरसंत।
कड़कै गाजै उपल पड़ंत॥
धनुष और परिबेसे भान।
हेम पड़े दस गर्भ प्रमान॥

बादल का होना, हवा का बहना, बिजली चमकना, पानीका बरसना, आकाश का कड़कना, बादल का गरजना, ओले पड़ना, इंद्रधनुष, सूर्य पर मंडल बैठना और सरदी पड़ना, ये दस लक्षण वर्षा के गर्भ के हैं।

आगे प्रत्येक महीने के लक्षण और फल दिये जाते हैं:—

कातिक

१

कातिक सुदी एकादसी, बादल बिजुली जोय।
तो असाढ़ में भड्डरी, वर्षा चोखी होय॥

कातिक सुदी एकादसी को आकाश में बादल हों और बिजली चमके तो अगले असाढ में वर्षा होगी, ऐसा भड्डरी कहते हैं।

२

कार्तिक सुदि द्वादसि को देखो ।
मार्गशीर्ष दसमी अवरेखो ॥
पौष सुदी पंचमी बिचारा ।
माघ सुदी सातैं निरवारा ॥
तादिन जो मेघा गरजंत ।
मास चार अंबर बरसंत ॥

कातिक सुदी द्वादशी, अगहन सुदी दशमी, पौष सुदी पंचमी और माघ सुदी सप्तमी को बादल गरजे, तो अगले वर्ष चार महीने तक लगातार वर्षा होगी ।

३

कातिक मावस देखो जोसी ।
रवि, सनि, भौमवार जो होसी ॥
स्वाति नखत औ आयुष जोग ।
काल पड़ै औ नासैं लोग ॥

कातिक की अमावास्या को देखो, यदि वह रविवार, शनिवार या मंगलवारको पड़े, और उस दिन स्वाति नक्षत्र और आयुष्य योग हो, तो अकाल पड़ेगा, और मनुष्यों का नाश होगा ।

४

कातिक सुदि पूनो दिवस, जो कृतिका रिख होय ।
तामें बादल बीजुली, जो सँयोग सूँ होय ॥
चारि मास वर्षा तब होसी ।
भली-भाँति यों भाखैं जोसी ॥

कातिक सुदी पूर्णमासी को यदि कृत्तिका नक्षत्र हो और संयोग से उसमें घटा घिर आये और बिजली चमके, तो अगले वर्ष चार महीने तक लगातार वर्षा होगी ।

५

कातिक बारस मेघा दरसे ।
सो मेघा आसाढ़हिं बरसे ॥

कातिक की द्वादसी को बादल दिखाई पड़ें तो वे बादल अगले वर्ष आषाढ़ में बरसेंगे ।

६

कातो, सब साथी । (मारवाड़ी)

कातिक में सब फसलें साथ पकती हैं ।

७

काती रो मेह, कटक बराबर । (मारवाड़ी)

कार्तिक की वर्षा खेती के लिये वैसी ही हानिकारक है, जैसी सेना ।

८

दीवाली रा दीवा दीठा । काचर बोर मतीरा मीठा ।। (मारवाड़ी)

दीवाली का दिया दिखाई देने तक कचरी, बेर और तरबूज मीठे हो जाते हैं ।

९

मंगलवारी होय दिवारी । हँसै किसान रोवै बैपारी ।

दीवाली मंगलवार को पड़े, तो फसल अच्छी उगेगी । किसान खुश होंगे और व्यापारी रोयेंगे ।

१०

स्वाती दीपक प्रज्वले, विसाखा पूजे गाय ।
लाख गयंदा धड़ परे, या साख निष्फल जाय ।।

यदि दीवाली स्वाती नक्षत्र में हो और दूसरे दिन गो-पूजन के दिन विशाखा हो तो लड़ाई होगी; जिसमें लाखों हाथी मारे जायेंगे, या फसल नष्ट होगी ।

११

चित्रा दीपक चेतवे, स्वाते गोवरधना ।
डंक कहे हे भड्डलो, अथग नीपजे अन्न ।।

यदि चित्रा में दीवाली हो और गोवर्द्धन पूजा के समय स्वाती हो तो अन्न की उपज बहुत होगी ।

अगहन

१२

मार्ग बदी आठैं घन दरसै ।
सो मेघा भरि सावन बरसै ।।

अगहन बदी अष्टमी को बादल दिखाई पड़ें, तो वे बादल सावनभर बरसेंगे ।

१३

मार्ग महीना मांहिं जो, ज्येष्ठा तपै न मूर।
तो इमि बोलै भड्डरी, निपजै सातो तूर॥

अगहन के महीने में यदि न ज्येष्ठा नक्षत्र तपे और न मूल, तो सातों प्रकार के अन्न (गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, धान और उड़द) पैदा होंगे।

१४

मार्ग बदी आठैं घटा, बिज्जु समेती जोइ।
तौ सावन बरसै भलो, साख सवाई होय॥

अगहन बदी अष्टमी को बिजली-सहित बादल हों, तो सावन में अच्छी वर्षा होगी और उपज सवाई अधिक होगी।

१५

मिंगसर बद वा सुद मँहीं, आधे पोह उरे।
धँवरा धुंध मचाय दे, तो समियो होय सरे॥ (मारवाड़ी)

अगहन बदी या सुदी में, आधे पौष के पहले, यदि प्रातःकाल बादल या कुहरा घना हो तो ज़माना ज़रूर अच्छा होगा।

१६

मिंगसर बद वा सुद मँही, आधे पोह उरे।
धँवर न भीजै धूल तो, करसण काह करे॥

अगहन बदी या सुदी में, आधे पौष के पहले, यदि मिट्टी ओस से गीली न हो तो भूमि क्यों बोई जाय? अर्थात् उपज अच्छी न होगी।

पौष

१७

पूस मास दसमी अँधियारी।
बदरी होय घोर अँधियारी॥
सावन बदि दसमी के दिवसै।
भरिकै मेघ जु अधिकै बरसै॥

पौष बदी दसमी को यदि बदली हो और घना अँधेरा छाया हो तो सावन बदी दशमी के दिन भी जोर की घटा घिरेगी और खूब पानी बरसेगा।

१८

पौस अँध्यारी सत्तमी, जो पानी नहिं देइ।
तौ आर्द्रा बरसै सही, जल थल एक करेइ॥

पौष बदी सप्तमी को यदि पानी न बरसे, तो आर्द्रा अवश्य बरसेगा और जल-थल को एक कर देगा।

१६

पौस अँध्यारी सत्तमी, बिन जल बादर जोय।
सावन सुदि पूनो दिवस, बरषा अवसिहिं होय॥

पौष सुदी सप्तमी को यदि बादल हों, पर पानी न बरसे, तो सावन सुदी पूर्णिमा को वर्षा अवश्य होगी।

२०

पौष बदी दसमी दिवस, बादल चमकै बीज।
तौ बरसै भर भादवाँ, साधो खेलो तीज॥

पौष बदी दशमी को दिन के समय बादलों में बिजली चमके, तो भादों भर बरसात होगी। आनंद से तीज का त्योहार मनाओ।

२१

पौष अँध्यारी तेरसै, चहुँ दिसि बादर होय।
सावन पूनो मावसै, जलधर अति ही होय॥

पौष बदी तेरस को आकाश में चारोंओर बादल दिखाई पड़ें, तो सावन की पूर्णिमा और अमावस्या को बड़ी वर्षा होगी।

२२

पूस अमावस मूल को, सरसै चारों बाय।
निश्चय बाँधो झोंपड़ो, वर्षा होय सिवाय॥

पौष अमावस्या को यदि मूल नक्षत्र हो, और चारोंओर से हवा चले, तो छप्पर छा लो, वर्षा अधिक होगी।

२३

सनि आदित औ मंगलौ, पौष अमावस होय।
दुगुनो, तिगुनो चौगुनो, नाज महंगो होय॥

पौष की अमावस्या यदि शनिवार, रविवार या मंगलवर को पड़े, तो इसी क्रम से अन्न दुगुना, तिगुना, और चौगुना महंगा होगा।

२४

सोमाँ, सुकराँ, सुरगुराँ, पौष अमावस होय।
घर-घर बजै बधावड़ा, दुखी न दीखै कोय॥

पौष की अमावस्या यदि सोमवार, शुक्र या बृहस्पतिवार को पड़े, तो घर-घर बधाई बजेगी, कोई आदमी दुःखी न दिखाई पड़ेगा।

२५

पूस उजाली सप्तमी, आठैं नवमी गाज
गर्भ होय तौ जान लै, अब सरि है सब काज॥

पौष सुदी सप्तमी, अष्टमी और नवमी को बादल हों तो समझलो, अब सब काम सिद्ध होंगे।

२६

काहे पंडित पढ़ि-पढ़ि मरो।
पूस अमावस की सुधि करो॥
मूल विशाखा पुरबापाढ़।
झूरा जान लो बहिरे ठाढ़॥

हे पंडित! बहुत पढ़-पढ़कर क्यों जान देते हो? पौष के अमावस को देखो! उस दिन यदि मूल, बिशाखा या पूर्वाषाढ़ नक्षत्र हो, तो समझना कि सूखा घर के बाहर खड़ा है अर्थात् सूखा पड़ेगा।

माघ

२७

माघ अँधेरी सत्तमी, मेह बिज्जु दमकंत।
मास चारि बरसै सही, मत सोचै तू कन्त॥

माघ बदी सप्तमी को यदि बादल हों और बिजली चमके, तो हे स्वामी! चिंता न करना, चार महीने लगातार बर्षा होगी।

२८

नौमी माघ अँधेरिया, मूल रिच्छ को भेद।
तौ भादौं नौमी दिवस, जल बरसै बिन खेद॥

माघ बदी नौमी को मूल नक्षत्र हो तो भादों बदी नौमी को निश्चय पानी बरसेगा।

२९

माघ अमावस गर्भमय, जो केहु भाँति विचारि।
भादौं की पून्यो दिवस, बरखा पहर जु चारि॥

माघ की अमावास्या को बादल, बिजली, हवा आदि हों तो भादों की पूर्णिमा को चार पहर बर्षा होगी।

३०

माघ जो परिवा ऊजली, बादर वायु जु होय।
तेल और सुरही सबै, दिन दिन महँगो होय॥

माघ सुदी प्रतिपदा को बादल हों और हवा चलती हो, तो तेल और घी महँगे होते जायँगे।

३१

माघ उज्यारी दूज दिन, बादर बिज्जु समाय।
तो भाखै यों भड्डरी, अन्न जु महँगो लाय॥

माघ सुदी दूज को बादलों में बिजली समाती दिखाई पड़े, तो अन्न महँगा होगा।

३२

माघ उज्यारी तीज को, बादर बिज्जु जु देख।
गोहूँ जौ संचय करो, महँगो होसी पेख॥

माघ सुदी तृतीया को बादल और बिजली दिखाई पड़े, तो गेहूँ और जौ जमा करो, महँगी पड़ेगी।

३३

माघ उज्यारो चौथ को, मेह बादरो जान।
पान और नारेल नै, महँगो अवसि बखान॥

माघ सुदी चौथ को बादल हों और पानी बरसे, तो पान और नारियल अवश्य महँगे होंगे।

३४

माघ उजेरी पंचमी, परसै उत्तर वाय।
तो जानौ ये भादवो, बिन जल कोरो जाय॥

माघ सुदी पंचमी को उत्तर की हवा चले, तो भादों बिना पानी का सूखा ही जायगा।

३५

माघ छठी गरजै नहीं, महँगो होय कपास ।
सातें देखो निर्मली, तो नाहीं कछु आस ॥

माघ सुदी छट को यदि बादल न गरजे, तो कपास महँगा होगा; पर सप्तमी को आकाश बिलकुल साफ़ रहे, तो कुछ भी आशा नहीं।

३६

माघ उजेरी छट्ठ को, वार होय जो चंद ।
तेल घीव को जानिये, महँगो होय दुचंद ॥

माघ सुदी छठ को यदि सोमवार हो, तो तेल और घी दूना महंगे हो जायँगे ।

३७

माघ सत्तमी ऊजली, बादल मेघ करंत ।
तौ अषाढ़ में भड्डरी, घनो मेघ बरसंत ॥

माघ सुदी सप्तमी को बादल घिर आये, तो आषाढ़ में खूब वर्षा होगी ।

३८

माघ सुदी जो सत्तमी, बिज्जु मेह हिम होय ।
चार महीना बरससी, सोक करो मति कोय ॥

माघ सुदी सप्तमी को यदि बिजली चमके, पानी बरसे और सरदी ज्यादा पड़े, तो चौमासेभर पानी बरसेगा; कोई चिन्ता मत करो ।

३९

माघ सुदी जो सत्तमी, सोमवार दीसंत ।
काल पड़ै राजा लड़ै, सगरे नराँ भ्रमंत ॥

माघ सुदी सप्तमी यदि सोमवार पड़े; तो अकाल पड़ेगा; राजा लड़ेंगे और सभी मनुष्य चक्कर में पड़े रहेंगे ।

४०

माघ जो सातैं कज्जली, आठैं बादर होय ।
तो असाढ़ में धूरवा, बरसै जोसी जोय ॥

माघ बदी सप्तमी और अष्टमी को बादल हों, तो असाढ़ में वर्षा होगी ।

४१

माघ सुदी जो सत्तमी, भौमवार को होय।
तो भड्डर जोसी कहै, नाज किरानो लोय॥

माघ सुदी सप्तमी यदि मंगलवार को पड़े, तो अन्न में कीड़े लग जायँगे।

४२

माघ सुदी आठैं दिवस, जो कृतका रिख होय
की फागुन रोलो पड़ै, की सावन महँगो होय॥

माघ सुदी अष्टमी को यदि कृत्तिका नक्षत्र हो, तो या तो फागुन मे पाला पड़ेगा, या सावन में महँगी पड़ेगी।

४३

अथवा नौमी ऊजली, बादल करै बियाल।
भादों मैं बरसै घनो, सरवर फूटै पाल॥

माघ सुदी नौमी को बादल घेर-घार करे, तो भादों में इतना पानी बरसेगा कि तालाब उमड़ चलेंगे।

४४

अथवा नौमी निर्मली, बादल रेख न जोय।
तौ सरवर भी सूखसी, महि में जल नहिं होय॥

माघ सुदी नवमी को बादल न दिखाई पड़ें, तो अगले साल तालाब भी सूख जायेंगे, पृथ्वी पर पानी नहीं होगा।

४५

माघ सुदी पूनो दिवस, चंद निर्मलो जोय।
पसु बेंचो कन संग्रहो, काल हलाहल होय॥

माघ सुदी पूर्णिमा को यदि चन्द्रमा स्वच्छ दिखाई पड़े, तो पशुओं को बेंच डालो, अन्न जमा करो, भयंकर काल पड़ेगा।

४६

माघ मास जो पड़ै न सीत।
महँगो नाज जानियो मीत॥

माघ के महीने में जाड़ा न पड़े, तो अन्न महँगा होगा।

४७

माघ पाँच जो हों रविवार।
तो भी जोसी करो विचार॥

माघ में पांच रविवार पड़ें, तो भी विचार करने की बात है, अर्थात् लक्षण अच्छे नहीं।

फागुन

४८

फागुन बदी सुदूज दिन, बादर होय न बीज।
बरसै सावन भादवा, साधो खेलौ तीज॥

फागुन बदी दूज को बादल हों, पर बिजली न चमके, तो सावन-भादों मे वर्षा होगी। आनन्द से तीज का त्योहार मनाओ।

४९

मंगलवारी मावसी, फागुन चैती जोय।
पसु बेंचो कन संग्रहो, अवसि दुकालो होय॥

फागुन और चैत के अमावस यदि मंगल को पड़ें, तो पशुओं को बेंच डालो, अन्न जमा करो, अवश्य दुकाल पड़ेगा।

५०

फागुन सुदी जु सत्तमी, आठैं नवमी गंभ।
देखु अमावस भादवैं, पैये मेह सुलंभ॥

फागुन सुदी सप्तमी, अष्टमी और नवमी को वर्षा का गर्भ पड़े, तो भादों के अमावस को पानी बरसेगा।

५१

पाँच मंगरो फागुनो, पूस पाँच सनि होय।
काल पड़ै तब भड्डरी, बीज बओ जनि कोय॥

फागुन में पाँच मंगलवार और पौष में पाँच शनिवार पड़ें, तो अकाल पड़ेगा, कोई बीज मत बोओ।

५२

होली सूक सनीचरी, मंगलवारी होय।
चाक चहोड़े मेदिनी, बिरला जीवै कोय॥

होली शुक्र, शनिवार या मंगलवार को पड़े, तो पृथ्वी पर बड़ा उत्पात होगा और शायद ही कोई जीवित बचे।

चैत्र

५४

चैत अमावस जै घड़ी, चलतू पत्रा माँहि।
तेता सेरा भड्डरी, कातिक धान बिकाहिं॥

चैत की अमावस्या चालू पंचांग में जै घड़ी होगी, उतने ही सेर अगले कातिक में धान बिकेगा।

५५

चैत सुदी रेवड़ी जोय।
बैसाखहिं भरनी जो होय॥
जेठ मास मृगसिर दरसंत।
पुनरवसू आसाढ़ चरंत॥
जितो नछत्र कि बरतो जाई।
तेतो सेर अनाज बिकाई॥

चैत में रेवती, बैसाख में भरणी, जेठ में मृगशिरा और आषाढ़ में पुनर्वसु जितने घड़ी रहेंगे, उतने सेर अनाज बिकेगा।

५६

चैत मास उजियारे पाख।
आठें दिवस बरसता राख॥
नौ बरसे जित बिजली जोय।
ता दिसि काल हलाहल होय॥

चैत सुदी अष्टमी को यदि आकाश से धूल बरसती रहे और नवमी को पानी बरसे, तो जिधर बिजली चमकेगी, उधर भयानक अकाल पड़ेगा।

५७

चैत मास दस रीखड़ा, बादर बिजुली होय।
तौ जानो चित माँहि यह, गर्भ गला सब जोय॥

चैत सुदी दशमी को बादल बिजली हो, तो यह समझ रखना कि वर्षा का गर्भ गल गया, वृष्टि चौमासे में कम होगी।

५८

चैत मास दस रीखड़ा, जो कहुँ कोरो जाइ।
चौमासे भर बादला, भली भाँति बरसाइ॥

चैत सुदी दशमी को बादल न हुआ तो समझना कि चौमासेभर अच्छी वृष्टि होगी।

५६

चैत पूर्णिमा होइ जो, सोम गुरौ बुधवार।
घर घर होइ बधावड़ा, घर-घर मंगलचार॥

चैत की पूर्णिमा को यदि सोमवार, बृहस्पतिवार या बुधवार हो, तो घर घर आनन्द की बधाई बजेगी और घर-घर मंगलाचार होगा।

६०

चैत मास जो बीज बिजौवे।
भरि बैसाखाँ टेसू धोवै॥

चैत के महीने में बिजली चमके तो बैसाख में ऐसी वर्षा होगी कि टेसू (ढाक) के फूल तक धूल में मिल जायँगे।

६१

चैत मास ने पख अँधियारा।
अष्टम चौदस दो दिन सारा॥
जिण दिस बादल तिण दिस मेंह।
जिण दिस निर्मल तिण दिस खेह॥

चैत बदी अष्टमी और चतुर्दशी को जिस दिशा में बादल होंगे, उस दिशा में वर्षा होगी और जिस दिशा में आकाश निर्मल होगा, उस दिशा में धूल उड़ेगी।

६२

चैत मास उजियारे पाख।
नौ दिन बीज लुकोई राख॥
आठम नम नीरत कर जाय।
जाँ बरसे वाँ दुरभख थाय॥

चैत सुदी में प्रतिपदा से नवमी तक यदि बिजली न चमके, तो अष्टमी और नवमी को खास तौर पर देखना चाहिये; जहाँ वर्षा होगी, वहाँ दुर्भिक्ष पड़ेगा।

६३

असनी गलिया अंत बिनासै।
गली रेवती जल को नासै॥

भरनो नासै तृना सहूतो।
कृतिका बरसै अंन बहूतो॥

चैत में यदि अश्विनी बरस जाय, तो चौमासे के अंत में सूखा पड़ेगा; रेवती बरस जाय, तो वृष्टि होगी ही नहीं; भरणी बरसे, तो तृण भी न होंगे; और कृतिका बरसे तो अंत में अच्छी वृष्टि होगी।

६४

चैत चिड़पड़ा, सावन निरमला।

चैत में छोटी-छोटी बून्दे गिरेंगी तो सावन में वर्षा बिलकुल न होगी।

६५

चैत मास में पख अँधियारा।
आठम चौदस दो दिन सारा॥
जेहि दिसि बादल तेहि दिसि मेहा।
जेहि दिसि निरमल तेहि दिसि खेहा॥

चैत्र बदी अष्टमी और चतुर्दशी को जिस दिशा में बादल होंगे, चौमासे में उसी दिशा में वर्षा होगी।

वैसाख

६६

वैसाखो सुदि प्रथम दिन, बादर बिज्जु करेइ।
दामाँ बिना बिसाहिजै, पूरी साख भरेइ॥

वैसाख सुदी प्रतिपदा को बादल और बिजली हों, तो ऐसी अच्छी फसल होगी कि अन्न बिना दाम ही का मिलेगा।

६७

अखै तीज तिथि के दिना, गुरु होवै संजूत।
तो भाखै यों भड्डरी, निपजै नाज बहूत॥

वैशाख में अक्षय तृतीया को यदि गुरुवार हो, तो बहुत अन्न उत्पन्न होगा।

६८

अखै तीज रोहिणी न होई।
पौष अमावस मूल न जोई॥

राखी स्रवणी हीन विचारो।
कातिक पूनो कृतिका टारो॥
महि माँहीं खल बलहिं प्रकासै।
कहत भड्डरी सालि बिनासै॥

बैसाख की अक्षय तृतीया को यदि रोहिणी न हो, पौष की अमावस्या को मूल न हो, रक्षा-बन्धन के दिन श्रवण और कार्तिक की पूर्णमासी को कृत्तिका न हो, तो दुष्टों का बल बढ़ेगा और धान की उपज अच्छी न होगी।

जेठ

६९

जेठ पहिल परिवा बिना, बुध बासर जो होइ।
मूल असाढ़ी जो मिलै, पृथ्वी कम्पै जोय॥

जेठ बदी की प्रतिपदा खंडित हो, पर उस दिन बुधवार पड़े, और असाढ़ की पूर्णिमा को मूल नक्षत्र हो, तो पृथ्वी दुःख से काँप उठेगी।

७०

जेठ आगली परिवा देखू।
कौन बासरा है यों पेखू॥
रवि बासर अति बाढ़ बढ़ाय।
मंगलवारी व्याधि बताय॥
बुधा नाज महँगा जो करई।
सनि बासर परजा परिहरई॥
चन्द्र सुक्र सुर गुरु के बारा।
होय तो अन्न भरो संसारा॥

जेठ बदी प्रतिपदा को रविवार पड़े, बड़ी बाढ़ आयेगी; मंगल पड़े, तो रोग बढ़ेगा; बुधवार पड़े, तो अन्न महंगा होगा; शनिवार पड़े, तो प्रजा को कष्ट होगा; सोमवार, शुक्रवार या वृहस्पतिवार पड़े, तो संसार अन्न से भर जायगा।

७१

जेठ बदी दसमी दिना, जो सनिवासर होय।
पानी होय न धरनि पर, बिरला जीवै कोय॥

जेठ बदी दसमी को शनिवार हो, तो पृथ्वी पर पानी नहीं पड़ेगा और शायद ही कोई जीता रहे।

७२

जेठ उजेरी तीज दिन, आर्द्रा रिख बरसंत।
जोसो भाषै भड्डरी, दुरभिछ अत्रसि करंत॥

जेठ सुदी तृतीया को आर्द्रा नक्षत्र बरस जाय, तो निश्चय दुर्भिक्ष पड़ेगा।

७३

जेठ उँजेरे पाख में, आर्द्रादिक दस रिच्छ।
सजल होयँ निर्जल कह्यो, निर्जल सजल प्रतच्छ॥

जेठ सुदी में आर्द्रा आदि दस नक्षत्र बरस जायँ, तो चौमासे में सूखा पड़ेगा; न बरसें तो पानी गिरेगा।

७४

स्वाति विसाखा चित्तरा, जेठ जो कोरी जाय।
पिछलो गरभ गल्यो कहो, बनी साख मिट जाय॥

स्वाती, विशाखा और चित्रा जेठ में बिना बादल के बीत जायँ, तो समझना, वर्षा का पिछला गर्भ गल गया, खेती नष्ट हो जायेगी।

७५

जेठ मास जो तपै निरासा।
तो जानो बरसा की आसा॥

जेठ का पूरा महीना यदि तपता रह जाय, अर्थात् काफी गरमी लगातार पड़ती रहे, तो वर्षा की आशा करना।

७६

तपा जेठ में जो चुइ जाय।
सभी नखत हलके परि जायँ॥

जेठ में मृगशिर नक्षत्र के अंत में दस दिन, जो 'दस-तपा' कहलाता है, यदि चू जाय, अर्थात् उसमें पानी बरस जाय, तो वर्षा के सभी नक्षत्र कमजोर पड़ जायँगे।

७७

उतरे जेठ जो बोलै दादर।
कहैं भड्डरी बरसै बादर॥

यदि जेठ उतरते ही मेढक बोलने लगें, तो पानी बरसेगा।

७८

जेठा अंत बिगाड़िया, पूनम नै पड़वा।

जेठ की पूर्णिमा और प्रतिपदा को छींटे पड़ें, तो लक्षण अच्छा नहीं।

आषाढ़

७९

जेठ बीती पहली पड़वा, जो अंबर घरहड़ै।
असाढ़ सावन जाय कोरो, भादरवे बिरखा करै॥

असाढ़ बदी प्रतिपदा को यदि बादल गरजे, या वर्षा हो, तो आषाढ़ और सावन सूखे जायँगे, भादों में वर्षा होगी।

८०

कृष्ण असाढ़ी प्रतिपदा, जो उत्तर गरजंत।
छत्री छत्री जूझियाँ, निहचै काल पड़ंत॥

असाढ़ बदी प्रतिपदा को यदि उत्तर की ओर बादल गरजें; तो राजाओं में लड़ाई होगी और निश्चय ही अकाल पड़ेगा।

८१

धुर आसाढ़ी बिज्जु की, चमक निरंतर जोय।
सोमाँ सिकराँ सुरगुराँ, तो भारी जल होय॥

आषाढ़ बदी में सोमवार, शुक्रवार और बृहस्पतिवार को लगातार बिजली चमकती रहे, तो भारी वृष्टि होगी।

८२

धुर असाढ़ की पंचमी, बादर होय न बीज।
बेंचो गाड़ी बलदिया, निपजै कछू न चीज॥

आषाढ़ बदी पंचमी को न बादल हों, न बिजली, तो गाड़ी और बैलों को बेंच दो, कोई चीज पैदा न होगी।

८३

धुर असाढ़ की अष्टमी, ससि निर्मलियो दीख।
पीव जायके मालवे, माँगत फिरिहैं भीख॥

आषाढ़ बदी अष्टमी को यदि चन्द्रमा पर बादल न रहें, तो सूखा पड़ेगा और स्वामी मालवे में जाकर भीख माँगते फिरेंगे।

८४

नवें असाढ़ी बादली, जो गरजे घनघोर।
कहै भड्डरी जोतिषी, काल पड़ै चहुँ ओर॥

आसाढ़ बदी नवमी को यदि बादली हो, और बदल जोर से गरजे, तो चारोंओर अकाल पड़ेगा।

८५

दसैं असाढ़ी कृष्ण को, मंगल रोहिनि होय।
सस्ता धान बिकाइहै, हाथ न छुइहै कोय॥

आषाढ़ बदी दशमी को मंगलवार और रोहिणी नक्षत्र हो, तो अन्न इतना सस्ता बिकेगा कि कोई हाथ से भी नहीं छुयेगा।

८६

सुदि असाढ़ में बुद्ध को, उदै भयो जो देख।
सुक्र अस्त सावन लखौ, महाकाल अवरेख॥

आषाढ़ सुदी में यदि बुध उदय हो और सावन में शुक्र अस्त हो, तो महाअकाल पड़ेगा।

८७

सुदि असाढ़ की पंचमी, गरज धमधमो होय।
तो यों जानो भड्डरी, मधुरी मेघा जोय॥

आषाढ़ सुदी पंचमी को बादल जोर से गरजें तो बरसात अच्छी होगी।

८८

सुदि असाढ़ नौमी दिना, बादर झीनो चंद।
तो यों जानो भड्डरी, भूमि घनो आनंद॥

आषाढ़ सुदी नौमी को यदि चंद्रमा के ऊपर हलका बादल छाया हो, तो पृथ्वी पर आनंद होगा।

८९

चित्रा स्वाति बिसाखड़ी, जो बरसै आसाढ़।
चालौ नराँ बिदेसड़ो, परिहै काल सुगाढ़॥

आषाढ़ में चित्रा, स्वाती और विशाखा नक्षत्र बरसें तो, भारी अकाल पड़ेगा और मनुष्यों को विदेश में ही शरण मिलेगी।

६०

आसाढ़ी पूनो दिना, बादर भीनो चंद।
तो भड्डर जोसी कहैं, सगला नराँ अनंद॥

आषाढ़ की पूर्णमासी को चन्द्रमा बादलों से ढका हो, तो सब मनुष्य सुख पायेंगे।

६१

आसाढ़ी पूनो दिना, निरमल ऊगै चंद।
पीव जाव तुम मालवा, अटूठैं छै दुख द्वंद॥

आषाढ़ की पूर्णमासी को चंद्रमा बिलकुल साफ दिखाई दे, उस पर बादल न रहें, तो अकाल पड़ेगा और मालवे ही में शरण मिलेगी।

६२

आसाढ़ी पूनो दिना, गाज बीज बरसंत।
नासै लच्छन काल का, आनँद मानौ संत॥

आषाढ़ की पूर्णिमा को बादल गरजे, बिजली चमके और पानी बरसे, तो सुकाल का लक्षण है, खूब आनंद होगा।

६३

आगे रवि पीछे चलै, मंगल जो आसाढ़।
तौ बरसै अनमोलही, पृथी अनंदै बाढ़॥

आषाढ़ में यदि सूर्य आगे और मंगल पीछे हो, तो पानी खूब बरसेगा और पृथ्वी पर आनंद बढ़ेगा।

६४

आसाढ़ी आठैं अँधियारी।
जो निकले चंदा जलधारी॥
चंदा निकले बादल फोड़।
साढ़े तीन मास वर्षा का जोग॥

आषाढ़ बदी अष्टमी को चंद्रमा बादलों में से निकले, तो साढ़े तीन महीने वर्षा होगी।

६५

आगे मंगल पीठ रवि, जो असाढ़ के मास।
चौपट नासै चहुँ दिसा, बिरलै जीवन आस॥

आषाढ़ में यदि मंगल आगे हो और सूर्य पीछे, तो चारोंओर चौपायों का नाश होगा और शायद ही किसी के जीने की आशा हो।

९६

न गिनु तीन सै साठ दिन, ना करु लग्न विचार।
गिनु नौमी आषाढ़ बदि, होवै कौनिउ बार॥
रवि अकाल मंगल जग डगै।
बुधा समो सम भावो लगै॥
सोम सुक्र सुर गुरु जो होय।
पुहुमी फूल फलंती जोय॥

न वर्ष के तीन सौ साठ दिनों की गिनती करो, न लग्न का विचार करो, आषाढ़ बदी नवमी का विचार करो, चाहे वह किसी दिन पड़े। रविवार को होगी तो अकाल पड़ेगा। मंगल को होगी तो भूकंप आयेगा। बुध को होगी तो समभाव रहेगा। सोमवार, शुक्रवार या बृहस्पतिवार को होगी तो पृथ्वी फूल फल से भर जायगी।

९७

आसाढ़ी धुर अष्टमी, चंद सेवरा छाय।
चार मास चवता रहे, जिउ भांड़ै रे राय॥

आषाढ़ बदी अष्टमी को चंद्रमा को बादल घेरे रहें तो चारों महीने फूटी हाँड़ी की तरह चूते रहेंगे।

९८

आसाढ़ी सुद नौमी, घन बादल घन बीज।
कोठा खरे खँखेर दो, राखो बलद ने बीज॥

आषाढ़ सुदी नवमी को बादल खूब घना हो और बिजली खूब चमके, तो कोठिला खाली कर दो, अर्थात् सब अन्न बो दो; सिर्फ बैल और बीज रक्खो।

९९

आषाढ़ै सुद नौमी, नै बादल नै बीज।
हल फाड़ो ईंधन करो, बैठे चाबो बीज॥

आषाढ़ सुदी नवमी को न बादल हों, न बिजली, तो हल को फाड़कर ईंधन बना लो और बीज को बैठे बैठे चबा डालो अर्थात् अकाल पड़ेगा।

१००

आसाढ़ी संझा पुनगौना।
धुजा बाँधिकै देखो पौना॥
पूरब उत्तर अरु ईसान।
जोर बहै तो समयो जान॥
अग्नि और नैऋत का कोन।
समयो नासै चलै जो पौन॥
अगिन कोन जो बहै समीरा।
परै काल दुख सहै सरीरा॥
नैऋत भुइं बूँद ना परै।
राजा परजा भूखों मरै॥
वायव मे जल फुहों परे।
मूस साँप दोनों अवतरें॥
जो पै पवन पुरब से आवै।
उपजै अन्न मेघ झरि लावै॥
दक्खिन वह जल थल अलगीरा।
ताहि समै जूझैं बहु बीरा॥
उत्तर उपजै अति धन धान।
खेत बात सुख करै किसान॥
पच्छिम समै नीक करि जान्यो।
आगे परै तुपार प्रमान्यो॥
जो कहुँ बहै इसाना कोना।
नाप्यो बिस्वा दो दो दोना॥
जो कहुँ हवा अकासे जाय।
परै न बूँद काल परि जाय॥
दक्खिन पच्छिम आधो समयो।
भड्डर जोसी ऐसो भनयो॥

आषाढ़ की पूर्णमासी की शाम को पताका खड़ी करके वायु की परीक्षा करो।

पूरब, उत्तर या ईशानकोण की हवा बहे; तो समय अच्छा समझना। अग्नि कोण और नैऋत्य कोण की हवा बहे, तो समय अच्छा न होगा।

अग्नि कोण की हवा बहे, तो अकाल पड़ेगा और शरीर दुःख पायेगा।

नैऋत्य कोण की हवा बहे; तो पृथ्वी पर पानी की बूँद भी नहीं पड़ेगी; राजा और प्रजा दोनों भूखों मरेंगे।

पश्चिम-उत्तर कोण की हवा बहे तो बड़ी वर्षा न होगी; फुहारें पड़ेंगे और चूहे और साँप बहुत पैदा होंगे।

पूरब की हवा बहे, तो बादल झड़ी बाँधकर बरसेगा और खूब अन्न होगा।

दक्खिन की हवा बहे तो पानी बहुत बरसेगा; और उसी समय बड़े बड़े वीर लड़कर मारे जायँगे।

उत्तर की हवा बहे, तो धन-धान्य की उपज बहुत होगी, किसान मौज करेंगे।

पश्चिम की हवा बहे; तो समय अच्छा होगा; पर आगे पाला पड़ेगा।

यदि ईशान कोण की हवा बहे, तो एक बिस्वे में दो-दो दोना अन्न होगा; अर्थात् उपज बहुत कम होगी।

हवा यदि आकाश की ओर जाय, तो बूँद भी नहीं पड़ेगी, और अकाल पड़ जायगा।

दक्खिन-पश्चिम की हवा बहे तो समय आधा समझना। यह भड्डर जोतिषी ने कहा है।

श्रावण

१०१

सावन पहली चौथ में, जो मेघा बरसाय।
तो भाषै यो भड्डरी, साख सवाई जाय॥

सावन बदी चौथ को यदि बादल बरसे, तो उपज सवाई होगी।

१०२

सावन पहिले पाख में, दसमी रोहिनि होइ।
महँग नाज अरु अल्पजल, विरला बिलसै कोइ॥

सावन बदी दसमी को यदि रोहिणी नक्षत्र हो, तो अन्न महँगा होगा, जल कम बरसेगा और शायद ही कोई सुख भोगे।

१०३

सावन बदि एकादसी, जेती रोहिणि होय।
ते तो समयो ऊपजै, चिंता करो न कोय॥

सावन बदी एकादशी को जितने दंड रोहिणी होगी, उसी औसत से उपज होगी; व्यर्थ चिन्ता कोई मत करो।

१०४

सावन कृष्ण एकादसी, गरजि मेघ अधरात।
तुम जाओ पिय मालवा, हम जावैं गुजरात॥

पाठान्तर—अधरात : बहरात

सावन बदी एकादशी को बादल आधी रात के समय गरजे तो अकाल पड़ेगा; हे स्वामी! तुम तो मालवा चले जाना, मैं गुजरात जाऊँगी।

१०५

जो कृत्तिका तो किरवरो, रोहिणि होय सुकाल।
जो मृगासिर आवै नहीं, निहचै पड़ै दुकाल॥

यदि सावन बदी द्वादशी को कृत्तिका नक्षत्र हो, तो अन्न का भाव साधारण होगा; रोहिणी हो तो सुकाल पड़ेगा और मृगशिर हो तो निश्चय अकाल पड़ेगा।

१०६

चित्रा स्वाति बिसाखड़ी, सावन नहिं बरसंत।
हाली अन्नै संग्रहो, दूनो मोल करंत॥

चित्रा, स्वाती और विशाखा सावन में न बरसें, तो अन्न का भाव दूना हो जायगा; जल्दी अन्न जमा करो।

१०७

करक जु भीजै काँकरो, सिंह अभीनो जाय।
ऐसा बोलै भड्डरी, टीड़ी फिरि फिरि खाय॥

सावन में कर्क राशि पर सूर्य हो, तो सिर्फ कंकड़ भीगने भर की वर्षा होगी; और सिंह राशि पर हो और वह भी सूखा जाय, तो टीडी पैदा होंगी, और बार-बार फसल को खायेंगी।

१०८

मीन सनीचर कर्क गुरु, जो तुल मंगल होय।
गेहूँ गोरस गोरड़ी, बिरला बिलसै कोय॥

यदि मीन का शनैश्चर, कर्क का बृहस्पति और तुला का मंगल हो, तो गेहूँ, दूध और ऊख की उपज मारी जायगी; शायद ही इनसे कोई सुख पाये।

१०९

कै जु सनीचर मीनको, कै जु तुला को होय।
राजा विग्रह प्रजा छय, बिरला जीवै कोय॥

शनैश्चर मीन का हो या तुला का, दोनों दशाओं में राजाओं में युद्ध होगा, प्रजा का नाश होगा, शायद ही कोई जीवित बचे।

११०

सावन सुकला सत्तमी, छिपि कै ऊगै भान।
तब लग दैव बरीसिहैं, जब लग देव उठान॥

सावन बदी सप्तमी को यदि सूर्य बादलों में छिपा हुआ उदय हो, तो देवोत्थान एकादशी तक वर्षा होगी।

१११

सावन केरे प्रथम दिन, उबत न दीखै भान।
चार महीना जल गिरै, या को है परमान॥

सावन बदी प्रतिपदा को सवेरे सूर्य उदय होते हुए न दिखाई पड़े, तो चार महीने निश्चय वर्षा होगी।

११२

सावन बदी एकादसी, बादल ऊगै सूर।
तो यों भाखै भड्डरी, घर घर बाजै तूर॥

सावन बदी एकादशी को यदि उदय होते हुए सूर्य पर बादल रहें, तो सुकाल होगा और घर-घर आनंद की तुरही बजेगी।

११३

सावन सुक्ला सत्तमी, चंदा छिटिक करे।
की जल देखो कूप में, की कामिनि सीस धरे॥

सावन सुदी सप्तमी को चंद्रमा की चाँदनी खूब छिटकी हुई हो, तो पानी या तो कूवें में मिलेगा; या स्त्रियों के सिर पर घड़े में।

११४

सावन पहली पंचमी, जोर की चले बयार।
तुम जाना पिउ मालवे, हम जैबै पितु-सार॥

सावन बदी पंचमी को जोर की हवा चले, तो हे पति! तुम मालवे चले जाना और मैं पिता के घर चली जाऊँगी। अर्थात् अकाल पड़ेगा।

११५

सावन कृष्ण पक्ष में देखो।
तुल को मंगल होय बिसेखो॥
कर्क राशि पर गुरु जो जावै।
सिंह राशि में शुक्र सुहावै॥
ताल सो सोखै बरसै धूर।
कहूँ न उपजै सातों तूर॥
सावन उजरे पाख में, जो ये सब दरसायँ।
दुंद होइ छत्री लड़ैं, भिरैं भूमिपति राय॥

सावन बदी में तुला का मंगल हो, कर्क का बृहस्पति और सिंह का शुक्र हो, तो ताल सूख जायँगे, धूल की वर्षा होगी, और सातों प्रकार के अन्न कहीं पैदा न होंगे।

सावन सुदी में भी जो ये ही लक्षण दिखाई पड़ें, तो भयानक लड़ाई होगी, राजा लोग आपस में लड़ जायँगे।

११६

सावन पछिवाँ भादों पुरवा आस्विन बहै इसान।
कातिक कंता सींक न डोलै, गाजैं सबै किसान॥

सावन में पछुवाँ, भादों में पुरवा और कुवार में ईशान कोन की हवा चले, तो हे स्वामी! कातिक में एक सींक भी न हिलेगी और सभी किसान हर्ष से गरजेंगे।

११७

सावन उखमें भादौं जाड़।
वर्षा मारे ठाढ़ कछाँड़॥

सावन में गरमी हो और भादों में जाड़ा पड़े, तो समझना चाहिये कि वर्षा बहुत होगी।

११८

सावन सुक्ला सत्तमी, जो गरजै अधिरात।
बरसै तो सूखा पड़ै, नाहीं समो सुकाल॥

सावन सुदी सप्तमी को आधी रात के समय बादल गरजे और बरसे, तो सूखा पड़ेगा; नहीं गरजे-बरसे, तो सुकाल होगा।

११९

सावन पहिले पाख में, जो तिथि ऊणी जाय।
कैयक कैयक देस में, टाबर बेंचो माय॥

सावन के पहले पक्ष में यदि कोई तिथि टूट जाय, तो किसी किसी देश में माँ बच्चे को बेच देगी; अर्थात् घोर अकाल पड़ेगा।

१२०

सावन सुक्ला सत्तमी, जो बरसै अधरात।
तूं पिय जैयो मालवा, हम जावें गुजरात॥

सावन सुदी सप्तमी को आधीरात के समय वर्षा हो, तो सूखा पड़ेगा। हे पति! तुम मालवा चले जाना, मैं गुजरात जाऊँगी।

भाद्रपद (भादों)

१२१

रवि ऊगंते भादवाँ, अम्मावस रविवार।
धनुष उगंते पश्चिमे, होसी हाहाकार॥

भादों में अमावस्या के दिन रविवार हो और सूर्योदय के समय पश्चिम में इन्द्र-धनुष दिखाई पड़े, तो अकाल पड़ेगा और हाहाकार मच जायगा।

१२२

भादों की सुदि पंचमी, स्वाति संजोगी होय।
दोनो सुभ जोगै मिलै, मंगल बरतो लोय॥

भादों सुदी पंचमी को स्वाती हो, तो लोग आनंद से रहेंगे।

१२३

भादौं मासै ऊजरी, लखै मूल रविवार।
तो यों भाखै भड्डरी, साख भली निरधार॥

भादों सुदी में रविवार के दिन मूल हो तो फसल अच्छी होगी।

१२४

भादों बदी एकादसी, जो ना छिटके मेघ।
चार मास बरसे सही, कहैं भडुरी देख॥

भादों बदी एकादशी को यदि बादल तितर-बितिर न हो जायँ, तो चार महीने तक वर्षा निश्चय होगी।

१२५

भादरवे जल रेलसी, जो छठ अनुराधा होय।
खिळला गर्भ खड़ा करे, वर्षा चोखी होय॥

भादों बदी छठ को अनुराधा हो तो वर्षा के गिरते हुए गर्भ को भी वह खड़ा कर देगी और अच्छी वर्षा होगी।

१२६

भादों जै दिन पछुवाँ ब्यारी। तै दिन माघे पड़ तुसारी॥

भादों में जितने दिन पछुवाँ हवा बहेगी, माघ में उतने दिन पाला पड़ेगा।

आश्विन (कुवार)

१२७

आसोजाँ रा मेहड़ा, दोयाँ बात बिनास।
बोरड़ियाँ बोर नहिं, बिणया नहीं कपास॥

कुवार में वर्षा हो, तो दो चीजों की हानि होगी—बेर की झाड़ियों में बेर नहीं लगेंगे और कपास में रुई नहीं होगी।

१२८

आसोज बदी अमावसी, जो आवै सनिवार।
समयो होवै किरवरो, जोसी करो विचार॥

कुवार बदी अमावस्या को शनिवार हो, तो समय अच्छा न होगा।

१२९

आसवानी। भागवानी॥

कुवार में वर्षा भाग्यवानों के यहाँ होती है।

१३०

सासू जितरै सासरो, आसू जितरै मेह॥

जब तक सास जीती रहे, तभी तक ससुराल का सुख है। इसी प्रकार कुवार तक वर्षा की आशा रहती है।

१३१

दो आश्विन दो भादों, दो असाढ़ के माँह।
सोना चाँदी बेंच के, नाज बेसाहो साह॥

दो कुवार, दो भादों और दो आषाढ़ (मलमास) हों, तो अकाल पड़ेगा। सोना-चाँदी बेंचकर अन्न खरीदो।

नक्षत्रों और राशियों का प्रभाव

१

कृतिका तो कोरी गई, अद्रा मेंह न बूंद।
तो यों जानो भड्डरी, काल मचावै दूंद॥

कृत्तिका नक्षत्र बिना बरसे चला गया, आर्द्रा में भी बूंद नहीं पड़ा, तो निश्चय ही अकाल पड़ेगा।

२

जो चित्रा में खेलैं गाई।
निहचै खाली साख न जाई॥

कार्तिक सुदी प्रतिपदा—गोवर्द्धन-पूजा, अन्नकूट के दिन--चित्रा नक्षत्र में चंद्रमा हो, तो फसल अच्छी होगी।

३

असुना गलि भरनी गली, गलियो जेष्ठा मूर।
पुरबाषाढ़ा धूल कित, उपजै सातो तूर॥

अश्विनी में वर्षा हुई, भरणी ज्येष्ठा और मूल में भी हुई; तो पूर्वाषाढ़ में कितनी धूल शेष रहेगी? निश्चय ही सातो प्रकार के अन्न पैदा होंगे।

४

कर्क बुवावै काकड़ी, सिंह अबोनो जाय।
ऐसा बोलै भड्डरी, कीड़ा फिरि फिरि खाय॥

कर्क राशि में ककड़ी बोई गई हो, सिंह में न बोई गई, तो उसमें कीड़े लगेंगे।

५

रोहिणि माँही रोहिणी, एक घड़ी जो दीख।
हाथ में खप्पर मेदिनी, घर घर माँगै भीख॥

यदि चैत्र में रोहिणी में एक घड़ी भी रोहिणी रहे, तो ऐसा अकाल पड़ेगा कि लोग हाथ में खप्पर लेकर घर-घर भीख माँगते फिरेंगे।

६

मृगसिर वायु न वाजिया, रोहिणी तपै न जेठ॥
गोरी बीने काँकरा, खड़ी खेजड़ी हेठ॥

मृगशिरा में हवा न चली और जेठ में रोहिणी न तपी, तो वृष्टि न होगी; किसान की स्त्री खेजड़ी (एक वृक्ष) के नीचे खड़ी होकर कंकड़ बटोरेगी।

७

आर्द्रा तो बरसै नहीं, मृगसिर पौन न जोय।
तो जानो ये भड्डरी, बरखा बूँद न होय॥

आर्द्रा में वर्षा न हुई और मृगशिर में हवा न चली, तो एक बूँद भी बरसात नहीं होगी।

८

आगे मंगल पीछे भान।
बरखा होवै ओस समान॥

जब मंगल आगे हो और सूर्य पीछे, तब वर्षा ओस के समान अर्थात् बहुत थोड़ी होगी।

९

आर्द्रा भरणी रोहिणी, मघा उत्तरा तीन।
दिन मंगल आँधी चलै, तबलौं बरखा छीन॥

आर्द्रा, भरणी, रोहिणी मघा, और तीनों उत्तरा (उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ, उत्तर भाद्रपद) में मंगल के दिन आँधी चले तो वर्षा को कमजोर समझना।

१०

आगे मघा पीछे भान।
वर्षा होवै ओस समान॥

मघा नक्षत्र आगे और सूर्य पीछे हो, तो वर्षा बहुत कम होगी।

११

मंगल रथ आगे चलै, पीछे चलै जो सूर।
मन्द वृष्टि तब जानिये, पड़सी सगलै भूर॥

यदि मंगल आगे हो और सूर्य पीछे, तो वृष्टि कम होगी, सर्वत्र सूखा पड़ेगा।

१२

रोहिनि जो बरसै नहीं, बरसै जेठा मूर।
एक बूँद स्वाती पड़ै, लागै तीनों तूर॥

यदि रोहिणी न बरसे, पर ज्येष्ठा और मूल बरस जाय और स्वाती की भी बूँद पड़ जाय; तो तीनों फसलें अच्छी होंगी।

१३

कुही अमावस मूल बिनु, बिनु रोहिनि अखतीज।
स्रवन बिना हो स्रावनो, आधा उपजे बीज॥

अमावस्या के दिन मूल नक्षत्र न पड़े, अक्षय तृतीया को रोहिणी न पड़े और सलूनो के दिन श्रवण न पड़े, तो बीज आधा उपजेगा।

१४

सावन पहली पचमी, गरमे ऊदे भान।
बरखा होगी अति घनी, ऊँचे जानो धान॥

सावन बदी पंचमी को यदि सूर्य बादलों में से निकले, तो वर्षा बहुत होगी और धान को फसल अच्छी होगी।

१५

सावन बदी एकादसी, जितनी घड़ी क होय।
तितनो संबत नीपजै, चिंता करै न कोय॥

सावन बदी एकादशी को जै घड़ी एकादशी होगी, अन्न उतने ही सेर बिकेगा, कोई चिंता न करे।

१६

मृगसिर वायु न बादला, रोहिनि तपै न जेठ।
आर्द्रा जो बरसै नहीं, कौन सहै अलसेठ॥

मृगशिर में न हवा चले, न बादल हों, जेठ में रोहिणी न तपे, और आर्द्रा न बरसे तो खेती करने का झंझट कौन ले? फसल अच्छी न होगी।

१७

सर्व तपै जो रोहिनी, सर्व तपै जो मूर।
परिवा तपै जो जेठ की, उपजै सातो तूर॥

रोहिणी पूरी तपे, मूल भी पूरा तपे, और जेठ का परिवा भी पूरा तपे तो सातों प्रकार के अन्न पैदा होंगे।

१८

जौ पुरवा पुरवाई पावे।
भूरी नदिया नाव चलावे।
ओरी कि पानी बँड़ेरी जावे॥

यदि पूर्वा नक्षत्र में पूर्व की हवा चले, तो इतना पानी बरसेगा कि सूखी नदी में भी नाव चलने लगेगी और ओलती का पानी छप्पर की चोटी तक चढ़ जायगा।

१९

मघादि पंच नछत्तरा, भृगु पच्छिम दिसि होय।
तो यों जानो भड्डरी, पानी पृथी न जोय॥

मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त और चित्रा नक्षत्रों में यदि शुक्र पश्चिम दिशा में हो, तो पृथ्वी पर पानी न बरसेगा।

२०

रवि के आगे सुर गुरु, ससि सुक्रा परबेस।
दिवस जु चौथे पाँचवें, रुधिर बहन्तो देस॥

सूर्य के आगे बृहस्पति हों और चंद्रमा की परिधि में शुक्र प्रवेश करे तो उसके चौथे-पाँचवें दिन देश में रक्त बह चलेगा।

२१

सूर उगे पच्छिम दिसा, धनुष उगंतो जान।
दिवस जु चौथे पाँचवें, रुंड मुंड महि मान॥

सूर्योदय के समय पश्चिम दिशा में इन्द्र-धनुष दिखाई पड़े, तो चौथे पाँचवें दिन पृथ्वी रुंड-मुंड से भर जायगी।

२२

उतरा उत्तर दे गई, हस्त गयो मुख मोरि।
भली विचारी चित्तरा, परजा लेइ बहोरि॥

उत्तरा सूखा जवाब दे गई, हस्त मुँह मोड़कर चला गया। बेचारी चित्रा ने उजड़ती हुई प्रजा को फिर बसा लिया; अर्थात् उत्तरा और हस्त में वृष्टि न हो और चित्रा में हो जाय; तो भी फसल अच्छी होगी।

२३

मूल गल्यो रोहिनि गली, अद्रा बाजी बाय।
हाली बेंचो बधिया, खेती लाभ नसाय॥

यदि मूल और रोहिणी नक्षत्रों में बादल हों और आर्द्रा में हवा चले तो बैलों को बेंच डालो, खेती में लाभ न होगा।

२४

क्या रोहिनि बरसा करै, बचै जेठ नित मूर।
एक बूँद कृतिका परै, नासै तीनों तूर॥

रोहिणी में वर्षा होने और जेठ के मूल में न होने से क्या? कृत्तिका में एक बूँद भी बरस जायगी, तो तीनों फसलें नष्ट हो जायँगी।

२५

स्वाती दीपक जो बरै, खेल बिसाखा गाय।
घना गयंदा रन चढ़ै, उपजी सास्र नसाय॥

स्वाती नक्षत्र में दीवाली हो, और कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को विशाख नक्षत्र में चंद्रमा हो, तो बड़ी भारी लड़ाई होगी और तैयार खेती भी नष्ट हो जायगी।

२६

जिन बाराँ रवि संक्रमै, तिनै अमावस होय।
खप्पर हाथा जग भ्रमै, भीख न घालै कोय॥

जिस दिन सूर्य की संक्रांति हो, और उसी दिन अमावस्या भी हो तो लोग हाथ में खप्पर लेकर फिरेंगे और कोई भीख भी नहीं देगा।

२७

जिन बाराँ रवि संक्रमै, तासों चौथे बार।
असुभ परंती सुभ करै, जोसी जोतिस सार॥

जिस दिन सूर्य की संक्रांति हो, उसका चौथा दिन अशुभ हो, तो भी शुभ फल देगा।

२८

दूजे तीजे किरवरो, रस कुसुम्भ महँगाय।
पहले छठमें आठमें, पिरथी परलै जाय॥

सूर्य की संक्रांति के दूसरे तीसरे दिन गड़बड़ हैं; रसदार पदार्थ और तेलहन महँगे होंगे। और पहले, छठें और आठवें दिन तो पृथ्वी पर प्रलय ही हो जायगी।

२९

रिक्ता तिथि औ क्रूर दिन, दुपहर अथवा प्रात।
जो संक्रांति तो जानियो, संवत महँगो जात॥

रिक्ता तिथि और क्रूर दिन (मंगल शनैश्चर आदि) को यदि दोपहर या प्रातःकाल को संक्रांति हो, तो समझना कि पूरा वर्ष महँगा जायगा।

३०

जेष्ठा अद्रा सतभिखा, स्वाति सुलेखा माँहिं।
जो संक्रांति तो जानिये, महँगो अन्न बिकाहिं॥

जेष्ठा, आर्द्रा, शतभिषा स्वाती और श्लेषा में सूर्य की संक्रांति हो, तो समझना कि अन्न महँगा बिकेगा।

३१

कर्क संक्रमी मंगलवार।
मकर संक्रमी सनिहिं बिचार॥
पंद्रह महुरत-वारी होय।
देस उजाड़ करैं यों जोय॥

कर्क की संक्रांति मंगलवार को पड़े, और मकर की संक्रांति शनिवार को और वह पंद्रह मुहूर्त की हो, तो देश उजड़ जायगा अर्थात अकाल पड़ेगा।

३२

जिहि नछत्र में रवि तपै, तिही अमावस होय।
परिवा साँझी जो मिलै, सूर्य ग्रहण तब होय॥

सूर्य जिस नक्षत्र में होता है, उसी में अमावस्या हो और शाम को यदि प्रतिपदा हो जाय, तो सूर्य-ग्रहण होगा।

३३

मास अघ्य जो तीज अँध्यारो।
लेहु जोतिसी ताहि बिचारो॥
तिहि नछत्र जो पूरनमासी।
निहचै चंद्र-ग्रहण उपजासी॥

महीने के कृष्णपक्ष की तृतीया को कौन-सा नक्षत्र है, जोतिषी इसको विचार ले; यदि उसी नक्षत्र में पूर्णमासी पड़े, तो निश्चय ही चंद्र-ग्रहण होगा।

३४

माघे मंगर जेठ रवि, जो सनि भादों होय।
छत्र टूटि धरती परै, की अन महँगो होय॥

माघ में पाँच मंगल, जेठ में पांच इतवार, और भादों में पांच शनिवार पड़ें, तो या तो राजा मरेगा, या अन्न महंगा होगा।

३५

पाँच सनीचर पाँच रवि, पाँच मंगर जो होय।
छत्र टूटि धरनी परै, अन्न महंगो होय॥

एक महीने में पांच शनिवार या पांच रविवार या पांच मंगलवार पड़ें, तो या तो राजा मरेगा, या अन्न महँगा होगा।

३६

आवत आदर ना दियो, जात न दीन्ह्यो हस्त।
तो दोनों पछतायँगे, पाहुन और गृहस्त॥

आर्द्रा चढ़ते समय और हस्त नक्षत्र उतरते समय न बरसा, तो गृहस्थ पछतायगा; अर्थात् फसल अच्छी न होगी।

मेहमान का आते ही आदर न किया और बिदा होते समय कुछ हाथ में न दिया, तो वह भी पछतायगा।

पाठान्तर—मघा मात जो ना दियो, तौ का करै गृहस्त।

३७

कर्क राशि में मंगल वारो।
ग्रहण परै दुर्भिच्छ बिचारो॥

कर्क राशिमें जब चंद्रमा हो, तब मंगलवार को चंद्र-ग्रहण हो, तो अकाल पड़ेगा।

३८

गुरु बासर धन वर्षा करई।
धावर बाराँ राजा मरई॥

जब धनराशि में बृहस्पति के दिन चंद्र-ग्रहण हो, तब वर्षा होगी; यदि रविवार को होगा, तो राजा मरेगा।

३९

सनि चक्कर की सुनिये बात।
मेष रासि भुगतै गुजरात॥
वृष में करै निरोधाचार।
भूवै आबू औ गिरनार॥
मिथुने पिंगल औ मुलतान।
कर्के कासमीर खुरसान॥
जो सनि सिंहा करसी रंग।
तो गढ़ दिल्लो होसी भंग॥
जो सनि कन्या करै निवास।
तो पूरब कछु माल बिनास॥
तुला वृश्चिके जो सनि होय।
मारवाड़ नें काट बिलोय॥
मकरा कुंभा जो सनि आवै।
दोन्हों अन्न न कोई खावै॥
जो धन मीन सनीचर जाय।
पवन चलै पानी जु नसाय॥

शनि के चक्कर की बात सुनो—

शनि मेष राशि पर होगा, तो गुजरात कष्ट भोगेगा।

वृष राशि पर होगा, तो आबू और गिरनार-प्रांत दुःख पायंगे।

मिथुन पर होगा, तो पिंगल (?) देश और मुलतान पर कर्क राशि पर काश्मीर और खुरासान पर संकट आयेगा।

सिंह राशिपर होगा, तो दिल्ली का राज-भंग होगा।

कन्या राशि पर होगा, तो पूर्व दिशा में हानि पहुँचायेगा।

वृश्चिक राशि पर होगा, तो मारवाड़ भूखों मरेगा।

मकर और कुंभ राशियों पर होगा, तो ऐसा संकट पड़ेगा कि कोई दिया हुआ अन्न भी न खा सकेगा।

धन और मीन राशियों पर होगा, तो हवा तेज चलेगी और सूखा पड़ेगा।

४०

चढ़त जो बरसै चित्रा, उतरत बरसै हस्त।
कितनो राजा डाँड़ ले, हारे नाहिं गृहस्त॥

चित्रा नक्षत्र चढ़ते हुए और हस्त नक्षत्र उतरते हुए बरसे, तो इतनी अच्छी फसल होगी कि राजा कितना ही कर ले, किसान नहीं हारेगा।
पाठान्तर—चढ़ते बरसे अद्रा।

४१

मघा—भुम्मि अघा।

मघा बरसता है, तो पृथ्वी अघा जाती है।

४२

चीत के बरसे तीन जायँ, मोथी मास उखार।

चित्रा नक्षत्र के बरसने पर तीन फसलों की हानि होती है—मोथी, उड़द और ईख की।

४३

जो बरसे पुनरबस स्वाती।
चरखा चलै न बोलै ताँती॥

पुनर्वसु और स्वाती नक्षत्र के बरसने से कपास नहीं होता। न चरखा चलता है और न धुनिए की ताँत बोलती है।

४४

चटका मघा पटकि गा ऊसर।
दूध भात में परिगा भूसर॥

मघा में पानी न बरसा, तो ऊसर और भी ज्यादा सूख जायगा। घास न होने से न दूध मिलेगा और पानी न होने से न चावल।

४५

जो कहुँ मग्घा बरसै जल।
सब नाजों में होगा फल॥

मघा नक्षत्र बरसे तो सब अन्नों में फल होगा।

४६

हथिया बरसे चित्रा मँड़राय।
घर बैठे किसान रिरियाय॥

हस्त नक्षत्र बरस रहा हो, चित्रा मँडरा रही हो, तो किसान घर में बैठे-बैठे खुशी का गीत गायेगा।

४७

हथिया पूँछ डोलावै।
घर बैठे गेहूँ आवै॥

हस्त नक्षत्र उतरते हुए बरस दे, तो गेहूँ की फसल अच्छी होगी।

४८

हस्त बरसे तीन होयँ, साली सक्कर मास।
हस्त बरसे तीन जायँ, तिल कोदौ कपास॥

हस्त के बरस जाने पर धान, गन्ना और उड़द की फसल अच्छी होगी; और तिल, कोदो और कपास की फसल को हानि पहुँचेगी।

४९

जब बरसेगा उत्तरा।
नाज न खावैं कुत्तरा॥

उत्तरा नक्षत्र बरस जाय, तो इतना अन्न पैदा होगा कि कुत्ते भी नहीं खायेंगे।

५०

यक पानी जो बरसे स्वाती।
कुरमिनि पहिरै सोने क पाती॥

स्वाती नक्षत्र एक बार भी बरस जाय, तो इतनी अच्छी फसल हो कि कुरमिनि सोने का गहना पहनेगी।

५१

पुक्ख पुनरबस भरे न ताल।
तो फिर भरिहैं अगलो साल॥

पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्रों में ताल न भरा; तो अगली बरसात में भरेगा।

५२

एक बूँद जो चैत में परै।
सहस बूँद सावन में हरै॥

चैत्र में एक बूँद भी पानी बरस जाय, तो वह सावन में हजार बूँद हरण कर लेगा, अर्थात् झूरा पड़ेगा।

५३

तपै मृगसिरा जोय!
तो वर्षा पूरन होय॥

मृगशिरा नक्षत्र अच्छी तरह तपे, तो वर्षा पूरी होगी।

५४

जेठ मास जो तपै निरासा।
तो जानो बरसा कै आसा॥

जेठ का महीना अच्छी तरह तपे, तो वर्षा की आशा करो।

५५

सिंहा गरजे। हथिया लरजे॥

सिंह नक्षत्र के गरजने से हस्त में वर्षा कम होगी।

५६

रोहिनि बरसै मृग तपै, कुछ कुछ अद्रा जाय।
कहैं घाघ सुनु भड्डरी, स्वान भात नहिं खाय॥

रोहिणी बरसे, मृगशिरा तपे और कुछ-कुछ आर्द्रा भी बरस दे, तो धान की ऐसी पैदावार होगी कि कुत्ते भी भात न खायेंगे।

५७

सावन सुक्ला सत्तमी, गगन स्वच्छ जो होय।
कहैं घाघ सुनु भड्डरी, पुहुमी खेती खोय॥

सावन सुदी सप्तमी को आकाश स्वच्छ हो, तो पृथ्वी पर की खेती नष्ट हो जायगी।

५८

आदि न बरसे आदरा, हस्त न बरसे निदान।
कहैं घाघ सुनु भड्डरी, भये किसान पिरान।

आर्द्रा नक्षत्र शुरू में और हस्त अंत में न बरसे तो किसान बेचारे पिस उठेंगे।

५९

अदरा गेल तीनि गेल, सन साठी कपास।
हथिया गेल सब गेल, आगिल पाछिल चास॥

आर्द्रा नक्षत्र के न बरसने से सन, साठी (धान) और कपास की फसल नष्ट हो जायगी; और हस्त के न बरसने से तो आगे-पीछे दोनों की फसलें मारी जायँगी।

६०

तपै मृगसिरा बिलखैं चार।
बन बालक औ भैंस उखार॥

मृगशिरा नक्षत्र के तपने से कपास, बालक, भैंस और ऊख, ये चार छटपटा कर रह जाते हैं। (गाय या भैंस का दूध कम हो जाने से बालक दुःख पाते हैं।)

६१

सावन सुक्र न दीसे, निहचै पड़े अकाल।

सावन में सुक्र तारा अस्त हो, तो निश्चय ही अकाल पड़ेगा।

६२

बरसे भरणी। छोड़े परणी॥

भरणी नक्षत्र बरसे तो (परिणीता) स्त्री को छोड़ना पड़ेगा। अर्थात् फसल नष्ट हो जायगी, और विदेश जाना पड़ेगा।

६३

किरती एक जबूकड़ो, ओगन सह गालिय।

कृत्तिका नक्षत्र में बिजली की एक चमक भी पहले के सब अशकुनों को नाश कर देती है।

६४

रोहन रेली। रुपया री अधेली॥

रोहिणी में वर्षा हो, तो अच्छी फसल आधी हो जायगी।

६५

पहली रोहन जल हरै, दूजो बहोतर खाय।
तीजी रोहण तिण हरै, चौथी समन्दर जाय॥

यदि पहली रोहिणी में वर्षा हो तो अकाल पड़ेगा; दूसरी में बहत्तर दिन तक सूखा पड़ेगा; तीसरी में घास न उगेगी और चौथी में मूसलधार वर्षा होगी।

६६

रोहन तपै नै मिरगला बाजै।
अदरा में अनचीतियो गाजै॥

रोहिणी में कड़ाके की गरमी पड़े और मृगशिरा में आँधी चले, तो आर्द्रा में मेघ खूब गरजेगा।

६७

रोहन बाजै मृगला तपै।
राजा जूझै परजा खपै॥

रोहिणी में आँधी चले और मृगशिरा में कड़ाके की धूप हो, तो राजा लड़ेंगे, प्रजा का नाश होगा।

६८

मिरगा बाउ न बाजिया, रोहन तपी न जेठ।
केनै बाँधो झूँपड़ो, बैठो बरलै हेठ॥

मृगशिरा में जोर की हवा न चले, और जेठ में रोहिणी नक्षत्र में कड़ाके की धूप न हुई, तो झोंपड़ी क्यों बनाते हो? बरगद के नीचे बैठ जाओ। अर्थात् पानी न बरसेगा।

६९

द्वै मूसा द्वै कातरा, द्वै टीड़ी द्वै ताव।
दोयाँ री बादी जल हरै, द्वै बीसर द्वै बाव॥

मृगशिरा के प्रथम दो दिनों में हवा न चले, तो चूहे पैदा होंगे, तीसरे चौथे दिन हवा न चले, तो गुबरीले पैदा होंगे, पाँचवें और छठे दिन हवा न चले, तो टीड़ी पैदा होंगी, सातवें और आठवें दिन हवा न चले, तो ज्वर फैलेगा, नवें और दसवें दिन हवा न चले, तो वर्षा कम हो, ग्यारहवें और बारहवें दिन हवा न चले, तो जहरीले कीड़े पैदा हों, और तेरहवें और चौदहवें दिन हवा न चले, तो खूब आँधी आयेगी।

७०

पहली आद टपूकड़े, मासाँ पाखाँ मेह।

आर्द्रा के लगते ही पानी बरस जाय, तो महीने पखवाड़े तक पानी बरसता रहेगा।

७१

आदरा बाजै बाय। झूँपड़ी जोला खाय॥

आर्द्रा में हवा चले, तो झोंपड़ी छोड़नी पड़े; अर्थात् अकाल पड़ेगा और परदेश जाना पड़ेगा।

७२

एक आदरा हाथ लग जाय।
जाट को सुख कहाँ समाय॥

आर्द्रा में एक बार भी वर्षा हो जाय, तो जाट की खुशी कहाँ समा सकती है?

७३

आदरा भरै खावड़ा, पुनरबस भरै तलाव।
नै बरस्यो पुखै, तो बरसै घणा दुखे॥

आर्द्रा में वर्षा हो, तो गड्ढे पानी से भर जायँगे; पुनर्वसु में बरसे, तो तालाब भर जायँगे, और पुष्य में न बरसे, तो फिर कठिनता से बरसेगा।

७४

असलेखा बूँठा, बैदाँ घरे बधावणाँ।

अश्लेषा में वर्षा हो, तो वैद्यों के घर में बधाई बजेगी, अर्थात् रोग फैलेगा।

७५

मघा माचंत मेहा।
नहीं तो उड़ंत खेहा॥
मघा मेह माचंत।
नहीं तो गच्छंत॥

मघा में या तो वर्षा होगी, या फिर धूल उड़ेगी और मेघ चले ही जायँगे।

७६

आखा रोहिन बायरी, राखी स्रवन न होय।
पोही मूल न होय तौ, महि डोलंती जोय॥

अक्षय तृतीया को रोहिणी न हो, रक्षा-बंधन के दिन श्रवण न हो, और पौष की पूर्णिमा को मूल न हो, तो पृथ्वी काँप उठेगी।

७७

दीवा बीती पंचमी, सोम सुकर गुर मूर।
डंक कहै हे भड्डुली, निपजे सातो तूर ॥

कार्तिक सुदी पंचमी को यदि मूल नक्षत्र में सोमवार, शुक्रवार या बृहस्पतिवार पड़े, तो सातो प्रकार के अन्न पैदा होंगे।

७८

मघा के बरसे माता के परसे।
भूखा न माँगे फिर कुछ हरसे ॥

मघा बरसे और माता परसे, तो भूखे को भगवान् से कुछ माँगना न पड़ेगा।

७९

मघा में मक्कर पुरवा डाँस। उत्रा में भइ सब कै नास ॥

मघा नक्षत्र में मकड़ी और पूर्वा में डाँस पैदा होते हैं, उत्तरा में सबका नाश हो जाता है।

८०

आर्द्र चौथ मघ पंचक।

आर्द्रा नक्षत्र बरसता है तो आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और अश्लेषा चारों नक्षत्र बरसते हैं; और जब मघा बरसता है तो मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त और चित्रा, ये पाँचों नक्षत्र बरसते हैं।

चँद्र-परीक्षा

१

जाड़े में सूतो भलो, बैठो वर्षा काल।
गरमी में ऊभो भलो, चोखो करै सुकाल ॥

द्वितीया का चंद्रमा जाड़े में सोया हुआ, वर्षा काल में बैठा हुआ और गरमी में खड़ा शुभ है।

२

काती पूनम दिन कृति, चंद्र मघा ने जोय।
आगे पीछे दाहिने, जिणसूँ निश्चै होय ॥

आगे होय तो अन नहीं, पाछे होय तो ईत।
पीठ हुयाँ परजा सुखी, निस दिन रहो निचीत ॥

कार्तिक की पूर्णमासी को देखो, चंद्रमा का मध्य किस ओर है—आगे है, या पीछे, या दाहिने। यदि आगे होगा, तो अन्न नहीं उपजेगा, दाहिने होगा, तो ईतिभीति (अति वृष्टि, अनावृष्टि, चूहा, टिड्डी, तोते और राजविद्रोह) होगी, और पीछे होगा, तो प्रजा सुखी और रात दिन निश्चिंत रहेगी।

३

सोमाँ सुकराँ सुरगुराँ, जो चंदो ऊगंत ॥
डंक कहै हे भड्डरी, जल थल एक करंत।

सोमवार, शुक्रवार और गुरुवार को यदि असाढ़ में चंद्रमा उदय हो, तो ऐसी वृष्टि होगी कि जल-थल एक हो जायगा।

४

सावन तो सूतो भलो, ऊभो भलो असाढ़।

द्वितीया का चंद्रमा सावन में सोया हुआ अच्छा और असाढ़ में खड़ा हुआ।

५

आसाढ़े धुर अष्टमी, चंद उगंतो जोय।
कालो वै तो करवरो, धोलो वै तो सुगाल ॥
जो चंदो निरमल हवै, पड़े अचिन्त्यो काल।

आषाढ़ बदी अष्टमी को उदय होते हुये चंद्रमा को देखो, वह काले बादलों में हो, तो साधारण, सफेद बादलों में हो, तो सुकाल, और बिना बादल का हो, तो निश्चय अकाल पड़ेगा।

६

आधे जेठ अमावस्या, रवि आथिमनो जोय।
बीज जो चंदो ऊगसी, साख भरेला होय ॥
उत्तर होय तो अति भलो, दक्खिन होय दुकाल।
रवि माथे ससि आथमे, आधो एक सुगाल ॥

जेठ की अमावस्या को जहाँ सूर्योदय होता है, उस स्थान को याद

रक्खो। यदि जेठ सुदी द्वितीया का चंद्रमा उस स्थान से उत्तर में हो, त जमाना अच्छा होगा; दक्षिण में हो तो अकाल पड़ेगा; और यदि उसं स्थान पर हो, तो समय साधारण होगा।

७

पोह सबिभल पेखजै, चैत निरमला चंद।
डंक कहै हे भड्डली, मणहूता अन मंद॥

पौष में बादल हों और चैत्र में चंद्रमा निर्मल हो, तो अन्न रुपये ं एक मन से भी सस्ता हो जायगा।

८

असाढ़ मास आठैं अँधियारी। जो निकले चंदा जलधारी॥
चंदा निकले बादर फोर। साढ़े तीन मास वर्षा का जोर॥

आषाढ़ बदी अष्टमी को चंद्रमा बादलों से घिरा हुआ हो, और बादल में से निकले, तो साढ़े तीन मास तक वर्षा जोर की होगी।

वायु-परीक्षा

१

होली झर को करो बिचार। सुभ अरु असुभ कहौं फल सार॥
पूरब दिसि की बहै जो बाय। कछु भीजै कछु कोरा जाय॥
पच्छिम वायु बहै अति सुंदर। समयो निपजै सजल बसुंधर॥
उत्तर बाय बहै दड़वांड़या। पिरथी अचूक पानी पड़िया॥
दक्खिन बाय बहै धन नास। समया निपजै सनई घास॥
जोर झकोरैं चारों बाय। दुखिया पिरथी जीव डराय॥
जोर झलौं आकासे जाय। तौ पिरथी संग्राम कराय॥

होली के दिन की हवा का विचार करो। उसके शुभ और अशुभ फलों का सार बताया जाता है।

पूरब की हवा बहे तो कुछ वृष्टि होगी, कुछ सूखा पड़ेगा।

पश्चिम की हवा बहे, तो बहुत अच्छा है। उसमें पैदावार अच्छी होगी और वृष्टि होगी।

दक्खिन की हवा बहे, तो प्राणियों का वध और नाश होगा। औ सनई और घास की पैदावार अच्छी होगी।

उत्तर की हवा बहती हो, तो पृथ्वी पर निश्चय पानी बरसेगा।

चारों ओर से झकोरा चलता हो, तो दुःख बढ़ेगा और जीवों को भय होगा।

यदि हवा आकाश की ओर जोर से जाय तो पृथ्वी पर युद्ध होगा।

२

असाढ़ मास पुनर्गोना। धुजा बाँधि के देखो पौना॥
जो पै पवन पुरुब से आवै। उपजै अन्न मेघ झरि लावै॥
अगिन कोन जो बहै समीरा। पड़ै काल दुख सहै सरीरा॥
दखिन बहै जल थल अलगीरा। ताहि समय जूझैं सब बीरा॥
तीरथ कोन बूँद ना परै। राजा परजा भूखन मरैं।
पच्छिम बहै नीक करि जानो। पड़ै तुसार तेज डर मानो॥
वायव बह जल थल अति भारी। मूस उगाह दंड बस नारी॥
उत्तर उपजै बहु धन धान। खेत बास सुख करै किसान॥
कोन इसान दुंदुभी बाजै। दही भात भोजन सब गाजैं॥

आषाढ़ महीने की पूर्णमासी को झंडी खड़ी करके हवा का रुख देखो।

पूरब की हवा हो, तो पैदावार अच्छी होगी और वृष्टि बहुत होगी।

अग्नि-कोण (पूर्व-दक्षिण) की हवा हो, तो अकाल पड़ेगा और शरीर को कष्ट होगा।

दक्षिण की हवा हो, तो पानी से जल-थल एक हो जायँगे और उसी समय बड़े-बड़े वीर लड़ मरेंगे।

तीर्थ-कोण (दक्षिण-पश्चिम) की हवा हो तो बरसात न होगी और राजा प्रजा दोनों भूखों मरेंगे।

पश्चिम की हवा हो, तो मौसम अच्छा होगा, लेकिन पाला बहुत पड़ेगा।

वायव्य (पश्चिम-उत्तर) कोन की हवा हो, तो पानी बहुत बरसेगा पर चूहे बहुत पैदा होंगे और हानि पहुँचायेंगे, और स्त्रियों को कष्ट होगा।

उत्तर की हवा हो तो धन-धान्य की उपज बहुत होगी और किसान मौज करेंगे।

ईशान (पूर्व-उत्तर) कोन की हवा हो, तो पैदावार अच्छी होने के कारण शादी-ब्याह अधिक होंगे, नगाड़े बजेंगे और लोग दही-भात खाकर मस्त रहेंगे।

३

जब जेठ बहै पुरवाई। तब सावन धूरि उड़ाई॥

जेठ में पूरब की हवा बहे, तो सावन में धूल उड़ेगी; अर्थात् सूखा पड़ेगा।

४

भादों जै दिन पछिवँ बयार। तै दिन माघे परै तुपार॥

भादों में जितने दिन पछुवाँ हवा चलेगी, उतने दिन माघ में पाला पड़ेगा।

५

सावन पुरवाई बहै, भादों में पछियावँ।
कंत डँगरवा बेंचिके, लरिका भागि जिआव॥

सावन में पूरब की हवा चले और भादों में पश्चिम की, तो हे स्वामी! बैलों को बेंच डालो और कहीं भागकर बच्चों को जिलाओ।

६

अम्या झोर बहै पुरवाई। तब जानो बरषा ऋतु आई॥

पूरब की हवा ऐसे जोर से बहे, कि आम के पेड़ झकझोर उठें, तब समझना कि वर्षा-ऋतु आ गई।

७

पहला पवन पुरब से आवै। बरसै मेघ अन्न सरसावै॥

बरसात शुरू होते ही पहले-पहल पूरब की हवा चले, तो बादल बरसेंगे और अन्न की उपज अच्छी होगी।

८

जौ पुरवा पुरवाई पावे। झूरी नदिया नाव चलावै॥

पूर्वा नक्षत्र में पूरब की हवा बहे, तो सूखी नदी में भी वह नाव चलवा देगा।

९

एक बयार बहै जो ऊता। मेंड से पानी पीयो पूता॥

उत्तर की हवा एक बार भी बह जाय, तो इतना पानी बरसेगा कि मेंड पर ही से पानी लेकर पी लोगे।

१०

बयार चले ईसाना। ऊँचो खेती करो किसाना॥

ईसान (पूर्व-उत्तर) कोन की हवा बहे, तो हे किसान! ऊँचे खेतों में भी खेती करना।

११

दिन सात चले जो बाँड़ा। सूखे जल सातो खाँड़ा॥

बाँड़ा (पूर्व-दक्षिण की हवा) सात दिनों तक लगातार चले, तो पृथ्वी के सातो खंडों का जल सूख जायगा।

१२

बाउ चले जो पछिमा। माँड़ कहाँ से चखना॥

असाढ़ में पछुवाँ हवा चले, तो माँड़ (भात का पसाया हुआ पानी) कहाँ से चखोगे? अर्थात् धान की फसल न होगी।

१३

बाउ चले जो उतरा। माँड़ पियेंगे कुतरा॥

उत्तर की हवा चलेगी, तो इतना धान होगा कि कुत्ते भी माँड़ पियेंगे।

१४

बाउ चले जो दखिना। डोला पानी लखना॥

दक्खिन की हवा चलेगी तो धान न होगा। पानी डोल (बाल्टी) ही में देखने को मिलेगा।

१५

बाउ चले जो पुरवा। पिओ माँड़ का कुरवा॥

पूरब की हवा चलेगी, तो घड़ों माँड़ पीना; धान की फसल अच्छी होगी।

१६

सब दिन बरसे दखिना बाय। कभी न बरसे बरखा पाय॥

दक्खिन की हवा से बरसात को छोड़ कर सभी मौसमों में पानी बरसता है।

१७

सावन पछिवाँ भादों पुरवा, आसिन बहै इसान।
कातिक कंता सींक न डोलै, गाजैं सबै किसान॥

सावन में पछुवाँ, भादों में पुरवा और कुआर में ईशान (पूर्व-उत्तर) कोन की हवा बहे और कातिक में हवा बिलकुल न बहे, तो पैदावार बहुत अच्छी होगी और सभी किसान आनंद मनायेंगे।

१८

माघ पूस जो दखिना चले। तो सावन के लच्छन भले॥

माघ और पौष में दक्खिन की हवा चले, तो सावन में अच्छी वर्षा होगी।

१९

सावन के मुख पछिमा। उहै समै की लछिमा॥

सावन में पछुवाँ हवा बहे, तो समय के लक्षण अच्छे हैं।

२०

औवा वौवा बहे बतास। तब जानो बरखा कै आस॥

जब हवा अनिश्चित गति से बहे, तब समझना कि पानी बरसेगा।

२१

जब बहे हड़हवा कोन। तब बनजारा लादे नोन॥

जब हड़हवा (दक्षिण-पश्चिम) कोन की हवा बहे, तब बनजारा (व्यापारी) नमक लादता है; क्योंकि पानी न बरसेगा और नमक के गलने का डर न रहेगा।

२२

पुरवा में जो पछुवाँ बहै। हँसि के नारि पुरुष से कहै॥
ऊ बरसे ई करे भतार। घाघ कहैं ई सगुन विचार॥

पूर्वा नक्षत्र में पछुवाँ हवा बहे, तो पानी बरसेगा। और स्त्री पर-पुरुष से हँसकर बातें करे, तो वह दूसरा पति कर लेगी; घाघ ऐसा कहते हैं।

२३

फागुन मास बहै पुरवाई। तब गोहूं में गेरुई धाई॥

फागुन में पूरब की हवा बहे, तो गेहूँ में गेरुई रोग लग जायगा।

२४

माघै पूस बहै पुरवाई। तब सरसों को माँहूँ खाई॥

पूस और माघ में पूरब की हवा बहे, तो सरसों में माँहूँ रोग लग जायगा।

२५

सावन क पछुवाँ दिन दुइ चार। चूल्ही के पीछे उपजै सार॥

सावन में दो चार दिन भी पछुवाँ बहे, तो चूल्हे के पीछे भी अन्न पैदा होगा। अर्थात् खेती अच्छी होगी।

२६

सावन मास बहै पुरवाई। बरधा बेंचि लिह्यो धेनु गाई॥

सावन में पूरब की हवा बहे, तो बैल बेंच डालना; क्योंकि फसल न होगी और कामधेनु गाय खरीद लेना; जो सदा दूध देती है, उसी मे गुजर करना।

२७

दखिनी कुलछिनी। माघ पूस सुलछिनी॥

दक्खिन की हवा अच्छी नहीं होती; पर पौष और माघ में यह लाभदायक होती है।

२८

चैत के पछुवाँ भादों जल्ला। भादों पछुवाँ माघ क पल्ला॥

चैत में पछुवाँ बहे, तो भादों में जल गिरेगा; और भादों में पछुवाँ बहे, तो माघ में पाला पड़ेगा।

२९

बायू में जब बायु समाय। घाघ कहैं जल कहाँ अमाय॥

जब हवा के भीतर हवा का झोंका समाकर चले, तब घाघ कहते हैं कि जल इतना बरसेगा कि कहाँ अँटेगा ?

३०

छिन पुरवैया छिन पछियावँ। छिन छिन बहै बबूला वाव॥
बादर ऊपर बादर धावै। तब भड्डर पानी बरसावै॥

कभी पूर्वा हवा बहे, कभी पछुवाँ, और कभी बार-बार बवंडर बाँधकर बहे, साथ ही बादल के ऊपर बादल उमड़ते हुये चलें, तो भड्डर कहते हैं, कि वृष्टि होगी।

वृष्टि के लक्षण

१

पूरब का घन पच्छिम चलै।
राँड़ बतकही हँसि हँसि करै॥
ऊ बरसै ऊ करै भतार।
भड्डर क मन यही विचार॥

यदि पूरब की ओर से बादल पश्चिम को जायँ, तो वर्षा होगी और विधवा हँस-हँस कर बातें करे, तो वह किसी मर्द से संबंध जोड़ लेगी।

२

तीतर बरनी बादरी, रहे गगन पर छाय।
डंक कहै सुनु भड्डली, बिन बरसे ना जाय॥

यदि तीतर के पंख की तरह लहरदार बदली आकाश में छाई रहे, तो वह बिना बरसे नहीं जायगी।

३

तीतर बरनी बादरी, बिधवा पान चबाय।
ऊ पानी लै आवै, ई पानी लै जाय॥

यदि तीतर के पंख जैसी बदली आकाश में छा जाय, तो वह पानी ले आयगी। और विधवा पान खायगी तो वह पानी (इज्जत) ले जायगी।

४

पवन थक्यो तीतर लवै. गुरहिं सदेवै नेह।
कहत भड्डरी जोतिसी, वा दिन बरसे मेह॥

हवा थम गई हो, तीतर जोड़ा खाते हों, गुड़ चिकना हो गया हो, तो उस दिन पानी बरसेगा।

५

कलसे पानी गरम हो. चिड़ियाँ न्हावैं धूर।
अंडा लै चींटी चलैं, तौ बरखा भरपूर॥

यदि घड़े में पानी गरम जान पड़े, चिड़ियाँ धूल में नहाती हों, और चींटी अंडे लेकर चलें, तो अच्छी वर्षा होगी।

६

बोलै मोर महातुरी, खाटी होय जु छाछ।
मेह मही पर परन को, जानो काछे काछ॥

यदि मोर जल्दी जल्दी बोलें और मट्ठा खट्टा हो जाय, तो समझना कि बादल बरसने के लिए कछनी काछे हैं।

७

सुक्कर वारी बादरी, रहे सनीचर छाय।
तो यों भाखै भड्डरी, बिन बरसे ना जाय॥

शुक्रवार को बदली हो और वह सनीचर को भी रहे, तो बिना बरसे नहीं जायगी।

८

भादों जै दिन पछुवाँ ब्यारी।
तै दिन माघे परे तुसारी॥

भादोंमें जितने दिन पछुवाँ हवा बहेगी, माघ में उतने ही दिन पाला पड़ेगा।

९

जै दिन जेठ बहे पुरवाई।
तै दिन सावन धूरि उड़ाई॥

जेठ में जितने दिन पूर्वा हवा चलेगी, सावन में उतने दिन सूखा पड़ेगा।

१०

सावन पुरवाई चलै, भादों में पछियावँ।
कन्त डँगरवा बेंचिके, लरिका भागि जियाव॥

यदि सावन में पूर्वी हवा चले और भादों में पछुवाँ, तो सूखा पड़ेगा। हे कंत, कहीं भाग जाओ और कमाकर बच्चों को जिलाओ।

११

मोर पंख बादर उठे, राँड़ाँ काजर रेख।
वह बरसे वह घर करे, या में मीन न मेख॥

मोर के पंख की तरह लहरदार बदली छायी हो, और विधवा काजल लगाये हो, तो बदली बरसेगी और विधवा किसी मर्द के साथ बैठ जायगी इसमें शक नहीं।

१२

कर्क के मंगल होयँ भवानी।
दैव धूर बरसेंगे पानी॥

यदि सावन में कर्क राशि पर मंगल हों, तो पानी जरूर बरसेगा।

१३

सूरज तेज सतेज आड बोले अनयाली।
मही माठ गल जाय पवन सिर बैठे छाली॥
कोड़ी मेलें इंड चिड़ी रेत म नहावै।
काँसो कामन दौड़ आम लीलो रंग आवै॥
डेउरो उहक बाड़ाँ चढ़े. बिसहर चढ़ि बैठे बड़ाँ।
पाँडियाजोतिसभूठापड़े, घनबरसे इतरागुणाँ॥

धूप की तेजी बढ़ जाय, बत्तक चिल्लाने लगे, घी पिघल जाय, बकरी हवा के रुख पर पीठ करके बैठे, चींटियाँ अंडे लेकर चलें, गौरैया धूल में नहाय, काँसे का रंग फीका पड़ जाय, आकाश गहरे नीले रंग का हो जाय, मेढक काँटों की बाड़ में घुस जायँ, और साँप बरगद के पेड़ पर चढ़ कर बैठें, तो वर्षा होगी ज्योतिषी का कथन झूठा हो सकता है, पर ये लक्षण झूठे नहीं हो सकते।

१४

बियलियाँ बोलैं रात निमाई।
छाती बाड़ाँ बैस छिकाई॥
गोहाँ रांग करै गरणाई।
जोराँ मेह भोराँ अजगाई॥

रात भर झिंगुर बोले, बाड़ के पास बैठ कर बकरी छींके, गोह जोर से चिल्लाय और मोर बोलें तो वर्षा होगी।

१५

दूर गुड़सा दूर पानी।
नीयर गुड़सा नीयर पानी॥

गुड़सा (रीवाँ नामका एक कीड़ा) पेड़ पर ऊँचे चढ़ कर बोले तो पानी दूर में आयेगा और जमीन से कम ऊँचाई पर चढ़ कर बोले, तो वर्षा निकट समझनी चाहिये।

१६

करिया बादर जिउ डरवावइ।
भूरे बदरे पानी आवइ॥

काला बादल केवल डरावना होता है, पानी भूरे रंग के बादल से बरसता है।

१७

धनुष पड़ै बंगाली।
मेह साँझ या सकाली॥

यदि बंगाल की तरफ अर्थात् पूरब ओर इन्द्र-धनुष निकले, तो वर्षा सबेरे साँझ किसी समय आ सकती है; निकट ही है।

१८

सब दिन बरसे दखिना बाय।
कभी न बरसै बरखा पाय॥

दक्खिन से बहनेवाली हवा हमेशा पानी बरसाती है; किन्तु वर्षा-काल में नहीं।

१९

पूरब के बादर पच्छिम जायँ।
पतली पकावै मोटी पकाय॥
पछुवाँ बादर पूरब क जायँ।
मोटी पकावै पतली पकाय॥

पूरब के बादल पश्चिम को जायँ, तो अन्न की कमी के विचार से पतली रोटी पकाते हो, तो मोटी पकाओ; क्योंकि अभी बरसेगा और अन्न होगा। और यदि पश्चिम के बादल पूरब को जायँ, तो यदि मोटी रोटी पकाते हो, तो पतली पकाओ, ताकि कमी न पड़े; क्योंकि पानी नहीं बरसेगा।

२०

उत्तर चमकै बीजली, पूरब बहनो बाउ।
घाघ कहैं भड्डर से, बरधा भीतर लाउ॥

उत्तर दिशा में बिजली चमके और पूरब की हवा बह रही हो, तो बैल को भीतर बाँध लो, जल्दी वर्षा होगी।

२१

पुरवा में जो पछुवाँ बहे।
हँसि के नारि पुरुष से कहे॥
ऊ बरसे ई करे भतार।
घाघ कहैं यह सगुन विचार॥

पूर्वा हवा बहती हो, उसी समय पछुवाँ चलने लगे; या पूर्वा नक्षत्र में पश्चिम की हवा बहे, तो पानी बरसेगा; और स्त्री हँस-हँस कर पर-पुरुष से बात करे, तो वह पुंश्चली होगी।

२२

छिन पुरवैया छिन पछियावँ।
छिन छिन बहै बबूला बाव॥
बादर ऊपर बादर धावै।
कहैं घाघ पानी बरसावै॥

क्षण में पूरब की हवा चले, क्षण में पश्चिम की; बार-बार बवंडर उठे और बादल के ऊपर बादल दौड़े, तो पानी बरसेगा।

२३

बाउ चलेगी दखिना।
माँड़ कहाँ से चखना॥

दक्खिन की हवा चलेगी तो धान न होगा, माँड़ चखने को कहाँ से मिलेगा?

२४

बाउ चलेगी उतरा।
माँड़ पियेंगे कुतरा॥

उत्तर की हवा चलेगी; तो इतना धान होगा कि कुत्ते भी माँड़ चखेंगे।

२५

बाउ चलेगी पुरवा।
पिओ माँड़ का कुरवा॥

पूरब की हवा चलेगी, तो उपज अच्छी होगी, फिर तो बड़ों माँड़ पीना।

२६

चमकै पच्छिम उत्तर ओर।
तब जान्यो पानी है जोर॥

उत्तर और पश्चिम दिशा में बिजली चमके, तो समझना, पानी बहुत बरसेगा।

२७

पहला पवन पुरब से आवै।
बरसे मेघ अन्न झरि लावै॥

आषाढ़ में पहली हवा यदि पूरब से बहे, तो पानी बरसेगा और अन्न बहुत उपजेगा।

२८

पुरवा बादर पच्छिम जाय।
वासे वृष्टि अधिक बरसाय॥
जो पच्छिम से पूरब जाय।
वर्षा बहुत न्यून हो जाय॥

पूरब से बादल पश्चिम को जायँ, तो वृष्टि बहुत होगी और पश्चिम से पूरब को जायँ तो कम होगी।

२९

भल भल बके पपइयो वाणी।
कँपल कैर तणी कमलाणी॥
जलहलतो ऊगो रवि जाणी।
पहराँ माँय अवसरे पाणी॥

पपीहा चारोंओर पी-पी रटता हुआ फिरे, करील की कलियाँ कुम्हला जायँ, और सूर्योदय के समय धूप कड़ी हो, तो समझना कि एक पहर के अन्दर ही पानी बरसेगा।

३०

आभा राता। मेह माता॥

आकाश लाल हो, तो वर्षा बहुत हो।

३१

ऊगन्तेरो माछलो, अथअंतेरी मोग।
डंक कहै हे भडुली, नदियाँ चढ़सी गोग॥

यदि प्रातःकाल इन्द्र-धनुष हो और संध्या को सूर्य का प्रकाश लाल दिखाई पड़े, तो ऐसी वर्षा होगी कि नदियों में बाढ़ आ जायगी।

३२

दुश्मन की कृपा बुरी, भली मित्र की त्रास।
आडंग कर गरमी करै, जद बरसण की आस॥

शत्रु की कृपा की अपेक्षा मित्र की डाट-डपट अच्छी होती है। जब कड़ाके की गरमी हो और पसीना न सूखे, तो वर्षा की आशा होती है।

३३

सवारो गाजियो, नै सापुरुष को बोलियो।
एल्यो नहीं जाय॥

सवेरे का गरजना और सत्पुरुष का वचन निष्फल नहीं जाता।

३४

पानी, पाला, पारसा, उत्तर सूँ आवै॥

पानी, पाला और बादशाह उत्तर से आते हैं। (भारत पर विदेशियों की चढ़ाइयाँ प्रायः पश्चिमोत्तर दिशा से हुई हैं, और मारवाड़ पर तो सारी चढ़ाइयाँ दिल्ली से हुई हैं, जो ठीक उत्तर दिशा में है।)

३५

नाड़ी जल हुवै तातो न्हाली।
थिरक रवै नीलो रँग थाली॥
चहक बैठ सीरे चूँचाली।
काँटल बँधे उतर दिस काली॥
जिण दिन नीली जले जवासी।
माँड़े राड़ बाघ री माँसी॥
बादल रहे रात रा बासी।
तो जाणो चौकस मेह आसी॥

तालाब का जल गरम हो जाय, काँसे की थाली नीली पड़ जाय; पनडुब्बी पेड़ पर चढ़ कर बोले; उत्तर दिशा में काली घटा घिरी हों; हरा जवासा जल जाय; बिल्लियाँ लड़ें और रात के बादल सवेरे तक रहें, तो समझना कि वर्षा अवश्य होगी।

३६

बिरछाँ चढ़ किरकाँट बिराजे।
स्याह सपेत लाल रँग साजे॥
बिजनस पवन सूरिया बाजे।
घड़ी पलक माँहे मेह गाजे॥

गिरगिट पेड़ पर चढ़ कर काला, सफेद या लाल रंग धारण करे, और वायु उत्तर-पश्चिम से चले, तो घड़ी-पलक में वर्षा आयेगी।

३७

ऊँचो नाग चढ़ै तर ओड़े।
दिस पछिमाँण बादला दोड़े॥
सारस चढ़ असमान सजोड़े।
तो नदियाँ ढाहा जल तोड़े॥

साँप पेड़ की चोटी पर चढ़े, मेघ पश्चिम दिशा को दौड़ें और सारसों के जोड़े आकाश में उड़ें, तो नदी का जल किनारे को तोड़कर बहेगा।

३८

पवन बाजै पूरियो। हाली हलावकी न पूरियो॥

उत्तर-पश्चिम की हवा चले, तो नई जमीन में हल न चलाओ। वर्षा जल्दी ही होगी।

३६

ऊमस कर घृत माठ जमावै।
ईंडा कीड़ी बाहर लावै॥
नीर विना चिड़ियाँ रज न्हावै।
मेह बरसे घर माँझ न मावै॥

गरमी से घड़े में घी पिघल जाय, चींटियाँ अंडे लेकर बाहर चलें, चिड़ियाँ बालू में नहायँ, तो इतना पानी बरसेगा कि घर में न समायेगा।

४०

जटा बढ़े बड़ री जद जाणाँ।
बादर तीतर पंख बखाणाँ॥
अवस नील रँग हुवै असमाना।
घण बरसे जल रो घमसाणा॥

बरगद की जटा बढ़ने लगे, बादल का रंग तीतर के पंख की तरह हो जाय, और आकाश का रंग गहरा नीला हो जाय, तो घमासान वर्षा होगी।

४१

गले अमर गुलरी हूँ गारी।
रवि सिसरे दोली कुंडारी॥
सुरपत धनख करै बिध सारी।
ऐरावत मघवा असवारी॥

अफीम गलने लगे, गुड़ में पानी छूटने लगे, सूर्य और चंद्रमा के चारों-ओर कुण्डली हो और इन्द्र-धनुष पूरा दिखाई दे, तो इन्द्र ऐरावत पर चढ़ कर (पानी बरसाने) आवेंगे ।

४२

पवन गिरी छूटै परवाई।
ऊठे घटा छटा चढ़ आई॥
सारो नाज करै सरसाई।
धर गिरि छोलाँ इन्द्र धपाई॥

पूर्वा हवा चले, बिजली की चमक के साथ बादल घिर आयें तो अन्न की उपज अच्छी होगी; इन्द्र पानी से पृथ्वी और पहाड़ को अघा देंगे ।

४३

उतरे जेठ जो बोलैं दादर।
कहैं भड्डरी बरसैं बादर॥

जेठ उतरते ही मेढक बोलने लगें, तो पानी बरसेगा ।

४४

ईसानी । बिसानी॥

ईशान-कोन में बिजली चमके, तो वर्षा अच्छी होगी ।

४५

अगहन द्वादसि मेघ अखाड़।
असाढ़ बरसे अछना धार॥

अगहन की द्वादशी को बादलों का जमघट हो, तो आषाढ़ में जोर की वर्षा होगी ।

४६

उलटे गिरगिट ऊँचे चढ़ै।
बरखा होइ भूइँ जल बुड़ै॥

गिरगिट पेड़ पर पूँछ ऊपर की ओर करके चढ़े, तो समझना चाहिये कि इतनी वर्षा होगी कि पृथ्वी पानी से डूब जायगी।

४७

ढेले ऊपर चील जो बोलै।
गली गली में पानी डोलै॥

चील ढेले पर बैठकर बोले, तो समझना चाहिये कि इतना पानी बरसेगा कि गली-कूचे पानी से भर जायँगे।

४८

अम्बा-झोर चलै पुरवाई।
तब जानो बरखा ऋतु आई॥

पूर्वा-हवा इतने जोर से चले कि आम के पेड़ झकझोर उठें, तो समझना कि वर्षा-ऋतु आ गई।

४९

उलटा बादर जो चढ़े, विधवा खड़ी नहाय।
घाघ कहैं सुनु भड्डरी, वह बरसे वह जाय॥

जब पूर्वा हवा में पश्चिम के बादल चढ़ें और विधवा खड़ी होकर स्नान करे, तो बादल बरसेंगे और विधवा किसी पुरुष को लेकर भाग जायगी।

५०

साँझे धनुष सकारे मोरा।
ये दोनों पानी के बौरा॥

शाम को इन्द्र-धनुष दिखाई पड़े और सबेरे मोर बोलें, तो वर्षा बहुत होगी।

५१

पूनो परिवा गाजै।
दिना बहत्तर नाजै॥

आषाढ़ की पूर्णमासी और प्रतिपदा को बिजली चमके, तो बहत्तर दिनों तक वर्षा होगी।

५२

वायू में जब बाउ समाय।
कहैं घाघ जल कहाँ अमाय॥

एक ही समय में आमने-सामने को दो हवा चलें, तो बड़ी वृष्टि होगी।

५३

एक मास ऋतु आगे धावै।
आधा जेठ असाढ़ कहावै॥

मौसम एक महीना आगे चलता है। आधे जेठ ही से असाढ़ समझना चाहिये और खेती की तैयारी कर लेनी चाहिये।

५४

सावन उखमें भादों जाड़। बरखा मारे ठाढ़ कछाँड़॥
जौ पुरवा पुरवाई पावै। ओरीक पानि बँड़ेरी धावै॥

सावन में गरमी और भादों में जाड़ा पड़े, तो समझो कि वर्षा काँछ बाँधकर कूद पड़ने के लिये खड़ा है। पूर्वा नक्षत्र अगर पूरब की हवा पा जाय, तो इतना पानी बरसेगा कि ओलती का पानी उलटे बँडेर पर चढ़ जायगा।

५५

धनि वह राजा धनि वह देस। जहवाँ बरसे अगहन सेस॥
पूस में दूना माघ सवाई। फागुन बरसै घरौं से जाई॥

वह राजा और देश धन्य है, जहाँ अगहन के अन्त में वर्षा होती है। पौष में वर्षा होगी, तो पैदावार दूनी और माघ में होगी, तो सवाई ज्यादा होगी। फागुन में वर्षा होगी तो घर की पूँजी भी चली जायगी।

५६

भुअरि भौंसिया चँदुली जोय। पूस महाबट बिरले होय।

भूरे रंग की भैंस, गंजे सिर की स्त्री और पौष के महीने में महावृष्टि, ये कभी ही कभी मिलती हैं।

५७

जो हरि होंगे बरसन हार। काह करेगी दखिन बयार॥

जो भगवान् बरसना चाहेंगे तो दक्खिन की हवा क्या करेगी?

५८

जेठ मास जो तपै निरासा। तब जानो बरसा की आसा॥

जेठ का महीना बिलकुल तपे, तब समझना कि वर्षा की आशा है।

५९

साँझै धनुक बिहानै पानी। घाघ कहैं सुनु पंडित ज्ञानी॥

घाघ कहते हैं कि शाम को इंद्र-धनुष दिखाई पड़े, तो अगले दिन वर्षा होगी।

६०

सावन पहली पंचमी, झीनी छाँट पड़ै।
डंक कहै हे भड्डली, सफला रूख फरै॥

सावन बदी पंचमी को हलके छींटे पड़ें, तो वृष्टि अच्छी होगी और फल वाले वृक्षों में फल आयेंगे।

६१

सावण मास सूरियो बाजै, भादरवे परवाई।
आसोजाँ में समदरि बाजै, काती साख सवाई॥

सावन में उत्तर-पश्चिम की, भादों में पूरब की, और क्वार में पश्चिम की हवा चले तो कातिक में पैदावार सवाई होगी।

६२

सोमाँ सुकराँ बुध गुराँ, पुरवाँ धनुष तणै।
तीजे चौथे देहरै, समदर ठेल भरै॥

सोमवार, शुक्रवार, बुधवार और बृहस्पतिवार को पूर्व दिशा में इन्द्र-धनुष निकले, तो उसके तीसरे चौथे दिन इतनी वृष्टि होगी कि समुद्र भर जायगा।

६३

जो बदरी बादर माँ खमसे। कहैं भड्डरी पानी बरसे॥

बदली होने पर यदि गरमी बढ़ जाय, तो पानी बरसेगा।

अनावृष्टि के लक्षण

१

रात निर्मली दिन कै छाहीं।
कहैं भड्डरी वर्षा नाहीं॥

रात में आकाश स्वच्छ रहे और दिन में बादल छाया किये रहें, तो वर्षा गई।

२

उदित अगस्त पंथ जल सोखा।

अगस्त तारा के उदय होने पर रास्ते का जल सूख जाता है; अर्थात् वर्षा बंद हो जाती है।

३

अगस्त ऊगा। मेह पूगा॥

अगस्त तारा उदय हुआ और वर्षा समाप्त हुई।

४

आभाँ पीला। मेह सीला॥

आकाश पीला हुआ तो वर्षा गई।

५

अगस्त ऊगा मेह न मंडे।
जो मंडे तो धार न खंडे॥

अगस्त तारे के उदय होने पर बादल घिरते ही नहीं; घिरते हैं तो मूसलाधार वर्षा होती है।

६

परभाते मेह डंबरा, दोपहराँ तपंत।
रातू तारा निरमला, चेला करो गच्छंत॥

प्रातःकाल मेघ दौड़ते हों और दोपहर को कड़ी धूप हो, तथा रात को निर्मल आकाश में तारे दिखाई पड़ते हों, तो अकाल पड़ेगा, भाग चलो।

७

उगे अगस्त फुले बन कास।
अब छोड़ो बरषा कै आस॥

अगस्त तारा उदय हुआ और बन में कास फूल आई, अब वर्षा की आशा छोड़ दो।

८

दिन में गरमी रात में ओस।
कहैं घाघ वर्षा सौ कोस॥

दिन में गरमी पड़े और रात में ओस, तो वर्षा दूर गई जानो।

९

जब बहै हड़हवा कोन।
तब बनजारा लादै नोन॥

जब दक्षिण-पश्चिम कोने की हवा बहने लगे, तब बनजारा नमक लादता है। अर्थात् वर्षा न होगी और नमक के गलने का डर नहीं होगा।

१०

बोली लोखरि फूली कास।
अब नाहीं वर्षा कै आस॥

लोमड़ी बोलने लगी और कास फूल आई, अब वर्षा की आशा नहीं।

११

ढेकी बोलैं जाय अकास।
अब नाहीं वर्षा कै आस॥

बनमुर्गी आकाश में उड़कर बोलें, तो वर्षा की आशा नहीं।

१२

लाल पियर जब होय अकास।
तब नाहीं वर्षा कै आस॥

आकाश का रंग लाल-पीला हो जाय, तो वर्षा की आशा नहीं।

१३

रात दिना घमछाहीं।
घाघ कहैं अब वर्षा नाहीं॥

रात और दिन में कभी धूप और कभी छाया हो, तो वर्षा का अंत समझना चाहिये।

१४

रात निबद्दर दिन को घटा।
घाघ कहैं अब वर्षा हटा॥

रात को आकाश खुला रहे और दिन में घटा घिरी रहे, तो वर्षा गई।

१५

पूरब धनुहीं पच्छिम भान।
घाघ कहैं वर्षा नियरान॥

शाम को जब सूर्य पच्छिम में हों, तब पूरब ओर इन्द्र-धनुष निकले, तो वर्षा का अंत निकट समझना।

१६

दिन का बद्दर रात निबद्दर।
बह पुरवैया झब्बर झब्बर॥
कहैं घाघ कुछ होनी होई।
कुँआ के पानी धोबी धोई॥

दिन में बादल हों, रात में न हों, और पूर्वा हवा रुक-रुककर बहती हो, तो कुछ बुरा होनहार है। सूखा पड़ेगा और धोबी कुँए के पानी से कपड़े धोयेंगे।

१७

दिन को बादर रात को तारे।
चलो कंत जहँ जीवें बारे॥

दिन में बादल हों और रात में तारे दिखाई पड़ें, तो सूखा पड़ेगा। हे नाथ! वहाँ चलो, जहाँ बच्चे जियें।

१८

रात करे घाप घूप दिन करे छाया।
कहैं घाघ अब वर्षा गया॥

यदि रात में खूब घटा घिर आये, और दिन में बादल तितर-बितर हो जायँ और उनकी छाया पृथ्वी पर दौड़ने लगे, तो वर्षा का अंत समझना चाहिये।

२०

पहले पानि नदी उफनाय।
तो जानियो कि वर्षा नायँ॥

असाढ़ में पहले ही पानी से नदी उमड़ चले, तो चौमासे तक वर्षा कम होगी।

काल-निर्णय

१

रात्याँ बोलै कागलो, दिन में बोलै स्याल ॥
तो यों भाखै भड्डरी, निहचै परै अकाल ॥

रात में कौवे बोलें और दिन में सियार, तो निश्चय ही अकाल पड़ेगा।

२

एक मास में ग्रहण जो दोई।
तोभी अन्न महंगो होई ॥

एक महीने में दो ग्रहण पड़ें, तो भी अन्न महँगा होगा।

३

गहना आथा गहतो ऊगे।
तोऊ चोखी साख न पूगै ॥

ग्रहण ग्रस्तास्त या ग्रस्तोदय हो, तो भी फसल अच्छी न होगी।

४

तेरह दिन का देखी पाख।
अन्न महँग समझो बैसाख ॥

एक पाख तेरह दिन का हो, तो बैसाख में अन्न महँगा होगा।

५

छः ग्रह एकै राशि विलोको।
महाकाल को दीन्हों कोको ॥

छः ग्रह एक ही राशि पर हों, तो मानो महाकाल को निमंत्रण दिया है।

६

परभाते मेह डंबरा, साँजे सीला बाव।
डंक कहै हे भड्डली, काला तणाँ सुभाव ॥

सवेरे मेघ घेरे हों और शाम को ठंडी हवा चले, तो अकाल पड़ेगा।

७

माघ मास जो पड़े न सीत।
महँगा नाज जानियो मीत ॥

माघ में सरदी न पड़े, तो अन्न महँगा होगा।

८

सावन मास बहै पुरवाई।
बरधा बेंचि लिह्यो धेनु गाई॥

सावन में पुरवा हवा चले, तो बैल बेंचकर गाय खरीद लो, क्योंकि अकाल पड़ेगा।

६

मंगल पड़े तो भू चले, बुध पड़े अकाल।
जो तिथि होय सनीचरी, निहचै पड़े अकाल॥

फागुन महीने का अंतिम दिन मंगल को पड़े, तो भूकम्प हो, बुध को पड़े, तो अकाल पड़े, और शनिवार को पड़े, तो निश्चय ही अकाल पड़ेगा।

१०

सावन सुक्र न दीसै, निहचै पड़ै अकाल॥

सावन में न शुक्र तारा अस्त हो और न दिखाई पड़े, तो निश्चय ही अकाल पड़ेगा।

११

भोर समय डरडम्बरा, रात उजेरी होय।
दुपहरिया सूरज तपै, दुरभिछ तेऊ जोय॥

सबेरे आकाश में बादल छाये हों, रात में आकाश साफ हो और दोपहर को कड़ी धूप हो, तो दुर्भिक्ष पड़ेगा।

१२

घन जायाँ कुल मेहनो, घन बूठाँ कण हाण।

कन्या की अधिकता से कुटुम्ब की हानि होती है और अधिक वृष्टि से अन्न की।

१३

सावण पहली पंचमी, जो बाजे बहु बाय।
काल पड़ै सउ देस में, मिनख मिनख नै खाय॥

सावन बदी पंचमी को यदि जोर की हवा चले, तो सारे देश में अकाल पड़ेगा और आदमी आदमी को खा जायगा।

१४

दिन को बादर राति तरैया।
ना जानौ प्रभु काह करैया॥

दिन में तो बादल हों और रात में तारे दिखाई पड़ें, तो न जाने भगवान क्या करने वाले हैं।

पाठान्तर—दिन को बादर रात को तारे। चलो कंत जहँ जोवें बारे॥

१५

माघ मास सनि पाँच हों, फागुन मंगल पाँच।
काल पड़ैगो भड्डरी, जोतिस को मत साँच॥

माघ में पाँच शनिवार और फागुन में पाँच मंगल पड़ें तो अकाल पड़ेगा, यह जोतिष का सच्चा मत है।

१६

रात में बोलै कागला, दिन में बोलै स्याल।
तो यों भाखै भड्डरी, निहचै परै अकाल॥

रात में कौवे और दिन में सियार बोलें, तो निश्चय ही अकाल पड़ेगा।

१७

मंगल सोम होय शिवराती।
पछिवाँ वायु बहै दिन राती॥
घोड़ा रोड़ा टिड्डी उड़ैं।
राजा मरै कि परती पड़ै॥

शिवरात्रि मंगलवार या सोमवार को हो और रात-दिन पछुवाँ हवा बहती रहे, तो घोड़ा (एक पतिंगा,) रोड़ा (?) और टिड्डियाँ पैदा होंगी; राजा मरेंगे और जमीन पड़ती पड़ी रहेगी।

१८

माघ में गरमी जेठ में जाड़।
कहैं घाघ हम होब उजाड़॥

माघ में गरमी पड़े और जेठ में जाड़ा, तो पानी न बरसेगा।

१६

माघ क ऊखम जेठ क जाड़ ।
पहिले बरखा भरिगा ताल ॥
कहैं घाघ हम होब बियोगी ।
कुँवा के पानी धोइहैं धोबी ॥

यदि माघ में गरमी पड़े और जेठ में जाड़ा, तो घाघ कहते हैं, कि ऐसा सूखा पड़ेगा कि परदेश जाना होगा और धोबी कुँए के पानी से कपड़े धोयेंगे ।

२०

भैंस जो जनमे पड़वा, बहू जो जनमे धी ।
समय कुलच्छन जानिये, कातिक बरसे मीं ॥

भैंस यदि पड़वा ब्याये, बहू के कन्या पैदा हो और कातिक में पानी बरसे, तो समय अच्छा जानिये ।

२१

अगहन बरसै बूढ़ि बिआय । तौनै देस रसातल जाय ॥

वह देश जिसमें अगहन में वर्षा हो और बुड्ढी स्त्री को संतान हो, रसातल में चला जायगा, अर्थात् नष्ट हो जायगा ।

२२

दो आसिन दो भादों, दो असाढ़ के माँह ।
सोना चाँदी बेंचकर, नाज बेसाहो नाह ॥

जिस वर्ष में दो क्वार, दो भादो या दो असाढ़ अर्थात् मलमास पड़ेंगे, उस वर्ष में भी अकाल पड़ेगा । हे स्वामी ! सोना, चाँदी बेंचकर अन्न खरीद लो ।

२३

एक पाख दो गहना । राजा मरै कि सहना ।

एक पाख में दो ग्रहण लगेंगे तो राजा मरेगा या बादशाह ।

२४

एक बूँद जो चैत में परै । सहस बूँद सावन में हरै ॥

चैत में एक भी बूँद बरस जाय, तो वह सावन में हजार बूँद कम कर देगा ।

२५

माघ में बादर लाल धरै। तब जान्यो साँचो पथरा परै॥

माघ में बादलों का रंग लाल हो जाय, तो समझना कि पत्थर अवश्य पड़ेगा।

२६

जब बरखा चित्रा में होय। सगरी खेती जावै खोय॥

चित्रा नक्षत्र में वर्षा हो, तो सारी खेती नष्ट हो जायगी।

२७

सावन सुक्ला सत्तमी, गगन स्वच्छ जो होय।
कहैं घाघ सुनु घाघिनी, पुहुमी खेती खोय॥

सावन सुदी सप्तमी को आकाश बिना बादल का हो, तो घाघ कहते हैं कि पृथ्वी भर की खेती नष्ट हो जायगी।

२८

सावन बदी एकादसी, तीन नखत्तर जोय।
कृतिका होय तो किरबरो, रोहिनी होय सुगाल।
टुक यक आवै मिरगला, पड़े अचिन्त्यो काल॥

सावन बदी एकादशी को तीन नक्षत्र देखो—यदि कृत्तिका हो, तो वर्षा मामूली होगी; रोहिणी हो, तो सुकाल होगा; और यदि मृगशिरा हो, तो ऐसा अकाल पड़ेगा कि किसी ने सोचा भी न होगा।

२९

सावण पहले पाख में, जे तिथि ऊणी जाय।
कैयक कैयक देस में, टाबर बेंचै माय॥

सावन के पहले पक्ष में यदि कोई तिथि टूट जाय, तो किसी-किसी देश में ऐसा अकाल पड़ेगा कि माँ बेटे को बेंच देगी।

३०

मिँगसर बद वा सुद महीं, आधे पोह लरे।
धुँवर न भीजे धूल तो, करसण काह करे॥

अगहन बदी या सुदी में आधे पौष से पहले, ओस से धूल न भीगे, खेती क्यों करनी चाहिये?

३१

माहे मंगल जेठ रवि, भादरवे सनि होय।
डंक कहै हे भड्डली, बिरला जीवै कोय॥

माघ में पाँच मंगलवार, जेठ में पाँच रविवार और भादों में पाँच शनिवार पड़ें, तो ऐसा अकाल पड़ेगा कि शायद ही कोई जीवित बचे।

३२

मंगल रथ आगे हुवे, लारे हुवे जो भान।
आरँभिया यूँ ही रहै, ठाली रवै निवाण॥

सूर्य के आगे मंगल हो तो आशाओं पर पानी फिर जायगा और तालाब सूखे पड़े रहेंगे।

खेती की कहावतें

खेती

खेती भारतीयों की मुख्य जीविका है। आर्य, जो इस देश के आदिम निवासी हैं, खेती करते थे। उनके युग में इतना अन्न, दूध, शक्कर और फल पैदा होते थे कि खाये नहीं चुकते थे और खाने के सिवा उनके खर्च के लिये दूसरे-दूसरे बहाने तैयार किये गये थे। जैसे, अतिथि-सेवा; अतिथि को देवता के समान मानकर उनको आहार देना; व्रत, पूजा-पाठ आदि मंगल-कार्यों में जौ, चावल, तिल और दही खर्च करना; दोनों वक्त घी से अग्निहोत्र करना; फल, गुड़ और दूध का दाम न लेना; इत्यादि। धर्म के साथ खेती का ऐसा सम्बन्ध जोड़ दिया गया था कि खेती की परम्परा हिन्दू-जाति में मूलबद्ध हो गई।

खेती मनुष्य-समाज के सुखों की जननी है। पराशर मुनि ने कहा है:—

> अवस्त्रत्वं निरन्नत्वं कृषितो नैव जायते ।
> अनातिथ्यञ्च दुःखित्वं दुर्मनो न कदाचन ॥

"खेती करनेवाले को वस्त्र और अन्न का कष्ट नहीं होता। अतिथि-सेवा में असमर्थता तथा अन्य दुःखों से उसके मन को कभी खेद नहीं पहुँचता।"

> सुवर्णरौप्यमाणिक्य वसनैरपिपूरिताः ।
> तथापि प्रार्थयन्त्येव कृषकान् भक्त-तृष्णाया ॥

"सोना, चाँदी, मानिक और वस्त्र आदि से सम्पन्न पुरुषों को भी भोजन के पदार्थ की इच्छा से किसानों से प्रार्थना करनी ही पड़ती है।"

अन्नं प्राणो बलं चान्नमन्नं सर्वार्थसाधकम्।
देवासुरमनुष्याश्च सर्वे चान्नोपजीविनः॥

"अन्न ही प्राण है, अन्न ही बल है, और अन्न ही सब कामों को सिद्ध करनेवाला है, देवता असुर और मनुष्य सभी अन्न से जीते हैं।"

अन्नं तु धान्य संभूतं धान्यं कृष्या विना न च।
तस्मात्सर्वं परित्यज्य कृषिं यत्नेन कारयेत्॥

"भोजन अन्न से बनता है; अन्न खेती बिना उत्पन्न नहीं होता; अतएव दूसरे काम छोड़कर सब से पहले खेती करनी चाहिये।"

आज भी सारे संसार के सब व्यापार केवल अन्न पर आश्रित हैं। अन्न के लिये लड़ाइयाँ लड़ी जा रही हैं, और अन्न के लिये परस्पर मित्रता चल रही है। अन्न की प्राप्ति खेती के बिना असंभव है।

किसानों के खेती सम्बन्धी अनुभव बहुत पुराने हैं। उन्होंने उन अनुभवों को अपनी रोज़मर्रा की बोलचाल के छोटे-छोटे छंदों में बंद करके कहावत के नाम से संसार को दान-जैसा दे दिया है। यह धन उनको विरासत की तरह, पीढ़ी दर पीढ़ी, मिलता चला आ रहा है।

भारतवर्ष में बहुत-सी भाषायें और बोलियाँ बोली जाती हैं। किसानों की कहावतें सभी भाषाओं और बोलियों में अलग-अलग हैं; पर अनुभव सब में मिलते-जुलते हैं; केवल भाषा या बोली का जामा अलग-अलग है।

गाँवों में कहावतों का बड़ा प्रचार है। घाघ और भड्डरी ही की नहीं, सैंकड़ों अन्य अनुभवियों की कहावतें गाँवों में मिलती हैं। गाँव वालोंका जीवन कहावतों के अधीन है। कहावतें उनके मंत्र हैं।

खेती की कहावतों में हल और बैल के सिवा खाद, जोताई, बोआई, सिंचाई, कटाई, मड़ाई, ओसाई, फसलों के रोग और खेती से सम्बन्ध रखने वाले दूसरे विषयों की कहावतें भी बहुत-सी हैं। मुझे जो मिली हैं, उन्हें मैं आगे देता हूँ—

उत्तम खेती

१

उत्तम खेती मध्यम बान।
निखिद चाकरी भीख निदान॥

खेती का धंधा सबमे उत्तम है; व्यापार उससे मध्यम और नौकरी निषिद्ध है; और भीख माँगना तो सबसे अंत का है।

२

बाढ़ै पूत पिता के धर्मा। खेती उपजै अपने कर्मा॥

पुत्र की बढ़ती पिता के धर्म से होती है; पर खेती अपने ही कर्मों का फल है।

३

दस हर राव आठ हर राना। चार हरों का बड़ा किसाना।
दुइ हर खेती एक हर बारी। एक बैल से भली कुदारी॥

दस हलों वाला किसान राव, आठ हलों वाला राना, और चार हलों वाला बड़ा किसान कहलायेगा। दो हलों से पेट भरने भर के लिये खेती और एक हल से साग-सब्जी की बाड़ी होती है। और एक ही बैल हो तो उससे अच्छी तो कुदाल ही है।

४

एक हर हत्या दुइ हर काज। तीन हर खेती चार हर राज॥

एक हल तो बैलों को मारना ही है। दो हल किसी तरह काम चलाना है। तीन हल खेती है और चार हल तो राज ही करना है।

५

सब कर। हर तर।

सब के हाथ हल के नीचे हैं; या भगवान् के हाथ के नीचे हैं; भगवान् जो देंगे, वही मिलेगा।

सुखी किसान

१

बाध, त्रिया, बेकहल, बनिक, बारी, बेटा, बैल।
ब्योहर, बढ़ई, बन, बबुर, बात, सुनो यह छैल॥
जो बकार बारह बसैं, सो पूरन गिरहस्त।
औरन को सुख दे सदा, आप रहै अलमस्त॥

बाध जिससे खाट बुनी जाती है, बीज (बोने और सवाई पर देने के लिये), बेकहल (ढाक की जड़ की छाल, जिससे रस्सी बनती है), बनिया (बाज़ार की ज़रूरी चीज़ों के लिये), बारी (तरकारी के लिये छोटी फुलवाड़ी), बेटा, बैल, ब्योहर (ब्याज पर उधार देना), बढ़ई, बन, जंगल, बबूल और बात (बात का धनी होकर अपनी सचाई का प्रभाव रखने के लिये)। ये बारह बकार जिसके पास हों, वह पूरा गृहस्थ है। वह दूसरों को भी सदा सुख देता है और स्वयं भी मौज में रहेगा।

२

जाको ऊँचा बैठना, जाको खेत निचान।
ताको बैरी क्या करे, जाको मीत दिवान॥

जो ऊँचे दरजे के आदमियों की संगति करता हो, जिसके खेत गहरे हों और जो राजा के दीवान से या सरकार के बड़े अफसरों से मित्रता रखता हो, बैरी उसका क्या करेगा?

३

दस हर राव आठ हर राना।
चार हरों का बड़ा किसाना॥
दुइ हर खेती एक हर बारी।
एक बैल से भली कुदारी।

जिसके दस हल चलते हों, वह किसानों में राजा, जिसके आठ हल चलते हों, वह राना, और जिसके चार हल चलते हों, वह साधारण किसान कहा जायगा। दो हल तो खेती से सिर्फ पेट भरने के काम के और एक हल साग-सब्जी की बाड़ी के लिये होते हैं; और एक बैल से तो कुदाल ही अच्छी।

४

भुइँया खेड़े हर होय चार।
घर होय गिहथिन गऊ दुधार॥
अरहर की दाल जड़हन क भात।
गागल निबुआ औ घिउ तात॥
सह रस-खंड दही जो होय।
बाँके नयन परोसै जोय।
कहैं घाघ तब सबहीं झूँठा।
उहाँ छाँड़ि इहवै बैकूँठा॥

गाँव के पास तो खेत हों, चार हल चलते हो, घर में घर-गृहस्थी के कामों में चतुर स्त्री हो, गाय दूध देती हो, खाने को अरहर की दाल, जड़हन का भात और उसमें नीबू निचोड़ा हुआ और गरम-गरम घी डाला हुआ हो, दही में खांड़ डाली हो, और सुन्दरी स्त्री तिरछी चितवन से परोसती हो, तो यहीं स्वर्ग है, बैकुण्ठ की बात झूठी है।

५

ऊँच अटारो मधुर बतास।
घाघ कहैं घर ही कैलास॥

ऊँची अटारी पर मंद-मंद वायु मिले, तो घर ही कैलास के समान सुखदायक है।

६

गाड़ी जीत लई भैंसे ने, धरती जीता अँजना धान।
खेती जीत लई कुरमी ने, रोटी खेत लई मँगवाय॥

भैंसे ने गाड़ी को जीत लिया, अँजना धान ने धरती को जीत लिया, और कुरमी ने खेती को जीत लिया, जब उसने खाने के लिये रोटी खेत ही में मँगा ली।

७

नीक जाति कुरमिनि कै खुरपी हाथ।
आपन खेत निरावैं पियके साथ॥

कुरमिन (कुरमी की स्त्री) की जाति अच्छी है, जो अपने पति के साथ रहकर अपना खेत निराती है।

८

चेना चोरी चाकरी, हारे करै किसान।

चेना (एक अन्न जो जेठ में होता है) की खेती-चोरी और नौकरी किसान तभी करता है, जब जीविका के लिये खेती का सहारा नहीं रह जाता ।

६

बीया बायर होय बाँध जो होय बँधाये।
भरा भुसौला होय बबुर जो होय बुवाये॥
बढ़ई बसे समीप बसूला बाढ़ धराये।
पुरखिन होय सुजान बिया बोउनिहा बनाये॥
बरद बगौधा होय बरदिया चतुर सुहाये।
बेटवा होय सपूत कहे बिन करे कराये॥

खेती करने वाले के पास इतनी चीज़ें हों, तो वह अच्छा किसान कहा जायगा—सब खेत एक चक हों; खेत के चारोंओर सिंचाई के लिये बाँध बँधे हों; भुसौला (भूसा-घर) भरा हुआ हो; बबूल के पेड़ हों; बढ़ई पास बसा हो, जिसका बसूला तेज़ धार वाला हो; घर की मलकिन गृहस्थी के धंधे में होशियार हो और बोने के लिये बीज तैयार कर रक्खे हों, बैल बगौधा नस्ल के हों; हलवाहा होशियार और नेक हो, और बेटा सपूत हो, जो बाप के बिना कहे कामकाज करे, और दूसरों से करावे ।

१०

आँगन में गुनवंती जोय। द्वार बैल दुइ जोड़ी होयँ॥
जोत भर खेत थोर बबुरान। कहना माने पूत सयान॥
बनियां बढ़ई लोहर चमार। गाँउ हरवहा होई बजार॥
बोवनिहार मिलै बिनु रोक। ब्योहर चलत होइ कछु थोक॥
थोर बहुत हो अपना गाँछ। गाय दुधार घरे दुई बाछ॥
कछु कछु सेत होयँ गोयडंत। होइ सेवा कछु साधू संत॥
दया होइ मन राम लगंत। सुख से सोवैं खेतिहर कंत॥

आँगन में घर-गिरस्ती के कामों में निपुण स्त्री हो; घर के बाहर दो जोड़ी बैल और जितना वे जोत सकें, उतना खेत हो; छोटी सी बबुराही हो; पुत्र सयाना और आज्ञाकारी हो; गाँव ही में बनिया, बढ़ई लोहार, चमार और हलवाहा हों, और बाज़ार भी लगता हो; बीज बोने वाले जब चाहें तभी

मिल जाया करें; कुछ लेन-देन भी चलता रहे; कुछ पेड़ भी लगाये हों; गाय दूध देती हो और उसके अपने दो बछड़े हों; कुछ खेत गाँव के पास ही हों; साधु-संतों की कुछ सेवा भी होती चले; मन में दया हो और राम की लगन हो; ऐसी सुविधा हो तो खेतिहर सुख से सोवे।

११

बाँध कुदारी खुरपी हाथ। लाठी हँसिया राखै साथ।
काटै घास निरावै खेत। पूरा किसान वही कहि देत॥

जो कुदाल और खुरपी हाथ में रखता है और लाठी और हँसिया साथ लिये रहता है, वही पूरा किसान कहा जायगा।

१२

अगसर खेती अगसर मार। कहैं घाघ ते कबहुँ न हार॥

जो सब से पहले खेती बोना शुरू कर देते हैं और जो मार-पीट में पहले वार कर देते हैं, घाघ कहते हैं, वे कभी हार नहीं खाते।

दुःखी किसान

१

सावन में ससुरारी गये, पूस में खाये पूवा।
चैत में छैला पूछत डोलैं, तोहरे केतिक हूआ॥

छैला किसान सावन में तो ससुराल गये, और पौष में पूवा (एक पकवान जो गाँवों में महुआ और आटे के मिश्रण से बनता है) बनवाकर खाते रहे, खेती की सँभाल नहीं की। अब चैत में दूसरों से पूछते फिरते हैं कि तुम्हारे कितना अन्न हुआ।

२

तीन बरद घर में दो चाकी।
उगमन खेत राज की बाकी॥

तीन तो बैल हों, जिनमें एक तो बेकार ही रहता है, और एक आदमी को भी अपनी सँभाल के लिये फँसाये रखता है और घर में फूट है; खेत पूर्व दिशा में हैं, जहाँ जाते समय सूर्य सामने पड़ता है और शाम को लौटते समय भी सामने पड़ता है, जिससे आँखों की ज्योति मारी जाती है; तथा पिछले साल का लगान बाकी है। ये चिन्तायें किसान के दुःख की जड़ हैं।

३

भैंस कँदेलिया पिय लाये।
माँगे दूध कहाँ से आये॥

कँदेलिया भैंस खरीदी गई तो दूध कहाँ से मिले? (कँदेलिया = भैंस की एक किस्म)।

४

असाढ़ मास जो घूमा कीन। काहें राखे कंडा बीन॥

असाढ़ के महीने में जो खेतों में न रहकर इधर-उधर घूमता फिरता है, वह कंडा (सूखे गोबर) बटोर कर क्यों रक्खेगा? अन्न तो होगा ही नहीं, वह चूल्हा जलायेगा क्यों?

५

बिन बैलन खेती करै, बिन भैयन के रार।
बिन मेहरारू घर करै, चौदह साख लवार॥

जो बैल रक्खे बिना खेती करने को, बिना भाइयों की मदद के दूसरों से झगड़ा लेने की और बिना स्त्री के गृहस्थी चलाने की बात कहता है, वह चौदह पुश्त का झूठा है।

६

रिन कै फिकिरि पुत्र कै सोच।
नित उठि पंथ चलैं जो रोज॥
बिना अगिनि ये जरिगै चारि।
जिनकै अधबिच मरिगै नारि॥

एक तो कर्ज चुकाने की चिंता, दूसरे पुत्र मर गया, तीसरे रोज सबेरे उठ कर या तो हरकारे का काम करना पड़ता है या भीख माँगना; और चौथे आधी उम्रमें ही स्त्री मर गई: इन दुःखों से ये चारों व्यक्ति बिना आग के ही जलते रहते हैं।

७

कुचकट पनही बतकट जोय।
जो पहिलौंठी बिटिया होय॥
पातरि कृषी बौरहा भाय।
घाघ कहैं दुख कहाँ समाय॥

कुच (एड़ी के ऊपर की नस) काटनेवाली जूती है, बात काटने वाली स्त्री है, पहली संतान कन्या है, खेती कमजोर है, भाई बौड़म यह दुःख कहाँ समा सकता है?

८

आये असाढ़ तो भूमि भई सँवरी।
सैयाँ तुम जोति लेहु बीघा चारि अवरी॥
आइ गइल अगहन लागि गइल बेहरी।
भागि गइल मरद धराइ गइल मेहरी॥

आषाढ़ आया, भूमि गीली होगई, तब स्त्री ने कहा—हे स्वामी! चार बीघा और जोत लो। अगहन आया और राजा ने बेहरी (हाउस-टैक्स) माँगा, तब मर्द तो परदेश निकल भागा और स्त्री को राजा के सिपाही पकड़ ले गये।

९

दो तौई, घर खोई। दो जोई, घर खोई॥

जिसके घर में दो तवे चढ़ते हों; या दो स्त्रियाँ हों, वह घर नष्ट हो जाता है।

१०

कर्महीन खेती करै। बरधा मरै कि सूखा परै॥

अभागा आदमी खेती करता है तो या तो बैल मर जाता है, या सूखा पड़ जाता है।

११

खेती करै साँझ घर सोवै। काटै चोर हाथ धरि रोवै॥

खेती करके जो किसान रात में घर में सोयेगा, चोर उसका खेत काट ले जायेंगे और वह सिर पर हाथ रखकर रोयेगा।

१२

नितहिं खेती दुसरे गाय। नाहीं देखै तेकर जाय॥
घर बैठे जो बनवै बात। देह में दस्त्र न पेट में भात॥

जो रोज खेती की और दूसरे दिन गाय की सँभाल नहीं किया करता; घर में बैठकर बातें बनाता रहता है, उसके शरीर पर न वस्त्र होता है और न पेट में भात। अर्थात् वह गरीब हो जाता है।

१३

यकसर खेती यकसर मार। कहैं घाघ ते सदहूँ हार॥

जो अकेले खेती करता है और जो अकेले मार-पीट करता है, घाघ कहते हैं, वे दोनों सदा हार खाते हैं।

फसलें

१

साँवाँ साठी साठ दिना। जब पानी बरसे रात दिना॥

अगर रात दिन पानी बरसता रहे, तो साँवाँ और साठी साठ दिनो में तैयार हो जाते हैं।

२

धान गिरै सुभागे का। गोहूँ गिरै अभागे का॥

धान का पौधा जमीन की ओर लटक जाय, तो भाग्य की बात है। लेकिन गेहूँ का गिरना अभाग्य को बात है।

३

बेस्या बिटिया नील है, बन साँवाँ पुत जान।
वो आई सब घर भरै, दरबि लुटावत आन॥

नील वेश्या की कन्या है, और कपास और साँवाँ वेश्या के पुत्र हैं। कन्या आयेगी तो घर भर देगी और पुत्र घर का धन लुटा देगा। अर्थात् खेत में नील बो दिया जायगा तो वह उर्बर हो जायगा; पर कपास और साँवाँ बोने से खेत की रही-सही ताकत भी चली जायगी।

४

जेठ में जरै माघ में ठरै। तब जीभी पर रोड़ा परै॥

ईख बोकर किसान जेठ की कड़ी धूप में सिंचाई करते-करते जल जाता है और माघ में जाड़े से काँपता है, तब उसकी जीभ पर गुड़ का रोड़ा पड़ता है।

५

लाग बसंत। ऊख पकंत॥

वसंत ऋतु के लगते ही ईख पक जाती है।

६

विधि का लिखा न होई आन। आधे चित्रा फूटै धान॥

ब्रह्मा का लिखा हुआ बदल नहीं सकता। चित्रा नक्षत्र के आधा बीत जाने ही पर धान में बाली निकलेगी।

७

उर्द मोथी की खेती करिहौ। कुरिया बाँधि उसर में धरिहौ॥

उड़द और मोथी की खेती करोगे तो कुरिया (खेत की रखवाली के लिये फूस का छोटा झोंपड़ा) ऊसर में रखनी पड़ेगी; क्योंकि उड़द और मोथी उसरीली ही जमीन में होते हैं।

८

रड़हे गोहूँ कुसहे धान। गड़रा की जड़ जड़ह जान॥
फूली घास रो देयँ किसान। उसमें होय आन का तान॥

राड़ घास काटकर खेत बना हो, तो गेहूँ की, कुस काटकर खेत बना हो तो धान की, गड़रा घास काटकर खेत बना हो तो जड़हन की पैदावार अच्छी होती है; लेकिन जिस खेत में फुलही घास होती है, उसमें कुछ नहीं पैदा होता और किसान रो देता है।

९

सावन सूखे धान। भादों सूखे गोहूं॥

सावन में सूखा पड़े, तो धान पैदावार अच्छी होगी; और भादों में सूखा पड़े तो गेहूँ की।

१०

खनि के काटै घन के मोराये। तब बरधा के दाम सुलाये॥

ईख की जड़ खोदकर निकाले और कोल्हू में खूब दबा-दबाकर उसका रस निचोड़े, तब बैलों की कीमत वसूल होगी; अर्थात् परिश्रम सफल होगा।

११

या तो बोओ कपास और ईख। या तो माँगि के खाओ भीख॥

या तो कपास और ईख बोओ; या भीख माँगकर खाओ। अर्थात् कपास और ईख ही से किसान को धन मिलेगा।

१२

बाड़ी में बाड़ी करे, करै ईख में ईख।
वे घर यों ही जायँगे, सुनै पराई सीख॥

जो किसान कपास के खेत में फिर कपास और ईख के खेत में फिर ईख बोयेगा और दूसरों की राय से चलेगा, उसका घर यों ही बरबाद हो जायगा।

१३

साठी में साठी करै, बाड़ी में बाड़ी।
ऊख में जो धान बोवे, फूँको वाकी दाढ़ी ॥

जो साठी के खेत में फिर साठी, कपास के खेत में फिर कपास और ईख के खेत में धान बोये, उसकी दाढ़ी जला देनी चाहिये। अर्थात् वह मूर्ख किसान है।

१४

ईख तिस्सा। गोहूँ बिस्सा ॥

ईख की पैदावार तीस गुनी होती है, और गेहूँ की बीस गुनी।

१५

बयार चले ईसाना। ऊँचे खेती करो किसाना ॥

ईशान कोन की हवा चल रही है; हे किसान! जो खेत ऊँचाई पर हो, उसी में बीज बोओ।

१६

विधि का लिखा न होई आन। बिना तुला ना फूटै धान ॥
सुख सुखराती देव उठान। तेकरे बरहे करो नेमान ॥
तेकरे बरहे खेत खरिहान। तेकरे बरहे कोठिलै धान ॥

ब्रह्मा का लिखा हुआ बदल नहीं सकता; तुला राशि ही में धान फूटेगा। सुख की रात दीवाली और देवोत्थान एकादशी बीत जाने पर उसके बारहवें दिन नवा अन्न ग्रहण करो; उसके बारहवें दिन धान को काटकर खलिहान में रक्खो और उसके बारहवें दिन कोठिला में रख दो।

१७

आकर कोदो नीम जवा। गाडर गेहूं बेर चना ॥

मदार की फसल अच्छी हो; तो कोदो की, नीम की फसल अच्छी हो तो, गेहूँ की और बेर की फसल अच्छी हो, तो चने की पैदावार अच्छी होगी।

१८

हथिया में हाथ गोड़, चित्रा में फूल।
चढ़त सेवाती झंपा झूल ॥

हस्त नक्षत्र में जड़हन में डंठल निकलना शुरू होता है, चित्रा में फल भर जाते हैं और स्वाती के लगते ही बालें लटक पड़ती हैं।

१९

सात सेवाती, धान उपाठ ।

स्वाती नक्षत्र के सात दिन बीत जाने पर धान पक जाता है ।

२०

ठाढी खेती गाभिन गाय । तब जानो जब मुँह् तर जाय ॥

खड़ी खेती और ब्याने वाली गाय का तभी विश्वास करो, जब उनका अन्न और दूध मुँह में पहुँच जाय ।

बैल

हिन्दुस्तान जैसे गर्म और खेतिहर देश में बैल किसानों के सबसे बड़े मददगार साथी है । अच्छा किसान अपने बैलों को बेटे की तरह प्यार करता और पालता है ।

हज़ारों वर्षों की संगति से किसान ने बैलों की नस्लों और उनके स्वभावों को पूरी पूरी जानकारी प्राप्त कर ली है और उसे उसने अगली पीढ़ी के लिये कहावतों में सुरक्षित रख दिया है । कहावतें छोटी-छोटी और बोल-चाल के शब्दों में हैं, ताकि वे आसानी से समझी और याद की जा सकें ।

किसानों की माली हालत उनके हलों से आँकी जाती है । एक हल में दो बैल लगते हैं । जिस किसान के जितने हलों की खेती होती है, उनके पास उतने जोड़ी बैल होते हैं ।

संस्कृत के एक श्लोक में हलों के आधार पर किसान के विभव की व्याख्या इस प्रकार की गई है :—

नित्यं दश हले लक्ष्मीर्नित्यं पञ्च हले धनम् ।
नित्यं त्रिहले भक्तं नित्यमेक हले ऋणम् ॥

अर्थात् दस हल चलाने वाले गृहस्थ के यहाँ लक्ष्मी, पाँच हल वाले के यहाँ धन, और तीन हल वाले के यहाँ भात या आहार मात्र रहता है । एक हल वाला तो हमेशा कर्जदार ही बना रहता है ।

गाँव वालों इसी को अपनी बोलचाल में इस प्रकार कर लिया है—

दस हर राव अ हर राना। चार हरों का बड़ा किसाना ॥
दुइ हर खेती एक हर बारी। एक बैल से भलो कुदारी ॥
एक हर हत्या दुइ हर काज। तीन हर खेती चार हर राज ॥

गाय और ल हमारे मुख्य पशु हैं, ये हमारी जीविका के साधन और जमीन के मुख्य अंग हैं, इनके बिना गृहस्थी सूनी लगती है।

यहाँ बैलों के संबंध की कुछ कहावतें दी जाती हैं :—

१

दुइ हर खेती एक हर बारी। बूढ़ बैल से भली कुदारी ॥

दो हलों की तो खेती कही जायगी; एक हल से तो सिर्फ फुलवारी सींचने का काम हो सकता है; और बूढ़े बैल से तो कुदाली ही अच्छी।

२

नाटा खोंटा बेंचिके, चारि धुरन्धर लेहु।
आपन काम निकारि के, औरहु मँगनो देहु ॥

नाटेखोंटे बैलों को बेंचकर चार अच्छे धुरंधर बैल रक्खो; जिनसे अपना भी काम निकालो और दूसरों को भी माँगने पर दे सको।

३

डगमग डोलन फरका पेलन कहाँ चले तुम बाँड़े।
पहिले खाबाइ रान्ह परोसी गोसैयाँ कब छाँड़े ॥

डगमग डोलनेवाले, छप्पर ढकेलनेवाली बड़ी बड़ी सींगोंवाले, और पुछकटे हे बैल! कहाँ चले? बाँड़े ने जवाब दिया—पहले तो मैं पड़ोसियों को खा जाऊँगा, और हे स्वामी! तुमको कब छोड़ूंगा?

पाठान्तर— पहिले कइउ गोसैयाँ खाये तुहँऊ क खाबइ पाँड़े ॥

४

एक समय विधना का खेल। रहा उसर में चरत अकेल।
एक बटोही हर हर कहा। ठाढ़े गिरा चेत ना रहा ॥

गादर बैल कहता है—ब्रह्मा की लीला तो देखो; एक बार मैं ऊसर में अकेला चर रहा था। एक बटोही ने नहाते समय 'हर हर' किया; मैंने हल समझा और सुनते ही खड़े ही खड़े ऐसा गिरा कि बेहोश होगया।

५

वह किसान है पातर। जो बरदा राखै गादर ॥

वह किसान कमजोर है, जो सुस्त बैल रखता है।

६

खेत बेपनिया बूढ़ा बैल। सो किसान साँझे गहै गैल ॥

जिसके खेत में सिंचाई का कोई साधन न हो, और जिसके बैल बूढ़े हों, उसे तो सांझ ही को अपना दूसरा रास्ता पकड़ लेना चाहिये; खेती से उसे लाभ न होगा।

७

भैंसा बरद की खेती करै, करजा काढ़ि बिरानो खाय।
बधिया ऐंचत है यहरी को, भैंसा ओहरी को लै जाय ॥

भैंसा और बैल को हल में जोतकर खेती करना दूसरों से ऋण लेकर खाने के बराबर है; क्योंकि धूप में भैंसा छाँह की ओर भागेगा। आसाढ़-सावन मे भैंसे को पानी से भरा खेत पसंद आयेगा और बैल सूखी जमीन चाहेगा।

८

बिन बैलन खेती करै, बिन भैयन के रार।
बिन मेहरारू घर करै, चौदह साख लबार ॥

जो कहता है कि वह बैलों के बिना ही खेती करता है, भाइयों के बिना झगड़ा करता और बिना स्त्री के गृहस्थी चलाता है, वह चौदह पुश्त का झूठा है।

९

बाछा बैल बहुरिया जोय। ना घर रहे न खेती होय ॥

जिसका बैल कम उम्र का हो और स्त्री गृहस्थी के कामों में कच्ची है, उस किसान का न घर सँभलेगा, न खेती होगी।

१०

बैल बगौधा निरघिन जोय। वहि धर ओरहन कबहुँ न होय ॥

जिसके बैल पालतू हों और स्त्री घिनौनी और फूहड़ हो, उसके घर कभी कोई उलहना देने नहीं आयेगा।

११

बैल मरखना चमकुल जोय। वा घर ओरहन नित उठि होय ॥

जिस किसान का बैल मारने वाला और स्त्री चटकीली मटकीली होगी, उसको रोज उलहना मिलेगा।

१२

ताका भैंसा गादर बैल। नारि कुलच्छनि बालक छैल ॥
इनसे बाँचैं चातुर लोग। राज छाड़ि कै साधै जोग ॥

ताका (जिसकी आँखें दो तरह की हों) भैंसा, गादर (हल में चलते-चलते बैठ जाने वाला) बैल, बुरे लक्षणों वाली स्त्री, और शौकीन बेटे से चतुर लोग बचें। इनकी संगति में राजसुख हो, तब भी उसे छोड़कर फकीरी अच्छी।

१३

बैल चमकना जोत में, औ चमकीलो नार।
ये बैरी हैं जान के, कुसल करैं करतार ॥

जोतते वक्त चौंकनेवाला बैल और चटक-मटक वाली स्त्री, ये दोनों प्राणों के शत्रु हैं, इनसे भगवान ही बचावे।

१४

बैल तरकना टूटी नाव। ये काहू दिन देहैं दाँव।

भड़कने वाला बैल और टूटी हुई नाव, ये किसी दिन धोखा देंगे।

१५

बूढ़ा बैल बेसाहै, झीना कापड़ लेय।
आपुन करै नसौनी, दैवै दूषन देय ॥

जो गृहस्थ बुड्ढा बैल खरीदता है और बारीक कपड़ा मोल लेता है, वह तो अपना नाश आपही करता है, दैव को दोष वह व्यर्थ ही लगाता है।

१६

बाँधा बछड़ा जाय मठाय। बैठा ज्वान जाय तोंदियाय ॥

बँधा हुआ बछड़ा मठ (सुस्त) हो जाता है और जवान आदमी बैठा रहे, तो उसकी तोंद निकल आती है।

१७

दाँत गिरे औ खुर घिसे, पीठि बोझ नहिं लेय।
ऐसे बूढ़े बैल को, कौन बाँधि भुस देय॥

जिस बैल के दाँत गिर गये हों, खुर घिस गये हों और जिसकी पीठ बोझ नहीं उठा सकती, उस बुड्ढे को कौन बाँधकर चारा-भूसा देगा?

१८

सींग गिरेला बरद के, औ मनई का कोढ़।
यह नीके ना होयँगे, चाहे बदलो होड़॥

जिस बैल के सींग गल-गलकर गिर गये हों, वह तथा आदमी का कोढ़, ये कभी अच्छे नहीं होंगे; चाहे बाजी लगालो।

१९

सींग मुड़े माथा उठा, मुँह का होवै गोल।
रोम नरम चंचल करन, तेज बैल अनमोल॥

जिस बैल के सींग मुड़े हों, माथा उठा हुआ हो और जो गोल मुँह का हो, तथा जिसके रोयें मुलायम और कान चंचल हों, वह चलने में तेज होगा और अनमोल है।

२०

छोटा-मुँह और एँठा कान। यही बैल की है पहचान॥

छोटा मुँह और ऐंठे हुये कान, यही अच्छे बैल की पहचान है।

२१

पूँछ झम्पा औ छोटे कान। ऐसे बरद मेहनती जान॥

गुच्छेदार पूँछ और छोटे कानवाले बैल को मेहनती समझना।

२२

छोटी सींग औ छोटी पूँछ। ऐसे को ले लो बे पूँछ॥

छोटी सींग और छोटी पूँछवाले बैल को बिना पूछे खरीद लो।

२३

बैल लीजै कजरा। दाम दीजै अगरा॥

काली आँखों वाले बैल को पेशगी दाम देकर ले लो।

२४

घोंची देखै ओहि पार। थैली खोलै यहि पार॥

आगे की ओर मुड़ी हुई सींगोंवाला बैल नदी के उस पार भी दिखाई पड़े, तो उसके लिये इसी पार से थैली खोल लेनी चाहिये।

२५

हिरन मुतान औ पतली पूँछ। बैल बेसाहो कंत बेपूँछ॥

जिसके पेशाब करने की नली हिरन की तरह पेट से चिपकी हो और पूँछ पतली हो, उसे बिना पूछे ले लेना चाहिये।

२६

कार कछोटा झबरे कान। इन्हैं छाँड़ि जनि लीजै आन॥

काली कच्छ और झबरे कानवाले बैल को छोड़कर दूसरा नहीं लेना चाहिये।

२७

कार कछौटी सुनरे बान। इन्हैं छाँड़ि जनि बेसह्यो आन॥

काली कच्छ और सुनहले रंग वाले बैल को छोड़कर दूसरा मत खरीदना।

२८

करिया काछो धौरा बान। इन्हैं छाँड़ि जनि बेसह्यो आन॥

काली कच्छ और सफेद रंगवाले बैल को छोड़कर दूसरा मत खरीदना।

२९

है उत्तम खेती वाकी। होय मेवाती गोई जाकी॥

जिस किसान के बैल मेवाती नस्ल के हों, उसकी खेती उत्तम कही जायगी।

३०

जहवाँ देखो लौह बैलिया। तहवाँ दीह्यो खोलि थैलिया॥

जहाँ लाल रंग का बैल देखना, वहाँ जल्दी थैली खोल देना। अर्थात् उसे खरीद लेना।

३१

मिश्रनी बैल बड़ो बलवान। तनिक में करिहै ठाढ़े कान॥

मिश्रनी नस्ल का बैल बड़ा बलवान होता है। उसकी पहचान यह है कि आवाज़ सुनते ही कान खड़े कर लेता है।

३२

जहँ देखो पटवा की डोर। तहवाँ दीजै थैली छोर॥

जहाँ पीले रंग का बैल दिखाई पड़े, उसे तत्काल खरीद लेना।

३३

जोतै क पुरबी लादै क दमोय। हेंगा क काम दे जो देवहा होय॥

जोतने के लिये पूर्वी, लादने के लिये दमोय और पटेला के लिये देवहा नस्लों के बैल काम के होते हैं।

४३

जहाँ देखिहो रूपा धँवर। सुका चारि बरु दीह्यो अवर॥

जहाँ सफेद रंग का बैल देखना, उसके लिये एक रुपया अधिक भी देना पड़े तो देकर ले लेना।

३५

नीला कंधा बैंगन खुरा। कबहूँ न निकले कंता बुरा॥

नीले कंधे और बैंगनी रंग के खुरोंवाला बैल कभी बुरा नहीं निकलता।

३६

पतली पेंडुली मोटी रान। पूँछ होय भुइँ में तरियान॥
जाके होवै ऐसी गोई। वाकों तकैं और सब कोई॥

जिसकी पेंडुलियाँ (घुटने के नीचे का मांसल भाग) पतली, जाँघें मोटी और पूछें जमीन तक लटकती हों, ऐसे बैलों का जोड़ा जिसके पास होता है, उसकी प्रशंसा सब करते हैं।

३७

बरद बिसाहन जाओ कंता। खैरा का जनि देखो दंता॥
जहाँ परै खैरा की खुरी। तो कर डारै चापर पुरी॥
जहाँ परै खैरा को लार। अढ़नी लैके बुहारो सार॥

हे स्वामी! बैल खरीदने जाना तो कत्थई रंग के बैल का दाँत न देखना; अर्थात् न खरीदना। वह ऐसा अशुभ होता है कि जहाँ उसका खुर पड़ता है, वह गाँव ही चौपट हो जाता है। बैल बाँधने की जगह में उसकी लार भी पड़ जाय, तो उसे झाड़ू से बुहारकर साफ़ कर देना चाहिये।

३८

उजर बरौनी मुँह का महुवा। ताहि देखि चरवाहा रोवा॥

जिस बैल की बरौनी सफेद हो और मुँह महुवे के फल जैसे रंग का हो, उसे देखकर चरवाहा रो देता है।

३९

स्वेत रंग औ पीठ बरारी। ताहि देखि जनि चूक्यो लारी॥

सफ़ेद रंग का और जिसकी पीठ पर बरारी (एक लंबा निशान जो रीढ़ पर रहता है, रिघारी) हो, उसे देखकर लेने से मत चूकना।

४०

बाँसड़ औ मुँह धौरा। उन्हें देखि हरवाहा रौरा॥

उभरी हुई रीढ़ वाला और मुँह का सफेद बैल देखकर हलवाहा रौरियाने (खुश होने) लगा।

४१

नासू करै राज का नास।

नासू बैल (जिसकी पसलियाँ बराबर न हों) ऐसा मनहूस होता है कि राजा का सत्यानाश कर देता है।

४२

लंबे लंबे कान। और ढीला मुतान॥

छोड़ो-छोड़ो किसान। न तो जात हैं प्रान॥

जिस बैल के कान लंबे हों और मूतने की नली ढीली हो, हे किसान! उसे जल्द दूर करो, नहीं तो प्राण चले जायँगे।

४३

बरद बेसाहन जाओ कन्ता। कबरा का जनि देखौ दंता॥

हे स्वामी! बैल खरीदने जाना तो चितकबरे बैल का दाँत न देखना। अर्थात् उसकी उम्र न पूछना।

पाठान्तर—कुबरा (कुबड़ा)

४४

सात दाँत उदंत को, रंग जो काला होय॥

इनको कबहुँ न लीजिये, राम चाहै जो होय।

उदंत बैल सात दाँत का हो और उसका रंग काला हो, तो चाहे जिस दाम का मिले, उसे मत खरीदना।

४५

निटिया बरद छोटिया हारी । दूब कहै मोर काह उखारी ॥

नाटा बैल और छोटे कद का हलवाहा देखकर दूब कहती हैं कि ये मेरा क्या उखाड़ लेंगे ।

४६

मुँह का मोट माथ का महुवा । इन्हैं देखि जनि भूल्यो रहुवा ॥
धरती नहीं हराई जोतै । बैठि मेंड़ पर पागुरि करै ॥

जो बैल मुँह का मोटा हो और जिसका माथ महुवे के फल-जैसे रंग का हो, उसे देखकर सावधान हो जाना । वह एक हराई भी खेत नहीं जोतेगा; मेंड़ पर बैठकर पागुर करता रहेगा ।

४७

जहाँ परै फुलवा की लार । झाड़ू लैके बुहारो सार ॥

कोढ़ के रंगवाले बैल की लार जहाँ पड़े, उस सार (बैलों के रहने की जगह) को झाड़ू देकर साफ़ करो । अर्थात् वह बड़ा अशुभ होता है ।

४८

अमहा जबहा जोतहु जाय । भीख माँगि के जाहु बिलाय ॥

अमहा और जबहा नस्लवाले बैलों को जोतोगे तो भीख माँगनी पड़ेगी, और अंत में तबाह हो जाओगे ।

४९

मति कोई लेहु मसुरिहा बाहन । खसम मारि के डारै पायन ॥

जिस बैल का डील लटका हुआ हो, उसे मत खरीदना । वह मालिक को मारकर पैरों तले गिरा देता है ।

५०

बैल मसुरिहा जो कोउ ले । राज भंग पल में कर दे ॥
त्रिया बाल सब कुछ छुट जाय । भीख माँगि के घर घर खाय ॥

जो किसान मसुरिहा बैल (डील लटका हुआ, अथवा जिसकी पूँछ के बीच में दूसरे रंग के बालों का गुच्छा हो) खरीदता है, उसका जल्दी ही सब ठाट-बाट नष्ट हो जाता है । स्त्री-पुत्र सब छूट जाते हैं और वह घर-घर भीख माँगकर खाता है ।

५१

बड़सिंगा जनि लीजौ मोल। कुँए में डारो रुपिया खोल ॥

बड़ी सींगोंवाला बैल मत खरीदना, चाहे रुपया खोलकर कुँए में डाल देना।

५२

चरक भरौती माथ में महुवा। इन्हैं देखि जनि भूल्यो रहुवा ॥
दाम परे तो आधा तरे। नहिं रुपया पानी में परे ॥

चरक (चितकबरा), भरौती (कोढ़ के रंग का) और महुवे के फल जैसे रंग के माथा वाले बैल को देखकर होशियार हो जाना। इनका दाम लगा तो आधा ही मिलेगा; नहीं तो बिलकुल घाटा समझना।

५३

सौंख कहै मोर देख कला। बेमेहरी का करौं घरा ॥

सौंख (शङ्ख ऐसा बालों का घुमाव) कहती है कि मेरी तारीफ़ यह है कि मैं घर को बिना स्त्री का कर देती हूँ।

५४

छद्दर कहै मैं आऊँ जाऊँ। सद्दर कहै गुसैंयें खाऊँ ॥
नौदर कहै मैं नौ दिस धाऊँ। हित कुटुम्ब उपरोहित खाऊँ ॥

जिस बैल के छः ही दाँत होते हैं, वह कहता है कि मैं तो कहीं ठहरता ही नहीं। सात दाँतों वाला कहता है कि मैं तो मालिक ही को खा जाता हूँ। नौ दांतों वाला कहता है कि मैं नवो दिशाओं में दौड़ता हूँ और किसान के मित्र, कुटुम्बी और पुरोहित को भी खा जाता हूँ।

५५

ना मोहिं नाधो उलिया कुलिया ना मोहिं नाधो दायें ॥
बीस बरस तक करौं बरदई जो ना मिलिहैं गायें ॥

बैल कहता है—मुझे छोटे-छोटे कूलों में न जोतो, और दाहिनी ओर न जोतो और गाय से न मिलने दो, तो मैं बीस वर्ष तक अपना बल दिखला सकता हूँ।

५६

सन्थर जोतै पूत चरावै। लगते जेठ भुसौला छावै॥
भादों मास उठे जो गरदा। बीस बरस तक जोतो बरदा॥

चौरस जमीन जोते, किसान का बेटा चरावे, और जेठ लगते ही भूसे का घर छा ले अर्थात् बरसात में सूखा भूसा खाने को मिले और भादों के महीने में सार ऐसी सूखी रक्खी जाय कि उसमें धूल उड़े, तो बीस बरस तक बैल जोते जा सकते हैं।

५७

धूप धूर धूवाँ हो जहँवाँ। बरस पचीस बरद रह तहँवाँ॥

घाम, धूल और धुवां जहां मिलता रहेगा, वहाँ बैल पचीस वर्ष तक रह सकते हैं।

५८

मर्द निकौनी बरदै दायँ। दँवरी चलने में दुख पायँ॥

मर्द निराई करने में और बैल दाहिनी ओर जुतकर दाँवर चलने में दुःख पाते हैं।

५९

उदन्त बरदे उदन्त ब्याये। आप जाय या खसमै खाये॥

जो गाय उदन्त (जिसके दूध के दाँत न गिर चुके हों) अवस्था में साँड़ से जोड़ा खाय और उदन्त ही बच्चा दे, वह या तो खुद मर जायगी या मालिक को मार लेगी।

६०

कीकर माथा सिरस हल, हरियाने का बैल।
लोधा डाली लगाय के, घर-बैठे चौपड़ खेल॥

जिस किसान के पास कीकर (बबूल) का पाथा, सिरीस (वृक्ष) का हल, हरियाने (नस्ल) का बैल और लोध (वृक्ष) की डाली (?) हो, वह आनन्द से घर में बैठकर चौपड़ खेल सकता है।

पाठान्तर—चौसर।

जोताई

१

जो हर जोतै खेती वाकी। और नहीं तो जाकी ताकी॥

जो किसान स्वयं हल जोतता है, उसी की खेती है; नहीं तो फिर जिस-तिस की है।

२

सौ कै जोत पचासै जोतै ऊँचि क बाँधै आरी।
एतनेउ पर जो दून न उपजै, दिह्यो घाघ को गारी॥

सौ बीघे जोतना हो तो पचास ही बीघे जोतो, लेकिन मेंड़ ऊँचा बाँधो। इस पर भी उपज यदि दूनी न हो, तो घाघ को गाली देना।

३

सब कार हर तर। जो खसम सीर पर॥

सब काज हल के अधीन है; पर शर्त यह है कि मालिक स्वयं सीर पर काम करे।

४

जितना गहिरा जोतै खेत। बीज परे फल अच्छा देत॥

खेत को जितना ही गहिरा जोतोगे, उसमें बीज पड़ेगा, तो उतना ही अच्छा फल होगा।

५

कहा होय बहु बाहें। जोता न जाय थाहें॥

बहुत बार जोतने से क्या लाभ है, अगर गहरा न जोता गया तो?

६

खेती तो थोरी करै, मेहनत करै सिवाय।
राम करैं वहि मनुज को, टोटा कबहुँ न आय॥

जो किसान खेती कम, मेहनत अधिक करता है, भगवान् चाहेंगे तो उसे कभी किसी चीज की कमी न होगी।

७

उत्तम खेती जो हर गहा। मध्यम खेती जो सँग रहा ॥
जो पूछेसि हरवाहा कहाँ। बीज बूड़िगे तिनके तहाँ ॥

जो किसान अपने हाथ से हल चलाता है उसकी खेती उत्तम; जो हलवाहे के साथ रहता है, उसकी मध्यम; और जो पूछता है कि हलवाहा किस खेत को जोत रहा है, उसका तो बीज बोना ही व्यर्थ है।

८

उत्तम खेती आप सेती। मध्यम खेती भाई सेती ॥
निकृष्ट खेती नौकर सेती। बिगड़ गई तो बलाय सेती ॥

जो स्वयं करे, उसकी खेती उत्तम; जो भाई से कराये, उसकी मध्यम; और जो नौकर से कराये, उसकी सबसे रद्दी; क्योंकि खेती बिगड़ गई तो नौकर की बला से।

९

खेती। खसम सेती।
आधी केकी। जो देखे तेकी ॥
बिगड़ै केकी। घर बैठे पूछै तेकी ॥

खेती उसी की पूरी कही जायगी, जो अपने हाथ से करे; आधी उसकी है, जो स्वयं देख-रेख रक्खे; और जो घर बैठे पूछ लेता है कि खेती का क्या हाल है, उसकी तो बिगड़ी हुई समझो।

१०

असाढ़ जोतैं लड़के बारे। सावन भादों में हरवाहे ॥
कुआर जोतै घर का बेटा। तब ऊँचे हो होनहारे ॥

असाढ़ छोटे लड़के भी जोतें तो कोई हर्ज नहीं; लेकिन सावन-भादों में हलवाहा जोते तो ठीक; और क्वार में घर का खास बेटा जोते, तभी भाग्य ऊँचा होगा।

११

कच्चा खेत न जोतै कोई। नाहीं बीज न अँकुरै कोई ॥

जब तक खेत की मिट्टी बरके नहीं (भुरभुरी न हो) अर्थात् गोली रहे, खेत नहीं जोतना चाहिये, नहीं तो बीज जमेगा नहीं

१२

जोतै खेत घास ना टूटै। तेकर भाग साँझ ही फूटै॥

जोतने पर खेत की घास जड़ से न उखड़ जाय, तो उस किसान का भाग्य साँझ ही को फूटा हुआ समझना चाहिये। अर्थात् वह अगले दिन सबेरे कुछ बोयेगा, तो होगा नहीं।

१३

बहुत करै सो और को। थोड़ी करै सो आपको॥

ज्यादा रकबे में खेती करने से दूसरों को लाभ होता है; थोड़े रकबे में करने से अपने को।

१४

खेती तो उनकी कही, जो करे अन्हान अन्हान।
उनकी खेती क्या रही, जो देखें साँझ बिहान॥

खेती तो उनकी है, जो स्वयं अपने हाथ से हल जोतते हैं। उनकी क्या खेती है, जो साँझ-सबेरे देखने जाते हैं।

१५

जेहि घर साले सारथी, औ तिरिया कै सीख।
सावन में हर बैल बिन, तीनों माँगें भीख॥

जिस घर में साला गृहस्थी चलाता है; जिस घर में स्त्री ही की सलाह मानी जाती है और जिस किसान के पास सावन में हल-बैल नहीं हैं, ये तीनों भीख माँगते फिरेंगे।

१६

वाहे क्यों न असाढ़ एक बार। अब का बाहै बारम्बार॥

असाढ़ में एक बार क्यों नहीं जोता? अब बार-बार क्यों जोतता है?

१७

बिड़रे जोन पुराने बिया। ताकी खेती छिया बिया॥

दूर-दूर पर कूँड़ डालकर जो खेत जोतता है और पुराना बीज बोता है, उसकी खेती खराब जाती है।

१८

नौ नसी। न एक कसी॥

नौ बार हल जोतने से एक बार फावड़े से खेत की मिट्टी को उलट देना बढ़कर है।

१६

हर लगा पताल। तो टूट गया काल॥

हर जमीन में खूब गहरा चला गया हो, तो समझो कि अकाल का भय जाता रहा।

२०

छोटी नसी। धरती हँसी॥

हल का फल छोटा देखकर धरती हँस देती है।

२१

मेंड़ बाँधि दस जोतन दे। दस मन बिगहा मोसे ले॥

मेंड़ बाँधकर दस बार जोतने दो तो बीघा पीछे दस मन की पैदावार मुझसे ले सकते हो।

२२

थोड़ा जोतै बहुत हेंगावे, ऊँच न बाँधै आड़।
ऊँचे पर खेती करे, पैदा होवै भाड़॥

थोड़ा जोते और पटेला बहुत दे; मेंड़ ऊँचा न बाँधे और ऊँची जगह में खेती करे, तो भड़भड़ा (एक काँटेदार पौधा) ही पैदा होगा; अथवा क्या खाक पैदा होगा ?

२३

गहिर न जोतै बोवै धान। सो घर कोठिला भरै किसान॥

धान के खेत को गहरा न जोतकर धान बो दे तो इतना धान पैदा होगा कि घर कोठिलों से भर जायगा।

२४

खेत बेपनिया जोतो तब। ऊपर कुँवा खोदाओ जब॥

जिस खेत में सिंचाई के लिये पानी की आमद न हो, उसे जोतने के पहले उस पर एक कुँवा खोदवा लो।

२५

सौ तोड़कर करै पचास। बरधे बरधा काटै घास॥

सौ बीघा खेत हो तो पचास ही जोतो, और बैलों ही से उसकी घास काट डालो।

२६

बाँह न जोतैं मोटा। बीज बतावैं खोटा॥

खेत को गहरा तो नहीं जोतते, उलटे बीज की शिकायत करते हैं।

२७

पाही जोतै औ घर जाय। तेहि गिरहस्त भवानी खायँ॥

जो किसान घर से दूर के खेत को जोतकर घर चला जाया करता है, उस गृहस्थ को भवानी खा जायँ, तो अच्छा।

२८

जोंधरी जोतै तोड़ मरोड़। तब वह डारै कोठिला फोड़।

मक्के के खेत को उलट-पलट कर खूब जोतो, तो इतनी पैदावार होगी कि कोठिले में न समायगी।

२९

चिरैया में चीर फार। असरेखा में टार टार॥
मघा में काँदो सार॥

चिरैया नक्षत्र में जमीन को थोड़ा-सा भी गोड़कर जड़हन लगा दो तो पैदावार अच्छी होगी। अश्लेषा में जोतकर लगाना पड़ेगा। मघा में खाद-पाँस सड़ाकर लगाओगे, तभी होगा।

३०

कातिक मास रात हर जोतो। टाँग पसारे घर मत सूतो॥

कातिक के महीने में रात में भी हल चलाओ। पैर फैलाकर घर में सोते मत रहो।

३१

आगे गोहूँ पीछे धान। वाको कहिये बड़ा किसान॥

जो धान बोने से पहले गेहूँ के खेत की जोताई कर रखता है, वही बड़ा किसान कहा जायगा।

३२

गेहूँ भवा काहें। असाढ़ के दो बाहें॥

गेहूँ की पैदावार अच्छी क्यों हुई? क्योंकि असाढ़ में दो बार जोत दिया गया था।

३३

गेहूँ भवा काहें। सोलह बाहें नौ गाहें॥

गेहूँ की पैदावार अच्छी क्यों हुई? क्योंकि सोलह बार जोता गया था, और नौ बार पटेला दिया गया था।

३४

बाली छोटी भई काहें। बिना असाढ़ की दुइ बाहें॥

गेहूँ-जौ की बालें छोटी क्यों हुई? क्योंकि असाढ़ में दो बार जोता नहीं गया था।

३५

दस बाहों का माँड़ा। बीस बाहों का गाँड़ा॥

गेहूँ के खेत को दस बार जोतना चाहिये और ईख के खेत को बीस बार।

३६

मैदे गोहूँ। ढेले चना॥

गेहूँ के खेत की मिट्टी मैदे-जैसी मुलायम होनी चाहिये, और चने का खेत ढेले वाला हो।

३७

गोहूँ भवा काहें। कातिक के चौबाहें॥

गेहूँ की पैदावार अच्छी क्यों हुई? क्योंकि कातिक में चार बार जोता गया था।

३८

गोहूँ बाहें। धान बिदाहें॥

गेहूँ का खेत कई बार जोतने से और धान बिदाहने (धान उग आये तब उस पर पटेला चला देने) से पैदावार अच्छी होती है।

३९

गोहूँ भवा काहें। सोलह दायँ बाहें॥

गेहूँ की पैदावार सोलह बार जोतने से अच्छी हुई।

४०

गोहूँ बाहें, चना दलायें। धान बिदाहें, मक्की निराये॥
ऊख कसाये।

गेहूँ के खेत को बहुत बार जोतने से, चने को खोंटने से, धान को उगने पर पटेला देने से, मक्के को निराने से और ईख को बोने से पहले पानी में छोड़ रखने से लाभ होता है।

४१

मघा मघारै, जेठ में जारै, भादों सारै।
तेकर मेहरी डेहरी पारै।

गेहूँ का खेत माघ में जाड़ा खाय, जेठ में जले और फिर खाद डाल कर और जोत कर भादों में सड़ाया जाय, तब किसान की स्त्री अनाज रखने के लिये कोठिला बनायेगी।

४२

जोत न मानै अरसी चना। हित न मानै हरामी जना॥

अलसी और चना जोत नहीं मानते; इसी प्रकार नीच लोग उपकार नहीं मानते।

पाठान्तर — अरसी = मसुरी।

४३

जब सैल खटाखट बाजै। तब चना खूब ही गाजै॥

जब खेत में इतने ढेले हों कि जोतते समय सैल खटाखट बोले, तब चने की पैदावार खूब होगी।

४४

गोहूँ बाहा धान गाह। ऊख गोड़ाई से है आहा॥

गेहूँ का खेत खूब जोता गया हो, धान के खेत में पटेला चलाया गया हो, और ईख गोड़ी गई हो, तो क्या कहना है।

४५

जो कपास को नाहीं गोड़ी। वाके हाथ लगै नहिं कौड़ी॥

कपास के खेत को जिसने नहीं गोड़ा, उसके हाथ कौड़ी भी न लगेगी; अर्थात् पैदावार न होगी।

खाद

खाद खेती की जान है। जो किसान खेत में खाद नहीं डालता, वह व्यर्थ परिश्रम करता है। खाद और खाद डालने के तरीकों पर भी गाँवों में कहावतें प्रचलित हैं। उनमें से कुछ कहावतें यहाँ दी जाती हैं :—

१

खाद परै तो खेत।
नहीं तो कूड़ा रेत॥

खाद पड़ने ही से खेती हो सकती है। नहीं तो कूड़ा-करकट और रेत के सिवा कुछ नहीं होगा।

२

गोबर मैला नीम की खली।
यासे खेती दूनी फली॥

गोबर, पाखाना और नीम की खली डालने से खेती में पैदावार दूनी हो जाती है।

३

गोबर मैला पानी सड़ै।
तब खेती में दाना पड़ै॥

गोबर, पाखाना और पत्ती खेत में सड़े, तब दाना अधिक होगा।

४

खेती करै खाद से भरै।
सौ मन कोठिला में लै धरै॥

खाद से खेत को पाट दे, तब खेती करे, और सौ मन अन्न से कोठिला भर दे।

५

गोबर, चोकर, चकवँड़, रूसा।
इनके छोड़े होय न भूसा॥

गोबर, चोकर, चकवन, और अड़ूले की पत्तियाँ खेत में छोड़ने से दाना ही दाना होगा, भूसा कम होगा।

६

जेकरे खेत पड़ा नहिं गोबर।
वहि किसान को जान्यो दूबर ॥

जिस किसान के खेत में गोबर नहीं पड़ा, उसे कमजोर समझना चाहिये।

७

अबर खेत जो जुट्टो खाय।
सड़ै बहुत तो बहुत मोटाय ॥

कमजोर खेत में यदि नील का डंठल डाला जाय, तो वह जितना ही सड़ेगा, खेत उतना ही जोरदार होगा।

८

खाद देय तौ होवै खेती। नहीं तो रहै नदी की रेती ॥

खाद देने से पैदावार होगी; न देने से नदी के किनारे की रेती की तरह खेत सफाचट पड़ा रहेगा।

९

जाकर डारो गोबर खाद। तब देखो खेती का स्वाद ॥

खेत में गोबर की खाद डालो, तब खेती का मजा देखो।

१०

खेते पाँसा जो न किसाना। ओहि के घरे दरिद्र समाना ॥

जो किसान खेत में खाद नहीं डालता, उसके घर में गरीबी समाई रहती है।

११

असाढ़ में खाद खेत में जावै। तब भरि मूठी दाना पावै ॥

असाढ़ लगते ही खेत में खाद पड़ जायगी, तभी मनमाना अन्न मिलेगा।

१२

कुड़हल राखो खाद पटाय। तब धानों के बीज दिखाय ॥

कुड़हल (ऊसर, बंजर) जमीन को खाद से पाट दो, तब धान के बीज दिखाई पड़ेंगे।

१३

जो तुम देखो नील की जूठी। सब खादों में रहे अनूठी ॥

अगर तुम नील के डंठलों को खेत में डालकर सड़ा लो, तो वह सब खादों में अनूठी खाद है।

१४

वही किसानी में है पूरा। जो छोड़ै हड्डी का चूरा ॥

वही किसान होशियार कहा जायगा जो खेत में हड्डी का चूरा छोड़ेगा।

१५

सन के डंठल खेत छिटावै। तिनते लाभ चौगुना पावै ॥

खेत में सन के डंठलों को छिटवा देने से उपज चौगुनी हो जाती है।

१६

खादै कूड़ा ना टरै, करम लिखा टरि जाय।
रहिमन कहत बनाय के, देवो पास बनाय ॥

भाग्य का लिखा टल सकता है, पर कूड़े की खाद निष्फल नहीं जाती। रहीम कहते हैं, खूब खाद डालो।

१७

सनई बोवै सनई काटै, सनई सारे खेत मझार।
उलटे पलटै दोनों जोतै, वहि दीजै गल्ला का भार ॥

सनई बोओ, सनई काटो और सनई को खेत में सड़ा डालो। खेत को लट-पलट कर जोतो, तो गल्ला ही गल्ला पैदा होगा।

१८

भुइँ भइ काली काहे। जीव अंस अधिकाहे ॥

जमीन काली क्यों हुई? क्योंकि उसमें जीव-जंतु अधिक हो गये हैं।

१९

तोड़ दीन क्यारी। खेत गा उजारी ॥

क्यारी के मेड़ तोड़ देने से खाद बह जायगी और खेत उजड़ जायगा, उसमें पैदावार कम होगी।

२०

सौ चास। न एक पास ॥

सौ बार जोतने से एक बार खाद डालना ज्यादा लाभदायक है।

२१

ऊँचे खाले नावो चास। थोर क जोतै ढेरक घास ॥

खेत को समथर किये बिना ऊँची और नीची जमीन में खाद डालोगे तो एक तो थोड़ा ही जोत सकोगे, दूसरे घास ज्यादा पैदा होगी।

बीज की तौल

१

जौ गेहूँ बोवै पाँच पसेर।
मटर क बीघा तीसै सेर॥
बोवै चना पसेरी तीन।
तिन सेर बीघा जोन्हरी कोन॥
दो सेर मोथी अरहर मास।
डेढ़ सेर बीघा बीज कपास॥
पाँच पसेरी बिगहा धान।
तीन पसेरी जड़हन मान॥
सवा सेर बीघा साँवाँ मान।
तिल्ली सरसों अँजुरी जान॥
बरैं कोदौ सेर बोवाओ।
डेढ़ सेर बीघा तीसी नाओ॥
डेढ़ सेर बजरा बजरी सँवाँ।
कोदौ काँकुनि सवैया ववा॥
यहि विधि से जब बोवै किसान।
दूने लाभ की खेती जान॥

जौ-गेहूँ फी बीघा पचीस सेर, मटर तीस सेर, चना पन्द्रह सेर, मक्का तीन सेर, अरहर, मोथी और उर्द दो-दो सेर, कपास डेढ़ सेर, साँवाँ सवा सेर, तिल्ली और सरसों अँजुली भर, बरैं और कोदौ एक सेर, अलसी डेढ़ सेर, बजरा, बजरी और सावाँ मिलाकर डेढ़ सेर, कोदौ और काँकुनि मिलाकर आधा सेर बीज बोना चाहिये। जो किसान इस हिसाब से बोयेगा, उसकी उपज दूनी हो जायगी।

बोआई

१

बुद्ध बृहस्पति दो भले, सुक्र न भले बखान ॥
रवि मंगल बोउनी करै, द्वार न आवै धान ॥

बोने के लिये बुध और बृहस्पति के दिन अच्छे हैं; शुक्र का दिन अच्छा नहीं। रविवार और मंगलवार को बोने से अन्न की पैदावार न होगी।

२

बुध बउनी। सुक्र लउनी ॥

बुधवार को बोना चाहिये, और शुक्रवार को काटना।

३

अगाई। सो सवाई ॥

पहले बोने से सवाया अन्न पैदा होता है।

४

आगे की खेती आगे आगे। पाछे की खेती भाग जागे ॥

जो पहले बोता है, वह सबसे आगे और ज्यादा अन्न उपजाता है, पीछे बोने वाले का भाग्य ही जगे, तो कुछ हो।

५

कमती करै गाजा बाजा। जौनै लागै तौने राजा ॥

थोड़ी ही खेती करे और कई अन्नों को मिलाकर (गजर-बजर) बोये तो जो कुछ पैदा होगा, उसी से किसान राजा हो जायगा।

६

बहु बोना बहु करियाना, औ बहुतै बोया चना ॥
कहैं मनोहर जंगली, जावैंगे ये तीनो जना ॥

बहुत बोनेवाला, बहुत काटनेवाला और बहुत चना बोनेवाला, ये तीनों नष्ट हो जायँगे।

७

अति ऊँचे भुइँधरन पै, भुजगन के अस्थान।
तुलसी अति नीचे सुखद, ऊँख अन्न अरु पान ॥

बहुत ऊँचे पहाड़ होते हैं, लेकिन उन पर साँप रहते हैं। बहुत नीचे स्थान ही सुख देनेवाले होते हैं; उनमें अन्न और पान पैदा होते हैं।

८

आस-पास रबी बीच में खरीफ।
नोन मिर्च डाल के खा गया हरीफ॥

जो किसान आस-पास रबी की फसल के लिये खेत रखकर बीच में खरीफ की फसल बोयेगा, उसकी फसलों को चोर नमक-मिर्च लगा कर (तिकड़म बाजी से) चुरा ले जायँगे।

हरीफ = चोर।

९

चित्रा गोहूँ अद्रा धान।
न उनके गेरुई न उनके घाम॥

चित्रा नक्षत्र में गेहूँ और आर्द्रा नक्षत्र में धान बोने से गेहूँ को गेरुई नहीं लगती, और धान को धूप नहीं लगती।

१०

अद्रा धान पुनर्बस पैया।
गया किसान जो बोवै चिरैया॥

आर्द्रा में धान बोना चाहिये। पुनर्बसु में बोने से केवल (पैया बिना चावल का धान) हाथ आयेगा। और चिरैया (पुष्य) नक्षत्र में बोने से तो किसान का नाश ही हो जायगा।

११

सावन साँवाँ अगहन जवा।
जितना बोवै उतना लवा॥

सावन में साँवाँ, अगहन में जौ जितना बोओगे, उतना ही काटोगे, अर्थात् बीज और पैदावार बराबर होगी।

१२

पुरवा में जिन रोपो भइया।
एक धान में सोरह पैया॥

हे भाई! पूर्वा नक्षत्र में धान न रोपना, नहीं तो एक धान में सोलह पैया होंगी; अर्थात् पैदावार बहुत खराब होगी।

१३

आद्रा रेंड पुनर्बस पाती।
लाग चिरैया दिया न बाती॥

धान आर्द्रा में बोया जायगा तो डंठल कड़े होंगे; और पुनर्बसु में पत्तियाँ अधिक होंगी। चिरैया में बोया जायगा, तो घर में अँधेरा ही रहेगा।

१४

पुक्ख पुनर्बस बोवै धान।
असरेखा जोन्हरी परमान॥

पुष्य और पुनर्बसु नक्षत्रों में धान बोना चाहिये और अश्लेषा में मक्का (जोन्हरी)।

१५

भादों की छठ चाँदनी, जो अनुराधा हो।
ऊबर खाबर बोय दे, अन्न घनेरा हो॥

भादों सुदी छठ को अनुराधा हो, तो ऊबड़ खाबड़ जमीन में भी बो दोगे, तो अन्न बहुत पैदा होगा।

१६

कुड़हल भदई बोओ यार।
तब चिउरा की होय बहार॥

कुड़हल जमीन में (जो धान बोने के लिये जेठ में खोदकर तैयार की जाती है; अथवा धरती खोदकर) भादों की फसल बोओ, तब चिउरा का मजा मिलेगा। अथवा छींट कर नहीं, बल्कि हल के कूँड़ से भदईं धान बोओ।

१७

रोहिनी खाट मृगसिरा छउनी।
अद्रा आये धान की बोउनी॥

रोहिणी नक्षत्र में खाट बुनवाकर और मृगसिरा में भूसा-घर और गोरू-घर आदि छवाकर किसान को खाली हो जाना चाहिये; ताकि आर्द्रा नक्षत्र के लगते ही धान बोने के लिये वह तैयार रहे।

१८

हस्त न बजरी चित्र न चना।
स्वाती न गोहूँ बिसाखा न धना॥

हस्त नक्षत्र में बजरी, चित्रा में चना, स्वाती में गेहूँ और बिशाखा में धान न बोना चाहिये।

१९

ऊगो हरनो फूली कास।
अब का बोये निगोड़े मास॥

हरिणी तारा उदय हो गया, और कास में फूल आ गये। ऐ मूर्ख! अब तू उड़द क्यों बोता है?

२०

मारूँ हरिनी काटूँ कास।
बोऊँ उर्द हथिया की आस॥

हरिणी तारा को मार डालूँगा और कास को काट डालूँगा; मैं हथिया (हस्त) नक्षत्र के भरोसे उड़द बोऊँगा।

२१

कातिक बोवै अगहन भरै।
ताको हाकिम फिर का करै॥

जो कातिक में बोता है और अगहन में सींचता है; उसको हाकिम क्या कर सकता है ? अर्थात् उसके खेत में अच्छी पैदावार होगी और वह लगान आसानी से दे सकेगा।

२२

बोवै बजरा आये पुक्ख।
फिर मन कैसे पावै सुक्ख॥

पुष्य नक्षत्र लगने पर बाजरा बोयेगा तो मन को सुख कैसे मिलेगा ?

२३

कदम कदम पर बाजरा, मेघ कुदौनी जुवार।
ऐसे बोवै जो कोई, घर घर भरै कोठार॥

एक-एक कदम की दूरी पर बाजरा और मेढक की कुदान पर ज्वार जो कोई बोयेगा, तो उसके घर कोठिलों से भर जायँगे।

२४

सना घना बन बेगरा, मेढक फन्दे ज्वार॥
पैग पैग पर बाजरा, करे दरिद्रै पार॥

सन को घना, कपास को छीदा-छीदा, ज्वार को मेढक की कुदान पर और बाजरे को एक-एक कदम की दूरी पर बोवे, तो ये दरिद्रता से पार कर देंगे।

२५

दीवाली को बोये दिवालिया।

जो दिवाली को बोता है, वह दिवालिया हो जाता है।

२६

बोओ गेहूँ काट कपास।
होय न ढेला होय न घास॥

कपास काटकर उस खेत में गेहूँ बोओ। उसमें ढेला और घास न होनी चाहिये।

२७

घनी घनी जब सनई बोवै।
तब सुतरी की आसा होवै॥

सनई को घनी बोने से सुतली की आशा होगी।

२८

मक्का जोन्हरी औ बजरी।
इनको बोवै कुछ बिड़री॥

मक्का, बाजरा और बजड़ी को कुछ दूर-दूर बोना चाहिये।

२९

हरिन छलाँगन काँकरी, पैगे पैग कपास।
जाय कहो किसान से, बोवै घनी उखार॥

हरिन की छलांग जितनी लंबी होती है, उतनी दूरी पर ककड़ी और कदम-कदम की दूरी पर कपास बोनी चाहिये। पर किसान को कहो, ईख को घनी बोवे।

३०

गाजर गंजी मूरी। तीनों बोवे दूरी॥

गाजर, शकरकन्द और मूली को दूर-दूर बोना चाहिये।

३१

पहिले काँकरि पीछे धान। उसको कहिये पूर किसान॥

जो पहले ककड़ी और फिर धान बोता है, वही पूरा किसान है।

३२

बोवत बनै तो बोइयो। नहीं तो बरा बना कर खइयो॥

उड़द बोते बने तो बोना, नहीं तो बड़े बनाकर खाना।

३३

रोहिनी कोदौ मृगसिरा धान। अद्रा जोन्हरी बोवै किसान।

रोहिणी नक्षत्र में कोदौ, मृगशिरा में धान और आर्द्रा में जोन्हरी बोना चाहिये।

३४

कर्क बोवावै काँकरी, सिंह अबोनो जाय।
ऐसा बोलै भड्डुरी, कीड़ा फिरि फिरि खाय॥

कर्क राशि में कँकड़ी बोये और सिंह में न बोये, तो कीड़े बार-बार लगेंगे।

३५

साठी में साठी करै, बाड़ी में बाड़ी।
ईख में जो धान बोवै, फूँकौ वाकी दाढ़ी॥

जो किसान साठी (धान) के खेत में फिर साठी और कपास के खेत में फिर कपास बोता है उसकी दाढी जला दो; अर्थात् वह मूर्ख है।

३६

तिल कोरें। उर्द बिलोरें॥

नोट—कोरना और बिलोरना शब्दों के ठीक अर्थ नहीं मालूम हो सके।

३७

विधि का लिखा न होई आन। आधे चित्रा फूटै धान॥

ब्रह्मा का लिखा टल नहीं सकता; चित्रा नक्षत्र आधा बीत जाने ही पर धान फूटेगा।

३८

सावन सूखे धान। भादों सूखे गेहूँ॥

सावन में सूखा पड़े, तो धान की फसल और भादों में सूखा पड़े, तो गेहूँ की फसल अच्छी होगी।

३९

जब बर्रे बरौठे आई। तब रबी की करौ बोआई॥

जब बर्रे घर में उड़ती हुई आये, तब रबी की फसल की बोआई शुरू करनी चाहिये।

४०

आधे हथिया मूरि मुराई। आधे हथिया सरसों राई॥

नक्षत्र हस्तके आधा बीतने पर मूली आदि और अंत में सरसों और राई बोनी चाहिये।

४१

नरसी गोहूँ सरसी जवा। अति के वरसे चना बवा॥

गेहूँ को जरा खुश्क खेत में और जौ को तर खेत में बोना चाहिये। और यदि बरसात अच्छी हुई हो तो चना बोना चाहिये।

४२

दाना अरसी। बोया सरसी॥

पोस्त और अलसी को तर खेत में बोना चाहिये।

४३

छीदी भली जौ चना, छीदी भली कपास॥
जिनकी छीदी ऊखड़ी, उनकी छोड़ो आस॥

जौ और चना छीदे-छीदे बोना चाहिये और कपास भी; लेकिन जिनकी ईख छीदी बोई गई है, उनकी तो आशा ही छोड़ दो।

४४

कोठिला बैठी बोली जई। खिचड़ी खाकर क्यों नहिं बई।
जो कहुँ बोउतेउ बिगहा चार। तो मैं डरतेउँ कोठिला फार॥

कोठिला में बैठी हुई जई बोली कि मुझे खिचड़ी (त्योहार जो आधे अगहन तक पड़ता है) खाकर क्यों नहीं बोया? यदि तुम चार बीघा भी बोते, तो मैं इतनी पैदा होती कि तुम्हारे कोठिले को फाड़ डालती।

पाठान्तर :—आधे अगहन काहें न बई।

४५

अगहन जो कोई बोवै जौवा। होइ तो होइ नहिं खाइ कौवा॥

अगहन में कोई जौ बोयेगा, वह होगा तो होगा, नहीं तो जौ के बीज को कौवे खा जायँगे।

४६

अगहन बवा। कहूँ मन कहूँ सवा॥

अगहन में बोने से कहीं मन भर, कहीं सवा मन बीघा पीछे पैदा होगा।

४७

चना चितरा चौगुना, स्वाती गोहूँ होय।

चित्रा में बोने से चना और स्वाती में बोने से गेहूँ चौगुना पैदा होता है। (चने को गेहूँ से पहले बोना चाहिये।)

४८

बाड़ी में बाड़ी करै, करै ईख में ईख।
वे घर यों ही जायँगे, सुनै पराई सीख॥

जो किसान कपास के खेत में फिर कपास और ईख के खेत में फिर ईख बोता है और जो दूसरों की सलाह मानकर चलता है, उसकी गृहस्थी यों ही बरबाद जायगी।

४९

चित्रा गोहूँ स्वाती भूसा। अनुराधा में नाज न भूसा॥

चित्रा में बोने से गेहूँ ज्यादा पैदा होगा; स्वाती में बोने से भूसा। और अनुराधा में बोने से तो न गेहूँ ही ज्यादा होगा, न भूसा ही।

५०

सरसे अरसी, निरसे चना।

खेत में तरी हो, तो अलसी और खुश्की हो, तो चना बोओ।

५१

जो तेरे कुनबा घना। तो क्यों न बोये चना॥

हे किसान! यदि तुम्हारा परिवार बड़ा है, तो तुमने चना क्यों नहीं बोया?

५२

मकड़ी घासा पूरा जाला। बीज चने का भरि भरि डाला॥

मकड़ी जब घास पर जाला तनने लगे, तब चना बोना चाहिये।

५३

भादों चार औ आसिन चार। आदि अंत कहँ जोड़ विचार॥
कहैं घाघ केराव क बोउनी। कोठिला भरिके राखहु अपनी॥

५४

तेरह कातिक तीन असाढ़। जो चूका सो गया बजार॥

कातिक में तेरह दिनों में और असाढ़ में तीन दिनों के अंदर ही खेत बो लेना चाहिये। जो चूकेगा, उसे बाजार से खरीदकर खाना पड़ेगा।

५५

मघा मसीना बोइये झार। फिर राखौ रब्बी की डार॥

मघा नक्षत्र में साफ करके उड़द बो दो; फिर रबी की फसल के लिए खेत खाली कर लो।

५६

काँसी कूसी चौथ क चान। अब का रोपत्रा धान किसान॥

कास-कुस फूल आये, भादों की उजली चौथ भी हो गई; हे किसान! अब धान रोपकर क्या करोगे?

५७

अदरा माँहि जो बोवउ साठी। दुख को मारि निकारउ लाठी॥

आर्द्रा में जो साठी बो दोगे, तो दुःख को लाठी मारकर घर से निकाल दोगे।

५८

पूस न बोये, पीस खाये।

पौष में बोने से तो पीसकर खाना ही अच्छा।

५९

या तो बोओ कपास औ ईख। या तो माँग के खाओ भीख॥

या तो कपास और ईख बोओ, या भीख माँगकर खाओ।

६०

जो तू भूखा माल का। ईख कर ले नाल का॥

तुम धन चाहते हो, तो उस जमीन में ईख बोओ, जो फागुन से फागुन तक तैयार की जाती है।

६१

ऊख तक खेती, हाथी तक बनिज॥

ईख से बढ़कर कोई खेती नहीं; हाथी से बढ़कर कोई व्यापार नहीं।

६२

रूँध बाँध के फाग दिखाये। सो किसान मोरे मन भाये॥

ईख कहती है—मुझे बोकर, मेंड़ बाँधकर और चारोंओर से रूँध कर जो मुझे होली दिखला देता है, अर्थात् होली के पहले ही मुझे बो लेता है, वह किसान मुझे बहुत पसन्द है।

६३

खेती करे ऊख कपास। घर करै व्यवहरिया पास॥

ईख और कपास को खेती करना और कर्ज देने वाले के पास बसना सबसे अच्छा है।

६४

ऊख सरवती दिवला धान। इन्हें छाँड़ि जनि बोओ आन॥

सरवती (किस्म) को ईख और दिवला धान ही बोना। इनके बदले में दूसरा नहीं।

६५

ऊख तो कर ले राँड़। और पेरे उसका साँड़॥

ईख की खेती तो राँड़ औरत भी कर सकती है, अगर उसका साँड़ अर्थात् बेटा पेरे तो।

६६

ऊख गोड़ि के तुरत दबावै। तो फिर ऊख बहुत सुख पावै॥

ईख को गोड़कर तुरन्त ही उसकी मिट्टी को बराबर कर दे, तो ईख बहुत सुख पाती है, अर्थात् जल्द पनपती है।

६७

प्रीति तो कीजै ऊख सी, जामें रस की खानि।
जहाँ गाँठ तहँ रस नहीं, यही प्रीति की बानि॥

प्रीति ईख की तरह करनी चाहिये, जिसमें रस ही रस हो। प्रीति का भी ऐसा ही स्वभाव है कि जहाँ गाँठ होती है, वहाँ रस नहीं होता।

६८

ऊख करै सब कोई। जो बीच में जेठ न होई॥

यदि बीच में जेठ का महीना न पड़े, तो ईख की खेती तो हरएक आदमी कर सकता है।

६९

तीन कियारी तेरह गोड़। तब देखो ऊखी का पोर॥

तीन बार सींचने और तेरह बार गोड़ने से ईख के पोर (तने) दिखलाई पड़ते हैं; अर्थात् वह बढ़ती है।

७०

जेठ में जरै माघ में ठरै। तब जीभी पर रोड़ा परै॥

ईख की खेती करने वाला जेठ की कड़ी धूप में जलता है और माघ कड़ाके के जाड़े में काँपता है; तब उसकी जीभ पर गुड़ के ढेले पड़ते हैं।

७१

ऊख कनाई काहे से। स्वाती पानी पाये से॥

ईख कना क्यों गई ? क्योंकि उस पर स्वाती का पानी पड़ गया था। कना = लाल रंग का कीड़ा, जो ईख के रेशे में लग जाता है।

७२

उहै किसान मोरे मन भावै। उखड़ि पेरि कै फगुवा गावै॥

मुझे वही किसान अच्छा लगता है, जो ईख पेरकर, निश्चिंत होकर, होली का त्योहार मनाता है।

७३

मघा मघारै पुरवा सँवारै। फिर उतरा पर खेत निहारै॥

मघा नक्षत्र में जड़हन लगा दो, और पूर्वा भर देख-भाल रक्खो, तो उत्तरा में खेत को हरा-भरा देखोगे।

७४

सौ बाहें मूर पचास बाहें गूर। पचीस बाहें जवा, जो चाहो सो लवा॥

गेहूँ को सौ बार जोते; ईख को पचास बार और जौ को पचीस बार, तो जितना चाहोगे, उतनी पैदावार होगी।

७५

आगे की खेती आगे आगे। पीछे की खेती भाग जागे॥

जो आगे खेत बोयेगा, उसकी फसल भी सबसे आगे तैयार होगी। जो पीछे बोयेगा, उसके तो भाग्य उदय हों, तभी पैदावार होगी।

७६

रोहिनि मृगसिर बोये मक्का। उड़द मड़वा होय न टक्का॥
मृगसिर में जो बोवे चेना। जमींदार को कुछ नहिं देना॥

रोहिणी और मृगशिर नक्षत्रों में मक्का बोना चाहिये, किन्तु इन नक्षत्रों में उड़द और मडुवा बोया जायगा तो पैदावार बिल्कुल न होगी।

निराई

१

दो पत्तो क्यों न निराये। अब बीनत क्यों पछताये॥

कपास में दो पत्तियाँ लगते ही नहीं निराया, तो अब रुई चुनते समय पछताते क्यों हो ?

२

सावन भादों खेत निरावै। तब गृहस्थ बहुतै सुख पावै॥

किसान सावन-भादों में खेत निरायेगा तो बहुत ही सुख पायेगा।

३

बाँध कुदारी खुरपी हाथ। लाठी हँसुवा राखै साथ॥
काटै घास निरावै खेत। पूरा किसान वही कहि देत॥

कुदाल, खुरपी हाथ में लेकर, हँसुवा और लाठी साथ रखकर जो घास काटता और खेत निराता है, वही पूरा किसान कहा जायगा।

४

भली जाति कुरमिनि कै, खुरपी हाथ।
आपन खेत निरावैं, पियके साथ॥

कुर्मिनि की जाति बड़ी अच्छी है, वह हाथ में खुरपी लेकर अपने पति के साथ खेत निराती है।

सिंचाई

१

खेत बेपनिया बूढ़ा बैल। सो किसान साँझे गहै गैल ॥

जिस किसान के खेत मे सिंचाई का कोई साधन नहीं और बैल बुड्ढा है, उसके लिये सबेरा होना ही व्यर्थ है।

२

गेहूँ आये बाल। खेत बनाओ ताल ॥

गेहूँ में बाल आ जायें, तो खूब सींच दो।

३

सभी किसानी हेठो। अगहनिया पानी जेठी ॥

अगहन में सींचना किसानी की सभी तरकीबों से बढ़कर है।

४

धान पान उखेरा। तीनों पानी के चेरा ॥

धान, पान और ईख, तीनों पानी के दास हैं।

५

तीन कियारो तेरह गोड़। तब देखो ऊखी का पोर ॥

तीन बार सींचो और तेरह बार गोड़ो, तब ईख का पोर (गाँठ) देखोगे। अर्थात् ईख जल्दी-जल्दी बढ़ने लगेगी।

६

धान पान औ खीरा। तीनों पानी के कीरा ॥

धान, पान और खीरा, ये तीनों पानी के कीड़े हैं; अर्थात् इनको पानी खूब चाहिये।

७

तरकारी है तरकारी। या में पानी की अधिकारी ॥

तरकारी (साग-सब्जी) तर चीज है। इसमें पानी अधिक चाहिये।

८

काले फूल न पाया पानी। धान मरा अध बीच जवानी ॥

धान में जब काला फूल निकल आया, तब यदि उसे पानी न मिला, तो वह जवानी के बीच ही में मर जायगा।

९

चेना जी का लेना। सोलह पानी देना॥
बीस बीस के बच्छा हारे, हारे बलम नगीना॥
हाथ में रोटी बगल में पैना,
एकौ बार बहै पुरवाई, लेना है ना देना॥

चेना (साँवें की तरह का एक धान्य) जी ले लेनेवाला है। सोलह बार सींचना पड़ता है। बीस-बीस मुट्ठी (नाप) के बैल हार जाते हैं और जवान पति भी। एक बार भी पुरवा हवा बह जाय, तो सब नष्ट हो जाता है।

१०

चना सींच पर जब हो आवै। ताको पहले तुरत खोंटावें॥

चना जब सिंचाई पर आ जाय, तब उसे तुरंत खोंटवा लेना चाहिये।

११

साठी होवे साठवें दिन। जो पानी पावै आठवें दिन॥

आठ-आठ दिन पर पानी पाता रहे, तो साठी (धान) साठवें दिन तैयार हो जाता है।

१२

अगहन में सरवा भर। फिर करवा भर॥

अगहन में फसल के लिये एक कटोरा भर पानी उतना ही लाभदायक है, जितना दूसरे महीनों में एक घड़ा भर।

१३

जब बरसैं तब बाँधो क्यारी। बड़ा किसान जो हाथ कुदारी॥

जब पानी बरसने लगे, तब खेत में मेंड बाँध कर क्यारियाँ बना दो; बड़ा किसान वही है, जो पानी बरसते समय हाथ में कुदाल लिये रहता है।

१४

पानी बरसे बहन न पावे। तब खेती का मजा दिखावे।

पानी बरसे और बहने न पावे, अर्थात् क्यारियों में रोक लिया जाय, तब खेती का मज़ा देखो।

१५

पानी बरसे आधे पूस। आधा गोहूँ आधा भूस॥

आधे पौष में पानी बरसे, तो गेहूँ और भूसा बराबर-बराबर होंगे, अर्थात् गेहूँ की पैदावार अच्छी होगी।

कटाई

१

लाग बसंत। ऊख पकंत ॥

वसन्त ऋतु लगते ही ईख पक जाती है।

२

कन्या धाने मीने जौ। जहाँ चाहे तहाँ लौ ॥

कन्या राशि में धान और मीन में जौ पक जाते हैं। जब चाहे, तब काटलो।

३

चना अधपका जौ पका काटै। गोहूँ बाली लटका काटै ॥

चना आधा पक जाय, जौ पूरा पक जाय और गेहूँ की बालें लटक आयें, तब काटना चाहिये।

४

आये मेष। हरो न देख ॥

मेष राशि में फसल काट लेनी चाहिये।

५

सात सेवाती। धान उपाठ ॥

स्वाती नक्षत्र के सात दिन बीत जाने पर धान पक जाता है।

मड़ाई और ओसाई

१

गोहूँ जौ जब पछुवाँ पावै। तब जल्दी से दायाँ जावै ॥

पश्चिम की हवा चले, तब गेहूँ और जौ को माँडना चाहिये। उसमें डंठल जल्दी टूटते हैं।

२

दो दिन पछुवाँ छः पुरवाई। गोहूँ जौ को लेहु दँवाई ॥
ताके बाद ओसावै जोई। भूसा दाना अलगै होई ॥

पश्चिम की हवा बहती हो, तो दो दिनों में और पूर्व की हवा बहती हो, तो छः दिनों में गेहूँ और जौ को मँडवा लेना चाहिये। इससे ओसाये जाने पर दाना और भूसा जल्द अलग हो जायँगे।

३

पछुवाँ हवा ओसावै जोई। घाघ कहैं घुन कबहुँ न होई ॥

पश्चिम ओर की हवा बहती हो; तब ओसाने से दाने में घुन नहीं लगते, ऐसा घाघ कहते हैं।

फुटकर

१

रार करो तो बोलो आड़ा। कृषी करो तो रक्खो गाड़ा॥

झगड़ा करना हो, तो ऐंड़ी-बैंड़ी बातें बोलो, और खेती करना हो, तो गाड़ी रक्खो।

२

जो तेरे कंता धन घना, गाड़ी कर ले दो।
जो तेरे कंता धन नहीं, कालर बाड़ी बो॥

हे स्वामी! तुम्हारे पास धन अधिक हो, तो दो गाड़ियाँ चलाओ, और धन न हो, तो बाड़ी में कपास बो दो।

३

अधकचरी विद्या दहे, राजा दहे अचेत।
ओछे कुल तिरिया दहे, दहे कलर का खेत॥

अनुभवहीन विद्या व्यर्थ है, असावधान राजा, नीच कुल की स्त्री और जिस खेत में कपास बोया जाय, वह खेत व्यर्थ है। कपास बोने से खेत कमज़ोर हो जाता है।

४

जो तेरे कुनबा घना। तो क्यों न बोये चना?

यदि तुम्हारा परिवार बड़ा है, तो तुमने चना क्यों नहीं बोया?

५

जब देखो पिय संपत्ति थोड़ी। बेसहो गाय बिआउरि घोड़ी॥

हे स्वामी! जब घर में संपत्ति कम देखना, तब गाय और जल्द बच्चा देनेवाली घोड़ी खरीद लेना।

६

पहिले छायो तीन घरा। सार भुसौला औ बड़हरा॥

बरसात के पहिले तीन घर छा लेना— (१) सार (बैलों के बाँधने का घर) (२) भूसा रखने का घर, (३) अनाज रखने का घर।

७

पाँचै आम पचीसै महुआ। तीस बरस में अमिली कहुआ॥

आम पाँच वर्षों में, महुवा पच्चीस वर्षों में और इमली तीस वर्षों में फल देने लगते हैं।

८

अहिर मिताई बादर छाई। होवै होवै नाहीं नाई॥

अहीर की मित्रता और बादल की छाया का कोई भरोसा नहीं; हो या न हो।

९

ठाढ़ी खेती गाभिन गाय। तब जानो जब मुँह तर जाय॥

खड़ी खेती और गाभिन गाय पर तभी भरोसा करना चाहिये जब खेती का अन्न खाने को और गाय का दूध पीने को मिले; क्योंकि यहाँ तक पहुँचने में बहुत-सी बाधायें पड़ेंगी।

१०

राम बाँस जहँ धँसै अचूका। तहँ पानी की आस अखूटा॥

राम बाँस (लंबा सीधा बाँस, जिसमें लोहे की नोक लगी रहती है) जहाँ कुएँ में आसानी से धँस जाय, वहाँ कुँएँ में इतना पानी होगा, जो कभी न चुकेगा।

११

खेती वह जो खड़ा रखावै। सूनी खेती हरिना खावै॥

खेती उनकी है जो रोज खेत की मेंड़ पर खड़े होकर उसकी रखवाली करते हैं। जिसका कोई रखवाला नहीं, उस खेत को तो हरिन आदि जानवर चर जाते हैं।

१२

खेती करै अधिया। न बैल मरै न बधिया॥

दूसरे किसान को, जिसके पास खेत न हो, आधे लाभ पर खेत देकर खेती कराना अच्छा है; इससे बैल रखने की जरूरत ही न होगी।

१३

सावन सूखा स्यारी। भादों सूखा उन्हारी॥

सावन में सूखा पड़ा, तो खरीफ की फसल और भादों में सूखा पड़ा, तो रबी की फसल मारी जायगी।

१४

मड़ुवा मीन चीन सँग दही। कोदौ क भात दूध सँग सही॥

मड़ुवे के साथ मछली, दही के साथ चीनी और कोदौ का भात दूध के साथ खाना चाहिये।

१५

ऊँचे चढ़ के बोला मँड़ुवा। सब नाजों में मैं हूँ भँड़ुवा॥
आठ दिना मुझको जो खाय। भले मर्द से उठा न जाय॥

मँड़ुवा ऊँचे खड़ा होकर बोला—मैं सब अन्नों में भँड़ुवा हूँ। मुझे आठ दिन भी खाय, तो वह कैसा ही मर्द हो, निर्बल हो जायगा और उठ-बैठ भी न सकेगा।

१६

तीन बैल दो मेहरी। काल बैठ वा डेहरी॥

जिस किसान के पास तीन बैल हों, और दो स्त्रियाँ हों, काल उसके कोठिला में बैठा हुआ समझो।

१७

मेदिनि मेघा भईंसि किसान। मोर पपीहा घोड़ा धान॥
वाढ़्यो मच्छ लता लपटानी। दसौ सुखी जब बरसै पानी॥

पृथ्वी, मेढक, भैंस, किसान, मोर, पपीहा, घोड़ा, धान, मछली और लता, ये दस पानी बरसने से सुखी होते हैं।

१८

छीपा छेड़ी ऊँट कोंहार। पीलवान औ गाड़ीवान॥
आक जवासा बेस्या बानी। दस मलीन जब बरसै पानी॥

रँगरेज, बकरी, ऊँट, कुम्हार, महावत, गाड़ीवान, मदार, जवासा, वेश्या और बनिया, ये दस पानी बरसने पर दुःखी हो जाते हैं।

फसल के रोग

१

गेहूँ गेरुई गाँधी धान। बिना अन्न के मरा किसान॥

गेहूँ में गेरुई (लाल रंग के कीड़े); और धान में गाँधी (कीड़ा) लगने से दोनों फसलें मारी जाती हैं और किसान अन्न बिना मर जाता है।

पाठान्तर —: गाँधी = चरका।

२

फागुन मास बहै पुरवाई। तब गोहूँ में गेरुई धाई॥

फागुन के महीने में पूरब की हवा चले, तो गेहूँ में गेरुई रोग दौड़कर लगेगा।

३

पूस माघ बहै पुरवाई। तब सरसों को माँहूँ खाई॥

पौष और माघ के महीने में पूरब की हवा बहेगी, तो सरसों को माँहूँ (कीड़ा) खा जायगा।

४

चना में सरदी बहुत समाई। ताको जान गधैला खाई॥

चने में ज्यादा सरदी समा जायगी, तो उसे गधैला (एक कीड़ा खा) जायगा।

५

नीचे ओद उपर बदराई। घाघ कहैं गेरुई अब धाई॥

जमीन गीली हो और आकाश में बदली हो, तो गेहूँ में गेरुई लग जायगी।

६

कुंभे आवै मीने जाय। पेड़ी लागै पातौ खाय॥

गेरुई लगना कुम्भ राशि में शुरू होता है और मीन राशि में खतम। अर्थात् फागुन में लगकर चैत में खतम हो जाती है। वह जड़ से शुरू होती है और पत्तों तक चढ़ जाती है।

७

कर्महीन खेती करै। ओला गिरै कि पाला परै॥

अभागा आदमी खेती करता है, तो ओला गिरकर या पाला पड़कर उसे नष्ट कर देता है।

८

जेकरे ऊखुड़ि लगै लोहाई। तेहि पर आवै बड़ी तबाही॥

जिसकी ईख में लाही (लाल रंग का रोग) लग जाता है, उस पर बड़ा संकट आ जाता है।

९

जै दिन भादों बहै पछार। तै दिन पूस में पड़ै तुषार॥

भादों के महीने में जितने दिन पश्चिम की हवा चलेगी, उतने दिन पौष में पाला पड़ेगा।

१०

सावन भादों कुहरा आये। माघ पूस में पाला खाये॥

सावन भादों में अगर कुहरा पड़े, तो पौष और माघ में पाला पड़ेगा।

११

माघ में बादर लाल धरै। तब जान्यो साँचो पाथर परै॥

माघ में बादर लाल रंग के दिखाई पड़ें, तो समझना कि पत्थर पड़ेगा।

१२

जब वर्षा चित्रा में होय। सगरी खेती जावै खोय॥

यदि चित्रा में पानी बरसे, तो सब खेती बिगड़ जायगी। गेहूँ के सब सामान पहले ही से इकट्ठे हो जायँगे।

१३

उत्तर से जल फूहों परै। मूस साँप दोनों अवतरैं॥

उत्तर से पानी आयेगा और छोटी छोटी बूँदों में बरसेगा, तो चूहा और साँप दोनों की पैदाइश ज्यादा होगी।

१४

ऊख कनाई काहें से। स्वाति क पानी पाये से॥

ईख में कना (एक रोग जिसमें डंठल के अन्दर के रेशे लाल हो जाते हैं) क्यों लग गया? क्योंकि स्वाती में पानी बरस गया था।

१५

सावन मास बहै पुरवाई। बर्धा बेंचि लिह्यो धेनु गाई ॥

सावन में पूरब की हवा चलै तो बैल बेंच डालना, क्योंकि आगे वर्षा न होगी, अकाल पड़ेगा। गाय खरीद लेना।

१६

सावन पुरवाई बहै, भादों में पछियाँव।
कंत डँगरवा बेंचिकै, लरिका भागि जिआव ॥

सावन में पूरब की हवा चले, और भादों में पश्चिम की, तो हे स्वामी! बैलों को बेंच डालो और परदेश में जाकर कमाओ और बच्चों को जिलाओ, अर्थात् अकाल पड़ेगा।

•

सामाजिक कहावतें

किसी जाति की सभ्यता और संस्कृति का सच्चा स्वरूप उस जाति की भाषा में प्रचलित कहावतों से जाना जा सकता है। कहावतों में अतीत काल के अनुभव और ज्ञान बीज रूप से सुरक्षित रहते हैं।

कहावतों में समय-समय पर घटनाओं की चोट से उठे हुये हृदय के उद्‌गार संकलित रहते हैं। सभी कहावतें एक ही बात या सिद्धांत का समर्थन नहीं करतीं, अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रकार की कहावतें मिलती हैं। जैसे एक कहावत में कहा गया है कि 'उतावला सो बावला', दूसरी में कहा गया है कि 'चाकी, घेर बैठे ताकी', या 'दैव दैव आलसी पुकारा' के सामने 'राम भरोसे जो रहे, परबत पर हरिआय', ये परस्पर विरोधी कहावतें हैं। पर अपने अपने मौके पर सभी सत्य हैं। बोलचाल की कला में कुशल लोग मौके पर अनुकूल कहावतों का उपयोग करके अपने कथन को अधिक प्रभावशाली बना लेते हैं। कहावतों का प्रयोग चतुर व्याख्यानदाता और उच्चकोटि के लेखक और कवि भी करते हैं; क्योंकि वे जानते हैं कि समाज के हृदय पर अनुभवों के तह पर तह जमते रहने से कहावतों का जन्म होता है; अतएव कहावतों को हृदय अच्छी तरह पहचानता है, और उनके प्रवेश के लिये सदा द्वार खुला रखता है। इससे श्रोताओं या पाठकों के हृदयों में वे जल्द ग्रहण कर ली जाती हैं।

गाँवों में बहुत कम लोग पढ़े-लिखे होते हैं। अक्षर ज्ञान न होने से वे पुस्तकें पढ़ कर नीति-शास्त्र, धर्म-शास्त्र या व्यवहार-शास्त्र की बातें नहीं जान सकते। और गृहस्थी के कामों से उनको इतना अवकाश भी नहीं मिलता कि किसी विद्वान या उपदेशक के पास बैठकर वे कुछ सुन या सीख सकें। इससे थोड़े उच्चारण-सुलभ और याद रखने में सुगम शब्दों में कही हुई तथा गूढ़ार्थ से भरी हुई कहावतें ही उनकी गुरु हैं। उन्हीं से वे राह चलते, मेलों में सैर करते, खेतों में काम करते और घर बैठे जीवन के लिये उपयोगी तत्व ग्रहण करते रहते हैं।

कहावतों से साहित्य का भी सौन्दर्य बढ़ता है। अलंकार-शास्त्र में लोकोक्ति नाम का एक अलंकार ही है, जिसका ज्ञान साहित्य की शिक्षा पाने वाले के लिये आवश्यक माना गया है।

कवियों और महाकवियों के वचन भी, जो जन-साधारण की रुचि या आवश्यकता के अनुकूल प्रतीत होते हैं, कहावतों का रूप धारण कर लेते हैं। और वे ऐसे अपना लिये जाते हैं कि उनके कर्त्ताओं के नाम भी उनके साथ नहीं रह जाते, और वे समाज की सम्पत्ति बन जाते हैं। हिन्दी-प्रांतों में सूर, तुलसी, कबीर, वृन्द, घाघ, गिरधर कविराय और रहीम आदि के वचनों के सिवा कितने ही अज्ञात कवियों की रचनायें कहावतें बन गई हैं।

हमने कहावतों के दो विभाग कर दिये हैं--सामाजिक और साहित्यिक। यद्यपि सभी कहावतें सामाजिक हैं, पर साहित्य में अभी तक सब का उपयोग नहीं होने लगा है। इससे जो कहावतें साहित्य में चल निकली हैं, उनको अलग दिखलाकर शेष के लिए हम साहित्यकारों से अनुरोध करते हैं कि उनका भी किसी न किसी रूप में परिष्कार करके वे उन्हें अपनी रचनाओं में स्थान दें और उनके द्वारा जनता के जीवन के अधिक निकट पहुँचें।

यहां कुछ कहावतें दी जाती हैं :—

सामाजिक कहावतें

१

जाको ऊँचा बैठना, जाको खेत निचान।
ताको वैरी क्या करे, जाके मीत दिवान॥

जो ऊँचे दरजे के लोगों में बैठता-उठता है; और जिसके खेत गहरे हैं, जिनमें अच्छी उपज होती है जिससे वह खाने-पहनने के साधनों से निश्चिंत होता है; तथा जो दीवान (आजकल के जिलाधीश)को मित्र बनाये रखता है, उसको बैरी क्या हानि पहुँचा सकता है?

२

फूटे से बहि जात हैं, ढोल गँवार अँगार।
फूटे से बनि जात हैं, फूट कपास अनार॥

ढोल, गँवार और अंगारा, ये तीनों फूटने से नष्ट हो जाते हैं; पर फूट (ककड़ी), कपास और अनार फूटने ही से कीमती हो जाते हैं।

३

सावन सोये ससुर घर, भादों खाये पूवा।
चैत में छैला पूछत डोलैं, तोहरे केतिक हुवा॥

सावन में (जब खेत बोने के दिन थे) बन-ठनकर ससुराल में रहे और भादों में पूआ खाते रहे, अब चैत्र में छैला घूम-घूमकर दूसरे किसानों से पूछते फिरते हैं कि तुम्हारे कितना गल्ला हुआ।

४

खेती पाती बीनती, औ घोड़े की तंग।
अपने हाथ सँवारिये, लाख लोग हों सँग॥

खेती करना, चिट्ठी लिखना, विनती करना और घोड़े की तंग कसना अपने ही हाथ से होना चाहिये, चाहे लाख आदमी भी साथ हों, तो भी स्वयं करना चाहिये।

५

बगड़ बिराने जो रहे, मानै त्रिया की सीख॥
तीनों यों ही जायँगे, पाही बोवै ईख॥

जो दूसरे के घर में रहता है, जो स्त्री के कहने पर चलता है और जो दूसरे गाँव में ईख की खेती करता है, ये तीनों यों ही, आप से आप, नष्ट हो जायँगे।

६

जाको मारा चाहिये, बिन लाठी बिन घाव।
वाको यही बताइये, घुइयाँ पूरी खाव॥

जिसे बिना लाठी और बिना घाव के मारना चाहो, उसे कहो कि वह अरवी और पूरी खाय।

७

धौले भले हैं कापड़े, धौले भले न बार।
आछी काली कामरी, काली भली न नार॥

सफेद कपड़े अच्छे लगते हैं, पर सफेद बाल नहीं। काली कमली अच्छी लगती है, पर काली स्त्री नहीं।

८

काँटा बुरा करील का, औ बदरी का घाम।
सौत बुरी है चून की, औ साझे का काम॥

करील का काँटा, बदली के बाद होने वाली धूप और सौत, चाहे वह आटे ही कि क्यों न हो, और साझे का काम, ये चारों बुरे हैं।

९

माघ मास की बादली, औ कुवार का घाम।
यह दोनों जो सह सकै, करै पराया काम॥

माघ महीने की बदली और क्वार महीने को धूप जो सह सके, वही दूसरे का काम कर सकता है।

१०

छज्जे की बैठक बुरी, परछाहीं की छाँह।
धोरे का रसिया बुरा, नित उठि पकरै बाँह॥

छज्जे पर बैठना बुरा होता है, परछाईं की छाया व्यर्थ होती है। इसी तरह निकट रहने वाला प्रेमी बुरा होता है, जो नित्य उठकर बाँह पकड़ता है।

११

आठ गाँव का चौधरी, बारह गाँव का राव।
अपने काम न आय तौ, अपनी ऐसी तैसी में जाव॥

आठ गाँव का चौधरी हो, चाहे बारह गाँव का राव, जो अपने काम का न हो, वह अपनी ऐसी-तैसी में जाय।

१२

अम्बा नीबू बानिया, गर दाबे रस देंय।
कायथ कौवा करहटा, मुर्दा हू सों लेंय॥

आम, नीबू और बनिया गला दबाने ही से रस देते हैं; पर कायथ, कौवा और किलहटा (एक पक्षी) तो मुर्दे से भी रस ले लेते हैं।

१३

कलियुग में दो भगत हैं, बैरागी औ ऊँट।
वे तुलसी बन काटहीं, ये किये पीपर ठूँठ॥

कलियुग में दो ही भक्त हैं, एक बैरागी, दूसरा ऊँट। बैरागी तुलसी का बन काटता रहता है और ऊँट ने पीपल को छिनगा डाला।

१४

पाही खेती अजा धन, बिटिअन कै बढ़वारि।
एतनेहु पर धन ना घटै, तो करै बड़े से रारि॥

गाँव में खेती करे, भेंड़-बकरियाँ पाले, या बहुत-सी कन्यायें हों; इनसे यदि धन न घटे, तो अपने से बलवान् से झगड़ा कर ले।

१५

आठ कठौती माठा पीवै, सोरह मकुनी खाइ।
वा के मरे न रोइये, घर क दलिद्दर जाइ॥

जो आठ कठौत (काठ की परात) भरकर मट्ठा पीता हो, और सोलह मकुनी (रद्दी आटे की मोटी रोटी) खाता हो, उसके मरने पर रोना न चाहिये; वह तो मानो घर का दरिद्र ही निकल गया।

१६

बिन बैलन खेती करै, बिन भैयन के रार।
बिन मेहरारू घर करै, चौदह साख लबार॥

जो कहता है वह बिना बैलों के खेती करता है, भाइयों की सहायता के बिना ही दूसरों से झगड़ा करता है, और स्त्री के बिना ही गृहस्थी चलाता है, वह चौदह पुश्त का झूठा है।

१७

बूढ़ा बैल बेसाहै, झीना कपड़ा लेय।
आपुन करै नसौनी, दैवै दूपन देय॥

जो बुड्ढा बैल खरीदता है और पहनने के लिये बारीक कपड़ा खरीदता है, वह तो अपना नाश स्वयं करता है, ईश्वर को नाहक दोष लगाता है।

१८

बैल चौकना जोत में, औ चमकीली नार।
ये बैरी हैं जान के, कुसल करैं करतार॥

हल में जोतते समय चौंकने वाला बैल और चटक-मटकवाली स्त्री, ये दोनों कभी प्राण ले लेंगे, भगवान् ही इनसे बचावें।

१९

आगम बुद्धी बानिया, पच्छिम बुद्धी जाट।
तुरत बुद्धी तुरकड़ी, बाम्हन संपट पाट॥

बनिया पहले सोचता है, जाट पीछे पछताता है, और तुर्क तत्काल फायदे की बात सोच लेता है; पर ब्राह्मण तो बिलकुल सफाचट होता है।

२०

परदेसी को प्रीति को, सबका मन ललचाय।
दोई बात की खोट है, रहे न सँग ले जाय॥

परदेशी आदमी से प्रीति करने के लिये सभी का जी ललचाता है, पर दो बातों की कमी होती है, एक तो वह सदा रहता नहीं; दूसरे घर जाते समय साथ नहीं ले जाता।

२१

ना हँस करके कर गहे, ना रिस करके केस।
जैसे कंता घर रहे, वैसे रहे विदेस॥

न कभी हंस करके हाथ पकड़ा, और न कभी क्रोध करके सिर का झोंटा पकड़कर खींचा, ऐसे कंत का घर पर रहना और विदेश में रहना बराबर ही है।

२२

घर घोड़ा पैदल चलै, तीर चलावै बीन।
थाती धरै दमाद घर, जग में भकुवा तीन॥

संसार में तीन मूर्ख हैं—एक तो वह, जिसके घर में घोड़ा है, और वह पैदल चलता है। दूसरा वह, जो तीर चलाता है और फिर उसे दौड़कर उठाता है और फिर चलाता है; और तीसरा वह, जो दामाद के घर धरोहर रखता है।

२३

ढीली धोती बानिया, उलटी मूँछ सुनार।
बेंड़े पैर कुम्हार के, तीनों की पहिचान॥

ढीली धोती से बनिये की पहचान होती है, क्योंकि वह धोती कस कर नहीं बाँधता; ओठ से ऊपर को उठाई मूँछों से सुनार की पहचान होती है, क्योंकि आग फूँकने के लिये उसे मूँछों को ऊपर उठाये रखना पड़ता है। और कुम्हार की पहचान उसके बेंड़े पैरों से होती है, क्योंकि वह मिट्टी के बर्तन गढ़ने के लिये चाक के पास पैर बेंड़ा ही करके बैठता है।

२४

माघ सकारे जेठ दुपहरे, भादों आधी राति।
इन समया में झाड़ा लागै, मानौं छाती फाटि॥

माघ में बड़े सबेरे, जेठ में दोपहर को और भादों में आधी रात के समय शौच जाने को हाजत हो, तो छाती फटने जैसा दुःख होता है।

२५

काबुल गये मुगल बनि आये, बोलैं मुगली बानी।
आब आब कहि बाबा मरि गये, खटिया तर रह पानी॥

बाबा काबुल गये, मुगलों की सी रहन-सहन लेकर लौटे। मुगलों की भाषा भी बोलने लगे। "आब आब" रटकर वे मर गये, यद्यपि पानी खाट के नीचे ही रक्खा था।

२६

आलस नींद किसानै नासै, चोरै नासै खाँसी।
अँखियाँ लीचर बेसवै नासै, बाबै नासै दासी॥

आलस्य और नींद किसान का नाश करती है, चोर का नाश खाँसी करती है; कीचड़ वाली आँखें वेश्या का और दासी साधू का नाश करती है।

२७

उधार काढ़ि ब्योहार चलावै, छप्पर डारै तारो।
सारे के सँग बहिनी पठवै, तीनों का मुँह कारो॥

जो दूसरों से रुपया उधार लेकर उसी से स्वयं लेन-देन करता है, जो छप्पर के घर में ताला लगाता है और जो अपनी बहन को साले के साथ भेजता है, इन तीनों का मुँह काला हो जाता है, अर्थात् तीनों मूर्ख हैं।

२८

बड़ा धोता बड़ा पोथा, पंडिता पगड़ा बड़ा।
अक्षरं नैव जानामि, हाँजी हाँजी करोम्यहम्॥

यह किसी कम पढ़े-लिखे पंडित का कथन है। लंबी धोती पहने हूँ भारी पोथा बाँधे हूँ, पंडितों का बड़ा पाग सिर पर लपेटे हूँ; मैं अक्षर नहीं जानता, सिर्फ हाँजी हाँजी करता हूँ।

२९

नाचे कूदे तोड़े तान। ताको दुनिया राखे मान॥

जो नाचना, कूदना और तान तोड़ना अर्थात् ढोंग करना जानता है, दुनिया उसी को मानती है।

३०

रोटी खाइये शक्कर से। दुनिया ठगिये मक्कर से॥

दुनिया को मक्कारी करके ठगो और फिर शक्कर से रोटी खाओ।

३७

परहथ बनिज सँदेसे खेती । बिन बर देखे ब्याहै बेटी ॥
द्वार पराये गाड़ै थाती । ये चारों मिलि पीटैं छाती ॥

दूसरे के हाथ से व्यापार करनेवाला, संदेशा-द्वारा खेती करनेवाला, वर को देखे बिना बेटी ब्याहने वाला और दूसरे के द्वार पर धरोहर गाड़ने वाला, ये चारों छाती पीटकर पछताते हैं।

३८

हँसुवा ठाकुर खँसुवा चोर । इन्हैं ससुरवन गहिरे बोर ॥

जो ठाकुर हँसकर बातें करता है और जिस चोर को खाँसी आती है, इन ससुरों को गहरे पानी में डुबो देना चाहिये; अर्थात् दोनों बेकार हैं।

३९

अहिर मिताई बादर छाईं । होवै होवै नाहीं नाईं ॥

अहीर की मित्रता और बादल की छाया का भरोसा नहीं; हो या न हो।

४०

नित्तै खेती दुसरे गाय । नाहीं देखै तेकर जाय ॥
घर बैठे जो बनवै बात । देह में वस्त्र न पेट में भात ॥

जो किसान रोज खेती की और दूसरे दिन गाय की सँभाल नहीं करता, उसकी ये दोनों चीजें बरबाद हो जाती हैं। जो घर में बैठे-बैठे बातें बनाया करता है, न उसकी देह पर वस्त्र होता है, न पेट में भात; अर्थात् वह गरीब हो जाता है।

४१

जो विधवा ह्वै करै सिंगार । ओहि से सदा रह्यो हुसियार ॥

जो स्त्री विधवा होकर शृङ्गार करे, उससे सदा होशियार रहना।

४२

जाकी छाती एक न बार । तासों सदा रह्यो हुसियार ॥

जिस पुरुष की छाती पर बाल न हों, उससे सदा होशियार रहना; वह धोखा दे सकता है।

४३

माँ से पूत पिता से घोड़ा। बहुत नहीं तो थोड़ म थोड़ा॥

माँ का गुण पुत्र में आता है और पिता का गुण घोड़े में आता है। बहुत नहीं तो थोड़ा तो आता ही है।

४४

बाढ़ै पूत पिता के धर्मा। खेती उपजै अपने कर्मा॥

पुत्र की बढ़ती पिता के धर्म से होती है; लेकिन खेती अपने ही कर्म से होती है।

४५

राँड मेहरिया अनाथ भैंसा। जब बिगड़ै तब होवै कैसा॥

राँड़ स्त्री और बिना नाथ (नकेल) का भैंसा यदि बिगड़ उठे, तो क्या हो? फिर काबू में लाना मुश्किल हो जायगा।

४६

पर मुख देखि अपन मुख गोवै। चूरी कंगन बेसरि टोवै।
आँचर टारि के पेट दिखावै। और का छिनारि डंका बजावै॥

जो दूसरे का मुँह देखते ही अपना मुँह ढक लेती है, चूड़ी, कंगन और बेसर (नथ) को टोने लगती है, फिर आँचल हटाकर पेट दिखाती है, वह और क्या डंका बजाकर कहेगी कि मैं छिनाल (पुंश्चली) हूँ?

४७

जहाँ चारि काछी। उहाँ बात आछी॥
जहाँ चारि कोरी। उहाँ बात बोरी॥
जहाँ चारि भुज्जी। उहाँ बात उझी॥

जहां चार काछी मिलकर बैठते हैं, वहाँ अच्छी बातें होती हैं; जहाँ चार कोरी मिलते हैं, वहाँ बात को विवाद में डुबो देते हैं, और जहाँ चार भुजवे मिलते हैं, वहाँ सारी बातें उलझ जाती हैं।

४८

खेत न जोतै राड़ी। न भैंस बेसाहै पाड़ी।
न मेहरि मर्द क छाड़ी॥

बंजर खेत न जोतना चाहिये, न बच्चा भैंस खरीदना चाहिये, और न दूसरे मर्द की छोड़ी हुई स्त्री से ब्याह करना चाहिये।

४६

ताका भैंसा गादर बैल। नारि कुलच्छनि बालक छैल॥
इनसे बाँचै चातुर लोग। राज छोड़ि कै साधै जोग॥

ताका (जिसकी आँखें दो ओर को हों, ऐंचाताना) भैंसा, गादर (चलते-चलते बैठ जानेवाला) बैल, बुरे लक्षणोंवाली स्त्री और शौकीन बेटा, इनसे चतुर लोग बचकर चलें; इनकी संगति में राज-सुख हो, तो भी उसे छोड़कर योग साधन अच्छा है।

५०

लरिका ठाकुर बूढ़ दिवान। ममिला बिगरै साँझ बिहान॥

यदि ठाकुर (जमीदार या राजा) बालक हो और उसका दीवान (मंत्री) बुड्ढा हो, तो दोनों की पटेगी नहीं। झगड़ा सुबह शाम किसी वक्त भी हो सकता है।

५१

ना अति बरखा ना अति धूप। ना अति बक्ता ना अति चूप॥

न अति वर्षा ही अच्छी, न बहुत धूप ही। इसी प्रकार न बहुत बोलना अच्छा, न चुप रहना ही।

५२

तीन बैल दो मेहरी। काल बैठ वा डेहरी॥

जिस किसान के पास तीन बैल और दो स्त्रियाँ हों, तो समझो, उसके दरवाजे ही पर मृत्यु बैठी है। या उसके कोठिले में सदा अकाल पड़ा रहेगा।

५३

ढिलढिल बेंट कुदारी। हँसि के बोलै नारी।
हँसि के माँगै दम्मा। तीनों काम निकम्मा॥

कुदाल का बेंट ढीला हो, स्त्री हँसकर बात करे और ब्यौहरिया हँसकर बेची हुई या उधार दी हुई वस्तु का दाम माँगे, ये तीनों काम निकम्मे हैं।

५४

खेती करै बनिज को धावै। ऐसा डूबै थाह न पावै॥

जो आदमी खेती भी करता है और व्यापार के लिसे भी दौड़ता है, वह ऐसा डूबता है कि थाह भी नहीं पाता।

५५

सब के कर। हर के तर॥

भगवान् के हाथ के नीचे सभी के हाथ हैं; अथवा सारे धंधे हल पर निर्भर हैं।

५६

कीड़ी संचै तीतर खाय। पापी को धन पर ले जाय॥

कीड़ी (चींटी) अन्न जमा करती है और तीतर उसे खा जाता है। इसी तरह पापी धन जमा करता है और दूसरे लोग उसे उड़ाते रहते हैं।

५७

भेदिहा सेवक सुन्दरि नारि। जीरन पट कुराज दुख चारि॥

भेद जाननेवाला नौकर, सुन्दरी स्त्री, पुराना वस्त्र और बुरा राज-शासन—ये चारों दुःखदायक होते हैं।

५८

माँगै न आवै भीख। तो सुरती खाना सीख॥

भीख माँगना न आता हो तो सुरती (खाने की तम्बाकू) खाना सीखो।

५९

वक्त पड़े बाँका। तो गधे को कहो काका॥

संकट पड़ने पर गधे की भी खुशामद करो।

६०

उधार दिया। गाहक खोया॥

एक बार सौदा उधार लेकर गाहक तभी लौटेगा, जब उधार चुकता करना चाहेगा। वह जल्दी शायद ही लौटे।

६१

मारा चोर उपासा पाहुन, फिर नहीं लौटते।

जो चोर मारा-पीटा गया हो, और जो मेहमान उपवास करके गया हो,वे फिर लौटकर नहीं आते।

६२

दो बैल को हरा। एक मेहरी को घरा।

ना वो हरा, न घरा।

जिस किसान के पास एक ही हल की खेती होती है और घर में केवल एक ही स्त्री है, उसका किसान होना व्यर्थ है।

६३

बेहुई क डंड पुत्र कर सोग। नित उठि पंथ चलैं जो लोग॥
जिनकी मरी अधवैचे नारि। बिना आगि के जरिगे चारि॥

जिसे बिना अपराध हुये ही दंड मिला हो, जिसका पुत्र मर गया हो, जिसे रोज सवेरे उटकर राह चलना पड़े, और जिसकी अधेड़ अवस्था में स्त्री मर गई हो, ये चारों बिना आग के ही जलते रहते हैं।

६४

बिन दरपन के बाँधै पाग। बिना नून के राँधै साग॥
बिना कंठ के गावै राग। ना वह पाग न साग न राग॥

दर्पण के बिना पाग बाँधना, नमक के बिना साग राँधना और कंठ के बिना राग गाना व्यर्थ है।

६५

बाम्हन नंगा जो भिखमंगा भँवरी वाला बनिया।
कायथ नंगा करै खतौनी बढ़इन में निरगुनिया॥
नंगा राजा न्याय न देखै नंगा गाँव निर्पनिया।
दया हीन सो छत्री नंगा नंगा साधु चिकनिया॥

भीख माँगनेवाला ब्राह्मण, घूमघूम कर सौदा बेंचनेवाला बनिया, खतौनी गलत लिखनेवाला कायस्थ, बिना गुनिया (बढ़ई का एक औजार) का बढ़ई, न्याय न देखने वाला राजा, बिना पानी का गाँव, दयाहीन क्षत्री और छैल चिकनिया साधु, ये नंगे अर्थात निर्लज्ज होते हैं।

६६

खरवा क होब बेवाई क फाटब।
घर कै खैंहसि मेहरी क डाटब॥
बनरे क दानि मूस कै हई।
मेहरि मारै तो केसै कही॥

खरवा (चमड़े का रोग) का होना, पैर में बेवाई फटना, घरेलू झगड़ा, स्त्री का डाट-डपट करना, फसल खाने के लिये बंदरों की बार-बार की चढ़ाई, चूहों से पैदा हुई हानि और स्त्री मारे, तो ये दुःख किससे कहें ? ये तो चुपचाप भोग लेने ही के हैं।

६७

तीनि खाट दुइ बाट । चार छावैं छः निरावैं ॥

खाट बुनने में तीन और राह चलने में दो, छप्पर छाने में चार और खेत निराने में छः आदमी हों तो दच्छा ।

६८

जाट कहे सुन जाटनी, इसी गाँव में रहना ।
ऊँट बिलाई ले गई तो, हाँजी हाँजी कहना ॥

जाट जाटनी से कहता है कि अगर इसी गाँव में रहना है तो सबकी हाँ में हाँ मिलाकर चलो । लोग कहें कि ऊँट को उठाकर बिल्ली लेगई तो हाँजी हाँजी कहना ।

६९

अकिलि न मिलै उधार । प्रेम न विकै बजार ।

बुद्धि उधार नहीं मिलती और न प्रेम बाजार में बिकता है ।

७०

तिरिया तेरा । मरद अठारा ॥

विवाह के समय स्त्री की उम्र तेरह वर्ष की और पुरुष की अठारह वर्ष की होनी चाहिये ।

७१

तीन बुलाया तेरह आये, भई राम की बानी ।
राघोचैतन यों कहे, देओ दाल में पानी ॥

राम की मरजी देखो, तीन को न्योता दिया, तेरह आये । राघोचेतन कहते हैं, कुछ परवा नहीं, दाल में पानी और डाल दो ।

७२

चाकर है तो नाचाकर । ना नाचै तो ना चाकर ॥

अगर चाकर है तो मालिक जैसा कहे, वैसा किया करो । नहीं करोगे तो चाकर नहीं रह सकोगे ।

७३

फूहड़ करे सिंगार, माँग ईटों से काढ़े ।

फूहड़ स्त्री सिंगार करने बैठी तो माँग में सिन्दूर की जगह ईंट का चूरा भर लिया ।

७४

चारि कौर भित्तर। तब देव और पित्तर।

पहले पेट में कुछ पड़ जाय, तब देवताओं और पितरों की बात की जाय।

७५

भूखे भजन न होयँ गोपाला। यह लो कंठी यह लो माला॥

चेले ने गुरु से कहा—हे महाराज! भूखा रहकर भजन नहीं हो सकता, यह अपना कंठी-माला लो, मैं जाता हूँ।

७६

जैसा देस। वैसा भेस॥

जैसा देश हो, वैसा ही भेस रखना चाहिये।

७७

देखी पर नारि। तो फूट गईं चारि॥

पर स्त्री देखते ही दो बाहर की और दो भीतर की ज्ञान की आँखें फूट जाती हैं।

७८

नई आई दरजिनि काठ कै कतन्नी। नोखे की नाउनि बाँस कै नहन्नी॥

नई दर्जिन जिसे अपने पेशे का अनुभव नहीं है, काठ की कैंची और अनोखी नाइन बाँस की नहन्नी (नह काटने का औजार) लेकर आई। यह नातजरबेकारों का मज़ाक़ है।

७९

बिन घरनी का घर। जैसे नीमी का तर॥

बिना स्त्री के घर में और नीम के पेड़ के नीचे रहना बराबर है।

८०

हँसी, सो फँसी॥

जो स्त्री हँसकर बातें करे, वह अवश्य संबंध जोड़ लेगी।

८१

सोना जानै कसे। मनई जानै बसे॥

सोने की परख कसौटी पर कसने से होती है, और आदमी की पहचान पास पास बसने से होती है।

८२

नोखे की भगतिन गड़ारी की माला ॥

यह व्यंग्य है।

८३

रिन कै फिकिरि पुत्र कै सोच। नित उठि पंथ चलैं जे रोज ॥
बिना अगिनि ये जरिगे चारि। जिनकै अधविच मरिगै नारि ॥

जिसको कर्ज पटाने की चिंता है, जिसका पुत्र मर गया है या नालायक है, जिसको रोज सबेरे उठकर रास्ता चलना पड़ता है और जिसकी अधेड़ उम्र में स्त्री मर गई, ये चारों बिना आग के ही जलते रहते हैं।

८४

फूहरि उठीं दुपहरे सोय। हाथ बढ़नियाँ दीन्हीं रोय ॥

फूहड़ स्त्री दोपहर तक सोकर जागी, तब घर की सफाई के लिये हाथ में झाड़ू लेकर रोने बैठ गई।

८५

जब पर नारि पुरुष से हँसी। जैसे सत्तरि वैसे असी ॥

पराई स्त्री जब दूसरे पुरुष से हँस-हँसकर बातें करे, तब उसके लिये पर-पुरुष जैसे वे सत्तर, वैसे अस्सी।

८६

जेहि का नौकर देयँ जवाब। नारि पुत्र मानै न दबाव ॥
रहैं परोसी रिस तें भरे। कुसल जोतिसी गउँते टरे ॥

नौकर जिसकी अवज्ञा करें, स्त्री और पुत्र दबाव न मानें, और पड़ोसी जिस पर सदा क्रोध रखते हों, उसको चुपके से घर छोड़कर भाग जाने ही में कुशल है।

८७

सारी खुदाई एक तरफ। जोरू का भाई एक तरफ ॥

चाहे सारी दुनिया एक तरफ हो, पर साला अपना ही हठ रक्खेगा।

८८

जबरा करै जबरई, अबरा करै निआव ॥

बलवान् आदमी अत्याचार करता है और निर्बल आदमी न्याय की बातें करता है।

८९

माला पहिरे हरि मिलैं तो गले रहट के देख ।

माला पहनने से भगवान् मिलते हों, तो रहट ने भी गले में माला लटका रक्खी है, उसे भी मिलेंगे ।

९०

अबरे की लुगाई, गाँव भर की भौजाई ॥
जबरे की लुगाई, गाँव भर की काकी ॥

निर्बल आदमी की स्त्री को भौजाई कहकर हरएक मजाक कर लेता है; पर सबल आदमी की स्त्री को सब डर के मारे काकी कहते हैं ।

९१

सौ बेर सत्तू नौ बेर चबेना । एक बेर रोटी लेना न देना ॥

सत्तू सौ बार खाओ, चबेना नौ बार, पर रोटी का एक बार खाना उनसे बढ़कर है ।

९२

कछु हाथ कै सफाई, कछु डांडी क फेर ।
औरन को तीनि पाव, बनिये का सेर ॥

बनिया कुछ तो हाथ की सफाई से और कुछ तराजू की डांड़ी को हिला-झुलाकर एक सेर बताकर तौल देता है, जो दूसरों को तीन ही पाव होता है ।

९३

अकेले की चोरी, ठठेरे की जोरी ।
कोरी की मरोरी, खोले नहीं खुलती ॥

जो चोरी अकेले की जाती है, ठठेरा बरतन में जो जोड़ लगा देता है और कोरी (हिन्दू जुलाहा) जो गाँठ देता है, ये खोलने से नहीं खुलते ।

९४

पूरी परै जो पूरी खाये, सब कोई पूरी खाय ।
चार दिना के छुभ मुभ में, निकरि दिवाला जाय ॥

पूड़ियाँ खाने से पूरा पड़ता हो तो सभी कोई पूड़ियाँ खा सकते हैं; पर दो ही चार दिनों तक छब-मब होगा, फिर तो दिवाला ही निकल जायगा । अर्थात् अपनी शक्ति से ज्यादा खर्च करना दो ही चार दिन तक संभव है, फिर तो निर्धन ही हो जाना पड़ेगा ।

९५

आपन गोड़ कुल्हाड़िन, काटै तेहि के कौन इलाज ॥

जो अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मार रहा हो, उसकी क्या दवा है ?

९६

चिरई का धन चोंच।

चिड़िया का धन उसकी चोंच है।

यह किसी गरीब की गरीबी प्रकट करने के लिये कहा जाता है।

९७

अँटका बनिया देय उधार।

बनिये का पावना रुक गया हो, तो उसे निकालने के लिये वह उधार पर भी माल दे देता है।

९८

अति भक्ति चोर का लच्छन।

जरूरत से ज्यादा भक्ति दिखलाना चोर का लक्षण है।

९९

आती बहू जनमता पूत।

नई बहू और जन्म लेने पर पुत्र बड़े प्रिय लगते हैं।

१००

आवें माघे। कामरि काँधे ॥

माघ आधा बीतने पर जाड़ा इतना कम हो जाता है कि कम्बल कंधे पर रख लिया जाता है।

१०१

एक तौ गड़रिन, दुसरे लहसुन खाये।

एक तो गड़रिन भेंड़ों के बीच में रहकर यों ही दुर्गंध वाली होती है, इस पर लहसुन खा लेने पर तो कहना ही क्या ?

१०२

काहे को धमधूसर मोट। धन कै फिकिरि न रिन कै चोट ॥

धमधूसर मोटे क्यों हैं ? क्योंकि न धन की चिन्ता है, न कर्ज चुकाने की।

१०३

खाओ मन भाता। पहिरो जग भाता ॥

जो मन को रुचे, वह खाओ; पर पहनो यह, जो दूसरों को प्रिय लगे।

१०४

क्या सासू जी चटको मटको, क्या पटकाओ कूल्हा।
डोली पर से जब उतरूँगी, जुदा करूँगी चूल्हा ॥

कर्कशा बहू कहती है—सासुजी ! क्या तड़पती-झड़पती हो ! कूल्हा क्यों मटकाती हो ? मैं तो डोली परसे तभी नीचे उतरूँगी, जब अपना चूल्हा अलग कर लूँगी।

१०५

घर में आई जोय। टेढ़ी पगिया सीधी होय ॥

घर में स्त्री आई, तो शान-शौकत का हौसला जाता रहा।

१०६

खर्च बढ़ा औ कम रोजगार। मनई घर के सब सुकुवार।
ठटिहा घर पर लौकी फरै। वहि घर कुसल विधाता करैं ॥

घर में खर्च अधिक और आमदनी का धंधा कम; और घर के सब आदमी सुकुमार भी हैं; उस घर को और जिस छप्पर पर लौकी फरे, उसकी खैरियत भगवान् ही के हाथ है।

१०७

गरीब की जवानी, गरमी क घाम।
जाड़े की चाँदनी, आवै न काम ॥

गरीब की जवानी, क्योंकि वह पेट की चिंता में लगा रहता है, गरमी का घाम, क्योंकि कोई उसमें बाहर नहीं निकलता और जाड़े की चाँदनी, क्योंकि जाड़े के मारे सब घर के अंदर रहते हैं; ये काम नहीं आते।

१०८

चंपा के दस फूल, चमेली को एक कली।
मूरख की सारी रात, चतुर कै एक घड़ी ॥

चंपे के दस फूलों में वह मजा नहीं आता, जो चमेली की एक कली में आता है। इसी तरह मूर्ख सारी रात साथ सोये, तो वह रस नहीं मिलता जो चतुर की एक घड़ी में मिलता है।

१०६

जोरू टटोले गठरी। माँ टटोले अँतड़ी ॥

स्त्री परदेश से आनेवाले पति की गठड़ी टटोलती है कि उसके लिये वह क्या लाया है; पर माँ उसकी अँतड़ी टटोलती है कि वह सुख से खाता-पीता रहा या नहीं।

११०

टूटी डाढ़ बुढ़ापा आया। टूटी खाट दलिद्दर छाया॥

दाढ़ का टूटना बुढ़ापे का लक्षण है; और खाट का टूटी रहना दरिद्र होने की निशानी है।

१११

तन सीतल हो सीत से। मन सीतल हो मीत से॥

शरीर सर्दी से शीतल होता है और मन मित्र के मिलने से।

११२

तरवार मारे एक बार। एहसान मारे बार बार॥

तलवार एक ही बार में मार डालती है; पर एहसान बार-बार मारता रहता है।

११३

दिल्ली की बेटी मथुरा की गाय।
करम फूटै तो अनतै जाय॥

दिल्ली की लड़की और मथुरा की गाय को अन्यत्र सुख नहीं मिलता। भाग्य फूटता है, तभी वे दूसरी जगह जाती हैं।

११४

धन के पन्द्रह मकर पचीस। चिल्ला जाड़ा दिन चालीस॥

धन की संक्रान्ति से पन्द्रह दिन और मकर की संक्रान्ति के पच्चीस दिन कुल चालीस दिन कड़ाके का जाड़ा पड़ता है।

११५

नया धोबी। नाई पुराना॥

नया धोबी अपनी प्रसिद्धि के लिये मन लगाकर धोता है और पुराना नाई सबकी रुचि को जानता है, इससे ये दोनों अच्छे होते हैं।

११६

पहिले बहुरिया, दुसरे पतुरिया, तिसरे कुकुरिया।

बहू जब पहले-पहल आती है, तब तो लज्जा और संकोच से सिट-पिटाई-सी रहती है; दूसरी बार आती है तो वेश्या की तरह भोग-विलास करती है और तीसरी बार तो घर के काम-काज और बच्चों की गंदगी में लिपी-पुती कुतिया की तरह हो जाती है।

११७

पतुरिया रूठी धरम बचा।

वेश्या यदि रूठ जाय तो क्या हानि है? धर्म बच जायगा।

११८

पुरब क बरधा उत्तर क नीर। पच्छिम क घोड़ा दक्खिन क चीर॥

पूर्व दिशा का बैल, उत्तर का जल, पश्चिम का घोड़ा और दक्खिन का वस्त्र, ये अच्छे होते हैं।

११९

फूहरि के घर लागि किवारी। कुकुरन में भइ चिंता भारी॥
बाँड़ा कूकुर चितवै मौन। लागि तो बा पर देये कौन॥

फूहड़ स्त्री के घर में किवाड़ी लगी। कुत्तों में चिंता उत्पन्न हुई; क्योंकि पहले बेरोक-टोक घर में घुस जाते थे। पर बाँड़ा (पुँछ-कटा) कुत्ता चुपचाप देख रहा था, और सोच रहा था कि किवाड़ी लग तो गई है, पर कौन देगा? फूहड़ तो देगी ही नहीं।

१२०

बनी के सौ साले, बिगड़ी के एक बहनोई भी नहीं।

जब किसी की हालत अच्छी होती है तो सैकड़ों आदमी उसके साला बनने के लिये लालायित होते हैं; पर जब हालत बिगड़ जाती है, तब कोई बहनोई कहलाने को भी तैयार नहीं होता।

१२१

बनिया जब उठायो चाहै, तब दुकान झारै।

यह बनिये की तरकीब है। जब किसी को दूकान से उठाना चाहता है, तब दूकान झाड़ने लगता है।

१२२

बेस्या सती न गदहा जती ।

वेश्या सती नहीं होती; इसी तरह गदहा जैसी बुद्धिवाला आदमी साधु नहीं हो सकता ।

१२३

पढ़ियो पूत सोई । जाते हँडिया खुदबुद होई ॥

हे पुत्र! वही विद्या पढ़ना, जिससे दाल-रोटी मिलने की व्यवस्था हो ।

१२४

चटोरी कुतिया नई सिल ।

चाटने की आदतवाली कुतिया नई सिल चाटती है तो उसकी जीभ छिल जाती है और उससे रक्त बहने लगता है, कुतिया अपना ही रक्त सिल पर लगाकर उसे चाटती है । लोभी के लिए यह व्यंग्य है ।

१२५

छैला की है तीन निसानी । कंघा बटुवा सुरमादानी ॥

कंघा, बटुवा और सुर्मादानी रखना, ये छैला के तीन चिन्ह हैं ।

१२६

एक बार डहँकावै । बायन वीर कहावै ॥

चतुर आदमी एक बार भी धोखा खा जाता है, तो वह बावन वीरों के बराबर सावधान हो जाता है ।

१२७

बिन घरनी घर भूत क डेरा ।

बिना स्त्री का घर भूत के अड्डे के बराबर होता है ।

१२८

चिलम की मारी आगि बाकी का मारा गाँव, नाहीं पनपत ।

चिलम पीने के बाद बची हुई आग फिर सुलगती नहीं; इसी तरह जिस गाँव पर मालगुजारी बाकी रहती है, वह गाँव उन्नति नहीं करता ।

१२९

नाव चढ़े झगड़ालू आवैं पौरत आवैं साखी ।

झगड़ा लगानेवाले गवाहों का हाल है । झगड़ालू तो नाव पर चढ़कर नदी उतर रहे हैं और गवाह नदी तैरकर आ रहे हैं । मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त ।

१३०

हंसा रहे सो मरि गये, कौवा भये दिवान।
जाहु विप्र घर आपने, को काको जजमान॥

एक पंडित जी परदेश जा रहे थे। रास्ते में जंगल पड़ा। जंगल के राजा सिंह का मंत्री हंस था। उसने पंडित जी से राजा को कथा सुनवाई और अच्छी दक्षिणा दिलवाई। पंडितजी घर लौट आये और कुछ दिनों के बाद फिर गये। तब कौवा दीवान था। उसने राजा को सलाह दी कि पंडित जी को मारकर खा लिया जाय। उस अवसर पर सिंह ने उपरोक्त दोहा कहा था। अर्थात् हे ब्राह्मण! हंस तो मर गये, अब कौवा मंत्री हुए हैं। घर वापस जाओ, यहाँ कौन किसका यजमान है?

१३१

सो जीतै जो पहले मारै।
ज्ञान गँथै सो मूरख हारै॥

वही जीतता है, जो पहले मारता है और जो खड़े-खड़े ज्ञान छाँटता है, वह मूर्ख हार जाता है।

१३२

सावन भैंसा माघ सियार। अगहन दरजी चैत चमार॥

सावन में भैंसा, माघ में सियार, अगहन में दरजी और चैत में चमार मोटे हो जाते हैं, क्योंकि खाने की सुविधा हो जाती है।

१३३

मूँड़ मुड़ाये, तब छुरा को डराये?

सिर मुड़ाना हो तब छुरे से डरने से काम कैसे चलेगा? अर्थात् काम शुरू करने पर आने वाले विघ्नों का सामना तो करना ही पड़ेगा।

१३४

बर न बिआह, छट्ठी बरे धान कूटैं।

अभी विवाह हुआ ही नहीं, पर पुत्र होने की छट्ठी के लिये धान कूटा जा रहा है।

१३५

रारा के आये रारा। खीस निपोरे परा॥

मंगन के घर मंगन आये, दोनों एक दूसरे से माँग रहे हैं।

१३६

काम करन के आलसी, खावे को तैयार ॥

काम करने के लिये तो उठा नहीं जाता, खाने के लिये तैयार हैं।

१३७

खेत चरै गदहा, मारा जाय जोलहा।

"और करे अपराध कोउ, और पाव फल भोग"—तुलसी दास।

१३८

पास न कौड़ी। कान छेदावै दौड़ी॥

पास में तो कौड़ी भी नहीं, तब कान छेदाने की मजूरी क्या देगी? और पहनेगी क्या?

१३९

राजा नल पर विपति परी। भूँजी मछरी दह माँ परी॥

राजा नल पर विपत्ति पड़ी; तो भूनी हुई मछली पानी में जा पड़ी; वे उसे भी खा न पाये।

१४०

तेली का बैल ले कोहाँइन सती भई।

कुम्हार-कुम्हारिन को बैल की जरूरत ही नहीं होती; और तेली का तो वह एक खास अंग ही है। यह कहावत तब कही जाती है, जब कोई आदमी बिना किसी संबंध के दूसरे का झगड़ा अपने ऊपर उठा लेता है।

१४१

खाँड़ा गिरै कोहँड़ा पै तो कोहँड़ा जाय।
कोहँड़ा गिरै खँड़ा पै तो कोहँड़ा जाय॥

तलवार कुम्हड़ा पर गिरे तो कुम्हड़ा ही कटेगा और कुम्हड़ा तलवार पर गिरे, तो भी कुम्हड़ा ही कटेगा।

१४२

राह में हगे औ आँखि गुरेरै।

अपराध करे और फिर जवाब भी दे?

१४३

ना निरमल दास। देह भर दादै दाद॥

नाम तो निर्मलदास है, पर सारे शरीर में दाद ही दाद हैं।

१४४

नाँव पहाड़सिंह, देंह चिआँ अस।

नाम तो पहाड़सिंह है, पर शरीर चिआँ (इमली के बीज) जैसा है।

१४५

जब उठाय लेहिस झोरी। तब का बाम्हन का कोरी॥

जब भीख माँगने के लिये झोला उठा लिया, तब ब्राह्मन हो या चमार, दोनों बराबर हैं।

१४६

खरी बिनौला सँडवा खाय। जोतै फाँदै बैंड़वा जाय॥

साँड़ तो खली और बिनौला खाता है और हल जोतने बाँड़ा बैल जाता है। अर्थात् मज़ा तो कोई लेता है और कमाता कोई और है।

१४७

थोर खाय औ बहुत डकारै।

खाना थोड़ा और डकारना जोर से, यह झूठी शान दिखाने वालों के लिये कहा गया है।

१४८

साहु क दाँव हाट में। चोर क दाँव घाट में॥

बनिये का दाँव बाजार में लगता है और चोर का नदी के उतारे पर।

१४९

दुलही न देखै देखै ओकर माई। बाघ न देखै देखै बिलाई॥

नई बहू को क्या देखोगे! उसकी माँ को देखो; क्योंकि माँ ही का शऊर उसकी बेटी में आता है। इसी तरह बाघ देखना हो तो बिल्ली को देख लो।

१५०

रुपिया दइ के बैरी होय। कि बिटिया दइ के बैरी होय॥

रुपया और बेटी दोनों बैर के कारण हो सकते हैं। उधार लेकर समय पर न देने वाला स्वभावतः बैरी हो जाता है। इसी तरह बेटी के बाप को समधी या दामाद से दबकर रहना पड़ता है।

१५१

बैठा बनिया का करै। यहि कोठी क धान ओहि कोठी धरै॥

बनिये को काम नहीं होता तो वह धान (अन्न) को इधर से उधर रक्खा करता है। अर्थात् वह कुछ न कुछ करता ही रहता है।

१५२

माई क कोखि कोंहार क आँवा। की तो होय भाँड़ा की तो होय झाँवा॥

मां की कोख और कुम्हार के आँवे का क्या पता? या तो उसमें से पका हुआ बरतन (सपूत लड़का) निकलेगा, या झाँवा (निकम्मा, जला हुआ बरतन) निकलेगा।

१५३

पराया धन औ मँगनी क अहिवात।

दूसरे का धन काम नहीं आता; ऐसे ही उधार लिया सोहाग किस काम का?

१५४

बनिया से करै यारी। तो खाय सरी सुपारी॥

बनिया बड़ा कंजूस होता है। उससे मित्रता करें, तो वह सड़ी हुई ही सुपारी खिलायेगा।

१५५

फूहरि सैंतै चूल्हा। कि खजुआवै कूल्हा॥

फूहड़ स्त्री चूल्हा पोते, या कूल्हा खुजलाये?

१५६

अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका कहि गये, सबके दाता राम॥

अजगर किसी की नौकरी नहीं करता, पक्षी काम नहीं करते; मलूक दास कहते हैं कि भगवान् सब को आहार देते हैं।

१५७

आन क सेंदुर देखि आपन कपार फोरै।

दूसरों की उन्नति देखकर जलना और नकल करके अपनी हानि कर लेना।

१५८

अढ़ाई हाथ की काँकरि नौ हाथ का बीया।

झूठ का अंत नहीं।

१५९

मुखमस्तीति वक्तव्यं दशहस्ता हरीतकी।

मुँह में बोलने की शक्ति है, तो बोलो कि हरड़ दस हाथ लंबी होती है।

१६०

अधजल गगरी छलकत जाय।

जल से आधा भरा हुआ घड़ा छलकता चलता है ।

१६१

ऊँट चढ़े पर कूकुर काटत।

ऊँट पर चढ़े हुए को कुत्ता काटता है, यह किसी असंभव बात को जब संभव बताया जाता है, तब कहा जाता है ।

१६२

अपनी गरजनि गधा चरावे।

अपने स्वार्थ के लिये आदमी गधा भी चरा लेता है।

१६३

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू।

अपनी बड़ाई आप करना ।

१६४

आग लगंता झोंपड़ा, जोइ निकसै सोइ सार ।

झोंपड़ी में आग लगने पर जो सामान बच जाय, वही बहुत है।

१६५

आग लगै तब खोदै कूँवा।

आग लगने पर कूँवाँ खोदनेवाले की तरह पहले से तैयारी न कर रखनेवाला पीछे पछताता है।

१६६

आग लगाइ के पानी क दौरे।

स्वयं आग लगाकर बुझाने के लिये दौड़ना, स्वयं रोग पैदा करके फिर उसका इलाज करने जैसा है।

१६७

आन क गोड़वा धोवै नउनिया आपन धोवत लजाइ।

नाइन दूसरे का पैर धोने से तो लजाती नहीं; पर अपना धोने में लजाती है।

१६८

आपन ढेंढर न देखै, दूसरे क फूली निहारै।

अपना ढेंढर (पूरी आँख में फूली) नहीं देखता, दूसरे की फूली देखता है।

१६९

अपना नयना मुझे दे, तू घूम फिर के देख।

अपना धन मुझे सौंप दो, तब तुम मौज करो।

१७०

जाके पैर न जाय बेवाई। सो का जानै पीर पराई॥

जिसके पैर में बेवाई नहीं जाती, वह दूसरे की पीड़ा क्या समझे ?

१७१

अफीम खाय फकीर, या खाय अमीर।

यह काम सब के बूते का नहीं।

१७२

अमीर को जान प्यारी। फकीर को एकदम भारी॥

सब का बोझा एक-सा नहीं।

१७३

अन्ते मता सो गता।

मरते समय जैसी मति होती है, वैसी ही जीव की गति होती है।

१७४

अहिर का पेट गहिर। बाम्हन का पेट मड़ार॥

ब्राह्मण ने अहीर पर तुक मिलाया; अहीर ने बेतुकी हाँक दी। कोई किसी से घट कर नहीं।

१७५

काला अच्छर भैंस बराबर।

बिलकुल निरक्षर है।

१७६

आँख एको नहीं, कजरौटा नौ ठों।

बिना ज़रूरत का सामान जमा करना।

१७७

आँख में फूली नाम कमलनयन।

नाम के विपरीत काम।

१७८

खौरही कुतिया, रेशम का झूल।

खौरा रोग वाली कुतिया को रेशमी झूल पहना दिया जाय तो जैसी उसकी हँसी होती है, वैसी ही उस आदमी की होती है, जो ज्यादा बढ़-चढ़ कर शान दिखाता है।

१७९

आँधर कुकुर बतासे भूँकै।

बिना समझे-बूझे शक के आधार पर झगड़ा मोल लेना।

१८०

आँधी आवै बैठि गँवावै। मेह आवै भागि बचावै॥

जैसा अवसर देखे, वैसा करे। आँधी आये तो चुपचाप बैठकर समय बिताओ; मेह बरसे तो भागकर।

१८१

आँधी के आगे बेना का बतास।

बड़े आन्दोलन को रोकने के लिये साधारण प्रयत्न करना।

बेना = बाँस की बनी पंखी।

१८२

केरा बीछी बाँस। अपने जनमे नास॥

केला, बिच्छू और बाँस अपनी ही संतान से नष्ट हो जाते हैं।

१८३

आग खाये मुँह जरे। उधार खाये पेट जरे॥

उधार खाने से पेट में उसके पटाने की चिंता की आग जलती रहती है।

१८४

आग लगे मँड़ये बजर परे बरात।

चाहे माँड़ो में आग लगे, चाहे बरात पर बज्र पड़े; किसी से वास्ता नहीं।

१८५

कानी अपने मनै सुहानी।

कुरूप भी अपने को सुन्दर ही समझता है।

१८६

आगे नाथ न पीछे पगहा। सबसे भला कुम्हार क गदहा॥

घर में न कोई आगे है न पीछे; किसी की चिंता नहीं। जैसे कुम्हार का गदहा दिन रात खुला चरता फिरता है।

१८७

आटे का दिया, घर में रक्खे तो चूहा खाय:
बाहर रक्खे तो कौवा ले जाय।

निर्बल को कहीं ठिकाना नहीं।

१८८

आन से मारे तान से मारे। फिर भी न मरे तो रान से मारे।

साम, दाम और भेद से शत्रु न हारे तो लड़कर उसे हराना चाहिये।

१८९

आप चलें भूई भूई, शेखी गाड़ी पर।

दिखावा बहुत है।

१९०

आन क लोग्वारि सगुन बतावै। अपुवा कुकुरन से चिथवावै॥

दूसरे को उपदेश सभी देते हैं, स्वयं उसका लाभ नहीं लेते।

१९१

आये कनागत फूले कास। बाम्हन उछले नौ नौ बाँस॥

श्राद्ध के दिनों में ब्राह्मणों की बन आती है, खाने-पीने के दिन आये देख कर सभी को खुशी होती है।

१९२

आये चैत सुहावन। फूहड़ मैल छुड़ावन॥

जाड़े भर फूहड़ स्त्री नहाती नहीं; गरमी की ऋतु आने पर ही वह हाथ-पैर को साफ करती है।

१९३

आहार चूके वह गये। व्यवहार चूके वह गये॥
दरबार चूके वह गये। ससुरार चूके वह गये॥

चूकना अच्छा नहीं।

१९४

इक लख पूत सवा लख नाती। तेहि रावन घर दिया न बाती ॥

संसार में किसी के दिन एक से नहीं जाते।

१९५

इन नयनों का यही बिसेख। वह भी देखा यह भी देख।

जो देखना बदा है, वह कैसे टल सकता है।

१९६

उबासी, जम का सँदेसा।

उबासी लेना स्वास्थ्य के खराब होने का लक्षण है।

१९७

ऊँट का पाद न जमीन में न आसमान में।

उसका होना ही व्यर्थ है, जो किसी के काम का न हो।

१९८

ऊँट चढ़के बूट तोड़े।

असंभव काम करना।

बूट = चना।

१९९

एक तो करेला, दूसरे नीम चढ़ा।

एक तो स्वभाव ही से बुरा था, दूसरे बुरी संगति भी मिल गई।

२००

एक तो डायन, दुसरे हाथ लुआठा।

क्रूर आदमी को अधिकार मिल गया, तो फिर क्या कहना ?

लुआठा = जलता हुआ लक्कड़।

२०१

एक तो मियाँ थे ही, दूजे खाई भाँग।
तले हुआ सिर, ऊपर हुई टाँग॥

नशे से ऐसा ही होता है।

२०२

एक पूत जनि जनियो माय। घर रहे कि बाहर जाय।

हे माँ! एक ही पुत्र न जनना; वह घर पर रहेगा? या कमाने के लिये परदेश जायगा ?

२०३

कनियाँ लड़का गाँव गोहारी।

लड़का गोद में, ढिंढोरा गाँव भर।

२०४

कपड़ा कहे—तु मुझे कर तह। मैं तुझे करूँ शह॥

कपड़े को तह करके रखना चाहिये।

२०५

कमान से निकला तीर। मुँह से निकली बात॥

फिर हाथ नहीं आती। सँभाल कर बोलना चाहिये।

२०६

करिया बाम्हन गोर चमार। तेकरे सँग न उतरी पार॥

शरीर के रंग का भी स्वभाव पर असर पड़ता है।

२०७

कातिक कुतिया माघ बिलाई। चैत चिरैया सदा लुगाई॥

कातिक के महीने में कुतिया, माघ में बिल्ली और चैत में चिड़ियां कामातुर होजाती हैं। और स्त्री तो सदा ही कामातुर रहती है।

२०८

काया पापी अच्छा, मन पापी बुरा।

शरीर से पाप करने वाला उतना बुरा नहीं, जितना मन से पाप करने वाला होता है।

२०९

कुत्ता पाले वह कुत्ता। मामा घर भाञ्जा कुत्ता॥
बहन घर भाई कुत्ता। सासरे जमाई कुत्ता॥
सब कुत्तों का वह सरदार। जो पौढ़ा रहे जमाई द्वार॥

कुत्ता पालने वाला कुत्ता जैसा हो जाता है। मामा के घर भांजे की—बहन के घर भाई की और ससुराल में जमाई की हालत कुत्ते ही जैसी हो जाती है। लेकिन सब कुत्तों का सरदार तो वह है, जो जमाई के घर जा डेरा डाले रहता है।

२१०

कुत्ते के पैर जाना। बिल्ली के पैर आना॥

खूब तेजी से जाना; लौटना धीरे धीरे।

२११

कोल्हू के बैल को घर में भी पचास कोस।

घर के अंदर काम करते करते थक जाना।

२१२

खाना न कपड़ा, सैंत का भतरा।

जो पति स्त्री को न खाना दे, न कपड़ा; वह किस काम का ?

२१३

खायँ भीम, हगें शकुनी।

काम कोई करे, फल कोई भोगे।

२१४

खिचरी के चार यार। घी पापड़ दही अचार॥

अर्थ स्पष्ट है।

२१५

गँजेड़ी यार किसके। दम लगाये खिसके।

अपने मतलब से काम।

२१६

गधे की यारी लातों की सनसनाहट।

जैसा साथ करोगे, वैसा फल पाओगे।

२१७

गाँठि में दाम न, पतुरिया देखे भोंकार छोड़ैं।

पास में पैसा नहीं, पर शौक बहुत बड़ा।

२१८

चातुर का काम नहीं पातुर से अटके।
पातुर का काम यही लिया दिया सटके॥

चतुर वह है, जो वेश्या से न फँसे। और वेश्या चतुर वह है जो माल-मत्ता लेकर अपनी राह लगे।

२१९

छटाँक सेतुवा, मथुरा में भंडारा।

शक्ति थोड़ी, हौसला बहुत।

२२०

छाजा बाजा बेस, तीन बंगाले देस।
चूना चूँची दही, तीन बँगाले नहीं॥

अर्थ स्पष्ट है।

२२१

जब तक साँसा तब तक आसा।

जीते रहने ही भर का सब कुछ है।

२२२

जहँ जहँ चरन परैं संतन के तहँ तहँ बंटा ढार।

लक्षण ही ऐसे हैं।

२२३

जहाँ जाय भूखा, तहाँ पड़ै सूखा।

भाग्यहीन को कहीं भी सुख नहीं।

२२४

जा घर लाग्यो बानियो। सो घर गयो जानियो॥

जिस घर में बनिया सौदा या सामान उधार देने लगा, उसे गया ही हुआ, समझना।

२२५

जाड़ा गये जड़ावर, जोबन गये भतार।

जाड़ा बीत जाने पर जाड़े के कपड़े और जवानी बीत जाने पर पति व्यर्थ है।

२२६

जात का बैरी जात। काठ का बैरी काठ॥

अर्थ स्पष्ट है।

२२७

जात पाँत पूछै ना कोय। हरि को भजे सो हरि का होय॥

इस ज़माने में जाति कौन पूछता है?

२२८

जात पाँत पूछै ना कोय। कुरती पहिन तिलंगा होय॥

जाति कौन पूछता है? जो वर्दी पहन ले, वही सिपाही कहलायेगा।

२२६

जाति सुभाव न छूटै। टाँग उठाइ के मूतै ॥

जाति का स्वभाव नहीं छूटता; कुत्ता टाँग उठाकर ही मूतता है ।

२३०

जानि न जाइ निसाचर माया ।

धूर्तों का कुछ ठिकाना नहीं, क्या करना चाहते हैं !

२३१

जियत न देहौं कौरा। मरे उठैहौं चौरा ॥

कपूत जीते-जी बाप को टुकड़ा नहीं देता, पर उसके मरने पर उसके नाम चबूतरा बनवाता है।

२३२

जियत पिता से दंगमदंगा। मरे पिता पहुँचावहिं गंगा ॥

जियत पिता से पूछैं न बात। मरे पिता को दूध औ भात ॥

कपूत के लक्षण हैं ।

२३३

जिस बहुअरि की बहरी सास। उसका कभी न हो घर वास ॥

बहरी सास पाकर बहू स्वतंत्र हो जाती है ।

२३४

जीता सो हारा। हारा सो मरा ॥

मुकद्दमेबाजी का परिणाम ऐसा ही होता है ।

२३५

जीते तो हाथ काला। हारे तो मुँह काला ॥

जुए मे ऐसा ही होता है ।

२३६

जुआरी आया जित्त । गोहूँ चार ज्वारी इक्क ।

जुआरी आया हार। गोहूँ इक्क ज्वारी चार ॥

जुआरी जीतता है तो गेहूँ की चार और ज्वार की एक रोटी खाता है। हारता है तो गेहूँ की एक और ज्वार की चार रोटियाँ खाता है ।

२३७

जैसा मुँह वैसा तमाचा।

किसी को उतना ही दंड देना चाहिये, जितना वह सह सके।

२३८

जैसी देखे गाँव की रीत। वैसी उठावे आपनि भीत॥

बेमेल काम अच्छा नहीं।

२३९

जैसे हरगुन गाये। तैसे गाल बजाये॥

मूर्ख के लिये सब बराबर है।

२४०

जोरू चिकनी मियाँ मजूर।

अर्थ स्पष्ट है।

२४१

जोरू न जाँता। खुदा से नाता॥

निश्चिंत हैं।

२४२

झटपट की घानी। आधा तेल आधा पानी॥

जल्दबाजी से काम नहीं बनता।

२४३

टके की मुर्गी छः टके महसूल।

ज़रा से काम में पहाड़ जैसा खर्च।

२४४

ठठेरे ठठेरे बदलाई।

चालाक से चालाकी नहीं चल सकती।

२४५

डुग डुग बाजे बहुत नीक लागे। नौवा नेग माँगे उठा बैठो लागे॥

ब्याह का बाजा बहुत अच्छा लगता है, पर नाई को नेग देना अखरता है।

२४६

ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाते हैं ।

अपने मन की करते हैं ।

२४७

ढाक के तीन पात ।

बस, इतनी ही पूँजी है ।

२४८

तन पर नहीं धागा । नाम चन्द्रभागा ।।

नाम से हैसियत नहीं पहचानी जा सकती ।

२४६

तीन पाव भीतर । तो देव और पीतर ।।

पहले खाने का डौल बँध जाय, तब आगे की देखी जाय ।

२५०

डेढ़ बकायन, मियाँ बाग में ।

पूँजी कुछ नहीं, दिखावा बड़ा भारी ।

२५१

तुरुक तेली ताड़ । यह सूबे बिहार ।।

अर्थ स्पष्ट है ।

२५२

त्रिया-चरित जानै ना कोई । खसम मारि के सत्ती होई ।।

स्त्री-चरित्र का समझना कठिन है ।

२५३

थोथा चना । बाजै घना ।।

जिसके पास कुछ नहीं होता, वह बहुत बोलता है ।

२५४

दमड़ी की घोड़ी नौ टका बिदाई ।।

छोटा-सा काम और खर्च बड़ा-सा ।

२५५

दमड़ी पास नहीं, नाम लखपतराय ।

अर्थ स्पष्ट है ।

२५६

दरवाजे पर आई बरात। समधिन को लागी हगास ॥

काम आ पड़ा, तब हिम्मत जाती रही।

२५७

दलिद्दर के घर में नोन पकवान।

गरीब की हालत का क्या कहना !

२५८

दाई जाने आपन नाई।

दाई सबको अपने ही जैसा समझती है।

२५९

दाना न घास, खरहरा छः छः बार।

खाना-खिलाना कुछ नहीं, चिकनी चुपड़ी बातों से कहीं पेट भरता है !

२६०

दिया तो चाँद। नहीं तो मुँह माँद ॥

गरीब आदमी कुछ पाता है, तो चाँद ऐसा खिल उठता है, नहीं तो माँद ऐसा मुँह बाये खड़ा रहता है।

२६१

देह में न लत्ता। पान खायँ अलबत्ता ॥

गरीब छैला का यह हाल है।

२६२

देह में न लत्ता। देखै क कलकत्ता ॥

पास में पैसा नहीं, शौक बहुत बड़ा।

२६३

देखत की बौरहिया, आवैं पाँचो पीर ॥

बुढ़िया बड़ी चालाक है।

२६४

देसी गधा, पंजाबी रेंक।

अपने घर की रहन-सहन छोड़कर बाहर की नकल करते हैं।

२६५

देसी चिड़िया। मराठी भाषा ॥

अर्थ ऊपर जैसा।

२६६

धन नाते हुक्का, पोशाक नाते जुल्फ।

और हई क्या है ?

२६७

धाओ धाओ धाओ, कर्म लिखा सो पाओ।

कितना ही दौड़ो, जो भाग्य में लिखा है, वही मिलेगा।

२६८

धी मरी, जमाई चोर।

बेटी ही तक नाता है।

२६९

नंगा नाचे फाटे क्या ?

बेशरम का कोई क्या कर सकता है ?

२७०

नंगी होके काता सूत। बूढ़ी होके जाया पूत ॥

बे-मौके का काम सराहनीय नहीं होता।

२७१

नया जोगी गाजर का संख।

नई चाल पकड़नेवाले का शौक अनोखा ही होता है।

२७२

नई धोबिन उपलों का तकिया।

भावार्थ ऊपर जैसा।

२७३

नाक पकौड़ा, माथा चौड़ा।

रूप-रंग भद्दा है, पर भाग्यवान् तो है।

२७४

निकली होठों। चढ़ी कोठों ॥

मुँह से निकली बात घर-घर फैल जाती है।

२७५

नीच न छोड़े निचाई। नीम न छोड़े तिताई॥

नीच और नीम बराबर हैं।

२७६

नीम न मीठी होय सिंचो गुड़ घी से।

स्वभाव बदल नहीं सकता।

२७७

नौकरी रेंड़ को जड़ है।

नौकरी का क्या ठिकाना?

२७८

नौकरी की जड़ जबान में।

मीठा बोलने वाला नौकर कभी हटाया नहीं जाता।

२७९

नौकरी ताड़ की छाँह है।

नौकरी का क्या ठिकाना?

२८०

नौ की लकड़ी, नब्बे खर्च।

आमद से खर्च ज्यादा।

२८१

नौ दिन चले अढ़ाई कोस।

मेहनत बहुत, नतीजा बहुत कम।

२८२

न्यारा पूत पड़ोसी दाखिल।

बाप से अलग रहनेवाला बेटा पड़ोसी-जैसा है। अलग हो जाने पर नाता ही क्या?

२८३

परका घोड़ भुसौले ठाढ़।

पड़ी हुई आदत छूटती नहीं।

२८४

पर घर नाचें तीन जन, कायथ बैद दलाल।

जहाँ कुछ मिलने की आशा होती है, वहीं लोग जाते हैं।

२८५

पराई हँसी गुड़-सी मीठी।
अपनी हँसी जहर की पीठी॥

पर-निन्दा गुड़-जैसी मीठी लगती है। और अपनी निंदा विष की मीठी-जैसी कड़वी लगती है।

२८६

पहले पहरे सब कोई जागे, दुसरे पहरे भोगी।
तिसरे पहरे चोरवा जागे, चौथे पहरे जोगी॥

अर्थ स्पष्ट है। चोरवा = चोर।

२८७

पहिले लिख औ पीछे दे। कमती हो कागज़ से ले॥

बनिये का सिद्धान्त है।

२८८

पांडेजी पछतायँगे। वही चने की खायँगे॥

ज़िद्दी से ज़िद नहीं चल सकती।

२८९

पानी का हगा छिप नहीं सकता।

ऊपर की चतुराई चल नहीं सकती।

२९०

पानी में पाखान, भीजे पर छीजे नहीं।
मूरख आगे ज्ञान, रीझे पर बूझे नहीं॥

मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है।

२९१

पीर बबर्ची भिश्ती खर।

चारों के गुण अकेले ब्राह्मण में होते हैं।

२९२

पूत माँगै गई, भतार लेते आई।

घाटे में क्या रही?

२९३

पूत मीठ भतार मीठ किरिया केहि की खाऊँ।

दोनों ओर संकट है।

२६४

पेट पिटारी। मुँह सुपारी ॥

शरीर बिलकुल बेडौल है।

२६५

पेट में आँत न मुँह में दाँत।

बिलकुल बुड्ढे हो चले हैं।

२६६

पेट में पड़ा चारा। तो कूदन लाग बिचारा ॥

आहार ही में बल है।

२६७

पेटहा चाकर घसहा घोर। खाय बहुत काम करै थोर ॥

सिर्फ खाने पर रहनेवाला नौकर और सिर्फ घास खानेवाला घोड़ा, ये खाते तो बहुत हैं, पर काम थोड़ा करते हैं।

२६८

पेटू मरे पेट को, नामी मरै नाम को।

पेटू आदमी पेट ही की चिंता में रहता है।

२६९

पैसा करै काम। बीबी करै सलाम ॥

पैसा ही सब कुछ है।

३००

फटकचंद गिरधारी। न लोटा न थारी ॥

पूरे फक्कड़ हैं।

३०१

फूहड़ चाले। नौ घर हाले ॥

फूहड़ स्त्री का क्या कहना?

३०२

बंदर की आशनाई। घर में आग लगाई ॥

चंचल आदमी का भरोसा नहीं।

३०३

बँधी मुट्ठी लाख बराबर।

बिना जाने क्या कहा जाय?

३०४

बगल में सोंटा, नाम गरीबदास।

नाम से गुण का पता नहीं चलता।

३०५

बगुला मारे पखना हाथ।

व्यर्थ का काम।

३०६

बछिया के बाबा पँडिया के ताऊ।

महामूर्ख हैं।

३०७

बड़ी फजर। चूल्हे पर नजर॥

खाने ही खाने को सूझती है।

३०८

बदली में दिन न दीसे। फूहड़ बैठी पीसे॥

को पता ही नहीं।

३०९

बनिया मीत न बेस्या सती।

अर्थ स्पष्ट है।

३१०

बनिये से सयाना। सो दिवाना॥

बनिया बड़ा चालाक होता है।

३११

कन कन जोरै मन जुरै।

संग्रह करना अच्छा काम है।

३१२

मूँछन माँ मुसुकाय लेत।

बड़े चुप्पे हैं।

३१३

पैसा सरग की राह करि लेत है।

पैसे की बड़ी महिमा है।

३१४

गरीबी, सब की बीबी।

जरूरत वाले को सबकी खुशामद करनी पड़ती है।

३१५

चुल्लू में उल्लू। लोटे में गड़काप।

जरा सी रियायत ही में राजी; फिर ज्यादा में तो कहना ही क्या?

३१६

भागी फौज, लौटी बरात।

पता नहीं चलता।

३१७

देइ तो मुँह लाल। न देइ तो आँखि लाल॥

सहज में छोड़ने वाले नहीं।

३१८

गाड़ी में गाड़ी भर सुख, और गाड़ी भर दुख।

सुख के लिये ज़हमत भी बहुत उठानी पड़ती है।

३१९

एक घरी बरसै, छः घरी चिचियाय।

हैरान कर लिया।

३२०

रहँटा जरि बरि जाय तार ना टूटै।
असल खसम मरि जाय यार ना छूटै॥

व्यसन ऐसा ही होता है।

३२१

चूँचिन में हाड़ ढँढ़त हैं।

व्यर्थ काम करते हैं।

३२२

थके पर चींटी को मूत पैरिबो कठिन।

थका हुआ आदमी मरे के बराबर।

३२३

ढोल के भीतर पोल। न माने तो देख खोल॥

अर्थ स्पष्ट है।

३२४

राजा से कौन कहे कि ढाँकि लेउ।
रानी से कौन कहे कि झाँकि लेउ॥

अर्थ स्पष्ट है। एक राजा के गुप्त स्थानसे कपड़ा हट गया था। एक किसान कुछ प्रार्थना कर रहा था। उससे न देखा गया; उसने कहा—राजा साहब, ढँक लीजिये। राजा ने उसे यह कह कर पिटवाया कि तू ने देखा क्यों? तब से यह कहावत चली। रानी की भी कोई ऐसी ही घटना है।

३२५

हत्या मंगरे चढ़ि चिल्लाति।

हत्या छिप नहीं सकती।

३२६

कास की अँगिया मूँज की तनी। देखो बाबा कैसी बनी॥

जवानी का मद चढ़ा है।

३२७

अँतड़ी में आग लगी है।

बहुत भूखे हैं।

३२८

मान न मान, मैं तेरा मेहमान॥

जबरदस्ती घुस पड़ना।

३२९

मन मन भावै। मूँड़ी हिलावै॥

मन में तो है, पर झूठमूठ इन्कार करता है।

३३०

जानहार धन ऐसै जाइ। जैसे बेलै कुंजर खाय।
रहनहार धन ऐसे रहै। जैसे दूधु नरियर गहै॥

जानेवाला धन ऐसे जाता है, जैसे बेल को हाथी खा जाता है। हाथी समूचा बेल खा जाता है और भीतर का गूदा पचाकर समूचा ही पखाने के रास्ते निकाल देता है। पर रहने वाला धन इस तरह बच जाता है, जैसे नारियल का दूध।

३३१

क्या भूख को बासन। क्या नींद को आसन॥

लगने पर थाली के लिये रुका नहीं जा सकता, ऐसे ही नींद लगने पर आसन की खोज नहीं की जाती।

३३२

चील के घर में मांस की धरोहर।

कभी बच नहीं सकती।

३३३

दूध की रखवाली बिल्ली को।

अर्थ स्पष्ट है।

३३४

हाथी को गन्ने का पहरा।

अर्थ स्पष्ट है।

३३५

चोरे बकुचा लिहिन, बेगारी छुट्टी पायेन।

चोरों ने गठरी चुरा ली, जमींदार के आदमी जो बेगार में पकड़ कर साथ कर दिये गये थे। छुट्टी हो गये।

३३६

गधे को गुलकंद, गँवार को पापड़।

अयोग्य का सत्कार करना।

३३७

बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद?

अर्थ स्पष्ट है।

३३८

क्या काले के आगे दिया नहीं जलता?

दिया अँधेरा दूर करता है, न कि सब कालों को।

३३९

खूँटे के बल बधिया नाचे।

बड़े का सहारा पाकर ही छोटे अपना बल दिखाते हैं।

३४०

जो करै चोरी। सो राखै मोरी॥

चोर को निकल भागने का रास्ता पहले ही कर रखना पड़ता है।

३४१

दान, वित्त समान।

अपनी शक्ति से ज्यादा साहस न करो।

३४२

बिच्छू का काटा रोवै। साँप का काटा सोवै॥

अनुभव की बात है।

३४३

बैठे से बेगार भली।

बैठे रहना अच्छा नहीं।

३४४

भीख के टुकड़े, बाजार में डकार।

झूठी शान दिखाना।

३४५

भूख में किवाड़ ही पापड़।

भूख में जो मिल जाय, वही अमृत।

३४६

भेंड़ की लात घोंटू तक।

जिसकी जहाँ तक पहुँच हो।

३४७

मन उमराव कर्म दरिद्री।

बातें तो ऊँची ऊँची, पर करना कुछ नहीं।

३४८

मारे घुटना फूटे आँख।

कहीं की बात कहीं जा लगे।

३४९

मीठा और भर कठौता?

मज़ा भी लेना, और जी भर कर?

३५०

शहद की छुरी।

जो बात सुनने में प्रिय लगे, पर उसका परिणाम घातक हो।

३५१

शाम के मरे को कबतक रोवें।

दुःख सहने की भी एक हद होती है।

३५२

आठों गाँठ कुम्मैत।

बड़े ही चलता-पुरजा हैं।

३५३

टाट का लँगोटा, नवाब से यारी।

झूठो शान दिखाना।

३५४

मच्छर मार के ऐंठा सिंह।

वीरता का झूठा अभिमान।

३५५

उगले तो अँधा, खाय तो कोढ़ी।

कहा जाता है कि साँप छछूँदर को मुँह में लेकर उगल दे, तो अँधा हो जाता है; और खा जाय, तो कोढ़ी हो जाता है। जब दोनों तरफ से खतरा हो, तब आदमी क्या करे?

३५६

गौं निकली, आँख बदली।

मतलब के सब साथी हैं।

३५७

घर में महुवा की रोटी। बाहर लंबी धोती॥

झूठा दिखावा।

३५८

गढ़ै कुम्हार। भरै संसार॥

एक मेहनत करे, सैकड़ों उससे लाभ उठावें।

३५९

हाथ सुमिरनी। बगल कतरनी॥

कपटी आदमी का काम।

३६०

चिरई में कौआ। मनई में नौवा॥

बड़े चालाक होते हैं।

३६१

कंत न खरचैं दाम। धर्यो सुहागिन नाम॥

सुख न मिले, तो सुन्दर नाम रखने से क्या होगा।

३६२

जहाँ रूख न बिरिख। उहाँ रेंड़ै महापुरुष ॥

जहाँ कोई योग्य पुरुष नहीं, वहाँ साधारण मनुष्य ही सब का नेता हो जाता है।

३६३

जाके घर में माई। ताकी राम बनाई ॥

माँ की महिमा अपार है।

३६४

झट मँगनी, पट ब्याह ॥

काम में देरी करना अच्छा नहीं।

३६५

दमड़ी की गुड़िया, नौ टका मुड़ौनी ॥

जरा-सा तो काम, और बड़ा सा टीम-टाम।

३६६

पहिले कौरे माछी गिरी।

काम शुरू करते ही विघ्न पड़ गया।

३६७

बौरे गाँव ऊँट आइ, लोग कहैं ब्रह्म है।

मूर्ख कुछ का कुछ समझ लेता है।

३६८

मरी बछिया बाम्हन के नाँव।

जिस वस्तु का कोई पूछनेवाला नहीं, उसे दान देकर यश लेना।

३६९

माँगत हैं भीख, औ पूँछत हैं गाँव की जमा।

अपनी हैसियत से बड़ी बात की पूछ-ताछ करना।

३७०

मारते के पीछे और भागते के आगे।

चालाक आदमी हमेशा अपने बचाव की सोचता है।

३७१

मूँछ मरोरैं, बार न एकौ।

झूठा दिखावा।

३७२

मेरी बिल्ली, मुझी को म्याँऊँ ?

मेरे बनाये हुए आदमी मुझी पर रोब दिखाते हैं ?

३७३

राम राम जपना। पराया माल अपना ।।

कपटी का हाल ।

३७४

रूप की रोवै करम की खाय। बिधि का करतब जानि न जाय ।।

कंजूस की स्त्री तो दाने को तरसती है और भाग्यवती सुख से खाती पीती है । ब्रह्मा की लीला समझ में नहीं आती ।

३७५

लात के देवता बात नहीं ओनाते ।

नीच आदमी, जो मार खाने पर राह पर आता है, वह उपदेश नहीं सुनता ।

३७६

लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू गाय ।

जिससे मतलब निकले, उससे अपमान पाकर भी उसकी खुशामद करे ।

३७७

सकल चुरैल अस, मिजाज परी अस ।

झूठा घमंड ।

३७८

सौ सुनार की। एक लोहार की ॥

जबरदस्त का एक ही वार काफी होता है ।

३७९

सत्तू मन मत्तू, कब घोरै कब खाय ।
धान बेचारा भला, कूटा खाया चला ।।

सत्तू को नीचा दिखाते हुये किसी ने धान पर ताना मारा है । सत्तू तो मन को चिंता में डाल देने वाला है कि कब उसे साने और कब खाये । धान बेचारा कितना अच्छा है कि उसे कूट लो, खा लो, और राह लगो ।

३८०

सब गुन भरा ठकुरवा मोर। आपै पहरू आपै चोर॥

मेरा मालिक कितना अच्छा है कि आपही मालिक है और आप ही चोर भी।

३८१

सात पाँच की लकड़ी, एक जने का बोझ।

दस-पाँच आदमियों की सहायता से एक कमजोर का काम बन जाता है।

३८२

मूँड़ मुड़ाये कहूँ मुरदा हलुक होत है ?

साधारण त्याग से कोई बड़ा काम नहीं हुआ करता।

३८३

तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार।

विबाह में स्त्री को जो तेल लगाया जाता है, वह और राणा हमीर का हठ, दुबारा नहीं होता। अर्थात् जो ठान लिया है, वही होगा।

३८४

सौ में सती। लाख में जती॥

सती कहीं सौ स्त्रियों में, और यती (साधु) कहीं सौ मनुष्यों में एक हुआ करते हैं।

३८५

साँझे देइ सबेरे पावै। पूत भतार के आगे आवै॥

पाप का फल मिलने में देर नहीं होती। किसी कुलटा स्त्री ने एक साधु को, जो जंगल में कुटी में रहता था, विष मिली रोटी दे दी थी। अगले दिन उसके पति और पुत्र उसी साधु के पास पानी पीने गये। साधु ने वही रोटी पानी के साथ खाने को उन्हें दे दी। दोनों मर गये।

३८६

सीधे का मुँह कुत्ता चाटै।

सीधे-सादे स्वभाव के आदमी का अपमान सभी करते हैं।

३८७

राम राम सूआ पढ़ै, अंत बिलैया खाय।

तोता राम-राम पढ़ता है, पर बिल्ली से नहीं बच सकता। मौत को कोई रोक नहीं सकता।

३८८

सबै सयाने एक मत।

सभी बुद्धिमान एक ही बात सोचते हैं।

३८९

हर्रा लगै न फिटकरी, आवै चोखा रंग

मेहनत कुछ न करनी पड़े, पर लाभ खूब हो।

३९०

बिन माँगे मोती मिलै, माँगे मिलै न भीख॥

माँगने से प्रतिष्ठा नहीं रहती।

३९१

हाथी का पेट पिराय। गदहा दागा जाय॥

रोग कुछ, इलाज कुछ।

३९२

हाथी फिरै बजार। भूँकै कुकुर हजार॥

विरोधी लोग शिकायतें किया करें, सच्चा आदमी किसी की परवा नहीं करता।

३९३

जैसे नपुंसक नाह मिलै, तो कहाँ लगि नारि सिंगार बनावै।

काम करने की शक्ति ही न हो तो उत्साह के वाक्य क्या काम देंगे?

३९४

हीले रिजक, बहाने मौत।

जीविका किसी के सहारे से मिलती है और मृत्यु किसी बहाने ही से आती है।

३९५

जस मनई, तस पनही।

जैसा यह आदमी बुरा है, वैसा ही इसके लिये जूता भी है।

३९६

कहाँ राजा भोज, कहाँ गँगुआ तेली।

बड़ों के आगे छोटों की बड़ाई करना अपनी ही हँसी उड़वाना है।

३९७

ईश्वरेच्छा बलीयसी।

भगवान् जो चाहते हैं, वही होता है।

यात्रा-विचार

गाँव के लोग जब कहीं घर से बाहर जाने वाले होते हैं, तब कई बातों का विचार पहले कर लेते हैं। उनमें दिशा-शूल का प्रश्न सबसे पहला होता है। दिशा-शूल में वे कभी यात्रा करने नहीं निकलते।

दिशा-शूल

१

मंगर बुद्ध उत्तर दिसि कालू॥
सोम सनीचर पुरब न चालू।
जे बिहफै को दक्खिन जाय।
बिना गुनाहे पनही खाय॥

मंगलवार और बुधवार को उत्तर दिशा में, सोमवार और शनिवार को पूर्व की ओर दिशा-शूल होता है। बृहस्पतिवार को जो दक्षिण जाता है, वह बिना अपराध ही के जूता खाता (दंड पाता) है।

२

बुद्ध कहै मैं बड़ा सयाना।
मोरे दिन जिनि किह्यो पयाना॥
कौड़ी से नहिं भेंट कराऊँ।
खेम कुसल से घर पहुँचाऊँ॥
एक पहर जो परखै मोहिं।
सोने क छत्र धराऊँ तोहिं॥

बुधवार कहता है कि मैं बड़ा चतुर हूँ। लेकिन मेरे दिन कहीं जाना मत। मैं कौड़ी से भी भेंट नहीं होने देता; हाँ, क्षेम, कुशल से घर ज़रुर पहुँचा देता हूँ। पर तुम एक पहर तक रुककर चलोगे, तो तुम्हारे सिर पर सोने का छत्र धरा दूँगा, अर्थात् तुम्हारा काम सिद्ध कर दूँगा।

३

पुरुब गुधूली पच्छिम प्रात।
उत्तर दुपहर दक्खिन रात॥
का करै भद्रा का दिकसूल।
कहैं भड्डर सब चकनाचूर॥

पूर्व दिशा में जाना हो, तो गोधूली के समय, पश्चिम को प्रातःकाल, उत्तर को दुपहर में और दक्खिन को रात में प्रस्थान करे, तो न भद्रा का डर हो, न दिशा-शूल का।

४

रवि ताम्बूल सोम के दरपन।
भौमवार गुर धनियाँ चरबन॥
बुद्ध मिठाई बिहफै राई।
सुक्र कहै मोहिं दही सुहाई॥
सन्नो बाउभिरंगी भावै।
इन्द्रौ जीति पुत्र घर आवै॥

रविवार को पान खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर, मंगलवार को गुड़-धनियाँ चबाकर, बुध को मिठाई, बृहस्पतिवार को राई, शुक्र को दही और शनिवार को बाउभिरंग खाकर यात्रा करनी चाहिये। ऐसा करने से बेटा इन्द्र को भी जीतकर घर वापस आयेगा।

५

रवि दिन वास चमार घर, ससि दिन नाई गेह।
मंगल दिन काछी भवन, बुध दिन रजक सनेह॥
गुरु दिन ब्राह्मण के बसै, भृगु दिन बैश्य मँझार।
सनि दिन बेस्वा के बसै, भड्डर कहैं बिचार॥

रविवार को चमार के घर, सोमवार को नाई के घर, मंगलवार को काछी के घर, बुधवार को धोबी के घर, बृहस्पतिवार को ब्राह्मण के घर, शुक्र-वार को वैश्य के घर और शनिवार को वेश्या के घर प्रस्थान रखना चाहिये।

वस्त्र धारण

कपड़ा पहिरे तीनि बार। बुद्ध बृहस्पत सुक्रवार।
हारे अवरे का इतवार। भड्डर का है यही विचार॥

बुधवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार को वस्त्र धारण करना चाहिये। यदि बड़ी जरूरत हो, तो रविवार को भी पहना जा सकता है। भड्डर का यही मत है।

कुत्ता काटने का परिणाम

भरणि बिसाखा कृत्तिका, आरद्रा मघ मूल।
इनमें काटै कूकुरा, भड्डर है प्रतिकूल॥

भरणी, बिशाखा, कृत्तिका, आर्द्रा, मघा और मूल नक्षत्रों में कुत्ता काटे, तो अच्छा नहीं; हानि होगी।

शुभाशुभ शकुन-विचार

यात्रा के समय दिशा-शूल और प्रस्थान रखने के नियम-पालन के सिवा अच्छे-बुरे शकुनों का भी विचार किया जाता है। यहाँ शकुन-संबंधी कुछ कहावतें दी जाती हैं:—

१

सगुन सुभासुभ निकट हों, अथवा होवें दूर।
दूर दूर निकटै निकट, समझो फल भर पूर॥

शुभ और अशुभ शकुन जितने निकट और दूरी पर होंगे, उनके फल भी उतने ही निकट और दूर होंगे।

२

नारि सुहागिन जल-घट लावै।
दधि मछली जो सनमुख आवै॥
सनमुख धेनु पिआवै बाछा।
मंगल करन सगुन हैं आछा॥

सुहागिन स्त्री जल से भरा हुआ घड़ा लेकर आती हो, सामने से दही या मछली लेकर कोई आता हो, तो ये शकुन मंगलकारी हैं।

३

चलत समै नेउरा मिलि जाय।
बाम भाग चारा चखु खाय॥
काग दाहिने खेत सुहाय।
सफल मनोरथ समुझहु भाय॥

यात्रा के समय नेवला मिले, नीलकंठ पक्षी बाईं तरफ चारा खा रहा हो, और कौवा दाहिनी ओर हो, तो मनोरथ सिद्ध हुआ समझो।

४

लोमा फिरि फिरि दरस दिखावै।
बायें ते दहिने मृग आवै॥
भड्डर ऋषि यह सगुन बतावैं।
सगरे काज सिद्ध होइ जावैं॥

लोमड़ी बार-बार दिखाई पड़े, हरिण बायें से दाहिने को आयें, तो सब कार्य सिद्ध होंगे।

५

गवन समय जो स्वान।
फड़फड़ाय दे कान।
तो भी सगुन अकारथ जान ॥

यात्रा के समय कुत्ता कान फड़फड़ाये, तो शकुन शुभ नहीं; कार्य सिद्ध न होगा।

६

एक सूद्र दो बैस असार।
तीनि विप्र औ छत्री चार ॥
सनमुख जो आवै नौ नार।
कहैं भड्डरी असुभ विचार ॥

एक शूद्र, दो वैश्य, तीन ब्राह्मण, चार क्षत्रिय और नौ स्त्रियाँ सामने से आती हुई मिलें, तो अशुभ हैं।

७

भैंसि पाँच षट स्वान।
एक बैल एक बकरा जान ॥
तीनि धेनु गज सात प्रमान।
चलत मिलैं मति करो पयान ॥

चलते समय पाँच भैंसें, छः कुत्ते, एक बैल, एक बकरा, तीन गायें, और सात हाथी सामने मिलें, तो रुक जाना चाहिये।

८

स्वान धुनै जो अंग, अथवा लोटै भूमि पर।
तो निज कारज भंग, अतिही कुसगुन जानिये ॥

यात्रा के समय कुत्ता अपना शरीर फरफराये, या भूमि पर लोटता दिखाई दे, तो बड़ा अशकुन समझना चाहिये; कार्य की हानि अवश्य होगी।

९

सूके सोमे बुद्धे बाम।
यहि स्वर लंका जीते राम ॥
जो स्वर चलै सोइ पग दीजै।
काहेक पंडित पत्रा लीजै ॥

शुक्रवार, सोमवार और बुधवार को बायें स्वर में काम आरंभ करने से सिद्ध होता है। राम ने इसी स्वर में लंका जीती थी। बाँयाँ स्वर चले, तो बाँयाँ पैर आगे रखना चाहिये, दाहिना चले, तो दाहिना पैर। इसी से कार्य सिद्ध होगा। पंचांग देखकर चलना व्यर्थ ही है।

छींक-विचार

१

सनमुख छींक लड़ाई भाखै।
पीठि पाछिली सुख अभिलाखै ।।
छींक दाहिनो धन को नासै।
वाम छींक सुख सदा प्रकासै ।।
ऊँची छींक महा सुभकारी।
नीची छींक महा भयकारी ।।
अपनी छींक महा दुखदाई।
कह भड्डर जोसी समझाई ।।
अपनी छींक राम बन गयऊ।
सीता हरन तासु फल भयऊ ।।

छींक सामने हो, तो लड़ाई होगी। पीठ-पीछे हो, तो सुख होगा। दाहिने ओर की छींक धन का नाश करनेवाली और बाईं ओर की छींक सदा सुख देने वाली होती है। जोर की छींक शुभ और हलकी छींक भय उत्पन्न करनेवाली होती है। अपनी छींक बड़ी ही दुखदायिनी होती है। रामचन्द्र अपनी छींक के साथ बन गये थे; उसीका फल सीता-हरण हुआ।

छिपकली और गिरगिट-विचार

१

पड़े छिपकली अंग पर, करकाँटा चढ़ि जाय।
तिथि औ बार नक्षत्र कर, इनको फल दरसाय॥

शरीर के किसी अंग पर छिपकली गिरे या गिरगिट चढ़ जाय, तो तिथि, वार और नक्षत्र के अनुसार उनका फल बताया जाता है।

२

पड़िवा पड़ै जो छिपकली, सरट चढ़ै जो अंग।
रोग बढ़ावै बेगही, करै शक्ति को भंग॥

प्रतिपदा के दिन छिपकली गिरे या गिरगिट चढ़े, तो शीघ्र ही रोग बढ़ जायगा और शक्ति क्षीण हो जायगी।

३

दुतिया में दे राज घनेरा।
त्रितिया द्रव्य लाभ बहुतेरा॥
दुक्ख चतुर्थी माँहि बखानी।
पंचम छट्ठि देइ धन धानी॥
सप्तमि अष्टमि नौमी दसमी।
मरिबे नाहिं ले आवै करमी॥ (?)
एकादसी पुत्र को लावै।
करै द्वादसी द्रव्य उछाहै॥
त्रयोदसी दे सबही सिद्धि।
चतुर्दसी में नासै ऋद्धि॥

मावस पूनो माहितो, बुद्धिहीन धन जाय।
सरट चढ़ै गोधन बढ़ै, या ही फल दरसाय॥

४

सिर पर गिरै राज सुख पावै।
औ ललाट ऐश्वर्यहि आवै॥

कंठ मिलावै पिय को लाई।
काँधे पड़े विजय दरसाई॥
जुगल कान औ जुगल भुजाहू।
गोधा गिरे होय धन लाहू॥
हाथन ऊपर जो कहुँ गिरई।
संपति सकल गेह में धरई॥
निश्चय पीठ परै सुख पावै।
परै काँख प्रिय बंधु मिलावै॥
कटि के परे वस्त्र बहु रंगा।
गुदा परे मिल मित्र अभंगा॥
जुगल जाँघ पर आनि जो परई।
धन गन सकल मनोरथ भरई॥
परे जाँघ पर होय निरोगी।
परब परे तन जीव वियोगी॥
या विधि पल्ली सरट विचारा।
कह्यो भड्डरी जोतिस सारा॥

छिपकली और गिरगिट यदि सिर पर गिरे, तो राज-सुख मिले। ललाट पर पड़ें, तो ऐश्वर्य मिले। कंठ पर पड़ें, तो प्रियजन से भेंट हो। कंधे पर पड़ें, तो विजय प्राप्त हो। दोनों कानों और दोनों भुजाओं पर पड़ें; तो धन का लाभ हो। हाथों पर गिरें, तो धन घर में आवे। पीठ पर पड़ें, तो निश्चय सुख मिले। काँख पर पड़ें, प्रिय बंधु से भेंट हो। कटि पर पड़ें, तो रंग-बिरंगे वस्त्र मिलें। गुदा पर पड़ें, तो सच्चा मित्र मिले। दोनों जाँघो पर पड़ें तो धन आदि से सब मनोरथ पूरे हों। एक जाँघ पर पड़ें, तो मनुष्य नीरोग होगा। पर्व के दिन गिरें, तो शरीर और जीव का वियोग होगा। इस प्रकार छिपकली और गिरगिट का विचार भड्डरी ने ज्योतिष का सार लेकर कहा है।

स्वास्थ्य-संबंधी कहावतें

गाँव के लोग स्वास्थ्य के संबंध में असावधान नहीं हैं। उन्होंने हजारों वर्षों के स्वास्थ्य-संबंधी पुराने अनुभवों को कहावतों की छोटी-छोटी डिबियों में भर रक्खा है, जो गाँव में सब को कंठस्थ रहती हैं। उनके अनुभव बड़े सच्चे और लाभदायक साबित हुये हैं।

एक कहावत के अनुसार, जो इस संग्रह में भी है, मैं लगातार चालीस वर्षों से प्रातःकाल उठते ही दातुन करके पानी पी लेता हूँ। इसका परिणाम यह हुआ कि सन् १९१६ में इन्फ्लुएंजा से बीमार होने के सिवा आजतक मुझे सर्दी, खाँसी आदि गले के रोग नहीं हुये; और ज्वर भी बहुत ही कम आया। मेरा विश्वास है कि यह प्रातःकाल पानी पीने ही का परिणाम है। अतएव गाँववालों के स्वास्थ्य-संबंधी अनुभव निश्चय ही सत्य की नींव पर खड़े हैं और मनुष्य शरीरधारी-मात्र के लिये उपयोगी हैं।

यहाँ स्वास्थ्य-संबंधी कुछ कहावतें दी जा रही हैं :—

१

पानी पीजै छानि के। गुरू कीजै जानि के॥

पानी छानकर पीना चाहिये; और किसी को गुरु बनाना हो, तो उसके चरित्र आदि के बारे में अच्छी तरह जानकारी कर लेनी चाहिये।

२

गया मर्द जो खाय खटाई। गई नारि जो खाय मिठाई॥

खटाई खानेवाला पुरुष और मिठाई खानेवाली स्त्री दोनों रोगी हो जायँगे।

३

रोग का घर खाँसी। लड़ाई का घर हाँसी॥

खाँसी रोग का घर है; और हँसी-मजाक से झगड़ा हो जाता है।

४

खाइ के मूतै सूतै बाउँ। काहे क बैद बुलावै गाँउँ॥

भोजन के बाद पेशाब करे, और बाईं करवट लेट जाय, तो गाँव में वैद्य को बुलाने की क्या जरूरत है?

५

खाइ के परि रहु। मारि के टरि रहु॥

खाना खाकर लेट जाओ और मार-पीट होती हो, तो मारकर खिसक जाओ।

६

रहै निरोगी जो कम खाय। बिगरै काम न जो गम खाय॥

जो भूख से कम आहार करता है, वह नीरोग रहता है; और जो क्रोध को पचा लेता है, उसका काम नहीं बिगड़ता।

७

पोल तलुआ ऊँचा कपार। तौन खाय आपन भतार॥

जिन स्त्रियों के पैर के तलुवे जमीन पर पूरे नहीं बैठते, बीच में धनुषाकार उठे होते हैं और जिनका माथा ऊँचा होता है, वे प्रायः विधवा होती हैं।

८

कड़ूवा स्वभाव। डूबती नाव॥

जिस आदमी का स्वभाव कड़ुवा होता है, उसकी दशा डूबती हुई नाव की-सी होती है। अर्थात् कोई उसे चाहता नहीं।

९

आँत भारी। तो माथ भारी॥

सिर में दर्द हो, तो समझ लेना चाहिये कि पेट साफ नहीं। पेट की सफाई कर देने पर सिर का दर्द चला जायगा।

१०

गरम खाय, ठंडा नहाय। ओस में वसै, वैद हँसै॥

बाहर से आकर, जब शरीर गर्म हो, तुरंत ही खाना खा ले; या शीरर ठंडा हो, तब नहा ले और ओस में बैठे या सोये, तो वैद्य की जरूरत पड़ेगी और वह आमदनी का काम निकल आने से प्रसन्न होगा।

११

गरम नहाय ठंडा खाय, ओस बचाके सोवै।
ओहि के पिछवाड़े वैद बैठा रोवै॥

शरीर में गरमी हो, तब नहाय और शरीर ठंडा हो, तब खाय, तो उस आदमी के पिछवाड़े वैद्य बैठकर रोयेगा। क्योंकि तब उसका धंधा न चलेगा और घर के सामने आने की उसको जरूरत ही न पड़ेगी।

१२

माँसु खाये तोंद बाढ़ै, साग खाये ओझरी ॥

मांस खाने से तोंद बढ़ आयेगी और साग खाने से मेदा बढ़ जायगा।

नोटः —साग के विषय में चरक का भी यही मत है। प्राकृतिक चिकित्सावालों को विचार करना चाहिये।

१३

पहिले पीवे जोगी, बीच में पीवे भोगी, पीछे पीवे रोगी।

योगी भोजन के पहले पानी पी लेता है, भोगी भोजन के बीच में पीता है और जो अंत में पीता है, वह रोगी होता है।

१४

एक बार जोगी, दो बार भोगी, तीन बार रोगी।

योगी रात-दिन में एक बार शौच जाता है, भोगी दो बार; और जो तीन बार जाता है, वह रोगी होता है।

१५

मूँग की दालि, कै खाय भोगी, कै खाय रोगी ॥

मूँग की दाल या तो भोगी खाता है, या रोगी। अर्थात् ताकतवर के लिये यह काम की नहीं।

१६

सौ पग चलै खाय कै जोई। ताको बैद न पूछै कोई ॥

खाना खाने के बाद जो सौ कदम टहल ले, उसे वैद्य की जरूरत नहीं होती।

१७

भोजन करके पड़ै उतान। आठ साँस ताको परमान ॥
सोलह दहिने बत्तिस बायें। तब रस बने अन्न के खाये ॥

भोजन करके सीधा लेट जाय; आठ बार साँस लेने के बाद सोलह साँस दाहिनी करवट और बत्तीस साँस बाईं करवट ले, तब अन्न का रस बनेगा।

१८

प्रात काल जो नित्य नहाय। ताको देखि बैद पछताय ॥

जो रोज सवेरे स्नान कर लेता है, उसे देखकर वैद्य पछताता है; क्योंकि उससे कभी फीस न मिलेगी।

१६

बासी भात तेबासी माठा औ ककरी कै बतिया।
आधी रात जुड़ावनि आवै भुइँ लेव्या की खटिया॥

बासी भात खाकर, उस पर तीन दिनों का रक्खा हुआ मट्ठा पीकर और फिर ककड़ी की बतिया खाओगे तो आधी रात जूड़ी आयेगी; तब मर जाओगे और जमीन पर लिटा दिये जाओगे या कुछ दिनों तक खाट पर पड़े रहोगे।

२०

जैसा खावै अन। वैसा उपजै मन॥

आदमी जैसा अन्न खायगा, वैसा ही उसका मन बनेगा।

२१

सावन मास बिआरी न कीजै। भादौं ब्यारी क नाँव न लीजै॥
कुवार के दुइ पाख। किसी तनें जिउ राख॥
जब धरौ दिआली वारि। तब करौ बिआरी चारि॥

सावन के महीने में रात का खाना न खाओ, भादों में तो उसका नाम भी न लो, और क्वार के भी दोनों पक्षों में अर्थात् पूरे महीने भर किसी तरह प्राणों को बचा रक्खो; दीवाली का दिया जला लो, तब चाहे चार बार भरपेट भोजन करो।

२२

खाय चना। रहै बना॥

जो चना खाता है, वह सदा स्वस्थ रहता है।

२३

खिचड़ी के चार यार। घी पापड़ दही अँचार॥

खिचड़ी का स्वाद घी, पापड़, दही और अचार, इन चार चीजों से बढ़ जाता है।

२४

भूखे बेर अघाने गाँड़ा। ता ऊपर मूरी को डाँड़ा॥

भूख लगी हो, तो बेर खाओ; पेट भर गया हो, तो गन्ना चूसो, और उसके ऊपर मूली खाओ, पहले मूली खाकर गन्ना न चूसना।

२५

अँतरे खोंतरे डंडै करै। ताल नहाय ओस माँ परै॥
दैउ न मारै अपुनै मरै॥

जो दूसरे-चौथे कसरत करता है; अर्थात् नियम से रोज नहीं करता और ताल में नहाता और ओस में सोता है; वह मृत्यु के मारे बिना ही स्वयं मर जायगा।

२६

मूँड़ मुड़ाये दो नफा। गर्दन मोटी सिर सफा॥

सिर के बाल साफ करा देने से दो लाभ होते हैं; एक तो गर्दन मोटी हो जाती है; दूसरे सिर हलका हो जाता है।

२७

प्रातकाल खटिया ते उठिके पियै तुरंतै पानी
वाके घर में बैद न अइहैं बात घाघ कै जानी॥

बड़े सवेरे खाट से उठकर जो तत्काल ही पानी पी लेता है, उसके घर वैद्य नहीं आते; यह बात घाघ की अनुभव की हुई है।

२८

क्वार करैला चैत गुड़, सावन साग न खाय।
कौड़ी खरचे गाँठ की, रोग बिसाहन जाय॥

क्वार मे करेला, चैत में गुड़ और सावन में साग न खाना चाहिये। पास का पैसा भी जाय और बाजार जाकर रोग भी खरीद लाये, यह बुद्धिमानी नहीं।

पाठान्तर—भादों मूलो खाय।

२९

कोस कोस पर पग धुवै, तीन कोस पर खाय।
ऐसा बोलै भड्डरी, मन भावै तहँ जाय॥

एक-एक कोस पर पैर धो डाले, और तीन कोस चलकर कुछ खा-पी ले, तो भड्डरी कहते हैं कि कहीं भी जाओ, बीमार होने का डर नहीं।

३०

जाको मारा चाहिये, बिन लाठी बिन घाव।
वाको यही सिखाइये, घुइयाँ पूरी खाव॥

बिना लाठी मारे और बिना चोट पहुँचाये किसी को मारना चाहे, तो उसे यह सिखावे कि घुइयाँ (अरबी) और पूरी खाय। इससे पेचिस होती है।

३१

मोटि मुखारी जो करै, दूध त्रियारी खाय।
बासी पानी जो पियै, तेहि घर बैद न जाय ॥

जो मोटी दातुन करता है और रात में दूध और सबेरे बासी पानी पीता है, उसके घर वैद्य नहीं जाते।

पाठान्तर—भूनी हर्रे खाय।

३२

देवदारु औ चंद सोहागा खस का अतर मिलावै।
उबटन कै निज देह लगावै गरमी में सुख पावै ॥

देवदार, चंदन और सोहागा पीसकर उसमें खस का इत्र मिलाकर जो देह में उबटन लगाता है, वह गरमी में सुख पाता है।

३३

आँख में हर्रें दाँत में नोन। भूखा राखै चौथा कोन ॥
ताजा खावै बावाँ सोवै। बैद खड़ा पिछवारे रोवै ॥

आँख में हड़ का अंजन लगाये; दाँतों में नमक का मंजन करे, जितनी भूख हो, उसके तीन हिस्से से पेट को भरे और चौथा हिस्सा भूखा ही रक्खे, ताजा भोजन करे और बाईं करवट सोये तो वैद्य का कुछ काम नहीं।

३४

आँख में अंजन दाँत में मंजन नित कर नितकर नित कर।
कान में लकड़ी नाक में अँगुरी मत कर मत कर मतकर ॥

आँखों में रोज अंजन लगाओ और दाँतों में रोज मंजन करो। कान में लकड़ी और नाक में उँगली मत डालो।

३५

औंरा हर्रा पीपरि चीत। सेंधा नमक मिलाओ मीत ॥
जर जूड़ी औ खाँसी जाय। सुख से सोवै बहुत मोटाय ॥

आँवला, हरड़, पीपल और चीत को बारीक कूटकर उसमें सेंधा नमक मिला लो। यह चूर्ण खाने से ज्वर, जूड़ी और खाँसी चली जाती है; सुख की नींद आती है और शरीर मोटा होजाता है।

३६

सोंठि सुहागा सोंचर गाँधी। सहिंजन के रस गोली बाँधी।
असी सूर चौरासी बाई। तुरतै एसे जाइ नसाई॥

सोंठ, सुहागा, सोंचर नमक और हींग को बराबर-बराबर कूटकर सहींजन के रस में घोंटकर गोली बनाले, तो इससे अस्सी प्रकार के शूल और चौरासी प्रकार के वायुरोग नष्ट हो जाते हैं।

३७

सधुवै दासी चोरवै खाँसी प्रीति बिनासै हाँसी।
घग्घा उनकी बुद्धि बिनासै खायँ जो रोटी बासी॥

साधु को दासी, चोर को खाँसी और प्रीति को हँसी-दिल्लगी नष्ट कर देती है। घाघ कहते हैं कि जो आदमी बासी रोटी खाता है, उसकी बुद्धि का नाश हो जाता है।

३८

दूधन नहाओ, पूतन फलो॥

यह आशीर्वाद नई बहुओं को वृद्धा स्त्रियाँ प्रायः दिया करती हैं। इसका एक अर्थ तो यह है कि तुम्हारे घर में गाय-भैंस बहुत हों, जो इतना दूध दें कि तुम नहा भी लो, तो भी न चुके और पुत्रवती हो। दूसरा अर्थ इसका यह है कि यदि पुत्र न होते हों तो दूध से नहाओ, तो पुत्र ही पुत्र उत्पन्न होंगे।

३९

सावन हरैं भादों चीत। क्वार मास गुर खायउ मीत॥
कातिक मूली अगहन तेल। पूस में किहेउ दूध से मेल॥
माघ मास घिउ खींचरि खाय। फागुन उठि के प्रात नहाय॥
चैत नीम बैसाखे बेल। जेठे सयन असाढ़े खेल॥

सावन में हरड़, भादों में चीत, क्वार में गुड़, कातिक में मूली, अगहन में तेल, पूस में दूध, माघ में घी-खिचड़ी, फागुन में प्रातःस्नान, चैत में नीम, बैसाख में बेल, जेठ में दिन में सोना और असाढ़ में खेल खेलना, ये स्वास्थ्य के लिये लाभदायक हैं।

४०

चैते गुड़ बैसाखे तेल। जेठ क पंथ असाढ़ क बेल॥
सावन सतुआ भादों दही। क्वार करैला कातिक मही॥
अगहन जीरा पूसे धना। माहे मिसरी फागुन चना॥
यह बारह जो देय बचाय। वा घर बैद कबौं ना जाय॥

चैत में गुड़, बैसाख में तेल, जेठ में राह चलना, असाढ़ में बेल, सावन में सतुवा, भादों में दही, क्वार में करेला, कातिक में मट्ठा, अगहन में जीरा, पूस में धनिया, माघ में मिश्री और फागुन में चना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हैं। इन बारहों से जो बचकर रहेगा, उसके घर वैद्य कभी नहीं जायगा।

४१

सुरती कहै सुनो नर नारि। मोहिं का खायउ बहुत विचारि॥
पहिले देउँ दाँत करिआय। एक एक कर देउँ हिलाय॥
दुसरे दृष्टि मंद करि देउँ। तिसरे गँवहिं भूख हरि लेउँ॥
चौथे सुधि बुधि देउँ भुलाय। धरती छोड़ि सरग मँड़राय॥
पँचवें एक बड़ा गुन मोरा। जिन खावा सो दाँत निपोरा॥

सुरती (खाने की तंबाकू) कहती है--हे स्त्री-पुरुष ! सुनो, बहुत सोच-समझकर मुझे खाना। पहले तो मैं दाँत को काला कर देती हूँ और एक-एक करके सबको हिला भी देती हूँ। दूसरे आँखों की दृष्टि मंद कर देती हूँ। तीसरे चुपके से धीरे-धीरे भूख हर लेती हूँ। चौथे सुध-बुध भुला देती हूँ। खाने वाला धरती को छोड़कर आकाश में मँड़राने-सा लगता है। पाँचवें मुझ में एक बड़ा गुण यह है कि जो मुझे खाता है, वह दूसरों के आगे दाँत निकालकर माँगना भी सीख जाता है।

४२

बाटी कहै मैं आऊँ जाऊँ। रोटी कहै मँजिल पहुँचाऊँ॥
भात कहै मेरा हलका खाना। मेरे भरोसे कहीं न जाना॥

बाटी (कंडे की आग में सेंकी हुई मोटी रोटी) का कहना है कि जो कोई उसे खायगा, उसे वह मंजिल तक ले जाकर वापस भी ला देगी; बीच में खाने की जरूरत न पड़ेगी। रोटी का कहना है कि वह मंजिल तक सिर्फ पहुँचा देगी। भात का कहना है कि वह हलका खाना है, जल्दी ही पच जायगा; उसके भरोसे लंबी यात्रा नहीं करना।

४३

सौ बेर सत्तू नौ बेर चबेना। एक बार रोटी लेना न देना॥

सौ बार सत्तू खाने और नौ बार चबेना चबाने से एक बार रोटी खाना अच्छा है; फिर खाने की और जरूरत नहीं रहती।

४४

उड़द कहै मोरे माथे टीका। सब नाजों में मैं ही नीका॥
घी गुर डारि मुझे जो खाय। मुझको छोड़ कहीं ना जाय॥

उड़द कहता है, मेरे माथे पर तिलक है, इससे सब अन्नों में मैं ही श्रेष्ठ हूँ। घी और गुड़ डालकर जो मुझे खायगा, वह फिर मुझे छोड़ कर और किसी अन्न को पसंद न करेगा।

४५

चना कहे मेरी ऊँची नाक। एक घर दरिये दो घर हाँक॥
जो खावे मेरा एक टूक। पानी पीवै सौ सौ घूँट॥

चना कहता है, मेरी नाक ऊँची है, मुझे एक घर में दला जाता है तो मेरी हाँक दूसरे घर तक पहुँचती है। मेरा एक टुकड़ा भी कोई खा ले, तो वह सौ-सौ घूँट पानी पीता है।

४६

दिवस चलाये चंद्रमा, रैन चलावे सूर।
ऐसा साधन नित करै, रहै रोग से दूर॥

दिन में बायें नथने से साँस ले और रात में दाहिने से; ऐसा साधन रोज करे, तो रोग पास न आवे।

४७

ऊँचे चढ़ि के बोला मड़वा। सब नाजों में मैं हूँ भड़वा॥
आठ दिना जो मोकों खाय। भले मर्द से उठा न जाय॥

मड़ुवा ऊँचे चढ़कर बोला—मैं सब नाजों में भड़ुवा हूँ। मुझे जो आठ दिन भी कोई खाय, तो कैसा ही हृष्ट-पुष्ट आदमी हो, उससे उठा-बैठा न जायगा।

४८

मड़वा मीन चीन सँग दही। कोदौ क भात दूध सँग सही॥

मड़ुवा मछली के साथ, दही चीनी के साथ और कोदौ का भात दूध के साथ खाना हितकारी है।

घाघ की कहावतें

बहुत खोज करने पर अब यह निश्चय रूप से कहा जा सकता है कि घाघ कन्नौज के रहनेवाले थे। कन्नौज में अभीतक घाघ के वंशधर मौजूद हैं। घाघ एक पुरवे में, जिसका नाम चौधरी सराय है, रहते थे। वे दुबे ब्राह्मण थे।

घाघ बादशाह अकबर के समय में थे। उनके जन्म के सन्-संवत् का ठीक-ठीक पता नहीं चला है। यह किम्वदन्ती है कि अकबर ने प्रसन्न होकर घाघ को अपने नाम से कोई गाँव बसाने की आज्ञा दी थी। घाघ ने एक गाँव बसाया उसका नाम रक्खा—अकबराबाद सराय घाघ। सरकारी कागज़ में अबतक उस गाँव का नाम 'सराय घाघ' लिखा जाता है। उसी को 'चौधरी सराय' भी कहते हैं। जान पड़ता है, घाघ चौधरी भी कहे जाते थे। सराय घाघ कन्नौज शहर से एक मील दक्खिन और कन्नौज स्टेशन से ३ फर्लांग पश्चिम है। बस्ती देखने से बड़ी पुरानी जान पड़ती है।

घाघ की मृत्यु के संबंध में कहा जाता है कि घाघ ने ज्योतिष से पता लगा लिया था कि उनकी मृत्यु तालाब में नहाते समय तालाब के बीच में गड़े हुए लकड़ी के खम्भे में चोटी चिपक जाने से होगी। इससे घाघ कभी तालाब में नहाते ही नहीं थे; और न मोटी चोटी ही रखते थे। एक दिन उनके कुछ मित्रों ने नहाते समय उन्हें भी तालाब में खींच लिया। उस दिन सचमुच उनकी चोटी लकड़ी के खंभे से चिपक गई और वे छुड़ा न सके और मर गये। मरते वक्त उन्होंने कहा था—

जानत रहा घाघ निर्बुद्धि।
आवै काल विनासै बुद्धि॥

घाघ और उनकी पतोहू के बारे में भी एक मनोरंजक कहानी प्रसिद्ध है। कहते हैं कि घाघ जो कहावतें बनाते, उनकी पतोहू उनके विरुद्ध दूसरी कहावतें बना देती थी। इससे गाँव के लोगों को रस आने लगा और उन्होंने इधर की बात उधर पहुँचाकर दोनों में अच्छी नोक-झोक पैदा कर दी।

घाघ ने कहा—

मुये चाम से चाम कटावै भुइँ सँकरी माँ सोवै।
घाघ कहैं ये तीनों भकुवा उढ़रि जाइ औ रोवै॥

इस पर पतोहू ने कहा—

दाम देइ के चाम कटावै, नींद लागि जब सोवै।
काम के मारे उढ़रि गई, जब समुझि आइ तब रोवै॥

घाघ ने कहा—

पउला पहिरे हर जोतै औ सुथना पहिरि निरावै।
घाघ कहैं ये तीनों भकुवा बोझ लिहे जे गावै॥

पतोहू ने कहा—

अहिर होइ तो कस ना जोतै तुरकिन होइ निरावै।
छैला होइ तो कस ना गावै हलुक बोझ जो पावै॥

घाघ ने कहा—

तरुन तिया होइ अंगने सोवै। रन में चढ़िके छत्री रोवै।
साँझे सतुवा करै बेआरी। घाघ मरै उनकर महतारी॥

पतोहू ने कहा—

पतिब्रता होइ अँगने सोवै। बिना अस्त्र के छत्री रोवै॥
भूख लागि जब करै बेआरी। मरै घाघ ही कै महतारी॥

घाघ ने कहा—

बिन गौने ससुरारी जाय। बिना माघ घिउ खींचरि खाय॥
बिन वर्षा के पहिरै पौआ। कहैं घाघ ये तीनों कौआ॥

पतोहू ने कहा—

काम परे ससुरारी जाय। मन चाहे घिउ खींचरि खाय॥
करै जोग तो पहिरै पौआ। कहै पतोहू घाघै कौआ॥

पतोहू जरा मोटे शरीर की थी, और घाघ के पुत्र का शरीर दुबला-पतला था। एक दिन खिसियाकर घाघ ने कहा—

पातर दुलहा मोटलि जोय। घाघ कहै रस कहाँ से होय॥

ससुर-पतोहू के झगड़े के रसिया लोगों ने इसे पतोहू तक पहुँचा दिया। पतोहू बहुत झुँझलाई। उसने कहा—

घाघ दुहिजरा अस कस कहै। पातरि ऊख बहुत रस रहै॥

इस तरह रोज़-रोज़ के मजाक़ से घाघ का मन अपने गाँव से ऊब गया और वे कन्नौज चले गये। कन्नौज में उनकी ससुराल थी। रहनेवाले वे, कोई कहता है, छपरा के थे, कोई कहता है गोरखपुर के, और कोई-कोई इन्हें गोंडा, चम्पारन, कानपुर, फतहपुर या रायबरेली के निवासी भी बतलाते हैं।

इसमें संदेह नहीं, घाघ बड़े अनुभवी आदमी थे। गाँववालों के जीवन को उन्होंने अच्छी तरह उलट-पलट कर देखा था। उनकी कहावतें गाँववालों को बहुत ही प्रिय हैं। हरएक कोई न कोई कहावत जानता है और मौके पर आपही आप बोल भी देता है।

घाघ की कुछ कहावतें, जो मिल सकी हैं, आगे दी जाती हैं:—

१

मुये चाम से चाम कटावै भुइँ सँकरी माँ सोवै।
घाघ कहैं ये तीनों भकुवा उढ़रि जाइ औ रोवै॥

जो तंग जूता पहनता है, और जमीन पर भी तंग जगह में सोता है और अपना घर छोड़कर पराई स्त्री को लेकर भाग जाता है और फिर रोता है; घाघ कहते हैं, ये तीनों मूर्ख हैं।

२

सुथना पहिरे हर जोतै औ पउला पहिरि निरावै।
घाघ कहैं ये तीनों भकुवा सिर बोझा औ गावै॥

जो सुथना (चूड़ीदार पाजामा) पहनकर हल जोतता है, जो पउला किसानों का खड़ाऊँ जिसमें खूँटो के स्थान पर रस्सी लगी होती है, पहनकर खेत की निरवाही करता है; और जो सिर पर बोझा लिये हुये भी गाता चलता है, घाघ कहते हैं, ये तीनों मूर्ख हैं।

३

तरुन त्रिया होइ अँगने सोवै। छत्री होइ के रन में रोवै॥
जो सतुवा की करै बियारी। मरै घाघ उनकै महतारी॥

जो स्त्री जवान है और पति के साथ एकांत में न सोकर घर भर के साथ आँगन में सोती है; जो क्षत्रिय है, पर लड़ाई के मैदान में रोता है; और जो गृहस्थ रात में सतुवा खाता है, घाघ कहते हैं, इन तीनों की माँ को इन तीनों की मूर्खता देखकर लज्जा से मर जाना चाहिये।

४

नसकट पनही बतकट जोय। जो पहिलौंठी बिटिया होय।
पातर कृषी बौरहा भाय। घाघ कहैं दुख कहाँ समाय॥

एँड़ी के ऊपर की नस काटनेवाली जूती, बात काटनेवाली स्त्री, पहली संतान कन्या, कमजोर खेती और पागल भाई, घाघ कहते हैं, ये दुःख कहाँ समा सकते हैं?

५

नारि करकसा कट्टर घोर। हाकिम होइ के खाय अँकोर॥
कपटी मित्र पुत्र है चोर। घग्घा इनको गहिरे बोर॥

झगड़ालू स्त्री, काटखाने वाला घोड़ा, रिश्वत खाने वाला हाकिम, कपटी मित्र और चोर बेटा, घाघ कहते हैं, इनको गहरे पानी में डुबो देना चाहिये। अर्थात् इनसे पिंड छुड़ा लिया जाय, तो अच्छा।

६

भुइयाँ खेड़ हर है चार। घर होय गिहथिन गऊ दुधार॥
अरहर क दालि जड़हन क भात। गागल निबुआ औ घिउ तात॥
सह रस खंड दही जो होय। बाँके नैन परोसै जोय॥
कहै घाघ तब सबही झूठा। उहाँ छाँड़ि इहवैं बैकुण्ठा॥

खेत गाँव से बिलकुल मिले हुये हों, चार हल चलते हों, घर में गृहस्थी के कामों में होशियार स्त्री हो, गाय दूध देनेवाली हो; दाल अरहर की भात जड़हन का हो, उसमें नीबू निचोड़ा हुआ और गरम घी डाला हुआ हो; खाँड़ मिला हुआ दही हो और कटीले नेत्रों वाली स्त्री भोजन परोसे, तो घाघ कहते हैं, पृथ्वी पर ही बैकुण्ठ है; और बैकुण्ठ सब झूठा है।

७

एक तो बसो सड़क पर गाँव। दूजे बड़े बड़न माँ नाँव॥
तीजे परे दरबि से हीन। घग्घा हमको बिपता तीनि॥

एक तो गाँव सड़क के किनारे बसा है; दूसरे बड़े लोगों में गिना जाता हूँ, और तीसरे घर में धन नहीं है; घाघ कहते हैं, हमें ये तीन दुःख हैं। अर्थात् सड़क के किनारे घर होने से राही-बटोही वहीं आ टिकते हैं, तब गरीबी के कारण उनकी शुश्रूषा नहीं हो पाती, यही दुःख है।

८

ओछी बैठक ओछे काम। ओछी बातैं आठों जाम॥
घग्घा जानौ तीनि निकाम। भूलि न लीजौ इनका नाम॥

बुरी संगति में बैठना, बुरे काम करना और रातदिन बुरी बातें बकना, घाघ कहते हैं, ये तीनों काम बुरे हैं; भूलकर भी इनका नाम नहीं लेना चाहिये।

६

कुतवा-मूतनि मरकनी, सरबलील कुच काट।
घग्घा चारो परिहरौ, तब तुम पौढ़ो खाट॥

जिस पर कुत्ते पेशाब करते हों, जो लेटने पर चर्रमर्र आवाज करती हो, जो ऐसी ढीली हो कि लेटनेवाले का सारा शरीर ही निगल जाती हो, और जो इतनी छोटी पड़ती हो कि एँड़ी के ऊपर की नस कटती हो, ऐसे लक्षणोंवाली खाट पर न पौढ़ना चाहिये।

१०

पर कपड़ा लैं करै सिंगार। परधन काढ़ि करै ब्योहार॥
और के ऊपर ठानै रारि। धरै धरोहर घर से काढ़ि॥
घाघ कहैं ये भकुवा चारि॥

जो दूसरे से कपड़ा उधार लेकर शरीर सजाता है; जो दूसरे से कर्ज लेकर कर्ज देता है; जो दूसरे से लड़ाई लेकर खुद लड़ता है; और जो अपने घर का धन निकालकर दूसरे के घर धरोहर रखता है, घाघ कहते हैं, ये चारों मूर्ख हैं।

११

ओछो मंत्री राजै नासै, ताल बिनासै काई।
सुक्ख साहिबी फूट बिनासै, घग्घा पैर बिवाई॥

बुरा मंत्री राज या राजा का नाश कर देता है, काई ताल का नाश कर देती है, और आपस की फूट घर का सुख और बड़प्पन का नाश कर देती है, इसी तरह बिवाई पैर का नाश कर देती है।

१२

साँझे से परि रहती खाट। पड़ी भँड़ेहरि बारह बार॥
घर आँगनु सब घिन घिन होइ। घग्घा तजौ कुलच्छनि जोइ॥

शाम होते ही जो खाट पर जा पड़ती है; जिसके घर के बरतन इधर-उधर छितराये रहते हैं और जिसके घर और आँगन सब गंदे रहते हैं; घाघ कहते हैं, ऐसी कुलक्षणी स्त्री को छोड़ देना चाहिये।

१३

निहपछ राजा मन होय हाथ। साधु परोसी नीमन साथ॥
हुकुमी पूत धिया सतवार। तिरिया भाई रखे विचार॥
कहत घाघ हम कहत विचार। बड़े भाग से दे करतार॥

निष्पक्ष राजा, अपने वश का मन, सज्जन पड़ोसी, सच्चा साथी, आज्ञा माननेवाला पुत्र, सतवंती कन्या और ध्यान रखनेवाला भाई और स्त्री, घाघ कहते हैं, भगवान् बड़े भाग्य से देते हैं।

१४

सधुवै दासी चोरवै खाँसी, प्रीति बिनासै हाँसी।
घग्घा उनकी बुद्धि बिनासै, खायँ जो रोटी बासी॥

दासी से साधु का, खाँसी से चोर का और हँसी-मजाक से प्रीति का नाश हो जाता है। घाघ कहते हैं, जो लोग बासी रोटी खाते हैं, उनकी बुद्धि नष्ट हो जाती है।

१५

चाकर चोर राज बेपीर। कहैं घाघ का धारी धीर॥

नौकर में चोरी करने की आदत है और राजा दूसरे का दुःख-दर्द समझता ही नहीं; घाघ कहते हैं, क्या धीरज धरें?

१६

अगसर खेती अगसर मार। कहैं घाघ ये कबहुँ न हार॥

मौसम लगते ही खेती शुरू कर देनेवाला और लड़ाई-झगड़े में पहले ही वार कर देनेवाला कभी नहीं हारता, ऐसा घाघ कहते हैं।

१७

नसकट खटिया दुलकन घोर। कहैं घाघ ई विपति क ओर॥

एँड़ी के ऊपर की नस काटनेवाली अर्थात् लंबाई में छोटी खाट और कमर उछाल कर चलने वाला घोड़ा, ये बड़ी विपत्ति हैं।

१८

सावन घोड़ी भादौं गाय। माघ मास जो भैंस बिआय॥
कहैं घाघ यह साँची बात। आपै मरै कि मलिकै खात॥

सावन के महीने में घोड़ी, भादों के महीने में गाय और माघ के महीने में भैंस ब्याती है तो या तो ये स्वयं मर जाती हैं या अपने मालिक को खा जाती हैं। अर्थात् इन महीनों में इन जानवरों को पालने में मालिक को बड़ा कष्ट होता है।

१९

बनियक सखरज ठकुर कहीन। बैद क पूत ब्याधि नहिं चीन ॥
पंडित चुप-चुप बेसवा मइल। कहैं घाघ पाँचों घर गइल ॥

बनिये का लड़का शाह-खर्च (अपव्ययी) हो; ठाकुर का लड़का तेजहीन हो; वैद्य का पुत्र रोग को नहीं पहचाने, पंडित होकर जो चुप रहता है, और वेश्या गंदे रहन-सहन की हो, तो घाघ कहते हैं, इन पाँचों का घर उजड़ा हुआ समझो।

२०

ऊँच अटारी मधुर बतास। कहैं घाघ घरही कैलास ॥

ऊँची अटा पर मंद-मंद हवा बहती हुई मिले, तो घाघ कहते हैं, घर ही कैलाश के समान सुखदायक है।

२१

घाघ बात अपने मन गुनहीं,। छत्री भगत न मूसर धनुहीं ॥

घाघ अपने मन में यह सोचते हैं कि क्षत्रिय भक्त नहीं होता, जैसे मूसल धनुष की तरह बना तो होता है, पर वह धनुष नहीं होता।

२२

पहिरि खड़ाऊँ खेत निरावै ओढ़ि रजाई झोंकै।
घाघ कहैं ये तीनों भकुवा बेमतलब की भोंकै ॥

जो खड़ाऊँ पहनकर खेत निराता है, जो रजाई ओढ़कर भाड़ झोंकता है और जो बिना मतलब की बातें बकता रहता है, घाघ कहते हैं, ये तीनों मूर्ख हैं।

२३

अब्बर खेती बाउर भाय। फूहर तिरिया हरहट गाय ॥
घाघ पड़ोसी से झगड़ंत। रिनिया ब्योहर त्रिपति क अंत ॥

कमज़ोर खेती, मंदबुद्धि भाई, फूहड़ स्त्री, दुष्ट गाय, झगड़ालू पड़ोसी और कर्ज का तकाजा, घाघ कहते हैं, ये दुःख के अंत हैं।

२४

हरहट नारि बास एकबाह। परुवा बरध सुहुत हरवाह ॥
रोगी होइ होइ इकलंत। कहैं घाघ ई बिपति क अंत ॥

दुष्टा स्त्री, एकांत का बसना, मँगनी का बैल, सुस्त हलवाहा, रोगी शरीर और फिर अकेले, घाघ कहते हैं, इनसे बढ़कर और विपत्ति न होगी।

२५

झिलँगा खटिया बातलि देह। तिरिया लंपट हाटे गेह॥
बेटा बिगरि के मुद्दई मिलंत। कहैं घाघ ई बिपति क अंत॥

ढीली खाट, वात रोग (गठिया) से ग्रस्त देह, कुलटा स्त्री, बाजार में घर, पिता से बिगड़कर उसके शत्रु से मिल जाने वाला पुत्र, घाघ कहते हैं ये सबसे बड़े दुःख हैं।

२६

ढीठ पतोहु धिया गरियार। खसम बे पीर न करै विचार॥
घरे जलावन अन्न न होइ। घाघ कहैं सो अभागी जोइ॥

जिस की पतोहू ढीठ हो, बेटी घुरमुसही हो, पति बेरहम और न सुनने वाला हो और जिसके घर में खाने भर का अन्न न हो, घाघ कहते हैं, वह अभागिनी स्त्री है।

२७

पूत न माने आपनि डाँट। भाई लड़ै चहै नित बाँट॥
तिरिया कलही करकस होइ। नियरा बसल दुहुट सब कोइ॥
मालिक नाहिन करै बिचार। कहैं घाघ ई दुक्ख अपार॥

बेटा अपना कहा नहीं मानता, भाई झगड़ता रहता है, और रोज बँटवारा करना चाहता है, स्त्री झगड़ालू है, पड़ोस में सब दुष्ट बसे हैं, मालिक कुछ सुनता ही नहीं; घाघ कहते हैं, यह अपार दुःख है।

२८

कोपे दई मेघ ना होइ। खेती सूखति नैहर जोइ॥
पूत बिदेस खाट पर कंत। कहैं घाघ ई बिपति क अंत॥

ईश्वर कुपित हैं, बरसात नहीं हो रही है, खेती सूख रही है, स्त्री पिता के घर गई है; पुत्र परदेश में है, पति खाट पर पड़ा है; घाघ कहते हैं, इससे बढ़ कर और विपत्ति क्या होगी ?

२९

आँधर पूत बहिनि मुँह जोर। बातें तिया मचावइ सोर॥
भाई भवहि करैं तकरार। ई दुख घाघ क बड़ा अपार॥

पुत्र अंधा है, बहन लड़ाका है, स्त्री बात करने में हल्ला मचाती है, भाई और भौजाई दोनों झगड़ालू हैं; घाघ कहते हैं क्या करें ? बड़ा दुःख है।

३०

आपन आपन सबका होइ। दुख माँ नाहिं सँघाती कोइ॥
अन बहतर खातिर झगड़ंत। कहैं घाघ ई विपतिक अंत॥

सब अपने-अपने मतलब के यार हैं, दुःख में साथ देनेवाला कोई नहीं; सब अन्न और वस्त्र के लिए झगड़ते रहते हैं, घाघ कहते हैं, यह बड़ा दुःख है।

३१

जोइगर बँसगर बुझगर भाग। तिरिया सतिवँत नीक सुभाय॥
धन पुत हो मन होइ विचार। कहैं घाघ ई सुक्ख अपार॥

स्त्री, संतानवती और समझ वाला भाई है; स्त्री सतवंती और अच्छे स्वभाव वाली है; घर में धन है, पुत्र है, और मन विवेकवान् है, घाघ कहते हैं, यह अपार सुख है।

३२

ओती सेम पिछौती पोय। माथा खोले तिरिया होय॥
अँगने रेंड आलसी सुभाव। घाघ करै का भूरि बिलाव॥

घर की ओलती पर सेम चढ़ी है, पिछवाड़े पोय लगी है; स्त्री सिर खोले खड़ी है; आँगन में रेंड का पेड़ है और स्वभाव आलसी है; तो घाघ कहते हैं, भूरी बिल्ली का सगुन क्या करेगा ?

३३

बिना माघ घिउ खीचरि खाइ। बिन गौनें ससुरारी जाइ॥
बिना रितू के पहिनै पौवा। घाघ कहैं ई तीनों कौवा॥

जो माघ महीने में घी-खीचड़ी नहीं खाता; जो गौना हुये बिना ही ससुराल जाता है और जो वर्षा ऋतु के बिना ही पौला (किसानों का खड़ाऊँ) पहनता है, घाघ कहते हैं, ये तीनों कौवा (निषिद्ध) हैं।

३४

नीचन से व्यवहार बिसाहा हँसि के माँगत दम्मा।
आलस नींद निगोड़ी घेरे घग्घा तीनि निकम्मा॥

जो नीच आदमियों से लेन-देन करता है, जो दी हुई चीज का दाम हँसकर माँगता है, और जिसे सुस्ती और नींद निगोड़ी घेरे रहती है; घाघ कहते हैं, ये तीनों आदमी निकम्मे हैं।

३५

घर की खुनुस औ जर की भूख। छोट दमाद बराहे ऊख ॥
पातर खेती भकुवा भाइ। घाघ कहैं दुख कहाँ समाय ॥

घर में रात-दिन की लड़ाई, ज्वर उतर जाने के बाद की भूख, कन्या से उम्र में छोटा दामाद, सूखती हुई ईख, कमजोर खेती, और बुद्धिहीन भाई, घाघ कहते हैं, ये ऐसे दुःख हैं कि कहाँ समायेंगे ?

३६

चोर जुआरी गँठ कटा, जार वो नारि छिनार ॥
सौ सौगंदें खायँ पर, घाघ न करु इतबार ॥

चोर, जुआरी, गँठकटा, जार और कुलटा स्त्री सैकड़ों कसमें खायँ, तो भी घाघ कहते हैं, इनका विश्वास नहीं करना चाहिये।

लाल बुझक्कड़ की कहावतें

लाल बुझक्कड़ फरुखाबाद जिले के रहने वाले थे। असली नाम लाल था, बुझक्कड़ पदवी थी। घाघ की देखा-देखी इन्होंने भी अपनी बुद्धि का चमत्कार दिखलाना शुरू कर दिया था। अपने गाँव में यही सबसे अधिक चतुर गिने जाते थे। इससे गाँववाले जब कोई नई चीज देखते, तब इनके पास उसका नाम पूछने के लिये दौड़ आते थे। लाल बुझक्कड़ भी कोई बात बूझे बिना छोड़ते नहीं थे।

१

एक दिन लाल बुझक्कड़ के गाँव के पास से कोई हाथी गया था। राह में उसके पैरों के निशान देखकर गाँववाले चकराये। उन्होंने लाल बुझक्कड़ को लाकर दिखलाया और पूछा — यह क्या है ?

लाल बुझक्कड़ ने फौरन जवाब दिया :—

जानै लाल बुझक्कड़, और न जानै कोई।
पाँव में चक्की बाँधि के, हरिन कुलाँचा होई॥

२

एक दिन गाँववालों ने जंगल में तेली का एक पुराना कोल्हू पड़ा हुआ देखा। वे लाल बुझक्कड़ के पास पहुंचे। लाल बुझक्कड़ ने उसे देख कर उनका भ्रम यह कहकर दूर कर दिया :—

लाल बुझक्कड़ बूझते, वे तो हैं गुरु ज्ञानी।
पुरानी होकर गिर पड़ी, खुदा की सुर्मादानी॥

३

लाल बुझक्कड़ एक बार दिल्ली गये थे। वहाँ उन्होने हाथी देखा; पर उसका नाम वे नहीं जानते थे। एक बार उनके गाँव के पास एक हाथी आया। उसको देखकर गाँव वालों ने लाल बुझक्कड़ से पूछा—यह क्या है ? :—

लाल बुझक्कड़ ने कहा :—

बूझै लाल बुझक्कड़, और न जानै कोई।
रैन इकट्ठी हो गई, कै दिल्ली वारो होई॥

४

इक बार लाल बुझक्कड़ के गाँव के एक रईस ने बताशे बाँटे। एक लड़का छप्पर में लगे हुये लकड़ी के खंभे को दोनों हाथों के बीच में किये हुये खड़ा था। उसने अँजुलो में बताशे ले लिये। पर वह अँजुली खोलता है तो बताशे गिर जाते हैं; नहीं खोलता तो खंभे से अलग नहीं हो सकता। गाँव वाले और लड़के के माँ-बाप बहुत हैरान हुये। अंत में लाल बुझक्कड़ बुलाये गये। उन्होंने यह तरकीब सुझाई कि छप्पर में छेद कर दो और लड़के को ऊपर उठाकर खंभे से बाहर कर लो :—

जानैं लाल बुझक्कड़, और न जानै कोई।
ठाठ बड़ेरो तोड़ दो, तब निरवरो होई॥

५

एक बार एक कुएँ से एक मुसाफिर पानी निकाल रहा था; उसने पगड़ी में गुलाब का एक फूल खोंस रक्खा था। पानी निकालते समय फूल कुएँ में गिर पड़ा। मुसाफिर पानी पीकर चला गया। उसके बाद लाल बुझक्कड़ के गाँववालों ने कुएँ में फूल पड़ा हुआ देखा, तब समझ न सके कि वह क्या है और दौड़कर लाल बुझक्कड़ को ले आये। लाल बुझक्कड़ ने फौरन बूझ दिया ?

बूझें लाल बुझक्कड़, और न बूझे कोय।
कुंवा पुरानी हो गई, काँच न निकली होय॥

माधौदास की कहावतें

माधौदास कौन थे? और कहाँ के थे? यह अज्ञात है। इनकी कहावतें, जो अभी तक मिली हैं, नीति विषयक हैं। यहाँ कुछ कहावतें दी जाती हैं :-

१

प्रथमै कथा सुनो चित लाय। लोभी गुरू लालची न्याय ॥
यह गहि लीजौ मन में टेक। माधौदास परिहरौ एक ॥

लोभी गुरु और लालची चेला में पट नहीं सकती; दो में से एक को छोड़ देने ही में हित है।

२

मूरिख चेला सेवक चोर। इनते मिलै न दुख की कोर ॥
यह गहि लीजै मन में गोय। माधौदास परिहरौ दोय ॥

मूर्ख चेला और चोर नौकर से जराभर भी सुख नहीं मिल सकता। यह बात मन में छिपाकर रख लो, और माधवदास कहते हैं कि दोनों को छोड़ दो।

३

जुआ जुल्म औ त्रिया पराई। जाय लाज अरु होय हँसाई।
धन धरती वह लीहै छीन। माधौदास परिहरौ तीन ॥

जुआ खेलने, जुल्म करने और पराई स्त्री से प्रेम करने से लज्जा चली जायगी और हँसी होगी; ये तीनों धन और धरती भी छीन लेंगे। अतएव तीनों को छोड़ दो।

४

कुटिल नारि घर कट्टर घोर। कपटी मित्र पुत्र है चोर।
इनते उठि नित बाढ़ै रारि। माधौदास परिहरौ चारि ॥

घर में दुष्टा स्त्री; काटखाने वाला घोड़ा, कपटी मित्र और चोर बेटा, इन चारों से झगड़ा होता रहेगा, इसलिये इनको छोड़ देना चाहिये।

५

दूरि में खेती कुँवा न पास। ओछो मंत्री नीच निवास।
बैल मरकहा गाँव किराँच। माधौदास परिहरौ पाँच ॥

खेती गाँव से दूर हो, कुँवा जिसके पास न हो, मंत्री नीच प्रकृति का हो और बुरे लोगों के बीच में बसना पड़े, मारने वाला बैल और कंजूसी करने वालों का गाँव, इन पाँचों को छोड़ देना चाहिये।

६

नित उठि तिरिया पर घर बसै । पुरिष बिहूनो घर घर हँसै ॥
सास ससुर की करै न कानि । लोग कुटुम की रखै न मानि ॥
वह तो चाहति अपनो हठो । माधौदास परिहरौ छठो ॥

जो स्त्री रोज उठकर दूसरे के घर में जा डेरा डाले, घर-घर में अकेली जाकर हँसती फिरे, सास-ससुर की मर्यादा न रक्खे, कुटुम्बी लोगों का मान न रक्खे और अपने ही हठ पर डटी रहे; माधौदास कहते हैं, इस छठें को छोड़ देना चाहिये ।

७

दुसमन ठाकुर जल अक्कास । झाँझरि नैया बास कुबास ॥
साँझ सेज सोवै परभात । माधौदास परिहरौ सात ॥

शत्रु ठाकुर, आकाश के जल की आशा, छेदवाली नाव, बुरे स्थान पर बसना, साँझ और सबेरे का सोना, माधौदास कहते हैं, इनको छोड़ देना चाहिये ।

८

पर कपड़ा लै करै सिंगार । परधन काढ़ि करै ब्यौहार ॥
बिन दामन जे जावै हाट । माधौदास परिहरौ आठ ॥

दूसरे से कपड़ा उधार लेकर शरीर को सजाना, उधार लेकर ब्याज पर देना और बिना पैसा लिये बाजार जाना, माधौदास कहते हैं, इन्हें छोड़ देना चाहिये ।

९

पैसा देइ न दूजे हाथ । राह चलै ना बैरी साथ ॥
अपने बल पर ठानै रारि । काँटो खुभरो चलै निहारि ॥
बड़ बुजुर्गन लखि के नवौ । माधौदास परिहरौ नवौ ॥

दूसरे के हाथ में अपना धन न देना, बैरी के साथ राह न चलना, अपने बल पर झगड़ा करना, काँटा और ऊँचा-नीचा देख कर चलना, और बड़ों को देख कर नम्रता दिखाना, माधौदास का यह नवाँ उपदेश है ।

१०

चोरी चुगली झूठ अदाया । काम क्रोध अरु ममिता माया ॥
जो तुम चाहौ हरिपुर बसौ । माधौदास परिहरौ दसौ ॥

माधौदास दसवाँ उपदेश देते हैं कि बैकुण्ठ में बसना चाहो तो चोरी, चुगली, झूठ, निर्दयता, काम, क्रोध, और माया-मोह छोड़ दो ।

तुलसीदास

१

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना। जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना॥

जहाँ सुबुद्धि होती है, वहाँ सब प्रकार की संपदा रहती है, और जहाँ कुबुद्धि होती है, वहाँ अंत में विपत्ति आती है।

२

करम प्रधान विश्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फल चाखा॥

संसार में कर्म ही प्रधान है, जो जैसा कर्म करता है, वह वैसा ही फल पाता है।

३

कोउ नृप होइ हमैं का हानी॥

कोई राजा हो, मेरी क्या हानि है?

४

खग जानै खगही कै भाषा।

पक्षी ही पक्षी की बोली पहचानता है।

५

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।

पराये के वश में होने में स्वप्न में भी सुख नहीं होता।

६

पर उपदेस कुसल बहुतेरे।

दूसरों को उपदेश देने में बहुत से लोग निपुण होते हैं।

७

प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं।

मालिकी पाकर किसे घमंड नहीं हो जाता?

८

बरु भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देहिं विधाता॥

नरक में बसना अच्छा; पर दुष्ट का संग ब्रह्मा न दें।

९

बाँझ कि जान प्रसव की पीरा।

बाँझ स्त्री बच्चा पैदा होने की पीड़ा को क्या जाने ?

१०

धरम न दूसर सत्य समाना।

सत्य के बराबर दूसरा धर्म नहीं।

११

विधि कर लिखा को मेटनहारा।

ब्रह्मा का लिखा कौन मिटा सकता है ?

१२

समरथ कहँ नहिं दोष गोसाईं।

समर्थ पुरुष को दोष नहीं लगता।

१३

टेढ़ जानि संका सब काहू।

टेढ़ा जानकर सबको शंका लगती है।

१४

कतहुँ सुधाइहुँ ते बड़ दोसू।

कभी-कभी सीधेपन से भी बड़ी हानि हो जाती है।

१५

हित अनहित पसु पच्छिहु जाना।

पशु-पक्षी भी अपना भला-बुरा समझते हैं।

१६

उदासीन नित रहिय गोसाईं। खल परिहरिअ स्वानकी नाईं॥

हे गोसाईं ! खल से न प्रीति रक्खो, न बैर। उसे कुत्ते के समान मानकर ही छोड़ दो।

१७

जा कहँ प्रभु दारुन दुख देहीं। ताकर मति पहिलेहिं हरि लेहीं॥

भगवान् जिसे कठिन दुःख देना चाहते हैं, उसकी बुद्धि पहले ही हर लेते हैं।

१८

दुइ कि होइँ यक संग भुआलू। हँसब ठठाइ फुलाइब गालू॥

हे राजा! ठठाकर हँसना और गाल फुलाना दोनों काम एक साथ नहीं हो सकते।

१९

परहित सरिस धरम नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई॥

हे भाई! परोपकार के समान दूसरा धर्म नहीं और दूसरों को पीड़ा पहुँचाने के समान दूसरा पाप नहीं।

२०

भइ गति साँप छछूँदरि केरी।

साँप और छछूँदर की-सी दशा हुई। साँप छछूँदर को मुँह में पकड़ता है तो प्रवाद है कि उगल दे, तो अंधा हो जाय, निगल ले; तो कोढ़ी हो जाय।

२१

इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं। जो तर्जनि देखत मरि जाहीं॥

यहाँ कोई कुम्हड़े की बतिया (छोटा फल) नहीं है जो तर्जनी (अँगुली) दिखलाते ही कुम्हला जाय।

२२

जानि न जाइ निसाचर माया।

राक्षस की माया जानी नहीं जा सकती।

२३

अर्ध तजहिं बुध सरबस जाता।

बुद्धिमान लोग कुल जाता देखकर आधा छोड़ देते हैं।

२४

तुलसी यक दिन वे रहे, माँगै मिलै न चून।
दया भई भगवान की, लुचुई दूनो जून॥

तुलसीदास कहते हैं कि एक दिन तो वे थे, जब माँगने पर आटा या चूना भी नहीं मिलता था। भगवान् की कृपा हुई, तो दोनों समय लुचुई (पतली रोटी) मिलने लगी।

२५

फूले फूले फिरत हैं, आज हमारो ब्याव
तुलसी गाय बजाय के, देव काठ में पाँव ॥

खुशी के मारे फूले-फले फिर रहे हैं कि आज हमारा विवाह है; पर यह नहीं जानते कि गा-बजाकर काठ में पैर डाल रहे हैं।

२६

तुलसी ब्याह बियाधि है, सकहु तो जाहु बचाय।
पायन बेड़ी परत है, ढोल बजाय बजाय ॥

तुलसीदास कहते हैं कि विवाह एक रोग है, सको तो बचा जाओ। क्योंकि ढोल बजा-बजाकर पैर में बेड़ी पड़ती है।

२७

तुलसी बुरा न मानिये, जो गँवार कहि जाय।
जैसे घर का नरदवा, भला बुरा बहि जाय ॥

गँवार आदमी कुछ बुरा भी कह जाय, तो बुरा न मानो और ऐसा समझो कि घर का नाबदान है, जिसमें भला-बुरा सभी बह जाता है।

२८

तुलसी बाँह सपूत की, धोखेहूँ छुइ जाय।
आप निवाहैं जनम भरि, लरिकन से कहि जायँ ॥

तुलसीदास कहते हैं कि सपूत की बाँह धोखे से भी छू जाती है तो वह अपने जन्मभर तो संबंध का निर्वाह कर ही देता है, अपने लड़कों को भी कह जाता है।

२९

नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं।
प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥

संसार में ऐसा कोई नहीं पैदा हुआ, जिसे अधिकार पाकर अभिमान न हुआ हो।

३०

दैव दैव आलसी पुकारा।

आलसी मनुष्य ही भाग्य का भरोसा करता है।

कबीर

१

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होयगी, बहुरि करेगा कब॥

जो काम कल करना हो, उसे आज ही कर; और जो आज करना है, उसे अभी कर; क्योंकि पल भर में क्या से क्या हो जायेगा, पीछे कब करेगा?

२

सहज मिलै सो दूध सम, माँगा मिलै सो पानी।
कह कबीर वह रक्त सम, जामें खैंचातानी॥

जो बिना माँगे आपसे आप मिल जाय, वह दूध के समान सबमें अच्छा है; जो माँगने पर मिले, वह पानी की तरह साधारण है, और जो बहुत खींचतान करने पर मिले, वह तो रक्त के समान ही त्याग देने योग्य है।

३

आये थे सो जायँगे, राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बँधे जंजीर॥

जो पैदा हुये हैं, वे सब मरेंगे; चाहे वे राजा हों या गरीब या फकीर। किन्तु उनमें जो पुण्य किये होंगे, वे सिंहासन पर चढ़कर जायेंगे और जो पाप किये होंगे, वे जंजीर से बँधे हुये।

४

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।

प्रेम न साग-भाजी की बाड़ी में पैदा होता है और न बाजार में बिकता है।

५

केला तबहिं न चेतिया, जब ढिग जामी बेर।

हे केला! पहले तुमने ध्यान नहीं दिया, जब तुम्हारे पास बेर का पेड़ जम आया।

६

राह चलंते जो गिरे, ताको नाहीं दोष।
जो कबीर बैठा रहे, वा सिर करड़े कोस॥

राह चलते हुये जो गिर जाय, उसका दोष नहीं माना जायगा; पर जो घर में बैठा रहता है, उसकी मंजिल तो बड़ी कड़ी है।

७

कबिरा खड़ा बजार में, दुओ दीन की खैर।
ना काहू सें दोस्ती, ना काहू से वैर॥

कबीर बाजार के बीच खड़े होकर हिन्दू मुसलमान दोनों की खैर मनाते हैं; न उनकी किसी से मित्रता है, न किसी से बैर।

गिरधर कविराय

१

नयना रोटी कुचकुची, परती माखी बार।
फूहड़ वही सराहिये, टप टप टपकत लार॥
टप टप टपकत लार, झपटि लरिका सौंचावै।
चूतर पोंछै हाथ, दोऊ कर सिर खजुवावै॥
कह गिरधर कविराय फुहड़ के याही धयना।
कजरौटा नहिं होय, लुआठै आँजै नयना॥

फूहड़ स्त्री का वर्णन है—रोटी कच्ची रखती है; दाल में मक्खी और बाल गिरे रहते हैं; टप् टप् लार टपकती रहती है; काम करते-करते बीच ही में दौड़कर लड़के को सौंचाती है, फिर चूतड़ में हाथ पोंछ लेती है; दोनों हाथों से सिर खुजलाती है; गिरिधर कविराय कहते हैं कि फूहड़ का ऐसा ही ध्यान रहता है। कजरौटा तो होता नहीं; जले हुये चैले से ही आँखों को आंज लेती है।

२

साईं बैर न कीजिये, गुरु पंडित कवि यार।
बेटा बनिता पौरिया, यज्ञ करावन हार॥
यज्ञ करावन हार राज-मंत्री जो होई।
विप्र परोसी बैद आपको तपै रसोई॥
कह गिरधर कविराय जुगनतें यह चलि आई।
इन तेरह सों तरह दिये बनि आवै साईं॥

हे स्वामी! गुरु, पंडित, कवि, मित्र, बेटा, स्त्री, द्वारपाल, यज्ञ कराने वाले, राज मंत्री, ब्राह्मण, पड़ोसी, वैद्य और रसोइया, इन तेरह से बैर न करना चाहिये। इनसे झगड़ा बचा जाने ही से काम बनता है। अनुभव की यह बात युगों से चली आ रही है।

३

रहिये लटपट काटि दिन, बरु घामें माँ सोय।
छाँह न वाकी बैठिये, जो तरु पतरो होय॥

जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा दैहै।
जा दिन बहै बयारि, टूटि तब जर से जैहै॥
कह गिरधर कविराय, छाँह मोटे की गहिये।
पत्ता सब झरि जाय, तऊ छाँहैं माँ रहिये॥

धूप में सोकर किसी तरह दिन बिता देना अच्छा, पर पतले पेड़ की छाया में बैठना अच्छा नहीं। किसी दिन जब जोर की आँधी चलेगी, वह जड़ से टूट जायगा। गिरिधर कविराय कहते हैं कि मोटे की छाया में रहना अच्छा; उसके सारे पत्ते भी झड़ जायँ, तो भी तने की छाया तो रहेगी।

४

लाठी में गुन बहुत हैं, सदा राखिये संग।
गहिर नदी नारा जहाँ, तहाँ बचावै अंग॥
तहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता कहँ मारै।
दुसमन दावागीर, गरब तिनहूँ को झारै॥
कह गिरधर कविराय सुनो हो वेद के पाठी।
सब हथियारन छाँड़ि हाथ महँ लीजै लाठी॥

लाठी में बहुत से गुण हैं; उसे सदा साथ रखना चाहिये। जहाँ गहरे नदी-नाले पड़ेंगे, वह शरीर को बचा लेगी। वह लपक कर कुत्ते को मारेगी। कोई मगरूर दुश्मन होगा तो उसका भी गर्व चूर कर देगी। गिरधर कविराय कहते हैं कि हे वेद पढ़ने वाले! सुनो, सब हथियारों को छोड़कर हाथ में लाठी रक्खो।

५

कमरी थोरे दाम की, आवै बहुतै काम।
खासा मलमल बाफता, उनकर राखै मान॥
उनकर राखै मान बूँद जहँ आड़े आवै।
बकुचा बाँधै मोट रात को झारि बिछावै॥
कह गिरधर कविराय मिलत है थोरे दमरी।
निसिदिन राखै साथ बड़ी मरजादा कमरी॥

कमली थोड़े दाम को मिलती है, पर बड़े काम आती है। खासा, मलमल और बाफता आदि सब कपड़ों का मान रखती है। बूँदें पड़ने लगती

हैं तो वह आड़े आती है; उसकी गठरी बाँध सकते हो और झाड़ कर बिछा सकते हो। गिरधर कविराय कहते हैं, थोड़े ही दामों की मिलती भी है। कमरी को रातदिन साथ रखना चाहिये; कमरी बड़ी मर्यादा है।

६

पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम।
दोऊ हाथ उलीचिये, यही सयानो काम॥
यही सयानो काम, राम को सुमिरन कीजै।
पर स्वारथ के काज सीस आगे धरि दीजै॥
कह गिरधर कविराय बड़न की याही बानी।
चलिये चाल सुचाल राखिये अपनो पानी॥

नाव में पानी बढ़ा हो, और घर में धन, तो उन्हें दोनों हाथों से उलीचना चाहिये; बुद्धिमानी का काम यही है। राम को याद कीजिये; परमार्थ के लिये सिर देना पड़े, तो दे दीजिये। गिरधर कविराय कहते हैं कि बड़ों का ऐसा ही स्वभाव होता है। अच्छी चाल चलिये और अपना सम्मान रखिये।

वृन्द

१

तेतो पाँव पसारिये, जेती लाँबी सौर।

उतना ही पैर फैलाओ, जितनी लंबी चादर हो।

२

बीछी मंत्र न जानहीं, साँप पिटारे हाथ।

बिच्छू का विष उतारने का मंत्र नहीं जानते और साँप के पिटारे में हाथ डालते हैं।

३

ईंधन डारे आग में, कैसे आग बुझात।

आग ईंधन डालने से कैसे आग बुझेगी ?

४

रसरी आवत जात तें, सिल पर होत निसान।

रस्सी के आने-जाने से पत्थर पर भी चिन्ह होजाता है।

५

होनहार बिरवान के, होत चीकने पात।

जो पौधा होनहार होता है, उसके पत्ते चीकने होते हैं।

६

आध सेर के पात्र , कैसे सेर समात।

जिस बरतन में आधा सेर समाता है, उसमें पूरा सेर कैसे समा सकता है ?

७

हितहू की कहिये नहिं तिहि, जो नर होय अबोध।
ज्यों नकटे को आरसी, होत दिखाये क्रोध॥

मूर्ख से उसके लाभ की बात भी न कहनी चाहिये। जैसे, नकटे आदमी को दर्पण दिखाने से उसे क्रोध आता है।

फुटकर

१

चंदन परा चमार घर, नित उठि कूटै चाम।
चंदन रोवै सिर धुनै, परा नीच से काम॥

चंदन चमार के घर में पड़कर रोज चमड़ा कूटता है। वह सिर धुनकर रोता है कि हाय! नीच आदमी से काम पड़ा है।

२

चना चिरौंजी हो गये, गेहूँ हो गये दाख।
घर में गहने तीन हैं, पीढ़ा, चरखा, खाट॥

महँगी में चना चिरौंजी के समान और गेहूँ दाख के समान हो गया। अब घर में तीन ही गहने हैं—पीढ़ा, चरखा और खाट।

३

जाना है रहना नहीं, मोहिं अँदेसो और।
जगह बनाई है नहीं, बैठेंगे किस ठौर॥

संसार से जाना तो पड़ेगा ही; रहना नहीं है। पर मुझे दूसरी ही चिंता है; रहने के लिये कोई स्थान तो बनाया ही नहीं, वहाँ जाकर कहाँ बैठेंगे?

४

जब तुम जनमे जगत में, जगत हँसा तुम रोय।
ऐसी करनी कर चलो, तुम बिहँसो जग रोय॥

हे भाई! जब तुम संसार में पैदा हुये तो संसार हँसने लगा और तुम रो रहे थे। अब ऐसा काम करो कि मरते समय तुम हँसते हुये जाओ और संसार रोने लगे।

५

झूठे की क्या दोस्ती, लँगड़े का क्या साथ।
बहरे से क्या बोलना, गूँगे से क्या बात॥

झूठे आदमी से मित्रता, लँगड़े का साथ, बहरे से कहना और गूँगे से बात करना व्यर्थ है।

६

तन का बैरी ताप है, मन का बैरी नेह।
जिस तन में दोनों रमैं, गये जीव औ देह॥

ज्वर शरीर का बैरी है, और स्नेह मन का बैरी है। जिस शरीर में ये दोनों बैरी बसे हों, वह शरीर और जीव दोनों को गया हुआ समझो।

७

तन की तनक सराय में, नेक न पावों चैन।
साँस नगारा कूच का, बाजत है दिन रैन॥

शरीर की छोटी-सी सराय में जराभर भी आराम नहीं मिलता। कूच करने का साँस रूपी नगाड़ा रात-दिन बजता ही रहता है।

८

तीन बुलाये तेरह आये, अजब यहाँ की रीत।
बाहर वाले खा गये, घर के गावैं गीत॥

यहाँ की रीति अनोखी है। तीन को न्योता दिया, तेरह खाने आये। वे तो खा-पीकर चलते बने; घर वाले बैठकर गीत गायें।

९

नीलकंठ कीड़ा भखै, मुखे बिराजै राम।
जात पाँत से क्या पड़ी, दरसन हीं सों काम॥

नीलकंठ (पक्षी) कीड़ा खाता है, और उसके मुँह में राम भी बिराजते हैं। इसमें जात-पाँत से क्या मतलब? दर्शन ही से काम है।

१०

पर नारी पैनी छुरी, तीन जगह से खाय।
द्रव्य लेय जोबन हरे, मरे नरक लै जाइ॥

पर-स्त्री तेज छुरी है; तीन जगहों पर काटती है। धन हर लेती है; जवानी ले लेती है और मरने पर नरक ले जाती है।

११

पारस से चक्की भली, आटा देवे पीस।
फूहड़ से मुर्गी भली, अंडा देवै बीस॥

पारस (पत्थर) से तो चक्की ही अच्छी, आटा तो पीस देती है। फूहड़ स्त्री से मुर्गी अच्छी, जो बीसों अंडे देती है।

१२

ज्यों केला के पात में, पात पात में पात।
त्यों चतुरन की बात में, बात बात में बात॥

जैसे केले के पेड़ में पत्ते-पत्ते में पत्ता निकलता है; वैसे ही चतुर पुरुषों की बात-बात में बात निकलती है।

१३

काछ दृढ़ा कर बरसणा, मन चंगा मुख मिट्ठ।
रण सूरा जग बल्लभा, सो मैं बिरला दिट्ठ॥

संसार में मैंने बिरले ही को काँछ का दृढ़, हाथ से दान की वर्षा करने वाला, मन का नीरोग, मुँह से मधुर बोलनेवाला, युद्ध में वीर और संसार का प्यारा देखा।

१४

सीखे कहाँ नवाब जू, ऐसी देनी देन।
ज्यों ज्यों कर ऊँचो करो, त्यों त्यों नीचे नैन॥

हे नवाब (अब्दुल रहीम खानखाना) जी! देने की यह रीति आपने कहाँ सीखी? जैसे-जैसे आप हाथ ऊँचा करते हैं अर्थात् दान देते हैं, वैसे-वैसे आप के नेत्र (नम्रता) से नीचे होते जाते हैं।

१५

'समन' पराये बाग में, दाख तोरि खर खात।
अपनो कछू न बीगरै, असही सही न जात॥

समन कवि कहते हैं कि दूसरे के बाग में दाख तोड़कर गधा खाता है। अपना तो कुछ बिगड़ता नहीं; पर न सहने योग्य बात सही नहीं जाती।

१६

बंधु बिदेस चले गये, तरुनी तज्यो सनेह।
कृषि नासी पसु मर गये, अब दूधै बरसो मेह॥

भाई तो परदेश चला गया, जवान स्त्री ने प्रेम करना छोड़ दिया, खेती बिगड़ गई, पशु मर गये; अब चाहे बादल दूध ही की वर्षा करे, मेरे किस काम का?

१७

चंपा तो में तीन गुन, रूप रंग औ बास।
औगुन तुम में एक है, भौंर न बैठे पास॥

हे चंपा, तुम में तीन गुन हैं, रूप, रंग और गंध। पर तुम में एक अवगुण यह है कि भौंरा तुम्हारे पास नहीं बैठता।

१८

नमे नमे सब कोई नमे, नमे जो चतुर सुजान।
दगाबाज तीनों नमें, चीता चोर कमान॥

सभी कोई नमते (नम्रता से झुक जाते) हैं; चतुर और ज्ञानी पुरुष भी नमते हैं और चीता, चोर और धनुष ये तीनों दगाबाज भी नमते हैं।

१९

विमल चित्त करि मित्र शत्रु छल बल बस कीजिय।
प्रभु सेवा बस करिय लोभवंतहिं धन दीजिय॥
युवति प्रेम बस करिय साधु आदर सनमानिय।
महाराज गुन कथन बंधु समरस करि जानिय॥
गुरु निमित सीस रस सों रसिक, बिद्याबल बुध मन हरिय।
मूरख विनोद सुकथा वचन, सुभ स्वभाव जग बस करिय॥

मित्र को मन की निर्मलता से, शत्रु को छल-बल से, स्वामी को सेवा से, लोभी को धन देकर, युवती स्त्री को प्रेम से, साधु को आदर-मान से, राजा को दश-वर्णन से, भाइयों को समान व्यवहार से, गुरु को सिर नवाकर, रसिक को रसीली बातों से, बुद्धिमान को बिद्या का बल दिखाकर, मूर्ख को हँसी-मजाक और सुन्दर कहानियाँ सुनाकर और संसार को अपने सुन्दर स्वभाव से वश में करना चाहिये।

२०

चंदन की चुटकी भली, गाड़ी भला न काठ।
चातुर तो एकौ भला, मूरख भला न साठ॥

चन्दन की एक चुटकी ही अच्छी, पर सूखा काठ गाड़ी भर कर अच्छा नहीं। एक ही चतुर साठ मूर्खों से अच्छा।

२१

मोती फाट्यो बेधताँ, मन फाट्यो इक बोल।
मोती फेर मँगाय लो, मन नहिं आवे मोल॥

छेदते समय मोती फट गया, मन एक बोल से फट गया। मोती तो दूसरा खरीद लिया जा सकता है, पर मन तो मोल नहीं मिलेगा।

२२

गजमुख तें इक कन गिरियो, घट्यो न तासु अहार।
ताको चींटी ले चली, पालन को परिवार॥

हाथी के मुँह से अन्न का एक किनका गिर गया, उससे उसके आहार में कमी नहीं आई; उस किनके को चींटी अपना परिवार पालने के लिये उठा ले गई।

२३

साँझ पड़े दिन अथवा, चकई दीन्हा रोय।
चल चकवा वा देस में, जहाँ साँझ नहिं होय॥

साँझ हुई, दिन डूब गया, चकई ने रो दिया और कहा—हे चकवा! उस देश को चलो, जहाँ शाम नहीं होती।

२४

हाय करूँ तो जग हँसे, चुपके लागे घाव।
ऐसे कठिन सनेह को, किस बिध करूँ दुराव॥

हाय करती हूँ तो संसार हँसता है; चुप रहती हूँ, तो जी में पीड़ा होती है। ऐसे कठिन प्रेम को मैं कैसे छिपाऊँ?

२५

विद्या पढ्यो न रिपु दल्यो, रह्यो न नारि समीप।
जोबन तो यों ही गयो, ज्यों सूने घर दीप॥

जिस जवानी में न विद्या पढ़ी, न शत्रु को मारा और न स्त्री को भोगा। वह तो वैसे ही निरर्थक गई, जैसे सूने घर में दीपक।

२६

चलिबो भलो न कोस को, दुहिता भली न एक।
माँगब भलो न बाप सों, जो विधि राखे टेक॥

कोष (खजाना) का खाली होना अच्छा नहीं, दुहिता (शत्रु) एक भी भला नहीं; बाप से (पिंडपानी) माँगना अच्छा नहीं।

२७

जल में बसे कमोदिनी, चंदा बसे अकास।
जो जन जाके मन बसे, सो जन ताके पास॥

कुई पानी में बसती है, चन्द्रमा आकाश में रहता है, तो भी कुई चन्द्रमा को देखकर खुश होती है। इसी तरह जो मनुष्य जिसके जी में बसता है, वह उसी के पास है।

२८

झाँसी गले की फाँसी, दतिया गले का हार।
ललितपूर ना छोड़िये, जब तक मिले उधार॥

झाँसी गले की फाँसी-जैसी है, दतिया गले का हार जैसा; उधार मिलता जाय, तब तक ललितपुर को नहीं छोड़ना चाहिये।

२९

धनवंते काँटा लगा, दौड़े लोग हजार।
निर्धन गिरा पहाड़ से, कोई न सुनी पुकार॥

धनी को काँटा लगा, तो हज़ारों लोग दौड़ पड़े; पर गरीब पहाड़ से गिरा, तो किसी ने पुकार भी नहीं सुनी।

३०

पाँव डगमगे परत हैं, देखि गाँव के रूख।
अब तो सही न जाति है, थरिया पर की भूख॥

गाँव के वृक्षों को देखकर पाँव डगमगा रहे हैं। थाली पर की भूख अब तो सही नहीं जाती।

३१

हंसा रहे सो उड़ि गये, कागा भये दिवान।
जाहु विप्र घर आपने, को काको जजमान॥

सिंह ने कहा,—हँस थे, सो उड़ गये, कौआ दीवान हुआ। हे ब्राह्मण! अपने घर जाओ। कौन किसका यजमान?

३२

जल काठहिं बोरै नहीं, कहौ कहाँ की प्रीति।
अपनो सींचो जानि के, यही बड़न की रीति॥

पानी काठ को नहीं डुबोता, यह प्रीति कहाँ की है? बात यह है कि वह काठ को अपना सींचा हुआ समझता है। बड़ों की रीति यही है।

३३

स्यार आपनी खोह में, परे परे सरि जाय।
सिंह पराये देस में, जहँ मारे तहँ खाय॥

स्यार अपनी खोह में पड़ा-पड़ा सड़ जाता है; पर सिंह दूसरे देश में भी मारता खाता है।

३४

रहिमन बिपता तू भली, जो थोड़े दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ॥

रहीम कहते हैं, हे विपत्ति! तू थोड़े ही दिनों के लिये आवे तो बड़ी अच्छी है। क्योंकि तेरे आने पर संसार में अपने कौन मित्र हैं, कौन शत्रु, यह पहचान हो जाती है।

३५

बड़े भये तो का भये, जैसे तार खजूर।
पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर ॥

ताड़ और खजूर की तरह बढ़े, तो क्या? पक्षी को छाया नहीं मिली; और फल भी इतनी दूर लगा कि आसानी से मिल नहीं सकता।

साहित्यिक कहावतें

साहित्यिक हिन्दी-भाषा और सभ्य समाज की रोज-मर्रा की बोल-चाल में जो कहावतें प्रचलित हैं, उनका जन्म भी गाँव ही में हुआ है। साहित्यकारों और वक्ताओं ने उन्हें ऊपर उठा लिया है और उनकी बनावट को थोड़ा सुसंस्कृत करके उन्हें अपने लेखों और भाषणों को चमकाने का काम सौंप दिया है। निस्सन्देह जो लेखक और वक्ता कहावतों का उपयोग यथा-वसर करने में गफलत नहीं करते, वे जनता में अधिक मान पाते हैं।

यहाँ ऐसी कुछ कहावतें दी जाती है, जो थीं तो देहाती बोलचाल की, पर सौभाग्यवश सभ्य-समाज की पोशाक पहन लेने से और उस से चलने-फिरने की सुविधा पाकर जहाँ तक हिंदी भाषा का प्रसार है, वहाँ तक भ्रमण करने की स्वतन्त्रता पा गई हैं। वे सर्वत्र आश्रयदात्री हिन्दी-भाषा का गौरव बढ़ाती हैं और बोलचाल में रस उत्पन्न करती हैं।

यहाँ कुछ चुनी हुई साहित्यिक कहावतें दी जाती हैं:—

१

अब पछताये होत का, चिड़ियाँ चुग गईं खेत।

अवसर निकल जाने पर पछताना व्यर्थ है।

२

आँख और कान में चार अँगुल का अन्तर।

देखने और सुनने में अंतर होता है। बिना देखे किसी बात पर विश्वास न करना चाहिये।

३

अँधा बाँटे रेवड़ी, अपने कुल को दे।

अंधा अपने ही कुल को पहचानता है।

४

आँसू एक नहीं, कलेजा टूक टूक।

बनावटी शोक प्रकट करना।

५

मैं भी रानी तू भी रानी, कौन भरेगा पानी।

रानी होकर काम कैसे करें? इससे प्यासी रह गईं।

६

अपनी नाक कटा के दूसरे का असगुन करना।

दूसरे को हानि पहुँचाने के लिये अपनी हानि कर लेना।

७

अपनी करनी पार उतरनी।

अपने ही प्रयत्न से सफलता मिलेगी।

८

अनमाँगे मोती मिले, माँगै मिलै न भीख।

बिना माँगे तो मोती मिल जाता है, और माँगने पर भीख भी नहीं मिलती।

९

अस्सी की आमद चौरासी का खर्च।

आमदनी से खर्च अधिक।

१०

आधी छोड़ पूरी को धावै। ऐसा डूबे थाह न पावै॥

जो आधी को छोड़कर पूरी के लिये दौड़ता है, वह ऐसा डूबता है कि ठहरने के लिये उसे थाह ही नहीं मिलती।

११

आप मरे जग परलय।

जो मर गया, उसके लिये संसार ही मरा हुआ है।

१२

आम के आम, गुठलियों में दाम।

कोई हिस्सा बेकार नहीं।

१३

इस हाथ दे उस हाथ ले।

नकद सौदे के बारे में कहा जाता है।

१४

ऊधो का लेना, न माधो का देना।

किसी से सरोकार नहीं।

१५

ऊँची दुकान का फीका पकवान।

बड़े आदमी कहलाकर छोटा काम करने वाले के लिये कहा जाता है।

१६

ऊँट के गले बिल्ली।

बड़ी उम्र के वर के साथ बालिका कन्या के विवाह पर कहा जाता है।

१७

एक नारी। सदा ब्रह्मचारी॥

एक ही स्त्री से संबंध रखनेवाला ब्रह्मचारी ही कहा जाता है।

१८

एक पंथ दो काज।

एक प्रयत्न से दो कार्यों की सिद्धि हो, तब यह कहा जाता है।

१६

एक अनार। सौ बीमार।

पूँजी कम और खर्च ज्यादा।

२०

ओछे की प्रीति। बालू की भीति॥

नीच आदमी की मित्रता बालू की दीवार की तरह ढह जाती है।

२१

अंधेर नगरी अनबूझ राजा। टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

जैसी प्रजा, वैसा राजा।

२२

अंधे के हाथ बटेर।

संयोग की बात है कि अंधे के हाथ में बटेर आ गई।

२३

अल्पाहारी सदा सुखी।

कम खानेवाला हमेशा सुख पाता है।

२४

करे तो डर और न करे तो भी डर।

करे तो गलती होने का डर; न करे तो लापरवाही का डर। आदमी जब परिणाम नहीं समझ पाता, तब ऐसी ही दशा हो जाती है।

२५

आई तो रोजी, नहीं तो रोजा।

मिल गया तो खा लिया, नहीं तो उपवास तो होता ही है।

२६

कागा चले हँस की चाल।

अयोग्य आदमी जब योग्य पुरुषों की नकल करता है, तब कहा जाता है कि कौआ हंस की चाल चल रहा है।

२७

किस बित्ते पर तत्ता पानी।

व्यंग्य है। निर्धन आदमी जब बड़प्पन चाहता है, तब कहा जाता है कि किस हैसियत पर नहाने के लिये गरम पानी चाहिये।

२८

कै हंसा मोती चुगैं, कै लंघन करि मरि जायँ।

बड़े आदमी या तो अपनी आनबान से रहेंगे, या उपवास करके मर जायँगे। जैसे, हँस या तो मोती ही खायगा या उपवास करके मर ही जायगा।

२९

गरीबी में आटा गीला।

गरीबी में एक तो आटा ही कम होता है; इस पर वह गीला होजाय तो रोटी बन नहीं सकती, और गरीब को भूखा ही रह जाना पड़ता है।

३०

आँख से दूर तो दिल से दूर।

मुँह देखे की प्रीति है।

३१

खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

परिश्रम ज्यादा किया गया और परिणाम बहुत कम निकला।

३२

खूँटे के बल बछड़ा नाचे।

मालिक के साहस पर ही नौकर तेजी दिखाता है।

३३

कौन किसी के आवे जावे दाना-पानी लावे।

अन्न-जल मुख्य है।

३४

काल के हाथ कमान। बूढ़ा बचे न ज्वान।

मृत्यु से बुड्ढा और जवान कोई नहीं बचता।

३५

क्या काबुल में गधे नहीं होते?

बुरे अच्छे स्थानों में भी होते हैं।

३६

कुँए की मिट्टी कुँए ही में लगती है।

जहाँ की कमाई वहीं खर्च हो जाती है।

३७

कानी के ब्याह में सौ जोखों।

एक त्रुटि के साथ सैकड़ों खतरे आ जाते हैं।

३८

काँटे से काँटा निकाला जाता है।

विघ्न पैदा करके विघ्न को हटाना।

३९

कहने से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता।

ओछा आदमी बहुत इतराता है।

४०

कुछ दाल में काला है।

कुछ संदेह है।

४१

कौड़ी नहीं पास तो मेला लगे उदास।

रुपये बिना कुछ नहीं हो सकता।

४२

खुशामद से आमद होती है।

चापलूसी से धन मिलता है।

४३

खोटा पैसा खोटा पूत भी समय पर काम आते हैं।

कभी न कभी मौके पर हरएक चीज काम आ जाती है।

४४

गधे को गुलकंद, गँवार को पापड़ ।

अयोग्य को अधिक मान देना ।

४५

गाय न बाछी, नींद आवै आछी।

जो अकेला है, वह किसकी चिंता करे !

४६

गाँव का जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्ध ।

अपने गाँव में मान नहीं मिलता ।

४७

गुरु तो गुड़ही रहे, चेला चीनी होगये ।

गुरु से चेला बढ़ गया ।

४८

गुड़ खाय गुलगुलों से परहेज ।

ढोंग करना ।

४९

गुम्बज की आवाज है ।

जैसा कहेगा, वैसा ही सुनेगा ।

५०

घर को खाँड़ किरकिरी लागे बाहर का गुड़ मीठा ।

लोग अपनी वस्तु की कदर नहीं करते ।

५१

घर की मुरगी साग बराबर ।

अपनी वस्तु की कदर नहीं ।

५२

घर का भेदी लंका ढावे ।

घर की फूट से बड़ी हानि होती है ।

५३

घर बिआह बन पीपर बीनैं ।

घर में तो विवाह की धूमधाम है और घर का मालिक जंगल में पीपल के बीज बटोर रहा है; अर्थात् लापरवाह है ।

५४

घोड़ों को घर कितनी दूर ?

मेहनती आदमी को काम को पूरा करने में क्या देर ?

५५

घोड़ा घास से यारी करे, तो खाय क्या ?

अपनी मेहनत का दाम माँगने में लज्जा न करनी चाहिये।

५६

घुसिया हाकिम रुसिया चाकर।

घूसखोर हाकिम और रूसने की आदतवाला नौकर विश्वास के योग्य नहीं।

५७

घर में भूँजी भाँग नहीं।

अत्यंत दरिद्रता है।

५८

घोड़े का गिरा सँभल सकता है, नजर का गिरा नहीं।

किसी की नजर से गिरना अच्छा नहीं।

५९

घी गिरा खीचड़ी में।

संयोग से अपनी चीज बरबाद नहीं हुई।

६०

चतुर को चौगुना, मूरख को सौ गुना।

किसी काम या धन का परिमाण जो चतुर को चौगुना मालूम पड़ता है, वह मूर्ख को सौगुना।

६१

चमड़ी जाय, पर दमड़ी न जाय।

कंजूस का हाल है।

६२

चना और चुगुल मुँह लगे अच्छे नहीं।

मुँह लगने पर छूटते नहीं और अंत में हानि पहुँचाते हैं।

६३

चमार को सरग में भी बेगार।

जो विरोध नहीं कर सकता, उसको सभी जगह मुसीबत मिलती है।

६४

चाकरी में ना करी क्या ?

नौकर को आज्ञा माननी ही पड़ती है।

६५

चिराग तले अँधेरा।

अपना दोष नहीं दिखलाई पड़ता।

६६

चिकने घोड़े पर पानी नहीं ठहरता।

बात नहीं लगती।

६७

चिकने मुँह को सब चूमते हैं।

सब बड़े आदमियों की हाँ में हाँ मिलाते

६८

चुपड़ी और दो दो।

बढ़ियां माल और बहुत-सा ?

६९

चूहे का जना बिल ही खोदता है।

जाति का स्वभाव नहीं छूटता।

७०

चूनी कहे मुझे घी से खा।

योग्यता से अधिक पाने का दावा करेगा।

चूनी = दली हुई अरहर आदि के किनके और छिलके की बनी रोटी।

७१

चोरी और मुँहजोरी।

बुरा काम करना और आँख दिखाना।

७२

चोली दामन का साथ है।

साथ नहीं छूट सकता।

७३

चोर की दाढ़ी में तिनका।

अपराधी सदा शंकित रहता है।

७४

चोर से कहे तू चोरी कर, साहु से कहे तू घर पर रह।

दोनों से मेल रखना।

७५

चोर चोर मौसेरे भाई।

एक-धंधेवाले एक दूसरे के सहायक होते हैं।

७६

चोर के पैर नहीं होते।

चोर का अपराध खुल जाने पर वह भाग नहीं सकता।

७७

जूआ मीठी हार।

जुआरी को हारने पर ज्यादा जोश आता है।

७८

चौबे गये छब्बे होने, दूबे रह गये।

लाभ लेने गये, हानि उठा लाये।

७९

छछूँदर के सिर में चमेली का तेल।

अयोग्य को अच्छी चीज मिल जाना।

८०

छठी का दूध याद आयेगा।

बड़ी कठिन मेहनत करनी पड़ेगी।

८१

छींकते ही नाक कटी।

बुरे काम का बुरा फल तुरंत मिला।

८२

छोटे मुँह बड़ी बात।

अपनी योग्यता से बढ़कर बात करना।

८३

छोटे मियाँ तो छोटे मियाँ बड़े मियाँ सुभान अल्ला

छोटे से बढ़कर बड़े में ऐब है।

८४

जड़ काटते जायँ, पानी देते जायँ।

हानि भी पहुँचाते रहें और हितैषी भी बने रहें।

८५

जब तक साँस, तब तक आस।

मरने तक आशा बनी रहती है।

८६

जहाँ जाय भूखा, वहाँ पड़े सूखा।

दुःखी को सर्वत्र दुःख मिलता है।

८७

जहँ रूख नहीं बिरिख। वहाँ रेंड ही महापुरुख।

जहाँ योग्य नहीं, वहाँ अयोग्य ही प्रतिष्ठित समझा जाता है।

८८

जमात से करामात।

संघे शक्तिः। सहयोग से कार्य सिद्ध होता है।

८९

जर है तो नर, नहीं तो पूरा खर।

धन ही सब कुछ है।

९०

जने जने की लकड़ी एक जने का बोझ।

थोड़ी थोड़ी सहायता सब लोग दें, तो एक आदमी का काम आसानी से पूरा हो जाता है।

९१

जनम के दुखी, नाम चैनसुख।

गुण के विरुद्ध काम।

९२

जान है तो जहान है।

जीने के साथ संसार है।

९३

जबरदस्त मारे, रोने न दे।

निर्बल पर बलवान् भयंकर अत्याचार करता है।

९४

जितने मुँह उतनी बात ।

अफवाह ऐसी ही उड़ती है ।

९५

जिसकी लाठी उसकी भैंस ।

जो बलवान् होता है, वही जीतता है ।

९६

जिसको पिया चाहे वही सुहागिन ।

जिसे मालिक चाहे, वही सबका मालिक ।

९७

जितना गुड़ डालोगे, उतना ही मीठा होगा ।

जितना ही खर्च किया जायगा, उतना ही लाभ होगा ।

९८

जिसका खाना, उसका गाना ।

जिससे जीविका चलती हो, उसी का पक्ष लेना चाहिये ।

९९

जाके हाथ लोई । ताको सब कोई ॥

जिसके हाथ में अधिकार होता है, सब उसी के वश में होते हैं ।

१००

जैसी नीयत, वैसी बरकत ।

सच्ची भावना ही से वृद्धि होती है ।

१०१

जैसे नागनाथ, वैसे साँपनाथ ।

दोनों समान हैं ।

१०२

जो धन देखै जात । आधा लेवै बाँट ।

सारी संपत्ति जा रही हो तो आधा बचा लेने ही में बुद्धिमानी है ।

१०३

जो गरजता है, सो बरसता नहीं ।

डींग मारनेवाला काम नहीं करता ।

१०४

जोगी जोगी लड़े, खप्परों के सिर फूटे।

नंगों की लड़ाई में उनके शरीर को चोट नहीं पहुँचती।

१०५

जोरू चिकनी, मियाँ मजूर।

झूठा दिखावा करना।

१०६

जो बोले सो घी को जाय।

कहे सो करे।

१०७

जोड़ जोड़ मर जायँगे। माल जमाई खायँगे॥

पुत्रहीन कंजूस पिता का धन उसके दामाद ही पाते हैं।

१०८

ओढ़ लीनी लोई। अब क्या करेगा कोई॥

लज्जा छोड़ दी, तब किसका डर?

१०९

जनम न देखा बोरिया, सपने आई खाट।

दरिद्र को थोड़ा धन मिलने पर भी घमंड हो जाता है।

११०

टट्टी की ओट शिकार।

आड़ से काम निकालना।

१११

टके को बुढ़िया, नौ टका मूँड़ मुँड़ाई।

छोटे-से काम में बड़ा खर्च।

११२

डूबते को तिनके का सहारा।

दुःखी को थोड़ी भी सहायता बहुत है।

११३

डूबा बंस कबीर का, उपजे पूत कमाल।

कपूत से कुल का नाश होता है।

११४

ढाक के सदा तीन पात।

११५

जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना।

जिसके आश्रय में रहना, उसी की हानि करना।

११६

जीभ भी जली और स्वाद भी न पाया।

हानि सही, पर काम न बना।

११७

जूँ के डर से गुदड़ी नहीं फेंकी जाती।

मामूली विघ्न के डर से काम नहीं छोड़ा जाता।

११८

टके का सब खेल है।

धन ही से सारी शान-शौकत है।

११९

ठंडा लोहा गरम लोहे को काट देता है।

शांति प्रकृतिवाला मनुष्य क्रोधी को परास्त कर देता है।

१२०

तख्त पर बैठे या तख्ते पर लेटे।

या तो प्रतिष्ठा के साथ सिंहासन पर बैठे, या तो संत बनकर तख्ते पर लेटे या मर जाय।

१२१

झगड़े की जड़, ज़न, ज़मीन, ज़र।

स्त्री, धरती और धन झगड़े के मूल हैं।

१२२

तलवार का घाव भरता है, बात का नहीं।

कड़वी बात का असर कभी नहीं जाता।

१२३

तिनके की ओट पहाड़।

छोटे काम के पीछे बड़ा जंजाल।

१२४

तबेले की बला बंदर के सिर।

किसी की आफत किसी अन्य असंबद्ध व्यक्ति के सिर।

१२५

तन पर नहीं लत्ता। पान खायँ अलबत्ता॥

झूठी शेखी बघारना या दिखाना।

१२६

ताजी मारे तुर्की काँपे।

किसी एक को दंड दे और दूसरा डरे।

१२७

तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़े न दूजी बार।

बड़े प्रण नहीं छोड़ते।

१२८

तीतर की बोली है।

चाहे जो अर्थ निकालो।

१२९

तीरथ गये मुड़ाये सिद्ध।

किसी काम को पूरा करने का एक प्रमाण चाहिये।

१३०

तीन लोक से मथुरा न्यारी।

सबसे अलग तरीका।

१३१

तेली का तेल जले, मसालची का पेट पिराय।

किसी का खर्च हो, और दूसरे को कष्ट हो।

१३२

तेली का बैल है।

जो रातदिन एक ही प्रकार के काम में लगा रहता है।

१३३

तीन कनौजी तेरह चूल्हे।

बहुत छूत-छात का विचार करना।

कनौजी = कनौजिया ब्राह्मण।

१३४

तुझको पराई क्या पड़ी अपनी निबेड़ तू।

दूसरों के झगड़ों में न पड़ना चाहिये।

१३५

तुरत दान, महाकल्यान।

जो देना है, तत्काल दे दो।

१३६

तुम डार डार हम पात पात।

तुम्हारी चालों को हम खूब समझते हैं।

१३७

तेल देखो तेल की धार देखो।

धीरज रक्खो।

१३८

तेली खसम किया फिर भी रूखा खाया।

किसी प्रलोभन से अपने से नीच समर्थ का आश्रय लिया, फिर भी उसकी शक्ति का लाभ नहीं मिला।

१३९

थका ऊँट सराय ताकता है।

थकावट के बाद हरएक आराम की जगह ढूँढ़ता है।

१४०

थूककर चाटना अच्छा नहीं।

बात कहकर लौटाना ठीक नहीं।

१४१

थूक से सत्तू सानना।

थोड़े खर्चे से बड़ा काम करना।

१४२

थोथा चना बाजे घना।

आडंबर अधिक, सार कम।

१४३

दबी बिल्ली चूहों से कान कटाती है।

मौका पड़ने पर बलवान् भी निर्बल से दब जाते हैं।

१४४

दर्जी की सूई कभी गाढ़े में कभी कीमख्वाब में।

काम वालों को काम से मतलब।

१४५

दम का क्या भरोसा?

शरीर नाशवान् है।

१४६

दमड़ी की घोड़ी नौ टका बिदाई।

छोटी-सी बात के लिये बड़ा खर्च।

१४७

दमड़ी की हाँड़ी गई कुत्ते की जात पहचानी गई।

छोटी-सी बात से असली भेद का पता चल गया।

१४८

दलाल का दिवाला क्या? मसजिद में ताला क्या?

धनवाले को ही हानि उठानी पड़ती है।

१४९

दादा ले और पोता बरते।

बहुत मजबूत है।

१५०

दाता दे और भंडारी का पेट फूटे।

जिसका धन है, वह तो खुशी से देता है, पर नौकर का जी दुखता है।

१५१

दान, वित्त समान।

सामर्थ्य के अनुसार ही दान देना चाहिये।

१५२

दाई से पेट नहीं छिपता।

जानकार से भेद छिपा नहीं रहता।

१५३

दाम सँवारे काम।

पैसे से सब काम बनता है।

१५४

दालभात में मूसरचंद ।

दो मनुष्यों के बीच में तीसरा व्यर्थ पड़ता है ।

१५५

दिन ईद रात सुबरात ।

सदा आनन्द है ।

१५६

दिया तले अँधेरा ।

दूसरों की भूल पकड़ना और अपनी न देखना ।

१५७

दुधार गाय की लात भली ।

कुछ कष्ट पाकर स्वार्थ सिद्ध होता हो, तो अच्छा ही है ।

१५८

दीवार के भी कान होते हैं ।

गुप्त मंत्रणा एकांत में करनी चाहिये ।

१५९

दूर के ढोल सुहावन ।

दूर से वस्तु सुन्दर दिखाई पड़ती है ।

१६०

देस चोरी परदेस भीख ।

गरीब देश में रहता है तो चोरी करता है, परदेश में जाता है तो भीख माँगता है ।

१६१

दोनों दीन से गये पाँड़े । न हलुवा मिला न माँड़े ॥

कहीं के नहीं रहे ।

१६२

दोनों हाथ लड्डू हैं ।

सब ओर से लाभ ही लाभ है ।

१६३

देखादेखी साधै जोग । छीजै काया बाढ़ै रोग ॥

व्यर्थ नकल करने से हानि ही होती है ।

१६४

दुविधा में दोऊ गये, माया मिली न राम।

संदेह में पड़े रहने से कोई काम सिद्ध नहीं होता।

१६५

दूल्हा को पत्तल नहीं, बजनिये को थाल।

प्रमुख व्यक्तियों का तो सत्कार नहीं, उसके साथियों की आवभगत।

१६६

दो मुल्लों में मुर्गी हलाल।

दो के शौक के लिये तीसरे की जान गई।

१६७

धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।

कहीं ठौर ठिकाना नहीं।

१६८

धोबी के घर घुसे चोर। वह क्या रोये रोये और॥

दूसरे की वस्तु के नष्ट हो जाने पर किसे शोक होता है ?

१६९

चोरे बकुचा लिये, बेगारी छुट्टी पाये।

बिना मेहनताने का काम बिगड़ जाय तो काम करने वालों को क्या दुःख ?

१७०

न रहे बाँस न बाजे बाँसुरी।

निर्मूल कर देना।

१७१

नदी नाव संयोग।

संयोग से मिलना हुआ।

१७२

नंगा क्या नहाय, क्या निचोड़े ?

गरीब बिलकुल लाचार होता है।

१७३

न इधर के रहे न उधर के।

दोनों ओर से गये।

१७४

नक्कारखाने में तूती की आवाज़।

बड़ों में छोटों की कौन सुनता है?

१७५

नदी में रहकर मगर से बैर।

बलवान् के गाँव में बसकर उससे बैर नहीं करना चाहिये।

१७६

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेंगी।

असंभव काम को संभव बताना।

१७७

नाई बाल कितने? जजमान, आगे आ जायँगे।

जो परिणाम आगे आने वाला है, उसका पूछना ही क्या?

१७८

नया नौ दिन, पुराना सौ दिन।

नई चीज भी पुरानी हो जाती है, इससे पुरानी चीज से घृणा न करनी चाहिये।

१७९

नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

अपनी अज्ञानता का दोष दूसरे पर मढ़ना।

१८०

नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा।

मूर्ख मित्र बड़ा खतरनाक होता है।

१८१

नाम बड़ा, दर्शन थोड़ा।

कोरा नाम ही नाम है।

१८२

नाई की बरात में जने जने ठाकुर।

जहाँ कोई मुखिया नहीं, वहाँ सभी मुखिया हो जाते हैं।

१८३

दूध का जला छाछ को फूँक फूँककर पीता है।

धोखा खाकर आदमी चौकन्ना हो जाता है।

१८४

नानी के आगे ननिहाल का हाल।

अपने को किसी विशेषज्ञ से बढ़कर बताना।

१८५

नानी क्वारी मर गई, नवासे के नौ नौ ब्याह।

व्यर्थ की शेखी बघारना।

१८६

नौ नकद न तेरह उधार।

उधार से नकद चाहे कम ही मिले, अच्छा है।

१८७

नौ दिन चले अढ़ाई कोस।

ज्यादा मेहनत, थोड़ा फल।

१८८

नीम हकीम खतरे जान, नीम मुल्ला खतरे ईमान।

नातजरबेकार से काम बिगड़ने का डर रहता है।

१८९

नौ सौ चूहे खायके बिलाई चली हज को।

सारी उम्र पाप करके अंत में भजन करने बैठना।

१९०

पढ़े न लिखे, नाम विद्यासागर।

गुण के विपरीत नाम।

१९१

पराया घर, थूकने का भी डर।

दूसरे के अधिकार में रहना कष्टप्रद है।

१९२

पानी का हगा ऊपर आ जाता है।

बुराई छिपती नहीं।

१९३

पाँचो घी में हैं।

सब तरह से लाभ ही लाभ है।

१६४

पौ बारह हैं।

खूब लाभ है।

१६५

नीचे की साँस नीचे, ऊपर की साँस ऊपर।

दंग रह गये।

१६६

पहिले लिख और पीछे दे। भूल पड़े कागज़ से ले॥

बनिये का यह मुख्य नियम है।

१६७

पानी पीकर जात पूछना।

काम करने के पहले ही गुण और दोष समझ लेना चाहिये।

१६८

पाँसा पड़े सो दाँव। राजा करे सो न्याव॥

होनहार अपने हाथ में नहीं।

१६९

पाँच पंच तहाँ परमेश्वर।

पंचों की बात माननी चाहिये।

२००

पंच कहे बिल्ली तो बिल्ली'

पंचों की हाँ में हाँ मिलाना चाहिये।

२०१

पाँच पंच मिलि कीजै काजा। हारे जीतै कछु नहिं लाजा॥

पंचों से मिलकर चलना चाहिये।

२०२

पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं।

छोटे बड़े सब एक साथ निभ सकते हैं।

२०३

पाँचों सवारों में नाम लिखाना।

औरों के साथ अपने को भी बड़ा समझना।

२०४

पीर बवर्ची भिश्ती खर।

ऐसा आदमी, जो सब काम कर सकता हो।

२०५

बड़े बोल का सिर नीचा।

घमंडी को लज्जित होना पड़ता है।

२०६

बकरे की माँ कबतक खैर मनायेगी।

किसी न किसी दिन आपत्ति में फँसना ही है।

२०७

बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

मूर्ख गुण को नहीं पहचान सकता।

२०८

बगल में तोशा। किसका भरोसा॥

खाने-पीने की कमी न हो, तो किसको परवाह ?

२०९

बद अच्छा बदनाम बुरा।

बदनाम होना बहुत ही बुरा है।

२१०

बाहर वाले खा गये, घर के गावें गीत।

जिन्होंने काम किया, वे ताकते ही रह गये।

२११

बाँबी में हाथ तू डाल, मंत्र मैं पढ़ूँ।

जोखिम का काम तुम करो, देखभाल मैं रक्खूँगा।

बाँबी = साँप का बिल।

२१२

बाप न मारी पिद्दी बेटा तीरंदाज।

व्यर्थ की शेखी बघारता है।

२१३

बावन तोले पाव रत्ती।

बिलकुल ठीक।

२१४

बारह बरस दिल्ली रहे, क्या भाड़ ही झोंके।

अच्छे स्थान में रह कर भी कुछ नहीं सीखा।

२१५

बारह गाँव का चौधरी, असी गाँव का राव।
अपने काम न आवै, अपनी ऐसी तैसी में जाव॥

अपने गतलब से मतलब।

२१६

बाज़ार किसका? जो लेकर दे, उसका।

जिसकी साख हो, वही बाज़ार में उधार पा सकता है।

२१७

बावरे गाँव ऊँट आया।

मूर्खों को साधारण-सी बात पर भी आश्चर्य होता है।

२१८

बाल की खाल निकालना।

व्यर्थ की नुक्ताचीनी करना।

२१९

बिल्ली के भागों छीका टूटा।

संयोग से काम हो गया।

२२०

बिल्ली को ख्वाब में भी छींछड़े नज़र आते हैं।

बुरे को सर्वत्र बुराई ही सूझती है।

२२१

बासो बचे न कुत्ता खाय।

काम पूरा करके निश्चिंत होना।

२२२

बैठे से बेगार भली।

मुफ्त में भी काम करना पड़े, तो करना अच्छा है; बेकार रहना नहीं।

२२३

बोलती बंद हो गई।

जवाब न दे सका।

२२४

भड़भूँजे की लड़की केसर का तिलक।

बे-मेल की सजावट।

२२५

भीख के टुकड़े और बाजार में डकार।

व्यर्थ घमंड करना।

२२६

भूख में किवाड़ ही पापड़।

भूख लगने पर खाद्य-अखाद्य का विचार नहीं रहता।

२२७

भूख में गूलर ही पकवान।

भूख लगने पर स्वाद नहीं देखा जाता।

२२८

भूखा बंगाली भात भात।

अपने मतलब में मस्त।

२२९

भागते भूत की लँगोटी ही सही।

जहाँ से कुछ मिलने की आशा नहीं, वहाँ से जो कुछ मिल जाय, वही बहुत है।

२३०

भैंस के आगे बीन बाजे, भैंस खड़ी पगुराय।

अज्ञानी को उपदेश देना व्यर्थ है।

२३१

भेड़िया धसान।

बिना सोचे-विचारे किसी के पीछे चलना।

२३२

मरता क्या न करता।

जिसे मरने का डर नहीं, वह जो चाहे कर सकता है।

२३३

मन के लड्डुओं से भूख नहीं जाती।

बड़ी कल्पनाओं से काम नहीं होता।

२३४

मन चंगा तो कठौती में गंगा।

विश्वास से सब कुछ हो सकता है।

२३५

मरज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की।

सुधार के लिये जितना ही प्रयत्न किया, उतना ही काम बिगड़ता गया।

२३६

मन के हारे हार है मन के जीते जीत।

सारा खेल मन का है।

२३७

मन मन भावै, मूँड़ हिलावै।

झूठ-मूठ नाहीं करता है।

२३८

मार मार तो किये जा, नामर्दी तो ईश्वर ने दी ही है।

शक्ति नहीं है, तो भी बात तो करता ।

२३९

मान का बीड़ा हीरा के समान।

आदर थोड़ा भी बहुत है।

२४०

मार से भूत भागता है।

मार से सब डरते हैं।

२४१

मान न मान, मैं तेरा मेहमान।

जबरदस्ती आ बैठना।

२४२

मारा घुटना फूटी आँख।

होना कुछ था, हो गया कुछ।

२४३

मानों तो देव, नहीं तो पत्थर।

विश्वास ही सब कुछ है।

२४४

मीठा और भर कठौता।

अच्छा और अधिक से अधिक।

२४५

मीठा मीठा गप, कड़ुवा कड़ुवा थू।

सुख तो मिल कर भोगना और दुःख में भाग जाना।

२४६

मुल्ला की दौड़ मसजिद तक।

अपनी शक्ति भर हाथ पैर मारा।

२४७

मूड़ा जोगी पिसो दवा का क्या पता ?

ये पहचाने नहीं जा सकते।

२४८

मेंढकी को जुकाम हुआ है।

छोटे आदमी का नखरा करना।

२४९

मौसी का घर नहीं।

सोच-समझकर काम करो।

२५०

महाजनो येन गतः स पंथा।

महापुरुषों के चरित्र का अनुकरण करना चाहिये।

२५१

मारते के अगाड़ी और भागते के पिछाड़ी।

डरपोक का ऐसा ही हाल होता है।

२५२

माल मुफ्त, दिल बेरहम।

पराया धन बड़ी लापरवाही से खर्च किया जाता है।

२५३

मियाँ की जूती मियाँ के सिर।

खर्च का सारा भार अपने ही को उठाना पड़ा।

२५४

मियाँ बीबी राजी, तो क्या करेगा काजी ।

दोनों मिल गये, तो तीसरा कैसे दखल देगा ?

२५५

मेरी ही बिल्ली मुझी से म्याँव ?

मालिक ही को आँख दिखाना ।

२५६

मोम की नाक जिधर चाहो घुमा लो ।

सीधे-सादे आदमी हैं ।

२५७

मौनं सम्मति-लक्षणम् ।

चुप रहना सम्मति का लक्षण है ।

२५८

यथा राजा तथा प्रजा ।

जैसा राजा, वैसी ही प्रजा ।

२५९

रस्सी का साँप बन गया ।

छोटी-सी बात बहुत बढ़ गई ।

२६०

रख पत, रखा पत ।

दूसरों की इज्जत करने ही से अपनी इज्जत बढ़ेगी ।

२६१

रस्सी तो जल गई, पर ऐंठन न गई ।

बुरी गति हो गई, तो भी अकड़ न गई ।

२६२

राजा जोगी काके मीत ।

दोनों पर विश्वास नहीं करना चाहिये ।

२६३

राम राम जपना, पराया माल अपना ।

मक्कारी से काम लेना ।

२६४

रोज कुँवा खोदना, रोज पानी पीना।

नित्य कमाना नित्य खाना।

२६५

रंग में भंग।

सुख में दुःख।

२६६

लड़का बगल में, ढँढोरा शहर में।

होश-हवास दुरुस्त नहीं।

२६७

लूटके मूसर भी भले।

मुफ्त का सभी माल अच्छा।

२६८

शहद की छुरी।

मीठी बातें कहकर हानि पहुँचाना।

२६९

शाम के मरे को कबतक रोवें।

अभी से कैसे पूरा पड़ेगा?

२७०

शिकार के वक्त कुतिया हगासी।

काम के वक्त जी चुराना।

२७१

वहम की दवा लुकमान के पास भी नहीं।

शक्की आदमी किसी की सलाह नहीं मानता।

२७२

शैतान की आँत।

किस्सा बहुत लंबा है।

२७३

सैंया भये कोतवाल अब डर काहे का।

बड़ा ओहदा पानेवाले आश्रित निर्भय हो जाते हैं।

२७४

सकल तीर्थ कर आई तुमड़िया तौ भी न गई तिताई।

जो दोष जन्म ही से है, वह किसी उपाय से दूर नहीं हो सकता।

२७५

साँच को आँच नहीं।

सत्यवादी को क्या डर है ?

२७६

साँभर जाय, अलोना खाय।

दुर्भाग्य की बात है।

२७७

साँप मरे, पर लाठी न टूटे।

काम भी बन जाय और हानि भी न हो।

२७८

सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े।

काम के शुरू ही में विघ्न पड़ गया।

२७९

सीधी उँगली से घी नहीं निकलता।

बिलकुल सीधेपन से काम नहीं चलता।

२८०

सूप बोले तो बोले, चलनी भी बोले, जिसमें बहत्तर छेद।

अपराधी दूसरों को अपराध से बचने का उपदेश क्यों दे ?

२८१

साँप निकल गया, लकीर पीटने से क्या ?

अवसर चूकने पर पछताने से क्या ?

२८२

सावन के अँधे को हरा ही हरा सूझता है।

२८३

साझे की हँड़िया चौराहे पर फूटती है।

साझे के काम में झगड़ा हुये बिना नहीं रहता।

२८४

सूरज पर थूकना।

सच्चे पर मिथ्या दोषारोपण करना।

२८५

सूने घर चोरों का राज।

पीठ पीछे चाहे जो कुछ करो।

२८६

हारे भी हार और जीते भी हार।

झगड़ा करना नहीं चाहते।

२८७

हाथ कंगन को आरसी क्या ?

जो चीज सामने है, उसके लिये प्रमाण की क्या जरूरत ?

२८८

हाथी के दाँत दिखाने के और, और खाने के और होते हैं।

कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं।

२८९

होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

होनहार के लक्षण पहले ही से दिखाई पड़ते हैं।

२९०

अपने आप मियाँ मिट्ठू बनना।

अपनी बड़ाई आप करना।

२९१

अपना-सा मुँह लेकर लौट जाना।

खिसियाना।

२९२

सुनना सब की, करना मन की।

वही करना, जो अपने को ठीक जान पड़े।

२९३

हथेली पर सरसों नहीं जमती।

कोरी बातों से काम नहीं बनता।

२९४

हाकिम की अगाड़ी घोड़े की पिछाड़ी मत खड़े हो।

स्थान चुनने में सावधान रहो।

२६५

हर फन मौला।

सब कामों में होशियार।

२६६

हथेली पर जान लिये फिरते हैं।

मरने की परवाह नहीं।

२६७

हाथी निकल गया, दुम रह गई।

काम का अधिकांश भाग हो गया, थोड़ा-सा बाकी है।

२६८

हिसाब जौ जौ का। दान सौ सौ का॥

जमा एक-एक पाई करो, और दान मनमाना दो।

२६९

हौज भरे, तो फौव्वारे छूटें।

आमदनी हो, तो खर्च किया जाय।

३००

लोमड़ी को अंगूर खट्टे।

अपनी कमजोरी छिपाने के लिए न मिलने वाली वस्तु की निंदा करना।

३०१

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है।

देखा-देखी शौक होता है।

३०२

गधा गिरा पहाड़ से, मुर्गी के टूटे कान।

असंभव बात।

३०३

कफन सिर से बाँधे फिरता है।

मरने से नहीं डरता।

३०४

कुछ कमान झुके कुछ गोशा।

दोनों कुछ-कुछ स्वार्थ छोड़ें, तब काम हो।

३०५

काजी के घर के चूहे भी सयाने।

सभी चालाक हैं।

३०६

जादू वह जो सिर पर चढ़के बोले।

सच्ची बात को कोई दबा नहीं सकता।

३०७

गिरगिट के-से रंग बदलना।

ठिकाने की एक बात भी न कहना।

३०८

घी के चिराग जलाना।

बड़ी खुशी मनाना।

३०९

चुल्लू भर पानी में डूब मरो।

बड़े शर्म की बात है।

३१०

घर बैठे गंगा आई।

बिना मेहनत के काम हो गया।

३११

जीती मक्खी कौन निगले?

जान-बूझकर झूठ कौन बोले?

३१२

जहाँ न पहुँचे रवि, तहाँ पहुंचे कवि।

कवि की बुद्धि बड़ी तीव्र होती है।

३१३

जंगल में मोर नाचा, किसने देखा?

बिना अपने देखे कोई क्या समझे?

३१४

जिस डाली पर बैठे, उसी को काटे।

जिसके आश्रित रहे, उसी को हानि पहुँचाये?

३१५

जब लगी भूख तो तंदूर की सूझी। जब भर गया पेट तो दूर की सूझी।।

पेट बड़े बड़े खेल दिखाता है।

३१६

झरबेरी के जंगल में बिल्ली शेर।

अपनी जगह पर सब बड़े हैं।

३१७

झोंपड़ी में रहें, महलों का सपना देखें।

अनहोनी बातें सोचना।

३१८

टका-सा जवाब दे दिया।

साफ़-साफ कह दिया।

३१९

टके की मुर्गी, नौ टके महसूल।

आमद से ज्यादा खर्च।

३२०

ऊँट के मुँह में जीरा।

जो स्वयं ही मालदार है, उसे कितना भी दान दिया जाय, थोड़ा ही है।

३२१

बैल न कूदा कूदी गौन।

अप ने करने का काम दूसरे को सौंपना।

३२२

नामी चोर मारा जाय। नामी बनिया कमाय खाय।।

बदनामी बुरी चीज़ है। नेकनामी से धन बढ़ता है।

३२३

बाप भला न भैया। सबसे भला रुपैया।।

रुपया ही सब कुछ है।

३२४

चढ़ी जवानी माझा ढीला।

युवावस्था में सुस्ती किस काम की?

३२५

माया तेरे तीन नाम। परसू परसोतम परसराम ॥

जैसे-जैसे धन बढ़ता गया, नाम को प्रतिष्ठा भी बढ़ती गई।
माया = लक्ष्मी।

३२६

राँड़ साँड़ सीढ़ी सन्यासी। इनसे बचै तो सेवै कासी।

काशी में इन चारों की भरमार है।

३२७

राँड़ का साँड़।

विधवा का लड़का उद्दंड होता है।

३२८

रुपया परखे बार बार। आदमी परखे एक बार ॥

आदमी की परीक्षा एक ही बार में हो जाती है।

३२९

लंबा टीका मधुरी बानी। दगाबाज की यही निसानी ॥

दगाबाज ठग का-सा भेस बनाये रखता है।

३३०

लातों के देव बातों से नहीं मानते।

दुष्ट आदमी बातों से सीधा नहीं होता।

३३१

लेना एक न देना दो।

बिलकुल बेकाम।

३३२

लकीर के फकीर हैं।

अंध-विश्वासी हैं।

३३३

दाता से सूम भला जो तुरतै देय जवाब।

जो देने में टालमटोल करके हैरान करे, उससे तो साफ इन्कार कर देनेवाला अच्छा।

३३४

सदा दिवाली संत घर, जो गुड़ गोहूँ होय।

खाने-पीने की कमी न हो, तो मौज ही मौज है।

३३५

सब के दाता राम।

ईश्वर ही का भरोसा है।

३३६

ससुरार सुख की सार। जो रहे दिन दो चार॥

ससुराल में दो ही चार दिनों तक खातिर होती है।

३३७

सस्ता रोवै बार बार। महँगा रोवै एक बार॥

सस्ती वस्तु टिकाऊ नहीं होती और बार बार खरीदनी पड़ती है।

३३८

सारी रात मिमियानी। औ एकै बच्चा बियानी॥

शोर-गुल तो बहुत किया, पर काम किया थोड़ा-सा।

३३९

सब गुन भरो बैतरा सोंठि।

भलाई बुराई दोनों से पूर्ण है।

३४०

सब गुड़ लीट होइगा।

सारा काम बिगड़ गया।

३४१

सत्तू बाँधके पीछे पड़ना।

किसी तरह पिंड नहीं छोड़ना।

३४२

सूरदास की कारी कामरि चढ़ै न दूजो रंग।

जो प्रभाव पड़ चुका है, वह बदल नहीं सकता।

३४३

शौकीन बुढ़िया, चटाई क लहँगा।

पास में पैसा न हो, तो बाहरी तड़क-भड़क दिखाने से हँसी होती है।

३४४

हरी खेती गाभिन गाय। तब जानो जब मुँह तर जाय॥

आगे का क्या भरोसा?

३४५

हर्रा लगै न फिटकिरी, रंग चोखा आवै।

बिना खर्च किये काम बन जाय।

३४६

हाथी के पैर में सब का पैर।

बड़ों के पीछे छोटों का भी निर्वाह होता है।

३४७

सूधे का मुँह कुत्ता चाटे।

बहुत सीधापन अच्छा नहीं।

३४८

सोने में सुगन्ध।

उत्तम वस्तु में एक गुण और आ जाना।

३४९

सौ सुनार की, एक लोहार की।

निर्बल कितना ही उछल-कूद करे, सबल के एक ही धक्के से गिर जायगा।

३५०

हजारों टाँकी सहकर महादेव बनते हैं।

कष्ट उठाये बिना मनुष्य मान नहीं पाता।

३५१

आसा मरे, निरासा जिये।

आशा में पड़ा हुआ आदमी चिंतित रहता है; पर जिसे किसी की आशा नहीं, वह बेफिकर रहता है।

३५२

आमों की कमाई, नीबुओं में गमाई।

धन इधर आया, उधर गया।

३५३

आँख का अंधा गाँठ का पूरा।

मूर्ख धनवान।

३५४

आसमान से गिरा खजूर में अँटका।

हाथ में आते-आते विघ्न पड़ गया।

३५५

आसमान से बातें करता है।

बड़ा घमंडी है।

३५६

उतावला सो बावला।

जल्दबाज़ी करना पागलपन है।

३५७

ऊँट बहे, गदहा थाह ले।

बड़ों की हालत देखकर छोटों को दुस्साहस नहीं करना चाहिये।

३५८

टाट का लँगोटा, नवाब से यारी।

पास में टका नहीं, बातें बड़ी करते हैं।

३५९

तिल गुड़ भोजन तुरुक मिताई। पहिल मीठ पीछे करुवाई।

अनुभव की बात है।

३६०

दो घर का पाहुन भूखों मरे।

काम किसी एक के मत्थे होना चाहिये।

३६१

नौ की लकड़ी नब्बे खर्च।

ज़रा-सी बात के लिये बहुत बड़ा टीम-टाम।

३६२

नीम न मीठो होय, सिंचो गुड़ घी से।

स्वभाव नहीं बदलता।

३६३

पराये धन पर लछिमी नरायन।

दूसरे के धन पर मनमाना दान-पुण्य।

३६४

परधन जोगवैं मूरखचंद।

धरोहर रखना बुद्धिमानी नहीं।

३६५

पढ़ै फ़ारसी बेचै तेल। यह देखो कर्त्ता का खेल॥

भाग्य पर किसी का भरोसा नहीं।

३६६

पराई निंदा गुड़ से मीठी।

दूसरे की हँसी उड़ाने में बड़ा मजा आता है।

३६७

बैद पुराना, जोतिषी नया।

अच्छे होते हैं।

३६८

पैसा करे काम। जोरू करे सलाम॥

पैसे की बड़ी महिमा है।

३६९

फूँक फूँक कर पैर रखना।

सावधानी से चलना।

६७०

फूला न समाया।

बहुत खुश हुआ।

३७१

बाप मरा घर बेटा हुआ। इसका टोटा उसमें गया॥

जमा-खर्च बराबर हो गया।

३७२

बीछी का मंतर न जाने। साँप के बिल में अँगुरी डारे॥

योग्यता से बढ़कर काम करना।

३७३

मरी बछिया बाम्हन के नाम।

निकम्मी चीज का दान किया।

३७४

मच्छर मारै, मोंछ मुरेरै।

जरा-सी सफलता पर बड़ा अभिमान करना।

३७५

मारे सिपाही, नाम सरदार का।

काम कोई करे, नाम किसी का हो।

३७६

मिजाज है कि तमाशा। घड़ी में तोला घड़ी में माशा॥

क्षणिक बुद्धि है।

३७७

मियाँ के मियाँ गये, बुरे बुरे सपने आये।

दुःख पर दुःख पड़ा।

३७८

लोभी गुरू लालची चेला। वह माँगे भेली वह दे ढेला॥

दोनों एक-से हैं।

३७९

साँची बात सदुल्ला कहैं। सबके चित से उतरे रहैं॥

सच बोलनेवाले से कोई प्रसन्न नहीं रहता।

३८०

हने को हनिये। पाप दोष न गनिये॥

मारनेवाले को बिना मारे न छोड़ना चाहिये।

३८१

अबकी बार। बेड़ा पार॥

जरा और हिम्मत करो।

३८२

हीरे की परख जौहरी जाने।

गुणी ही गुण को कदर करता है।

३८३

आधे गाँव दिवाली। आधे गाँव में फाग॥

कहीं कुछ, कहीं कुछ।

३८४

अधेला न दे अधेली दे।

मूर्ख पहले खर्च से भागता है, पीछे ज्यादा खर्च करता है।

अधेला = पैसे का आधा। अधेली = रुपये का आधा, अठन्नी।

३८५

आदमी आदमी अंतर। कोई हीरा कोई कंकर।

गुणों ही से आदमी की पहचान होती है।

३८६

उधार देना। लड़ाई लेना॥

उधार देने में हानि ही है।

३८७

उधार खाये बैठे हैं।

बिल्कुल तैयार हैं।

३८८

एकही लाठी से सबको हाँकना

भले-बुरे सब के साथ एक-सा व्यवहार करना।

३८९

करनी न करतूत। चलियो मेरे पूत॥

बिना मतलब हल्ला मचाना।

३९०

कल का लीपा देउ बहाइ। आज का लीपा देखो आइ॥

गई-गुजरी बात को भूल जाओ।

३९१

खायँ बकरी की तरह। सूखें लकड़ी की तरह॥

खाते खूब हैं, पर शरीर में लगता नहीं।

३९२

ओलती का पानी मँगरे नहीं चढ़ता।

असंभव बात।

३९३

गगरी दाना। सूद उताना॥

ओछा आदमी थोड़े ही धन से इतराने लगता है।

३९४

सूत न कपास, जुलाहे से गुत्थम-गुत्था।

३९५

जाका कोड़ा। ताका घोड़ा॥

बलवान् ही मालिक होता है।

३९६

जाके घर में माई। ताकी राम बनाई॥

मां जीती तो कोई खटका नहीं।

३९७

ऊँचे चढ़ के देखा। घर घर एकै लेखा।

सब की हालत एक-सी है।

३९८

जब आया देही का अंत। जैसे गदहा वैसे संत॥

मौत के आगे सब बराबर।

३९९

चार दिना की चाँदनी, फिर अँधियारा पाख।

फजूल खर्ची का नतीजा गरीबी है।

४००

आखर की गति का खर जानै?

पढ़ने-लिखने का हाल मूर्ख क्या समझे?

४०१

आप सों न बोलै ताके बाप सों न बोलिये।

स्वात्माभिमान बहुत आवश्यक है।

४०२

ऊँट सींग माँगन गयो, आयो कान गँवाय।

एक चीज और माँगने गये, तो जो मिला था, उसमें से भी एक कम कर दी गई।

४०३

ताली एक हाथ से नहीं बजती।

प्रयत्न दोनों ओर से होना चाहिये।

४०४

एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकती।

एकही बात हो सकती है, या तो प्रेम करो, या मान रक्खो।

४०५

न ऊधो का लेना, न माधो का देना।

बेफिकरी है।

४०६

ऊँट के मुँह में जीरा।

सेर भर खाने वाले को छटाँक भर दाना देना।

४०७

औघट चले, चौपट गिरे।

कुमार्ग पर चलनेवाले को दुःख मिलेगा।

४०८

अँधरे के घर में बुढ़वा नाचे।

एक तो बुड्ढा, दूसरे अंधे आदमी का घर, क्या वह नाचेगा? और कौन देखेगा?

४०९

अंधे की लाठी आँख।

लाठी ही अंधे की आँख है।

४१०

अंधे के आगे रोवै। आपन दीदा खोवै॥

मूर्ख के आगे अपना दुःख रोना अपने रहे-सहे धीरज को भी खो देना है।

४११

अंधों में काना ही राजा।

अनपढ़ों में जो हस्ताक्षर भर कर लेता है, वही बड़ा है।

४१२

आँखें भई चार। तो जी में आया प्यार॥

सामने की बात कुछ और ही है।

४१३

आँखें भई ओट। तो जी में आया खोट॥

आँख-पीछे बहुत कम लोग सच्चे ठहरते हैं।

४१४

एक तो बुढ़िया नाचनी, दूजे घर भा नाति॥

पुरानी आदत को नया और हौसलेवाला प्रसंग मिल जाये, तो क्या कहना?

४१५

ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर ?

लड़ाई लड़नी है, तब संकटों का सामना करना ही पड़ेगा ।

४१६

ऊँचो दुकान की फीकी मिठाई

नाम तो बड़ा; पर काम अच्छा नहीं ।

४१७

एक तवे की रोटी । क्या छोटी क्या मोटी ।।

सब एक ही कुटुम्ब के हैं, सभी सत्कार के योग्य हैं ।

४१८

कबौं सक्कर घी घना । कबौं मूठी पर चना ॥
कबौं ओऊ मना । धरो धीर मना ।।

सभी सहना पड़ता है ।

४१९

कहते हैं खेत की । सुनते हैं खरिहान की ।।

चित्त ठिकाने ही नहीं है ।

४२०

होम करते हाथ जला ।

अच्छा काम करने में भी दुःख मिलना ।

४२१

कहने से धोबी गधे पर नहीं चढ़ता ।

हठी आदमी अपने ही मन की करता है ।

४२२

कहै तो माय मारी जाय । नहीं तो बाप कुत्ता खाय ।।

दुष्टा माँ ने कुत्ते का मांस पकाकर पति को परोस दिया था । पुत्री असमंजस में है कि कहे या न कहे ।

४२३

काजी के घर के चूहे भी सयाने ।

संगति का प्रभाव तो पड़ता ही है ।

४२३

नाक काटकर दुशाले से पोंछना ।

अपमान करके खुशामद करना ।

४२५

जले पर नमक लगाना ।

अपमान करके हँसी उड़ाना ।

४२६

आगे कुँवा, पीछे खाई ।

दोनों ओर संकट है, क्या करे ?

४२७

काम प्यारा होता है, चाम प्यारा नहीं।

अर्थ स्पष्ट है ।

४२८

कुँवा प्यासे के पास नहीं जाता ।

गरजमन्द ही को दौड़ना पड़ता है ।

४२९

कोयला होय न ऊजरो, नौ मन साबुन लाय ।

कितना ही प्रयत्न करो, स्वभाव बदल नहीं सकता ।

४३०

देखो ऊँट किस करवट बैठता है ।

देखो क्या होता है ?

४३१

चले बहुत सो वीर न होई ।

हरकारा वीर नहीं कहला सकता ।

४३२

ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती ।

सेर की भूख तोले भर से नहीं जायेगी ।

४३३

चाचा चोर, भतीजा काजी ।

न्याय होने का भरोसा नहीं ।

४३४

जैसी चादर । वैसा आदर ॥

वेष-भूषा देखकर सम्मान मिलता है ।

४३५

चार दिना की चाँदनी, फेर अँधेरी पाख ॥

सुख के बाद दुःख आता ही है।

४३६

चोर चोर मौसेरे भाई।

दोनो की आदत एक-सी है, तभी तो दोनों में मेल है।

४३७

चोर की दाढ़ी में तिनका।

अपराधी सदा शंकित रहता है।

४३८

चोर कुतिया, जलेबी की रखवाली।

चोर को खजाने की रखवाली सौंपना बुद्धिमानी नहीं।

४३९

घर की खाँड़ किरकिरी लागै चोरी का गुड़ मीठा।

पराई चीज बहुत प्यारी लगती है।

४४०

चौबेजी छब्बे होने गये, दूबे हो आये।

कमाने गये, घर का भी गँवा आये।

४४१

छछूँदर के सिर में चमेली का तेल।

गंदी स्त्री शृङ्गार करे, तब कहा जाता है।

४४२

जरा-सी किलनी नौ मन काजर।

जरा से काम में बहुत ज्यादा खर्च या झंझट।

किलनी = जूँ जैसा एक कीड़ा।

४४३

जहाँ न पहुंचे रवि। तहाँ पहुँचे कवि ॥

कवि की पहुँच सर्वत्र है।

४४४

जिसकी लाठी उसकी भैंस।

बलवान ही जीतता है।

४४५

जिसका कोड़ा। उसका घोड़ा।

जिसके हाथ में शक्ति है, वही अधिकारी है।

४४६

रस्सी जल गई, ऐंठन न गई।

दुःख पाते-पाते मर गये, पर जिद न छूटी।

४४७

जैसी नीयत, वैसी बरकत।

अर्थ स्पष्ट है।

४४८

दूध का जला मट्ठा फूँक फूँक पीता है।

धोखा खाया हुआ मनुष्य बहुत चौकन्ना रहता है।

४४९

डाल का चूका वानर, बात का चूका नर।

चूक जाने पर सँभालना मुश्किल है।

४५०

हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और।

मुँह में कुछ और है, पेट में कुछ और।

४५१

दिन का भूला साँझ को घर आजाय तो भूला नहीं कहा जायगा।

भूल को स्वीकार कर लेना ही बुद्धिमानी है।

४५२

धोबी बसिके का करै, दीगम्बर के गाँव।

जहाँ किसी की जरूरत नहीं, वहाँ वह क्यों रहे?

४५३

नदी नाव संयोग।

संयोग से मिलना हुआ।

४५४

पानी में आग लगाते हैं।

बड़े प्रपंची हैं।

४५५

सिर मुंड़ाते ही ओले पड़े।

काम शुरू ही किया था कि झंझट उठ खड़ा हुआ।

४५६

बिनु भय होय न प्रीति ।

अर्थ स्पष्ट है ।

४५७

बिल्ली के भागों सिकहर टूटा ।

४५८

एक बार डहँकावे । बावन वीर कहावे ॥

एक बार भी धोखा खा लेने पर आदमी चौकन्ना हो जाता है ।

४५९

रोपै पेड़ बबूर को, आम कहाँते होय ।

बुरे काम का अच्छा परिणाम नहीं निकलता ।

४६०

खिसियानी बिल्ली खंभा नोचै ।

कुछ बस न चले, तो क्या करे ?

४६१

बारह बरस दिल्ली रहे, भाड़ ही झोंका किये ।

अक्ल नहीं आई ।

४६२

भरे समुन्दर घोंघा प्यासा ।

सुख के सब साधन मौजूद हैं, फिर भी तरसते हैं ।

४६३

भारी नाँव पहाड़ खाँ, जब बोलैं तब चीऊँ ।

नाम से गुण का क्या सम्बन्ध ?

४६४

भेड़िया-धसान ।

बिना बिचारे पीछे पीछे चलना ।

४६५

भैंस के आगे बीन बाजै, भैंस खड़ी पगुराय ।

उपदेश की बातें मूर्ख नहीं समझता ।

४६६

मन जानत है आपको, माई जाने बाप।

मन तो आपको जानता है, बाप का पता माँ को होगा। अर्थात् जिसे देखा नहीं, उसके बारे में क्या कहें ?

४६७

लड़कों की दोस्ती जी का जंजाल।

बराबर उम्र वालों का साथ ठीक रहता है।

४६८

लाख जाय पै साख न जाय।

साख बड़ी चीज है।

४६९

सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझता है।

अर्थ स्पष्ट है।

४७०

सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता।

मेहनत किये बिना काम नहीं चलता।

४७१

साँप को दूध पिलाना।

दुष्ट का सत्कार करना।

४७२

सोने में सुगन्ध।

सुन्दर भी और गुणवान् भी।

४७३

हाथी निकल गया, पूँछ रह गई।

असली काम तो पूरा हो गया, अब सामान बटोरना है।

४७४

हाथी जाता है, कुत्ते भूँकते हैं।

मनस्वी पुरुष निंदकों की परवा नहीं करते।

४७५

गंजे को नाखून निकलना।

अपनी हानि करने का काम मिल गया।

पहेलियाँ

बुझौवल]

गांव में मिट्टी का चौकोर बना हुआ एक अच्छा सा घर है, खपड़े से छाया हुआ है, दृष्टि को कोमल लगने वाली पोतनी मिट्ठी से पोता हुआ है, घर के सामने नीम का छायादार एक पेड है, पेड़ से थोड़ा हट कर एक खुली हुई लम्बी बैठक है, जो फूस से छायी हुई है। बैठक में एक ओर एक तख्ता रखा है, दूसरी ओर एक या दो चारपाइयां पड़ी हैं।

जाड़े का मौसम है, गरीबों के पास ओढ़ने बिछाने को तंगी है, बैठक में बीचों बीच एक गड्ढा खोद दिया गया हैं, जिसमें आग जल रही है और मुहल्ले के लोग उसी को बेकार बैठे शरीर सेंक रहे हैं। आग ने सबको बटोर लिया है।

यह इस अनाहूत समागम गांव के लिये बड़ा ही लाभदायक होता है। गाँवों का निर्माण ही इस प्रकार से हुआ है कि उनमें ज्ञान का प्रसार आपसे आप होता रहता है, जैसे शरीर में रक्त का संचार। आग के चारों ओर गोद के बच्चे से लेकर जीवन की आखिरी मंजिल के निकट पहुंचे हुए बुड्ढे तक मण्डल बना कर बैठे हैं। किसी नटखट लड़के ने किसी बुड्ढे या किसी सभातुर को छेड़ा नहीं कि ज्ञान का यज्ञ प्रारम्भ हो जाता है और हरएक उसमें कुछ न कुछ आहुति डालने लगता है। वह आहुति ही पहेलियाँ हैं।

पहेलियाँ गाँववालों को बहुत रुचती हैं। क्योंकि उनसे एक तो बुद्धि में तेजी आ जाती है। एक आदमी बुझौवल करता है। बुझौवल में जिस वस्तु का वर्णन होता हैं, उसके गुण, रूप-रंग, आकार-प्रकार, उपयोग या स्वभाव के बारे में श्लेषात्मक संकेत रहता है, बस उसी को पकड़ कर मूल वस्तु की खोज की जाती है। सुनने वाले सब उत्तर देने का प्रयास करते हैं। बड़ी प्रतियोगिता चलती है। जब किसी का उत्तर सही नहीं उतरता, तब बुझाने वाला मूल वस्तु के आकार, रूप-रंग आदि की कुछ बातें बताकर

उत्तर खोजने का कुछ मार्ग दिखा देता है। फिर भी उत्तर न खोजा जा सका, तो बुझौवल कहने वाला खुद उत्तर बता देता है। जब ठीक उत्तर मिल जाता है, जो बिलकुल जाना हुआ और सुननेवालों के पास ही का होता है। तब उनको अपनी हार की मिठाई बड़ी स्वादिष्ट लगती है और वे और भी उत्सुकता से रस लेने लग लगते हैं। उनमें मन को एकाग्र करके सोचने की आदत पड़ जाती है और लोगों की कल्पना और अनुमान भिड़ाने की शक्ति का विकास भी हो चलता है। दूसरे, उतनी देर तक उनको न ठंड की परवा रहती है, न भूख-प्यास की; और दिन भर की थकावट के बाद सुस्ताने का उनका समय बुद्धि-विनोद में सुख से कट जाता है।

जाड़ों में ऐसा दृश्य प्रायः हरएक गांवों की किसी बड़ी बैठक में देखने को मिलता है। कभी-कभी बुड्ढे लोग स्वयं लड़कों को बुला लेते हैं और पहेलियां और कहावतें शुरू कर देते हैं। बच्चे भी ऐसा मौका नहीं चूकते और उन्हें घेर लेते हैं और 'कुछ कहो', 'कुछ कहो' की धुन बाँध देते हैं।

यों तो गरमी और बरसात में भी शाम की यह बैठक हुआ करती है, पर ज्यादा मज़ा आता है जाड़ों ही में; क्योंकि रात लम्बी होती है, किसी को सोने की जल्दी नहीं होती और जाड़े से बचने के लिये आग भी मिलती है। अँधेरा तो रहता ही है, क्योंकि गांवों में लालटेन कहां? और लालटेन हो भी, तो तेल कहां? किसी के घर में एक लालटेन होती है, पर वह रसोई घर से बैठक में क्यों रहने लगी? इससे अँधेरे में यह बैठक और भी गरम हो जाती है, और बुद्धि भी गरम होकर शरीर और मन के दुःखों की भूली हुई रहती है।

पर ये पहेलियां हैं क्या? और क्यों और कब बनाई गयी? इन प्रश्नों के उत्तर भी पहेलियों ही की तरह कौतूहल-वर्द्धक हैं।

पहेलियां बुद्धि पर शान बढ़ाने का यन्त्र हैं। ये स्मरण शक्ति और वस्तु ज्ञान बढ़ाने की कलें हैं। पहले सुनकर बच्चे और जवान सभी अपनी अपनी बुद्धि को, जहां तक उनकी पहुंच होती है, दौड़ाते। पूछने वाले का मुँह ताकने लगते हैं और वह जब उत्तर बता देता है, और वह उत्तर उनका जाना पहचाना हुआ होता है तब वे तिलमिला उठते हैं और उनको अपनी हार बड़ी मीठी लगने लगती हैं। पहेलियों से गांववालों का ज्ञानवर्द्धन होता है। उनको विद्यालयों में जाने की फुरसत हो नहीं, इससे पहेलियां उनकी विद्या की कमी को पूरा करती रहती हैं।

गाँव की पहेलियों के विषय भी प्रायः वही होते हैं, जो उनकी रोजमर्रा की जानकारी के होते हैं, पर वे उनकी विशेषताओं से परिचित नहीं होते। पहेलियां उन विशेषताओं पर से परदा हटा देती हैं। इस पुस्तक में जो पहेलियां दी गई हैं, वे ज्यादातर उन्हीं चीजों और विषयों से संबंध रखती हैं जो गाँववालों के नित्य के साथी हैं।

सूर्य, चंद्रमा, तारे, अँधेरा, ओस, बादल, धुआँ, वर्ष, महीना, दिन, समय, नदी, कुंवा, नार, मोट, बेंड़ी पानी, पसीना, गाय, भैंस, थन, हिरन, मोर, भौंरा, बिल्ली, केंचुल, बिच्छू, जोंक, ऊँट, घुन, घोड़ा, चील, सारस, हाथी, अक्षर, पुस्तक, सड़क, मोरी, आग, दृष्टि, अरहर, उड़द, मूँग, गन्ना, मक्का, जलेबी, तुलसी, मूली, हलदी, प्याज, लहसुन, मर्चा, सिंघाड़ा, फूट, आम, जामुन, खिरनी, खरबूजा, कटहल, नीम, बबूल, पान, सुपारी, कत्था, चूना, दूध, दही, मक्खन, मट्ठा, तवा, कड़ाई, पूरियां, चलनी, सांकल, केवाड़े, मूसल, चक्की, झाड़, हेंगा, दीपक, तेल, बत्ती, लाठी, हाथ, पैर, अँगुलियाँ, दाँत, जीभ, कौर, पकौड़ी, ओंठ, आँख, काजल, दातुन, मन, सेर, छटाँक, तराजू, आरी, चारपाई, चूड़ी, सुई, तागा, मृदङ्ग, शङ्ख, सींग, कोल्हू, निहाई, हथौड़ा, कुम्हार, चाक, मिट्टी के बरतन, कहार, डोली, हर, रहट, दवात, कंघी, आरी, हुक्का, चिलम, मोढ़ा, झूला, दर्पण, ताला, चाबी, चरखा, रुपया, पैसा इत्यादि जो कुछ गाँववालों के आसपास दिखायी पड़ता है; उन्होंने पहेलियों में उन्हें गूँथ लिया है; जिससे बच्चों को हरएक के बारे में कुछ न कुछ ज्ञान और वह भी सूखे तौर पर नहीं; बल्कि बड़े ही मनोरंजक ढंग से होती रहता है।

गावों में पहेलियाँ आप से आप बनती रहती हैं; उन्हें कोई जान-बूझ कर बनाने नहीं बैठता। बहुतों में तुक भी नहीं मिलते। किसी चीज के रूप-रंग, रहन-सहन और बनावट के बारे में अच्छे से अच्छा कवि भी जो कल्पना नहीं कर सकता, वह पहेलियों में मामूली बोलचाल के शब्दों में मिल जाती है।

पहेलियां किसी सभा-समाज में प्रशंसा पाने के इरादे से नहीं बनतीं, इसी से अधिकांश में बनाने वाले का नाम ही नहीं होता। अतएव वे किसी व्यक्ति विशेष की नहीं; बल्कि सार्वजनिक वस्तु हैं। सबका समान अधिकार होता है। बल्कि उन पर अधिकार करने के लिये सबको प्रेरणा और प्रोत्साहन पहेलियों ही के अँदर से मिलता है, जो उनके कहने के ढंग में व्याप्त रहता

है। कुछ पहेलियों में उनके बनाने वालों के नाम भी मिलते हैं जैसे अमीर खुसरो, घाघ; लालबुझक्कड़; बिगहपुर के पंडित और खगिनियां आदि। पर इनमें अमीर खुसरो ही की ज्यादा हैं, बाकी को तो बहुत कम।

पहेलियां तब से हैं; जब मनुष्यों का समाज बना; जब विचारों का आदान-प्रदान जारी हुआ; व्यवहारिक तजरबे हुए और प्रकृति और मनुष्य-कृत चीजों को देख कर लोगों में कौतूहल उत्पन्न हुआ। आश्चर्य है कि पढ़े लिखे सुसभ्य लोग जिन चीजों को साधारण दृष्टि से देखते हैं और उनको देख कर उनमें कोई नया भाव जाग्रत नहीं होता; गाँववाले, जो प्रायः निरक्षर और सभ्य-समाज की शिक्षा-दीक्षा से वंचित होते हैं; उन्हीं चीजों को ऐसी पैनी दृष्टि से देखते हैं; उन पर कुछ ऐसा विचित्र-सा कह बैठते हैं कि पढ़े-लिखे लोग भी सुन कर चकित और मुग्ध हो जाते हैं।

कुछ उदाहरण लीजियेः—

पाजामा शहर के और विशेषकर पढ़े-लिखे लोग सदियों से पहन रहे हैं, पर पाजामे की शकल सूरत को किसी ने उतने गौर से नहीं देखा, जितनी पैनी दृष्टि से गांव वालों ने देखा, जो पाजामा या पतलून पहनते ही नहीं। पाजामे को देखकर उन्होंने कहा :

'दुइ मुँह छोट एक मुँह बड़ा। आधा मानुष लीले खड़ा'
बीचे बीच लगावे फाँसी। नाम सुनो तो आवे हाँसी"

"दो मुँह छोटे-छोटे हैं, एक मुँह बड़ा है, यह आदमी को आधा निगले हुए खड़ा है। वह बीच में फाँसी लगा लेता है, उसका नाम सुनोगे तो हँसी आ जायगी--"

पाजामे का कैसा विनोदपूर्ण वर्णन है! किसी पढ़े-लिखे ने गाँववालों की धोती पर तो कुछ नहीं कहा। इससे तो यही प्रगट होता है कि गाँव के बिना पढ़े-लिखों में निरीक्षण शक्ति शहर के पढ़े-लिखों से अधिक और विचित्र होती है।

ऐसे ही रेलगाड़ी को लीजिये। शहर और गाँव दोनों के लोग इसे अच्छी तरह जानते हैं, पर शहर वालो ने तो इसकी शक्ल-सूरत से कोई वास्ता ही नहीं रखा। वे कहीं जल्द जाना चाहते हैं, तो टिकट लेकर बैठ जाते हैं और उतर जाते हैं। गाँववालों ने देखकर अपनी कुशाग्र बुद्धि से उसे मनुष्य का रूप दे दिया और वह स्त्री मानी, इससे स्त्री के अनुरूप ही उससे काम लिया। देखिये :

एक सखी हम आवत देखा। श्यामघटा बदरी में रेखा।
हाथ सिरोही मंगल गावै। व्याही है वर खोजत आवै॥

'व्याही है वर खोजत आवे' में कैसा सरस विनोद है! जिसने टिकट लिया है। उसके साथ तो रेलगाड़ी का मानो व्याह हो चुका है, पर नये वर (टिकट खरीदने वालों) की खोज में भी वह आगे जाती है।

रेलगाड़ी की घरघराहट भी गाँव वालों की कौतूहल-प्रिय कल्पना में आने से न बची। वे कहते हैं :

"साथै आवै साथै जाय। खाय न पियै न परै दिखाय"
कुछ न रेल की करे सहाय। साथ लिये बिन रेल न जाय"

अब बिना बताये कौन कह सकता है कि यह रेलगाड़ी की घरघराहट का यशोगान है। यह समझ में नहीं आता कि गाँव वालों में ये बातें सूझती कैसे हैं?

संसार का सबसे प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद है। उसमें भी ऐसी ही विचित्र पहेलियाँ मिलती हैं। बल्कि उसे पहेलियों ही का वेद कहें, तो कह सकते हैं। कुछ मन्त्र सुनिये—

चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा, द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्यां आ विवेश।

जिसके चार सींगें हैं, तीन पैर हैं, दो सिर हैं, सात हाथ हैं, जो तीन जगहों में बँधा हुआ है, वह मनुष्यों में प्रविष्ट हुआ वृषभ शब्द करता हुआ महादेव है।'

साधारण अर्थ यही है, पर गूढ़ार्थ यह है कि वह वृषभ यज्ञ है, जिसके चार सींग चारों वेद हैं, प्रातःकाल, मध्यान्ह और सायंकाल तीन पैर हैं, उदय और अस्त दो सिर हैं, सात प्रकार के छन्द सात हाथ हैं, वह मन्त्र, ब्राह्मण और कल्प रूपी तीन बन्धनों से बँधा हुआ मनुष्य में प्रविष्ट है।

महाभाष्यकार पतंजलि ने प्रारम्भ ही में लिखा है कि वह शब्द है। चार सींगे चार प्रकार के (नाम, आख्या, उपसर्ग और निपात) शब्द, तीन पैर भूत, भविष्य और वर्तमान तीन काल, दो सिर दो प्रकार की नित्य और कार्य भाषायें, सात हाथ सात विभक्तियाँ, हृदय गला और मुख बाँधने के स्थान हैं!

दूसरों के मत से वह सूर्य है। चार सींगें चारों दिशायें. तीन पैर तीन

वेद, दो सिर रात और दिन, सात हाथ, सात किरणें, बांधने के तीन स्थान पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक हैं।

एक और मन्त्र लीजिये—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यन श्नन्नन्यो अभि चाकशीति॥

'दो पक्षी हैं, दोनों साथ-साथ रहते और दोनो मित्र हैं, दोनों एक वृक्ष पर बैठे हैं, उनमें एक स्वादिष्ट फल को खाता है, दूसरा देखता है।'

इसका गूढ़ार्थ यह है कि परमात्मा और जीवात्मा, जो साथ ही रहते हैं और आपस में मित्र हैं, शरीर में बसते हैं। एक कर्म करता और फल भोगता है, दूसरा देखता रहता है।

एक मन्त्र और लीजिये—

द्वादशारं नहि सज्जनाय ववर्ति चक्रम् परिद्यामृतस्य।
आपुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंसतिश्च तस्थुः॥

'हे अग्नि, सूर्य का चक्र आकाश के चारोंओर घूमता है; पर जरा को प्राप्त नहीं होता। उसके बारह अरे (बारह महीने) हैं; उसके सात सौ-बीस (३६० दिन, ३६० रात) स्त्री-पुरुष सन्तान हैं।'

एक और लीजियेः—

द्वादश द्यू न्यदगोह्यस्यातिथ्ये रणन्नभवः ससन्तं।
सक्षेत्रा कृण्वन्ननयन्त: सिन्धूधन्वातिष्ठन्नोपधीर्निम्नमापः॥

'जिस समय बारहो दिन (आर्द्रा से अनुराधा तक) बारह नक्षत्र अगोप्य सूर्य के घर अतिथि रूप से निवास करते हैं। उस समय खेतों को शस्यादि से सम्पन्न करते हैं।' इत्यादि।

ये पहेलिलाँ नहीं तो क्या हैं? अन्तर इतना ही है कि ऋग्वेद की पहेलियाँ उच्चकोटि के ज्ञानियों के लिये हैं और गांव की पहेलियां साधारण बुद्धि वालों के लिये। पर कहने का ढंग दोनों का एक है। इससे जान पड़ता है कि पहेलियों की प्रथा ऋग्वेद से भी प्राचीन है। क्योंकि ऋग्वेद में जिस प्रचुरता से इनका उपयोग हुआ है, उससे मालूम होता है कि ज्ञान-प्रसार के इस तरीके से उस समय की जनता खूब परिचित थी और उसमें रस लेती थी। उस समय का समाज भी कैसा उच्च कोटि का था, जो ज्ञान विज्ञान की गूढ़ से गूढ़ बातों को पहेलियों में बूझ लेता था।

पुरातत्व-प्रेमियों के लिये विस्मयजनक ज्ञान-प्रसार की ऋग्वेद-कालीन

यह परम्परा गाँवों में छाया रूप से अब तक कायम है।

पहेलियाँ नित्य नयी बनती रहती हैं। कौन बनाता है? मालूम नहीं हो सकता, क्योंकि जिस तरह शरीर के लिये बहुत से खेल बन गये और बनते रहते हैं, उनमें सुधार होते-होते उनका एक नया रूप निकलता चलता है। कबड्डी का खेल किसने और कब बनाया, कोई नही जानता। इसी तरह पहेलियाँ बुद्धि के खेल हैं। प्रकृति ही उन्हें बनाती है और सारा समाज ही उनका अधिकारी है। वेद के मंत्रों की तरह ये भी अपौरुषेय कही जा सकती हैं।

गाँव वालों को न सूर मिले, न तुलसी, न कबीर, न केशव; उन्होंने अपनी पहेलियाँ अपने गाँव की बोलचाल में खुद ही बना लीं। न जाने किस युग से चली आती हुई ज्ञान की इस घुमावदार सलोनी नदी को अभीतक वे आगे बहाये ही लिये जा रहे हैं, उसे उन्होंने सूखने नहीं दिया। ऋग्वेद का यह देवता देहाती रूप में आज भी हमारे सामने है। सभ्य और शिक्षित समाज के लिये ग्रामीणों के पास यह अनमोल निधि संचित है।

पहेलियाँ भारतवर्ष के सभी प्रांतों में सभी भाषाओं और बोलियों में मिलती हैं। मुख्य जन्म इनका बोलियों ही में होता है, क्योंकि बोलियाँ ही इनको ढालने का साँचा है। सभ्य-समाज में बोली जानेवाली भाषा में पहेलियाँ बहुत ही कम बनी होंगी।

संस्कृत कवियों ने अपने वैभव-काल में कुछ पहेलियाँ बनाई थीं, पर उनको सार्वजनिक मान नहीं मिला; क्योंकि उनमें ज्यादातर कोष और व्याकरण ही का चमत्कार दिखाई पड़ता था, जिसके समझने वाले संस्कृत भाषा के विद्वान ही होते थे, सर्वसाधारण नहीं। जैसे :—

केशवं पतितं दृष्ट्वा द्रोणो हर्षमुपागतः।
रुदन्ति कौरवाः सर्वे हा केशव कथं गतः॥

साधारण अर्थ यह है कि केशव (श्रीकृष्ण) को गिरा हुआ देखकर द्रोण हर्षित हो गये; और सारे कौरव रोने लगे कि हाय! केशव कहाँ गये?

गूढ़ार्थ यह है कि के = जलमें, शवं = मुर्दे को बहता हुआ देखकर द्रोण = कौवे को प्रसन्नता हुई। कौरव = सियार रोने लगे कि हाय! मुर्दा जल में कहाँ चला गया?

इसमें कोष और व्याकरण ही का चमत्कार है।

हिन्दी में सूर ने कुछ दृष्टिकूट कहे थे, पर एक तो वे बड़े ही जटिल हैं, दूसरे उनमें भी कोष और व्याकरण ही का खेल है। अर्थ भी शब्दों को

बहुत तोड़मरोड़ कर ही करने पड़ते हैं। जैसेः—

वेद नखत ग्रह जोरि अरध करि सोई बनत अब खात।

वेद चारः नक्षत्र सत्ताईस और ग्रह नौ; कुल को जोड़ने मे चालीस हुए। उसका आधा किया तो बीस हुआ। बीस अर्थात् विष अब खाते बनता है।'

पर बीस का विष मान लेने में सूर के प्रति हिन्दीवालों की श्रद्धा पर बहुत अधिक बोझ पड़ जाता है।

और किसी विख्यात कवि ने इस ओर दिमाग नहीं दौड़ाया। कबीर की कुछ साखियां और पद्य जरूर पहेली जैसे हैं; पर उनमे रहस्यवाद या छायावाद ही के भाव अधिक व्यंजित होते हैं।

कुछ अज्ञात कवियों के दोहे भी पहेली के रूप में मिलते हैं, पर वास्तव में वे संस्कृत शब्दों के अनेक अर्थों के खेल-मात्र हैं। जैसेः

सारँग लै सारँग चली, सारँग पै गई दीठ।
सारँग लै सारँग धरी, सारँग गई पईठ॥
सारँग ने सारँग गह्यो, सारँग बोल्यो आय।
जो सारँग सारँग कहै, सारँग मुख ते जाय॥

इनमें एक सारँग शब्द के घड़ा; स्त्री; मेघ, वस्त्र; जल, मोर, मेढक और मोर की बोली आदि अर्थों को लेकर कथानक बना दिये गये हैं। जो इन शब्दों के अर्थ जानता होगा, वही कुछ स्वाद ले सकेगा।

ऐसे ही :

बसे बनज बिकसे बनज, निकसे बनज निसंक।
बनज माल बिन लगति है, बनज माल हरि अंक॥

इसमें बनज शब्द के सूर्य, कुईं, चन्द्रमा और कमल आदि अर्थों की माला गूँथी गयी है।

विदेशियों' खासकर अँग्रेजों के संसर्ग से कुछ पहेलियाँ नयी भी चल निकली हैं। जो ज्यादातर गणित और अक्षरों के जोड़ तोड़ वाली हैं; और स्कूली लड़कों ही के काम की हैं। कुछ पद्य में न होकर गद्य में भी हैं। पुरानी पहेलियों में भी कुछ पहेलियाँ गद्य में हैं, पर वे दिमाग को चक्कर में डालनेवाली और बड़े ही घुमाव-फिराव की हैं; अँग्रेजी ढंग की पहेलियों की तरह सीधी-सादी नहीं हैं।

इस संग्रह में पुरानी नयी सब प्रकार की पहेलियाँ अलग अलग शीर्षकों में संग्रहीत कर दी गई हैं। सहृदय पाठक दोनों का स्वाद अलग-अलग लेकर स्वयं निर्णय कर लेंगे।

पहेलियां गांववालों के पास अभी बहुत हैं। यह संग्रह तो अभी छोटा है। फिर भी इसकी उपयोगिता समझ कर देश के नवयुवक बाकी का संग्रह कर लेंगे तो भाषा और साहित्य को सतेज बनाने वाली एक अमूल्य सम्पत्ति की रक्षा करने के यश के भागी भी होंगे।

आगे विषयवार कुछ पहेलियां दी जा रही हैं:--

आकाश और समय

[१]

एक थाल मोतियों से भरा।
सब के सिर पर औंधा धरा॥
चारों ओर थाल वह फिरै।
मोती उससे एक न गिरै॥

[२]

थरिया भर लावा। आँगन भर छितरावा॥

थरिया = थाली। छितरावा = बखेरा हुआ।

[३]

एक राजा मरा कोई रोया नहीं।
एक सेज बिछी कोई सोया नहीं॥
एक फूल खिला कोई तोड़ा नहीं।
एक हार टूटा कोई जोड़ा नहीं॥

[४]

चार खूँट का एक खेत। कचरी घनी मतीरा एक॥

खूँट = हद, कोना। कचरी = बहुत छोटी ककड़ी जो अंडे के बराबर होती है। मतीरा = तरबूज।

[५]

कौन तपसी तप करै, कौन जो निन्ति नहाय।
कौन जो सब रस उगिलै, कौन जो सब रस खाय॥

[६]

तनक सी राई सारे गाँव छितराई ॥

[७]

गज भर कपड़ा बारह पाट। बंद लगे हैं तीन सौ साठ ॥

[८]

आठ पाँव का अबलक घोड़ा। चलै रैन दिन फिरै न मोड़ा ॥

[९]

नभ तें गिरो न भुइँ दयो, जननी जनी न ताहि।
देखि उजेरा जो कोई भागै, पकरि ले आओ ताहि ॥

[१०]

एक संदूक में बारह खाने। हर खाने में बारह दाने ॥

[११]

बन में हँसिया टाँगी।

[१२]

एक बाग में कुसुम अनेक। सब कुसुमों का राजा एक ॥
जब बगिया में आवै राजा। तब कुसुमों का सजै समाज ॥

आग

[१]

बे हाथ क बे गोड़ क पहाड़ चढ़ा जाथै।
देखा तो बनखंडी बाबा कौन जनारौ जाथै ॥

जाथै = जाता है। जनारौ = जानवर; जीव।

[२]

एक पेड़ सरगौवा। न चोल्हि बैठै न कौवा ॥

[३]

लाल गाय खर खाय। पानी पियै मर जाय ॥

पानी

[१]

बरषा बरसो रात में, भीजे सब बन राय।
घड़ा न डूबे लोटिया, क्यों पंछी प्यासा जाय॥

[२]

सर्र सर्र सतरी, सरकाने वाला कौन ?
सीता चली सासरे, लौटाने वाला कौन ?

[३]

एक ताल माँ गगरी ने बूड़ै, हाथी ठाढ़ नहाइ।
पात पात पेड़न के भीजैं, पुरुष पियासो जाइ॥

[४]

मारो चाहै छुरी कटारी चहै तेग मुलतानी।
चोट लगे तन फाटि जाय पर परै न नेक निसानी॥

[५]

सोतला सफेदला पै देसला नहीं।
बीन बीन खाँय लला बोकला नहीं॥

बोकला = छिलका।

[६]

सन्ध्या को पैदा हुई, आधी रात जवान।
बड़े सवेरे मर गई, घर हो गया मसान॥

पशु-पक्षी, जीव-जन्तु

[१]

ताप ताप तीरी। हरदी सी पीरी॥
चटाक चूमा ले गई। बड़ा दुख दे गई॥

चटाक = चटपट।

[२]

एक सहर है ऊँचा बना। यक यक घर में यक यक जना॥
चीन्हि न परत पुरुष औ नारी। पहिरे सभी बसन्ती सारी॥

[३]

सोने की सी चटक। बहादुर की सी मटक॥
बहादुर गये भाग। लगा गये आग॥

[४]

एक जीव असली। जिसके हाड़ न पसली।

[५]

तन के कोमल मुँह के जोर। चाल चलैं जस तुरकी घोड़॥

[६]

सरग नींव पत्ताल दुआरा। पंडित होइ सो करै बिचारा॥

[७]

दुइ कान मनई दुइ कान देव। दुइ कान के हैं सब केव॥
एक कान को देउ बताय। तब तुम पानी पिओ अघाय॥

[८]

घिस घिस पाँव। तीन सिर आठ पाँव॥

[९]

एक पंछी ऐसा। जिसकी दुम में पैसा॥

[१०]

काले बन में रहना है वह काले तिल सा कारा।
कानपूर में पकड़ा उसको हस्तनपुर में मारा॥

[११]

पुरुब दिसा से आई चिड़िया। अन्न खाय पानी कै किरिया॥

[१२]

चरन अठारह जीव छः, बोली बोलैं तीन।
पंडित वही सराहिये, अच्छर लावै बीन॥

[१३]

एक कुँयें में घाट हजार। एक हजार घुसे पनिहार॥

[१४]

चार घड़े हैं रस से भरे। बिन ढक्कन के औंधे धरे॥

[१५]

किस चिड़िया के सिर पर पैर होते हैं?

[१६]

घोड़ा, हाथी, बैल, कुत्ता, बकरी, शेर, कोयल, भौंरा, मक्खी और गधे की बोलियों के नाम बताओ।

[१७]

चक्री त्रिशूलो न हरिर्न शम्भुः महाबलिष्ठो न च भीमसेनः।
इच्छानुगामी न यतिर्न योगी सीता-वियोगो न च रामचन्द्रः॥

अन्न, फल-फूल, पेड़-पौधे

[१]

लड़का पेट में। दाढ़ी उड़े हवा में॥

[२]

सोने की डिबिया में सालिकराम। अर्थ करो या छोड़ो ग्राम॥

[३]

इधर खूँटा उधर खूँटा। गाइ मरकनी दूध मोठा॥

[४]

आधा दूलह आधा रोग। बीच बाग में भा संजोग॥
जो बैठे सो उठन न पावै। पंडित होइ सो अर्थ बतावै॥

[५]

पहिले भई थीं बहिनें, फिर भये थे भइया।
भइया ऊपर बाप भये, फिर भई थी अइया॥

[६]

एक खेत ऐसा हुआ। आधा बकुला आधा सुआ॥

[७]

नीचे उजली ऊपर हरी। खड़ी खेत में उलटी परी॥

[८]

एतवत से हम एतवत भइलीं। खन खन मुन्दरी पहिरत गइलीं॥

[९]

एक रूख अगड़धत्ता। जिसके पेड़ न पत्ता॥

[१०]

हरी डंडी लाल कमान । तोबा तोबा करै पठान ॥

[११]

तनक सो लरिका बाम्हन को । तिलक लगावै चंदन को ॥

[१२]

एक संदूक काँटे जड़ी । जब खोलो तब चंपा कली ॥

[१३]

कटोरे पर कटोरा । बेटा बाप से भी गोरा ।.

[१४]

एक तमाशा देखा प्रात । नाच उलटि के घोड़ा खात ॥

[१५]

ऐसा फूल गुलाब का, रही चाँदनी छाय ।
पिता रहे हैं पेट में, बालक गये बिकाय ॥

[१६]

गोल गोल गुटिया, सुपारी जैसा रंग ।
ग्यारह देवर लेन आये, गई जेठ के सँग ॥

[१७]

नीचे माटी ऊपर माटी, बीच में सुन्दर देई ।

[१८]

मूँड़ काटि भुँइ माँ धरी, लोथी गंग नहाइ ।
हाड़न का कोइला भवा, खालैं गईं बिकाइ ॥

[१९]

आठ पहर चौंसठ घड़ी । ठाकुर पर ठकुराइन चढ़ी ॥

[२०]

यहाँ गये वहाँ गये और गये कलकत्ता ।
एक पेड़ हम ऐसा देखा फूल के ऊपर पत्ता ॥

[२१]

कुदरत ने एक चीज बनाई । हिन्दू मुसलमान ने खाई ॥
बात कहत आवत है हँसी । आधा गदहा आधा खँसी ॥

[२२]

पट से गिरा मेघ का बच्चा । पूरा पका करेजा कच्चा ॥

[२३]

काजर का कजरौटा, ऊधो का सिंगार ॥
हरी डाल पर मुनिया बैठी, को है बूझनहार ॥

[२४]

एक चिड़िया अर्र । ओकै चमड़ी बोलै चर्र ।
ओकर माँस मुरदार । खून खूब मजेदार ॥

ओकै = उसकी । ओकर = उसका;

[२५]

एक गिरा पट । दो दौड़े झट ॥
पाँच ने उठाया । बत्तिस ने खाया ॥
एक को भाया । चूस के बहाया ॥
एक भर पाया । तो बैठ के गाया ॥

[२६]

सब पंचन के एकै चूतर । मूँड़ महीन पेट धमधूसर ॥

[२७]

छोटे से मेरे छोटकदास । कपड़ा पहिरे सौ पचास ॥

[२८]

दिल्ली ढूँढ़ा मेरठ ढूँढ़ा औ ढूँढ़ा कलकत्ता ।
एक अचम्भा ऐसा देखा फल के ऊपर पत्ता ॥

[२९]

स्याम बरन पर हरि नहिं, जटा धरे नहिं ईस ।
ना जानूँ पिय कौन है, पंक लगाये सीस ॥

[३०]

सीस जटा पोथी गहे, सेत बसन गल माँहि ।
जोगी जंगम है नहीं, बाम्हन पंडित नाहिं ॥

[३१]

नर के पेट में नारी बसै । पकड़ हिलाये खिल खिल हँसै ॥
पेट फारि जो नारी गिरी । मोको लगी प्यारी खरी ॥

[३२]

तनक सी मटकुल तनक सा पेट । जैयो न मटकुल राजा के देस ॥
राजा है बेईमान फोड़ खैहै पेट ।

शरीर

[१]

एक पुरुप के नारी चार। सबै चतुर मिलि करैं विहार ॥
काहू के घर जात न कोई। खान पान यक साथहि होई ॥

[२]

राम नहीं, रावन नहीं, नहीं कृश्न भगवंत।
एक हाथ के आगे देखा, चारि नारि को कंत ॥

[३]

राम न दीन्हीं रावनहिं, ना भीमै भगदंत।
त्रिपुर न दीन्हों संकरहिं, सो दीन्हीं मोहि कंत ॥

[४]

नाव के भीतर नदी, नदी के भीतर नाव ॥

[५]

आये तो दुख दे, जाये तो दुख दे।
उठे तो दुख दे, बैठे तो दुख दे ॥

[६]

जब से जनमे जब तक मरे। सब के सिर पर आसन करे ॥
चाहे दिन हो चाहे रात। गरमी जाड़ा या बरसात ॥
ओला गिरे कि आँधी चले। कभी न उतरे सिर से तले ॥
लंबा लंबा होता चले। रहे जागता सोता चलै ॥
लोहे से जब चाँदी बने। तब फिर दाम न कोई गने ॥
जब से जनमे जब तक मरे। सबके सिर पर आसन करे ॥

[७]

लाग कहूँ लागे नहीं, बरजत लागे धाय।
कही पहेली एक मैं, दीजो चतुर बताय ॥

[८]

वह क्या है, जो सब में थोड़ी-थोड़ी पड़ती है।

[९]

चार पुरुष औ सोलह नारी। चार चार मिलि जोरे यारी ॥
दिन में चलें एक ही साथ। रात में सोवैं एकै साथ ॥

[१०]

चले रोज, पर हटे न तिल भर।

[११]

कर बोले करही सुने, स्रवन सुने नहिं ताहि।
कहैं पहेली बीरबल, बूझैं अकबर साहि ॥

[१२]

ककरहवा तारा मैन घाट। बत्तिस पीपर एक पात ॥

[१३]

देखी एक अनोखी नारी। गुन उसमें एक सबसे भारी ॥
पढ़ी नहीं यह अचरज आवै। मरना जीना तुरत बतावै ॥

कुटुम्ब

[१]

चंचल घोड़ी चतुर नार। कौन लगे तेरा हाँकन हार ॥
बीनन वाली बीन कपास। हमरी इनकी एकै सास ॥

[२]

बाप बेटा दो, रोटी बाँटी तीन।
सबको मिली बराबर, बूझै वही प्रवीन ॥

[३]

हम माँ बेटी तुम माँ बेटी खड़े खेत में जाय।
तोड़े गन्ने तीनि अब, एक एक कैसे खाँय ॥

व्यवसाय

[१]

पाथर चाटि रहे दिन राति। जिंदा छोड़ै मुरदा खाति ॥
पाँच सखी जब पकरि उठावैं। घर के बाहर नंगी आवैं ॥

[२]

कहैं पहेली साह सिकंदर। दो हैं बाहर एक है अन्दर ॥

[३]

जाली खाली जल गई, बचा न एकौ धागा।
जल के स्वामी पकड़ लिये, घर खिड़की होकर भागा ॥

[४]

तनिक सी दुरिया टुक टुक करे। लाख टके का बनिज करे ॥

[५]

चार अँगुल का पेड़ सवामन का पत्ता।
फल लागे अलग अलग पकें सब इकट्ठा ॥

[६]

अपने अपने साल सलाये अपने अपने सूत।
बढ़ई मूतै कोंहार के मुँह में पिअइ लोहार क पूत ॥

[७]

संसी हथौड़ा निहाई। पहिले कौन बनाई ॥

[८]

काँचे पर गुल गुल पके पर कठोर ॥

[९]

खूँटा पर खेती करै, फरवार देइ जराय।
झारि पोंछि घर में धरै, बेंचि बेंचि के खाय ॥

फरवार = खलिहान।

[१०]

आदि कटे माला बनूँ, मध्य कटे तो हाथ।
सँग सँग चलूँ रईस के, रहूँ जाति के साथ ॥

[११]

एक धुनिया जंगल को जा रहा था। सामने से एक सियार को आता देख कर वह उसे शेर समझकर डर गया। उधर सियार भी उसे शिकारी समझ कर डर गया। पास आने पर सियार ने खुशामद करते हुये कहा—

काँधे धनुही हाथे बान। कहाँ चले दिल्ली सुलतान॥

धुनिये की जान में जान आई। उसने कहा—

बन के बासी चतुर सुजान। बड़े की बात बड़े पहिचान॥

तुम क्या समझे ?

[१२]

मेघनाद सुनि रात, कुंभ करन प्रातहि उठ्यो।
आजु बड़ो उत्पात, चक्र चलावहु भवन में॥

[१३]

जब रही मै बारी भोरी, तब सही थी मार।
अब तो पहिनी लाल घँघरिया, अब ना सहिहौं मार॥

आहार

[१]

अत्थर सिल पत्थर संगमरमर खजूर।
पाँचो बहिनी लौट जाओ हम जावैं बड़ी दूर॥

[२]

काली नदी कलूटा पानी। डूब मरी चँद्रावलि रानी॥

[३]

कारी पोनी, तागा सेत।

[४]

चलीं सखी सब मार झुण्ड। आईं नहाने सीतल कुण्ड॥
कपड़े पहिने भीतर गईं। नंगी होकर बाहर भईं॥

[५]

बाप का नाम और नाती पूत का नाम और।
यह पहेली बूझ के पीछे उठाओ कौर॥

[६]

पीली नदी में पीला अंडा। नहीं बताओ तो मारूँ डंडा॥

[७]

चार कबूतर चार रंग। दरबा भीतर एकै रंग॥

[८]

एक नारि नौरंगी चंगी वह भी नारि कहावै।
नहाय धोय छज्जे पर बैठी लरिकन को ललचावै॥

[९]

कहें पहेली बीरबल, सुन लो अकबर साहि।
रींधी रहे तो सब दिन खाय, बिन रींघे सरि जाय॥

[१०]

वह क्या है, जो जमता है, अँकुवाता नहीं ?

[११]

अगहन पइठ चैत के पेट। ता पर पंडित करें झपेट॥

[१२]

पिया बजारे जात हो, चीजें लइयो चार।
सुवा परेवा किलहँटा, बगुला की उनहार॥

घर गृहस्थी की वस्तुएं

[१]

झाँझर कुवाँ रतन कै बारी। नहिं बूझो तो दैहौं गारी॥
झाँझर = बहुत से छेदों वाला। बारी = किनारा।

[२]

हौज भरा था। हिरन खड़ा था॥
हौज सूख गया। हिरन भाग गया॥

[३]

चार अहक चार बहक चार सुरमेदानी।
नौरंग तोता उड़ गया तो रह गई बिरानी॥

[४]

चाक डोले चकडूमर डोले। खैरा पीपर कबहुँ न डोले॥

[५]

नाजुक नारि पिया अंग सोती, संग सों अँग मिलाय।
पिय को बिछुरत जानि के, सँग सती हो जाय॥

[६]

चारि पड़ी चारि खड़ी। चारों में दो दो गड़ी॥

[७]

आहि ऊहि कब से? आधा गया तब से।
ठंड पड़ी कब से? पूरा गया जब से॥

[८]

कमर बाँधि कोने में पड़ी। पड़ी सबेरे अब है खड़ी॥

[९]

सोने की वह है नहीं, सोने की है नार।
खाती पीती कुछ नहीं, बूझो बूझनहार॥

[१०]

नारी में नारी बसे, नारी में नर दोय।
नर के बीच नारी बसै, बिरला बूझै कोय॥

[११]

तेली को तेल कुम्हार को हंडा। हाथी की सूँड़ नवाब को झंडा॥

[१२]

दुबली पतली गुन भरी, सीस चलै निहुराय।
वह नारी जब हाथ में आवै, बिछुड़े देय मिलाय॥

[१३]

लगाये लाज लागै, लगाये बिना सरे नहीं।
धन हैं वाके भाग, जिसके लगै नहीं॥

[१४]

चाची के दुइ कान, चचा के कानै न।
चाची चतुर सुजान, चचा कुछ जानैं न॥

[१५]

दिन को लटकै। राति को छपटै ॥

[१६]

बिन दादे का पोता। भीती भीती रोता ॥

[१७]

नीची थी ऊँची बैठाई। ऐसी नार सभा में आई ॥
है वो नार करम के हीन। जिन देखा तिन थू थू कीन ॥

[१८]

पाँच बरस की बींदनी, साठ बरस का बींद।
आगे चाले बींदनी, पाछे चाले बींद ॥

बींदनी (मारवाड़ी) = दुलहिन। बींद = दुलहा।

[१९]

डील के छोटे मुँह के भारी। आवत हैं घनस्याम तिवारी ॥

[२०]

संख संख संखिया। उड़ाये जाय पंखिया।
छः गोड़ दो आँखिया ॥

[२१]

हाथी घोड़ा ऊँट नहिं, खाय न दाना घास।
सदा हवा ही पर रहै, लेय न पल भर साँस ॥

[२२]

पड़े रहे मान तो जिउ न जहान।
चलै लागे मान तो छः मुँह बारह कान ॥

[२३

लंबी पूँछ दाँत हैं पाँच। तुमसे कहौं साँच ही साँच ॥
एक किसान ढेर का ढेर। पूँछ पकरि के देय बखेर ॥

[२४]

मैं आया, तू हट।

[२५]

ठाढ़ौ रहै, न खाय न मरै। खड़े खड़े निज कारज करै ॥
घासी कहैं सवारी खेरे। है नियरे पर पैहौ हेरे ॥

[२६]

तीन अच्छर की मेरी देह। बहू दिखाती बहुत सनेह ॥
आदि कटे पानी बनूँ, मध्य कटे तो काल।
अन्त कटे तो काज है, बूझो मेरे लाल ॥

[२७]

आड़क ठेढ़ा दम्भक दार। दस पाँव और तीन कपार ॥

[२८]

सन की डोरी और रेशम कै काँटा। गरजत आवै करियादा नाटा ॥

[२९]

झटपट आवै झटपट जाय। भरि भरि आवै फेंकत जाय ॥
घासी कहैं सवासी खेरे। है नियरे पर पइहो हेरे ॥

[३०]

उकरू मुकरू बैठे। तब बीता भरि पैठे ॥
तब घचर घचर मारै। तब टाँग धइके फारै ॥

[३१]

छः पैर, पीठ पर पूँछ ॥

[३२]

नान्हीं सी घोड़ी लगी पिछाड़ी। बिना लगाम के चलै अगाड़ी ॥

[३३]

तन की नस नस देखिये, नारी अति बलिहीन।
चट आई पट परि गई, ऊपर पिउ को लीन ॥

[३४]

लंबी चौड़ी अंगुलि चारि। दुहूँ ओर से डारेनि फारि ॥
जीव न होय जीव को गहै। बासू केरि खगिनिया कहै ॥

[३५]

भीतर गूदड़ ऊपर नाँगि। पानी पिऐ परारा माँगि ॥
तेहि की लिखी करारी रहै। बासू केरि खगिनिया कहै ॥

[३६]

काला कुत्ता घर रखवाला कौन गुरू का चेला है।
आसन मार मढ़ी में बैठा भंदिर माँझ अकेला है ॥

गणित

[१]

स्याम बरन मुख उज्जर कित्ते। रावन सीस मदोदरि जित्ते ॥
हनुमान पिता करि लेइहौं। तब राम-पिता भरि देइहौं ॥

कित्ते = कितना, किस भाव ? जित्ते = जितना, जिस भाव।
हनुमान-पिता = पवन; हवा। राम-पिता = दशरथ।

[२]

तीतर के दो आगे तीतर। तीतर के दो पाछे तीतर ॥
आगे तीतर पाछे तीतर। तो बतलाओ कितने तीतर ॥

[३]

चार आना बकरी आठ आना गाय। पाँच रुपैया भैंसि बिकाय ॥
बीसै रुपया बीसै जिउ। बेगि बताओ कै कै जिउ ॥

[४]

सात पाँच नौ तेरह, साढ़े तीन अढ़ाई।
ता बिच हमको राखियो, तुमको राम दोहाई ॥

[५]

बारह लोचन बीस पग, छ मुख छानबे दंत।
घासी की तिरिया कहै, बूझि बताओ कंत ॥

[६]

लाख टका की सेर भर, पैसे की कितनी ?

[७]

एक मन दाना चारि बाट। जेतना तौलो परै न घाट ॥

[८]

कटहल का एक वृक्ष है, जिसमें पाँच कटहल लगे हैं। उस पर एक साँप बैठा है, और दो आदमी और दो कुत्ते भी रखवाली कर रहे हैं। चार चोर कटहल तोड़ना चाहते हैं। कोई चोर हथियार न चलायेगा। युक्ति करके ही तोड़ना होगा। बताओ, वे कैसे तोड़ेंगे ?

[९]

१११, ७७७, ९९९ इन अंकों में से कोई छः अंक निकाल दो, जिससे बाकी के जोड़ने पर २० आवे।

[१०]

एक आदमी एक भेड़िया, एक बकरी और कुछ पान लेकर चला। रास्ते में एक नदी मिली। उसमें एक नाव थी, जिस पर वह आदमी सिर्फ एक चीज को साथ लेकर पार उतर सकता था। यदि वह भेड़िये को ले जाता है तो बकरी पान खाजाती है, और पान लेकर जाता है तो भेड़िया बकरी को खा जाता है। बताओ, वह कैसे पार उतरा ?

[११]

एक संख्या अपने अंकों की जोड़ से सात गुनी है; उलट देने पर कम हो जाती है, उसे बताओ ?

[१२]

कुछ रुपये मैंने १५ मँगतों में बराबर बराबर बाँटे, तो दो रुपये बच गये। दूसरे दिन उतने ही रुपये १३ मँगतों में बराबर बाँटे, तो तीन रुपये बच गये। बताओ, कितने रुपये लेकर चला था ?

[१३]

दो साहूकारों के लड़के धन कमाने निकले। देवी का मन्दिर उन्हें रास्ते में मिला। वे प्रार्थना करने लगे—हे देवी ! यदि व्यापार में हमको लाभ होगा तो रुपया पीछे ‌-)॥। और =) चढ़ायेंगे। उनको व्यापार में लाभ हुआ। उन्होंने प्रतिज्ञा पूरी की। घर आने पर दोनों के पास बराबर-बराबर धन निकला। बताओ उन्होंने कितना कितना कमाया ?

[१४]

अगर डेढ़ मुर्गियाँ डेढ़ दिन में डेढ़ अंडे देती हैं, तो छः मुर्गियां छः दिन में कितने अंडे देंगी ?

[१५]

एक परवरे नौ सै त्रिया। नौ सै बरस परवरा जिया।
नौ सै परवर टूटै रोज। कायथ मरैं त्रिया की खोज॥

[१६]

चार गाड़ीवान कलकत्ते से चार गाड़ी खाँड़ ले जा रहे थे। रास्ते में नं० १ की गाड़ी के बैल थक गये। उसके गाड़ीवान ने कहा—अब तो मैं आगे

नहीं जा सकता, बैल थक गये हैं। इस पर दूसरे गाड़ीवानों ने कहा—हमारे पास जितना जितना वजन है, उतना-उतना और रख दो, और साथ चले चलो। ऐसा ही किया गया। आगे जाने पर नं० २ की गाड़ी का भी वही हाल हुआ। तब उसको भी कहा गया कि प्रत्येक गाड़ी में जितना वजन है, उतना-उतना और रख दो। ऐसा ही किया गया। यही हालत चारों गाड़ियों की हुई। घर जाने पर सब की गाड़ी से बराबर वजन की खाँड़ निकली। बताओ, जिस समय वे कलकत्ते से चले थे, तब प्रत्येक गाड़ी में कितनी कितनी खाँड़ थी ?

[१७]

तीन आदमियों ने कुछ रोटियाँ बनाईं। सबने निश्चय किया कि सवेरे उठकर खायँगे। उनमें से एक रात में उठा। उसने सब रोटियों के तीन हिस्से किये। एक रोटी बच गई। उसने उसे कुत्ते को दे दिया, और एक हिस्सा खाकर सो गया। कुछ देर बाद दूसरा उठा। उसने भी रोटियों के तीन हिस्से किये। एक रोटी बच गई, उसे कुत्ते को देकर वह एक हिस्सा खाकर सो गया। कुछ देर बाद तीसरा उठा। उसने भी रोटियों के तीन हिस्से किये। एक रोटी बच गई, उसे कुत्ते को देकर वह भी एक हिस्सा खाकर सो गया। सबेरे तीनों उठे, तो बची हुई रोटियों के तीन तीन हिस्से किये। एक रोटी बच गई, उसे कुत्ते को देकर सब अपना-अपना हिस्सा खा गये। इस तरह कुत्ते को चार रोटियाँ मिलीं। बताओ, कुल कितनी रोटियाँ थीं ?

[१८]

एक किसान एक लोहार के पास गया और बोला मुझे ४० सेर लोहे में ४० औज़ार बना दो, जिनमें हर एक खुरपा आधा सेर का, हरएक कुदाल २॥ सेर का और हरएक फावड़ा ५ सेर का होगा। लोहार ने बना दिया। बताओ, लोहार ने कितने खुरपे, कितने कुदाल और कितने फावड़े बनाकर किसान को दिये ?

[१९]

दो बनिये किसी गाँव में घी खरीदने जा रहे थे। उनके पास तीन खाली कुप्पे थे। एक कुप्पे में ८ सेर दूसरे में ५ सेर और तीसरे में ३ सेर घी समाता था। एक अहीर से उन्हों ने ८ सेर घी लिया। वे उसे आधा आधा बाँटना चाहते थे। न उनके पास कोई बाट था, और न तराजू; और न अहीर के घर में ही कुछ था। बताओ, उन्होंने कैसे बाँटा ?

[२०]

दो टुकड़ों की सिलाई दो पैसे, तो तीन टुकड़ों को कितनी ?

[२१]

१८० के ऐसे टुकड़े बनाओ जो एक दूसरे के दूने हों।

[२२]

वह संख्या कौनसी है, जो उलट कर लिखने पर दूनी हो जाती है ?

[२३]

३१ के पाँच ऐसे टुकड़े बनाओ, जो एक दूसरे के दूने हों ?

[२४]

वह संख्या कौनसी है, जिसे उसके आधे से गुणा किया जाय तो गुण्य की दूनी हो जाय ?

[२५]

मोहन के पास १० मन और सोहन के पास १०० मन गेहूँ हैं। दोनों ने अपना-अपना कुल गेहूँ अलग-अलग किन्तु एक ही भाव से बेचकर बराबर बराबर रुपये पाये। बताओ, कैसे ?

[२६]

एक ईंट का वज़न अपने पूरे वज़न का तिहाई और छः छटाँक है। तो उसका वज़न बताओ ?

[२७]

मैं सड़क पर चार मील फ़ी घंटे की रफ्तार से चल रहा था। मेरे आगे २२० गज की दूरी पर एक घोड़ा-गाड़ी जा रही थी। १५ मिनट में मैंने घोड़ा-गाड़ी को पकड़ लिया। घोड़े की रफ्तार बताओ ?

[२८)

एक धोती के सूखने में आधा घंटा लगता है, तो एक साथ फैलाई हुई पाँच गीली धोतियों के सूखने में कितना समय लगेगा ?

[२९]

भौंरों के एक झुंड का पाँचवाँ भाग चम्पाकली पर और तीसरा भाग केतकी पर बैठा। और इन दो संख्याओं के अंतर का तिगुना मालती पर जा बैठा। एक भौंरा चमेली की सुगंध से मुग्ध होकर चला गया। भौंरों की संख्या बताओ ?

[३०]

एक किसान के पास २५ गायें हैं। एक गाय एक सेर, दूसरी गाय दो सेर, तीसरी तीन सेर इसीतरह पचीसवीं गाय पचीस सेर दूध देती है। किसान के पाँच बेटे हैं। वह उन गायों को इस तरह अपने सब लड़कों में बाँटना चाहता है कि हरएक लड़के को बराबर गाय और बराबर बराबर दूध मिले। बताओ, कैसे बाँटेगा ?

[३१]

एक राजा एक पंडितजी पर बहुत खुश हुये। उन्होंने पंडितजी से कुछ मांगने को कहा। राजा उस समय शतरंज खेल रहे थे। पडिंतजी ने कहा—शतरंज के हर एक खाने के दुगुने चावल जोड़कर दे दीजिये। राजा ने हँसकर कहा—वाह, यह कौन-सी बड़ी बात है। बताओ, राजा को कितने का चावल देना पड़ा होगा ? दाम बाजार-भाव से लगाओ।

[३२]

दो पेड़ों पर कुछ चिड़ियाँ बैठी हुई हैं। यदि एक पेड़ से एक चिड़िया उड़कर दूसरे पर जा बैठे, तो दोनों पेड़ों पर बराबर चिड़ियां हो जाती हैं। और अगर दूसरे पेड़ से एक चिड़िया पहले पेड़ पर आ बैठे, तो पहले पेड़ पर दूसरे पेड़ से दूनी चिड़ियां हो जायँगी। बताओ, दोनों पेड़ों पर कितनी कितनी चिड़ियाँ हैं ?

[३३]

एक आदमी ने एक बुढ़िया से कहा कि मैं व्यापार करता हूँ तो छः महीने में मेरे रुपये दूने हो जाते हैं। तब बुढ़िया ने उसे दो पैसे दिये, और कहा कि मेरे भी दो पैसे लगा दो, जब व्यापार करके वापस आना तो हिसाब करके मेरे पैसे वापस दे देना। वह आदमी दो पैसे लेगया और बारह बरस बाद लौटा। बुढ़िया ने उससे हिसाब मांगा। बताओ, उस आदमी को कितने रुपये उस बुढ़िया को देने पड़े ?

[३४]

तीन मर्द, इकतिस नयन।

[३५]

एक बनिये के पास एक मन के चार बाट हैं। खरीदारों को एक सेर से चालीस सेर तक वह उन्हीं बाटों से एक ही बार में तौल देता है। बताओ, वे चारों बाट कितने-कितने वज़न के हैं ?

[३६]

तीन लड़के बाग़ में आमकी चोरी करने गये। दो नीचे खड़े रहे, तीसरा पेड़ पर चढ़कर आम तोड़ने लगा। इतने में रखवाला आया। दोनों लड़के भाग गये। तीसरा पत्तों में छिप गया। रखवाला चला गया, तब तीसरा लड़का आमों को झोले में लेकर उतरा। उसने ईमानदारी से आमों को तीन हिस्सों में बाँटा। एक हिस्सा अपने लिये रखकर बाकी को दोनों साथियों के लिये जमीन में गाड़ दिया। कुछ देर बाद दूसरा लड़का आया। उसने भी आमों को तीन हिस्सों में बांटा। तब एक बच रहा। उसने अपने हिस्से के साथ उसे अपनी मेहनत की मजदूरी समझकर लेलिया और बाकी आमों को वहीं गाड़ दिया। फिर तीसरा लड़का आया। उसने समझा कि सब बाँटा हुआ है। वह सब को अपने हिस्से का समझकर उठा लेगया। बाज़ार में तीनों मिले। पूछने पर पता चला कि सब को बराबर बराबर आम मिले हैं। बताओ, कितने आम तोड़े थे ?

[३७]

कुछ भैंसें थीं। वे घर में से निकलीं, तो तीन दरवाजों से बराबर बराबर संख्या में निकलीं। आगे गईं, तो पांच कुँओं पर बराबर बराबर संख्या में पानी पिया। फिर आगे गईं, तो सात पेड़ों के नीचे बराबर संख्या में बैठ गईं। बताओ, कमसे कम कितनी भैंसें थीं ? २१६

[३८]

नौ मन धान बाग भरि कौवा। बाँटे पावैं पौवा पौवा॥
कितने कौवे थे ?

[३९]

एक अजगर चला नहाय। नौ दिन में अंगुल भरि जाय॥
असी कोस गंगा का तीर। कितने दिन में पहुँचा बीर॥

[४०]

बीस बरा औ बीस खवैया। पूर मर्द लरिका चौथैया॥
आधा आधा पायेनि नारी। कितने कितने कहो बिचारी॥

विविध

[१]

चार कोन का चौतरा, चौंसठ घर ठहरायँ।
चतुर चतुर सौदा करैं, मूरख फिरि फिरि जाँय॥

[२]

इत गई उत गई, कोने में दुबक गई॥

[३]

एक नारि दक्खिन से आई। सोरह बेटी तीन जमाई॥

[४]

कौन चाहै बरसना, कौन चाहे धूप।
कौन चाहै बोलना, कौन चाहै चूप॥

[५]

कौन सरोवर पाल बिनु, कौन पेड़ बिनु डाल।
कौन पखेरू पंख बिनु, कौन नींद बिनु काल॥

[६]

चिक्कन खेत पदुक्कन पीढ़ा। तामें बैठ कराइत कीरा॥

[७]

चार पाँव पर कहीं न जाऊँ। चलते को भी मैं बैठाऊँ॥

[८]

ओटी काती ना बई, बुनी न गोड़ पसारि।
चारि महीना ओढ़ि के, चादर दई उतारि॥

[९]

कच्चे अधिक सुहावने, गहर अधिक मिठायँ।
वे फल जग में कौन हैं, पाकत ही करुआयँ॥

[१०]

एक अचम्भा हमने देखा, मुरदा रोटी खाय।
टेरे से बोलै नहीं, मारे से चिल्लाय॥

[११]

इधर गई उधर गई। और न जाने किधर गई ॥

[१२]

छोटा मुँह, बड़ी बात।

[१३]

फाटो पेट दरिद्री नाँव । पंडित घर में वाको ठाँव ॥
श्री को अनुज बिस्नु को सारो। पंडित होय सो अर्थ बिचारो ॥

[१४]

खड़े तो खड़े। बैठे तो खड़े ॥

[१५]

तनी न जाय बुनी न जाय, न धोबी के घर जाय।
आठ महीना ओढ़ि के, कातिक में धरी जाय ॥

[१६]

हाथ से बोवै, मुँह से बिनै ॥

[१७]

चारि कोन चौदह चौपारी। रोवैं कूकुर हँसै बिलारी ॥

[१८]

चितरी गाय चितकबरा बछरा। हुँकरै गाइ बिछुड़ि जाइ बछरा ॥

[१६]

आगे पीछे चलति है, दो मुख नागिनि नाहिं।
आगी खाय चकोर नहिं, देखो सहरन माहिं ॥

[२०]

पैर नहीं पर चलती है। नाप नाप कर चलती है ॥
कभी न राह बदलती है। कभी न घर से टलती है ॥
दिन की उमर बताती है। दिन को खाती जाती है ॥
समय काटती चलती है। काम बाँटती चलती है ॥
चेत कराती चलती है। कभी न कहीं मचलती है ॥

[२१]

कुत्ते की पूँछ हमारे पास । कुत्ता बोले जाय अकास ॥

[२२]

एक सखी हम आवत देखा। स्यामघटा बदरी में रेखा ॥
हाथ सिरोही मंगल गावै। ब्याही है वर खोजत आवै ॥

[२३]

एक अँगूठा अँगुरी चारि। हाथ न पाँव न पुरुष न नारि ॥

[२४]

वह क्या है, जिसका तुम नाम लो तो वह भंग हो जाय ?

[२५]

परी रहै बिनु पंख न टरै। उठै तो बात हवा से करै ॥

[२६]

समुद्र को एक सोखते से कैसे सुखा सकते हो ?

[२७]

वह क्या चीज है, जो सिर के बल चलती है ?

[२८]

सुख को हमेशा कहाँ पा सकते हो ?

[२९]

साथै आवै साथै जाय। खाय न पियै न परै दिखाय ॥
कुछ न रेल की करै सहाय। साथ लिये बिन रेल न जाय ॥

[३०]

दुइ पग चले चार लटकाये, तीन सीस दुइ नैन।
नहिं कोउ हुआ न होयगा, कहि गये तुलसी बैन ॥

[३१]

भारत के उस नेता का नाम बताओ, जिसके नाम में दो रत्न जड़े हों ?

[३२]

तीन अक्षर का नाम हमारा। रहूँ गाँव में सबसे न्यारा ॥
पहला अक्षर जभी हटाओ। ब्राह्मन के हाथों में पाओ ॥
तिसरा अक्षर जभी हटाओ। हलवाई के घर में पाओ ॥
दुसरा अक्षर जभी हटाओ। साहब का बैरा बन जाओ ॥

[३३]

एक सींग की गाय। जितना खिलाओ उतना खाय।

[३४]

गनै न सीत न ताति बयार। मानै दिन न साँझ भिनसार ॥
पीछे हटै न वह सुसताय। गठरी बाँधे आगे जाय ॥

[३५]

पहिले औ दुसरे बिना, रोटी करै न कोय।
पहिले औ तिसरे बिना, करो काठ ना होय ॥
तिसरे औ सरे बिना, गीत न गावै कोय।
तीनों अक्षर मिलें तब, नाम नगर का होय ॥

[३६]

ख है, पर चकवी नहीं।

[३७]

भरे ताल में तिरै पसेरी।
झटपट बूझो करो न देरी ॥

[३८]

सीरो पाटी पावा चारि। तापर तकिया गद्दा झारि ॥
दो जन सोवैं बाइस कान। बूझे कोई चतुर सुजान ॥

[३९]

त्रिया एक बालक लिये गोद। अपने पति सों करत विनोद ॥
तीन जीव पै उन्निस आँखि। झूँठ कहौं तो संकर साखि ॥

[४०]

एक आदमी ने पत्थर की एक मूर्ति की ओर देखते हुए कहा—मेरे भाई बहन कोई नहीं है; पर इस मूर्ति का बाप मेरे बाप का लड़का है। बताओ, कैसे ?

[४१]

एक मुसलमान के यहाँ एक तश्तरी में बारह अंडे रक्खे थे। उसके बारह बच्चे आये, और उन्होंने एक एक अंडा ले लिये। तश्तरी में एक अंडा रह गया। कैसे ?

[४२]

खाइ न पवन न पानी पिऐ। आपन माँस खाइ के जिऐ ॥
चिकनी सुन्दर तीर समान। माँस चुकै तब रहै न प्रान ॥

[४३]

गरीब की खाट जाड़े में लंबी होजाती है। कैसे ?

[४४]

सर में हूँ पर बाल नहीं। बेसन में, पर दाल नहीं॥
सरपट में, पर चाल नहीं। सरगम में, पर ताल नहीं॥

[४५]

मोहन ने पूछा—शेर किसे कहते हैं ?

गुरुजी ने उत्तर दिया—वह बाट जो वजन में १६ छटांक होता है, सेर कहलाता है ?

बताओ, गुरुजी ने ऐसा जवाब क्यों दिया ?

[४६]

सिर पर सोहै गंगजल, मुंडमाल गल माँहिं।
बाहन वाको वृषभ है, शिव कहिये तो नाहिं॥

[४७]

चहूँओर फिर आई। जिन देखा तिन खाई॥

[४८]

एक नारि वह है बहुरंगी। घर से बाहर निकसै नंगी॥
उस नारी का यही सिंगार। सिर पर नथुनी मुँह पर बार॥

[४६

आधा भक्तन मुँह बसै, आधा गुनियन साथ।
वाहि पसारी देत हैं, पुड़ी बाँधि के हाथ॥

वाहि = उसको।

[५०]

जल में रहै झूठ नहिं भाखै, बसै सुनगर मँझार।
मच्छ कच्छ दादुर नहीं, पंडित करो विचार॥

[५१]

आधा नर आधा मृगराज। जुद्ध बिआहे आवै काज॥
आधा टूटि पेट माँ रहै। बासू केरि खगिनिया कहै॥

[५२]

मंगल होत कहै सिवराज कहो केहि के दुख होत विसेखो।
कौन सभा महँ बैठि न सोहत को नाहिं जानत चित्त परेखो॥

कौन निसा ससि को न उद्दोत भो का लखिकै बिरही दुख पेखो ॥
बाँझ क पूत बिना अँखियान कुहू निसि में ससि पूरन देख ॥

[५३]

दुइ मुँह छोट एक मुँह बड़ा । आधा मानुष लीले खड़ा ॥
बोचोंबीच लगावे फाँसी । नाम सुने पर आवै हाँसी ॥

[५४]

सावन टेढ़ि चैत माँ सरहरि । कहैं सबलसिंह बूझौ नरहरि ॥

सरहरि = सीधी ।

[५५]

भीतर पेट बहर है आँती काँधे दाँन जमाये ।
कहैं सबलसिंह खूब बना तर ऊपर हाथ लगाये ॥

बहर = बाहर । आँतो = अँतड़ी । तर = नीचे ।

[५६]

छः महीना क बिटिया बरिस दिन कै पेट ।

बिटिया = बेटी । पेट = गर्भ ।

[५७]

एक चिरैया लेदीबेदी सांझै से पिरवाई ।
वोकर अंड़ा उज्जर उज्जर झउआ की उठवाई ॥

लेदीबेदी = गर्भिणी । पिरवाई = पीड़ा । झउआ = टोकरा ।

[५८]

बिल उखरि गई खूँटा खड़ा है ।

[५९]

सूआ पंख महोख रँग, तित्तिर की अनुहारि ।
बगुला पंख मिलाय कै, पठै देउ ब्रजनारि ॥

[६०]

पत लाल लाल पत गोल गोल खात की दैयाँ सी सी ॥

दैयां = समय ।

[६१]

गरे गरेरुआ माथे टीका खर के आगे रोवै ।
तेकरे ऊपर किरिया राखी बिन बूझे जो सोवै ॥

गरे = गले में । गरेरुआ = धारी या रस्सी । खर = तिनका । किरिया = कसम ।

[६२]

एक ताल माँ बसै तिवारी। बिन कुंजी के खोलैं किवारी॥

[६३]

टेढ़ मेढ़ दुइयै बार। जे न बूझै सग्गै सार॥

[६४]

बूँचो गगरिया न तोसे उठै न तोरे बाप से॥

(६५)

जब लगि रहीं मैं बारि कुँवारि तब लगि मारेउ मोहीं।
बियहि के मारौ मोहीं तौ मैं मर्द बखानौं तोहीं॥

(६६)

लागै तो लाज लागै बिना लागे बनत नायँ।
धन्य है वन जोवन काँ जेकरे लागत नाँय॥

(६७)

तर लोटा ऊपर सोंटा। तर धमकै ऊपर चमकै॥

(६८)

छः गोड़ दुइ बाहाँ। पिठिया प पूँछि लोटै, ई तमासा काहाँ॥

(६९)

यके हैवाँ अजब दीदम कि शश पावो दो सुम दारद।
अजायब तर अज़ीं दीदम मियाने पुश्त दुम दारद॥

(७०)

दिन भर घूमै पिय के संग। छपटी रहै रात भर अंग॥
दिया देख के वह सरमाय। झट से सरकि दूर होइ जाय॥

(७१)

एक तरवर का फर है तर। पहिले नारी पीछे नर।
वा फर को यह देखो हाल। बाहर खाल औ भीतर बाल॥

(७२)

खर आगे औ पीछे कान। जो बूझे सो चतुर सुजान॥

(७३)

एक नार जब आँख मिलावै। देखनहारा नाक चढ़ावै।
चतुर होय सो याको बूझै। सो बूझै जिन थोड़ा सूझै॥

(७५)

एक नार ऐसन भई, थर थराय सब देह।
वाही के सन्मुख रहै, जासों लागो नेह॥

(७६)

बहुत काम का है इक नर। आधे धड़ में उसका घर॥
कुबड़ा होकर घर में जाय। खड़ा रहै तो काटै खाय॥

(७७)

कल्लू कुतिया कोदौ खाय। पाद देय तो जी से जाय॥

७८)

कच्ची फूटै पकी बिकाय। गाँव की राँड़ें ले ले जायँ॥

(७६)

एक लई, दो फेंक दई।

(८०)

चार पाहुने चार लुचुई। एक एक के मुँह में दो दो दई॥

(८१)

एक रूख में पथरै पाथर।

(८२)

बिना सूत चोली सिली, फुलरी लगी हजार।
छै महीना तक पहिरि कै, कोरी धरी उतार॥

(८३)

बाप बड़ो बेटा बड़ो, नाती बड़ो अमोल।
पै पनाति पैदा भयो, दो कौड़ी को मोल॥

(८४)

चौंसठ घोड़े एक सवार।

(८५)

चँदा ऐसी चाँदनी, सूरज ऐसी जोत।
तेरे होय तो दे सखी, बाह्मन आई न्योत॥

(८६)

चार चाक चलै दो सूप चलै। आगे नाग चलै पीछे गोह चलै॥

(८७)

एक मोरे मामा हजार मोरे भाई। वाह रे मोरे मामा लाखन निहुराई॥

(८८)

एक लई, दो फेंक दई।

(८९)

हाथ कटे पाँव कटे पेट धम्मक धैया। जिंदा पै मुरदा चढ़ा देखि लेव भैया॥

(९०)

फल पर ताल नाल पर तरवर तामें फूल लगौ री।
तामें दामिनि दमकि रही है बूढ़ी जवान झुकौ री॥

(९१)

एक भुजा धारन किये बैठो गद्दो डाल।
सब जग वस में कर लियो, नहीं है तन पर खाल॥

(९२)

लाल कोठरिया टिकुलिन भरी।

घासीराम की पहेलियाँ

[१]

घासीराम एक कुँवें पर बाटी बनाकर खाने बैठे तब, एक स्त्री ने पूछा—

बाप को नाँव सोई पूत को नाँव नाती को नाँव कछु और।
इसका अर्थ बताओ घासी, तब तुम नाओ कौर॥

वह कुँवें से पानी निकालकर हंडा भर रही थी। घासीराम ने जवाब दिया :—

अकास वाको घोंसला, पताल वाको अंडा।
इसका अर्थ बताओ गोरी, तब तुम भरो हंडा॥

स्त्री ने कहा—

लाल रंग का बाप वाको, बेटा रंग सफेद।
इसका अर्थ बताओ घासी, बहुत पढ़े हो वेद॥

इतने में एक और स्त्री पानी भरने आई। उसने दोनों का झगड़ा सुना और यह कह कर फैसला कर दिया—

जेहि के मारे महिगल माते और पेरावै घानी।
घासी अपना कौर उठाओ, तुम ले जाओ पानी॥

महिगल = हाथी।

(२)

सावन फूलै चैत में फरै। ऐसो रूख बोइ का करै॥
घासी कहैं सवासी खेरे। है नियरे, पर पइहौ हेरे॥

(३)

हाथी हाथ हथिनिया काँधे। कहाँ जात हौ बकुचा बाँधे॥
घासी कहैं सवासी खेरे। है नियरे पर, पइहौ हेरे॥

(४)

पहुँचा एक हथेली तीनि। अँगुरी लिहेनि विधाता छीनि॥
घासी कहैं सवासी खेरे। है नियरे पर, पइहौ हेरे॥

(५)

नीचे पानी ऊपर आग। बजी बाँसुरी निकस्यो नाग॥
घासी कहैं सवासी खेये। है नियरे, पर पइहौ हेरे॥

(६)

रागी बड़े राग नहिं जानैं। गाय खाय बाह्मन नहिं मानैं॥
स्वल्प पाँव देही पर धरैं। काम कसाइन केसे करैं॥
घासी कहैं सवासी खेरे। है नियरे, पर पइहौ हेरे॥

(७)

देत होंय तो न लाना। न देत होयँ तो लाना।
घासी कहैं सवासी खेरे। है नियरे, पर पइहौ हेरे॥

(८)

कारो है पर कौवा नाहिं। रूख चढ़ै पर बँदर नाहिं॥
मुँह को मोटो भिड़हा नाहिं। कमर को पतलो चीता नाहिं॥
घासी कहैं सवासी खेरे। है नियरे, पर पइहौ हेरे॥

(९)

जबै खवाओ तबही खाती। खाती जाती चलती जाती॥
चलती जाती हगती जाती। सबके घर घर है दिखलाती॥
घासी कहैं सवासी खेरे। है नियरे, पर पइहौ हेरे॥

(१०)

अमिली सी है कहूं न भूँठ। नीचे लगा काठ का मूँठ ॥
घासी कहैं सवासी खेरे। है नियरे, पर पइहौ हेरे ॥

(११)

जो तुम समझे सो है नाहिं। उरद बखेरे घर के माहिं ॥
घासी कहैं सवासी खेरे। है नियरे, पर पइहौ हेरे ॥

(१२)

अपुना परी रहै दिन राति। औरै परो देखि अनखाति ॥
ऐसी एक अनोखी नारि। घर घर राखै झारि बुहारि ॥
घासी कहैं सवासी खेरे। है नियरे, पर पइहौ हेरे ॥

खुसरो की पहेलियाँ

मुकरियाँ, दो-सखुने और ढकोसले

अमीर खुसरो (जन्म सं० १३१२, मृत्यु सं० १३८२) ने हिन्दुओं की बोलचाल की भाषा में बहुत-सी पहेलियां और दूसरे रोचक विषयों पर कवितायें लिखी हैं। इसकी देखा-देखी सवासी खेरे के घासीराम, बिगहपुर के पंडित और बासू की खगोनिया आदि ने भी पहेलियां कहीं, पर उनका ठीक-पता नहीं। गांवों में इन सभी का काफी प्रचार है और लोग बोलचाल में हँसी मजाक और बुद्धि का चमत्कार देखने-दिखाने में इसका प्रयोग करते ही रहते हैं। यहाँ कुछ ज्यादा प्रचलित पहेलियां, ढकोसले, दो सखुने और मुकरियां दी जाती हैं :—

पहेलियाँ

(१)

श्याम बरन औ दाँत अनेक, लचकत जैसी नारी।
दोनों हाथ से खुसरो खींचे, और कहैं तू आरी ॥

(२)

पौन चलत वह देह बढ़ावे। जल पीवत वह जीव गँवावे ॥
है वह प्यारी सुन्दर नार। नार नहीं पर है वह नार ॥

नार(फारसी)=आग।

(३)

बाला था जब सब को भाया। बड़ा हुआ कछु काम न आया॥
खुसरो कह दिया उसका नाँव। अर्थ करो या छोड़ो गाँव॥

(४)

सावन भादों बहुत चलत है, माघ पूस में थोरी।
अमीर खुसरो यों कहे, तू बूझ पहेली मोरी॥

(५)

हाड़ की देही उज्जल रंग। लिपटा रहे नार के संग॥
चोरी की ना खून किया। उसका सिर क्यों काट लिया॥

(६)

बीसों का सिर काट लिया। ना मारा ना खून किया॥

(७)

आना जाना उसका भाये। जिस घर जाये लकड़ी खाये।

(८)

आवे तो अँधेरी लावे। जावे तो सब सुख ले जावे॥
क्या जानूँ वह कैसा है। जैसा देखो वैसा है॥

(९)

हाथ में लीजै। देखा कीजै॥

(१०)

एक राजा की अनोखी रानी। नीचे से वह पीवै पानी॥

(११)

एक नार ने अचरज किया। साँप मार पिंजरे में दिया।
जों जों साँप ताल को खाय। सूखे ताल साँप मर जाय॥

(१२)

आगे आगे बहिना आई पीछे पीछे भइया।
दाँत निकारे बाबा आये बुरका ओढ़े मइया॥

(११३)

एक तरुवर का फल है तर। पहिले नारी पीछे नर॥
वा फल की यह देखो चाल। बाहर खाल औ भीतर बाल॥

(१४)

धूप लगे वह पैदा होये छाँव देख मुरझाये।
ए री सखी मैं तुझ से पूछूँ हवा लगे मर जाये॥

(१५)

खेत में उपजे सब कोई खाय। घर में होय तो घर खा जाय ॥

(१६)

बात की बात ठठोली की ठठोली। मरद की गाँठ औरत ने खोली ॥

(१७)

डाला था सबको मन भाया। टाँग उठाकर खेल बनाया ॥
कमर पकड़ के दिया ढकेल। जब होवे वह पूरा खेल ॥

(१८)

एक पुरुष बहुतै गुन भरा। लेटा जागै सोवै खड़ा ॥
उलटा होकर डालै बेल। यह देखो करता का खेल ॥

(१९)

नई की ढीली पुरानी की तंग। बूझो तो बूझो नहीं चलो मेरे संग ॥

(२०)

दानाई से दाँत उस पे लगाता नहीं कोई।
सब उसको भुनाते हैं पै खाता नहीं कोई ॥

(२१)

पानी में निस दिन रहे, जाके हाड़ न माँस।
काम करे तरवार का, फिर पानी में बास ॥

(२२)

एक कहानी मैं कहूँ, तू सुन ले मेरे पूत।
बिना परों वह उड़ गया, बाँध गले में सूत ॥

(२३)

मिला रहे तो नर रहे, अलग होय तो नार।
सोने का सा रंग है, कोई चतुरा करे बिचार ॥

(२४)

सर पर जाली पेट से खाली। पसली देख एक एक निराली ॥

(२५)

जलकर उपजे जल में रहे। आँखों देखा खुसरो कहे ॥

मुकरियाँ

(१)

बरस बरस वह देस में आवै। मुँह से मुँह लगाय रस प्यावे॥
वा खातिर मैं खरचे दाम। ऐ सखि! साजन? ना सखि आम॥

(२)

कसके छाती पकड़े रहे। मुँह से बोले बात न कहे॥
ऐसा है कामिन का रंगिया। ऐ सखि! साजन? ना सखि अँगिया॥

(३)

पड़ी थी मैं अचानक चढ़ि आयो। जब उतरयो तब पसीनो आयो॥
सहम गई नहिं सकी पुकार। ऐ सखि! साजन? ना सखि बुखार॥

(४)

रात समय वह ऊपर आवै। भोर भये वह घर उठ जावै॥
यह अचरज है सब से न्यारा। ऐ सखि साजन? ना सखि तारा॥

(५)

नंगे पाँव फिरन नहिं देत। पाँव में धूर लगन नहिं देत॥
पाँव का चूमा लेत निपूता। ऐ सखि! साजन? ना सखि जूता॥

(६)

न्हाय धोय सेज मेरी आयो। ले चूमा मुँह मुँहहि लगायो।
इतनी बात में थुक्कम थुक्का। ऐ सखि! साजन? ना सखि हुक्का॥

(७)

सारी रैन मोरे संग जागा। भोर भये तब बिछुड़न लागा॥
वाके बिछुड़त फाटे हिया। ऐ सखि! साजन? ना सखि दिया॥

(८)

जब माँगूँ तब जल भर लावै। मेरे तन की तपन बुझावै॥
मन का भारी तन का छोटा। ऐ सखि साजन! ना सखि लोटा॥

(९)

जब मोरे मंदिर में आवै। सोतं मुझको आनि जगावे॥
पढ़त फिरत वह बिरह के अच्छर। ऐ सखि! साजन? ना सखि मच्छर॥

(१०)

बेर बेर सोवतहिं जगावे। ना जागूँ तो काटे खावे।
व्याकुल हुई मैं हक्की बक्की। ऐ सखि! साजन? ना सखि मक्खी॥

दो सखुने

(१)

रोटी जली क्यों? घोड़ा अड़ा क्यों? पान सड़ा क्यों?

(२)

अनार क्यों न चक्खा? वजीर क्यों न रक्खा?

(३)

बाह्मन प्यासा क्यों? गदहा उदासा क्यों?

(४)

सितार क्यों न बजा? औरत क्यों न नहाई?

(६)

घर क्यों अँधियारा। फकीर क्यों बिगड़ा?

(६)

बाह्मन क्यों न नहाया? धोबिन क्यों मारी गई?

ढकोसले

ढकोसले बुझौवल से भिन्न होते हैं। ढकोसलों में बे-सिर-पैर की असंभव बातें होती हैं, जो हँसाने का काम देती हैं। कैसा भी उदास आदमी हो, ढकोसले सुनकर हँसे बिना न रहेगा।

हिन्दी में अमीर खुसरो के ढकोसले बहुत मशहूर हैं। लेकिन वे अमीर खुसरो के दिमाग़ की कोई नई उपज नहीं थे। गांवों में ढकोसले कहने की चाल बहुत पुरानी है। और अभी तो इसी बात का कोई प्रमाण नहीं है

कि जो ढकोसले अमीर खुसरो के नाम से चल रहे हैं, वे सब उन्हीं के बनाये हैं; और यह भी संभव है कि अमीर खुसरो ने देहाती ढकोसलों को देखकर ही उसी तर्ज पर अपने ढकोसले बनाये हों

यहाँ कुछ ढकोसले दिये जाते हैं, जिनमें अमीर खुसरो के बनाये हुये कहे जाने वाले भी सम्मिलित हैं।

(१)

ऊँट पनारे बहि चला, मैं जानौं पिय मोर।
हाथ नाइ घिउ ढूँढ़न लागी, मिला कठौती क बेंट॥

(२)

रजवा क बिटिया भुजावै चली राब।
बसुला रुखान हैये नाहि कैसे पछोरौं खिचरी॥

(३)

मोरे पिछवरवाँ बैरि फूली लदाबद पहिती।
एक डंडा जो मार्यों दमरी क नौ गज माठा॥

(४)

ऊँटिन कहै ऊँट सों, सुनु पिय मोरी बात :
राजा एक पद्मिनी हेरै, कोउ कोउ मोहीं क सुगात॥

(५)

भादों पक्की पीपली झड़ झड़ पड़े कपास।
बी मेहतरानी दाल पकाओगी या नंगा ही सो रहूँ॥

(६)

पीपल पकी पपोलियाँ झड़ झड़ पड़े हैं बैर।
सर में लगा खटाक से वाह् बे तेरी मिठास॥

(७)

भैंस चढ़ी बबूल पर लप लप गूलर खाय।
दुम उठा कर देखा तो पूरनमासी के तीन दिन॥

(८)

गोरी के नैना ऐसे बड़े जैसे बैल के

(९)

अमीर खुसरो से एक स्त्री ने खीर पर, दूसरी ने चर्खे पर, तीसरी ने कुत्ते पर, और चौथी ने ढोल पर पहेली बनाने कहा, तब खुसरो ने यह जवाब दिया:-

खीर पकाई जतन से, चरखा दिया जला।
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा॥

पहेलियों के उत्तर

आकाश और समय

१—आकाश और तारे

२—तारे

३—सूर्य, बादल, चन्द्रमा, तारे

४—तारे और चन्द्रमा

५—सूरज तपसी तप करै,
ब्रह्मा निति नहायँ।
इन्द्र जो सब रस उगिलै,
धरती सब रस खाय॥

६—तारे

७—वर्ष, महीना, दिन

८—समय

९—अँधेरा

१०—वर्ष, महीना और दिन

११—दूज का चांद

१२—तारे और चन्द्रमा

आग

१—धुवाँ, बादल

२—धुवाँ

३—आग

पानी

१—ओस पड़ी थी रात में,
भीजे सब बनराय।
घड़ा न डूबे लोटिया,
यों पंछी प्यासा जाय॥

२—नदी

३—ओस

४—पानी

५—ओला

६—ओस

पशु-पक्षी, जीव-जन्तु

१—बर्रै

२—बर्रै

३—बिच्छू

४—जोंक

५—खटमल

६—बया का घोंसला

७—सुँइस (पानी का एक जानवर)

८—दो आदमी, एक ऊँट।

९—मोर

१०—जूँ

११—घुन

१२—बिल्ली-मोर, घोड़ा-चील, सारस-हाथी

१३—मधुमक्खी का छत्ता

१४—गाय-भैंस का थन

१५—सब चिड़ियों के। पर=पंख।

१६—हिनहिनाना, चिघाड़ना, रँभाना, भूँकना, मिमियाना, गरजना, कूकना, गुंजारना, भिनभिनाना, रेंकना।

१७—साँड़

अन्न, फल-फूल, पेड़-पौधे

१—भुट्टा

२—खिरनी

३—सिंघाड़ा

४—बरगद। गद=रोग (संस्कृत)

५—महुवे की कली, फूल, फल और बीज (कोइया)

६—मूली

७—मूली

८—ईख

९—अमरबेल

१०—लाल मिर्चा

११—उड़द

१२—कटहल

१३—नारियल

१४—चना

१५—अफीम का बीज

१६—अरहर

१७—हलदी

१८—पटुवा (सन)

१९—तुलसी-दल

२०—गोम

२१—खरबूजा

२२—आम

२३—जामुन

२४—गन्ना

२५—आम, दो पैर, पाँच उँगलियां, बत्तीस दाँत, एक जीभ, एक पेट

२६—लहसुन

२७—प्याज या पातगोभी

२८—मक्के का भुट्टा

२९—कसेरू

३०—लहसुन

३१—नारियल की गिरी

३२—इलायची

शरीर

१—एक अँगूठा चार अँगुलियां

२—हाथ का अँगूठा

३—पीठ

४—आँख

५—आँख

६—सिर के बाल

७—ओंठ

८—दृष्टि

९—हाथ-पैर के अँगूठे और अँगुलियाँ

१०—जीभ

११—नाड़ी

१२—दाँत और जीभ

१३—नाड़ी

कुटुम्ब

१—सरहज और ननदोई

२—दो बेटा, एक बाप

३—माँ, बेटी, नवासी

व्यवसाय

१—नाई की नहन्नी

२—दो कहारों की डोली

३—जाल

४—हथौड़ी

५—कुम्हार का चाक

६—कोल्हू

७—निहाई, हथौड़ा, फिर सँड़सी

८—मिट्टी के बरतन

९—कुम्हार

१०—कहार

११—धुनिये के हाथ में रूई धुनने का मुँगरा और कँधे पर कमान था

१२—मेघ-नाद = बादल की गरज। कुम्भ-करन = कुम्हार। चक्र = चाक।

१३—पकी हाँड़ी।

आहार

१—कौर

२—पूरी

३—भैंस का थन और दूध

४—उड़द या मूँग की दाल

५—भात

६—बड़ी-पकौड़ी

७—पान, सुपारी, कत्था, चूना

८—जलेबी

९—गन्ने का रस

१०—दही

११—कचौड़ी (उड़द और गेहूँ)

१२—पान, सुपारी, कत्था, चूना।

घर-गृहस्थी की वस्तुएँ

१—चलनी

२—दिया

३—चारपाई

४—कुँवा

५—बत्ती और तेल

६—खाट

७—चूड़ी का जोड़

८—बढ़नी (झाड़ू)

९—चारपाई

१०—नथुनी

११—दिया

१२—सुई

१३—पैबंद

१४—कड़ाई और तवा

१५—साँकल

१६—पोतना, जिससे चूल्हा पोता जाता है।

१७—पीकदानी

१८—सुई-तागा

१९—मोट (चरस)

२०—तराजू

२१—साइकिल

२२—हेंगा (सिरावन)। हेंगा चार बैल खींचते हैं, और दो आदमी चलाते हैं।

२३—पाँचा, जिससे किसान अन्न का डंठल बटोरता है।

२४—किवाड़

२५—मूसल

२६—काजल

२७—हल

२८—नार (रस्सी) और मोट (चरस)

२९—ढेंढ़ी (सिंचाई के लिए कुँवें से डोल-द्वारा पानी निकालना)

३०—दातुन

३१—तराजू

३२—सुई-तागा

३३—चटाई

३४—कंघी

३५—दवात

३६—ताला

गणित

१—ग्राहक—उड़द क्या भाव ?
बनिया—ग्यारह सेर।
ग्राहक—पछोर कर लूँगा
बनिया—तब दस सेर दूँगा।

२—तीन तीतर

३—३ भैंस, १५ गाय, २ बकरी।

४—मन

५—दो जोड़ी बैलों का पटेला या हेंगा।

६—आधा सेर

७—१, ३, ९, २७ सेर के बाट

८—एक आदमी दूसरी तरफ जाकर किसी का घर फूँक दे। दोनों रखवाले आग बुझाने चले जायँगे। इधर दोनों आदमी झाड़ी में जाकर गीदड़ की बोली बोल दें। दोनों कुत्ते उसकी ओर दौड़ जायंगे। फिर एक आदमी मोर की बोली बोल दे, तो साँप डरकर भाग जायगा। बस, चौथा आदमी जो खाली है, कटहल तोड़कर चंपत हो जायेगा।

९—७, ७, ७, १, ९, ९

१०—आदमी पहले बकरी को नाव पर साथ ले जाकर पार उतार आया। फिर पान लेगया और बकरी को वापस लेता आया। फिर भेड़िये को पार ले गया, और बकरी को इसी पार छोड़ता गया। फिर वापस आकर बकरी को ले गया।

११—६३

१२—१०७

१३—२६ व २७ रुपये कमाये। देवी का धन दे देने पर बराबर बचे।

१४—चार

१५—छब्बिस पर चौबिस धरे,
तापर चारि सुजान।

सात सुत्र दहिने धरै,
यही विया परमान ॥

१६—नं० १—३३ मन; नं० २—१७ मन; नं० ३—६ मन; नं० ४—५ मन।

१७—७६

१८—४ फावड़े, वजन २० सेर; १ कुदाल, वजन २॥ सेर ३५ खुरपे, वजन १७॥ सेर।

१६—पहले आठ सेर वाले बरतन में से पाँच सेर घी निकालकर पाँच सेर वाले बरतन में भर दिया। फिर पाँच सेर वाले में से तीन सेर निकालकर आठ सेर वाले बरतन में डाल दिया। फिर पांच सेर में जो दो सेर बचा था, उसे तीन सेर वाले में डाल दिया। फिर आठ सेर वाले में पांच सेर वाले को भरा। फिर पांच सेर वाले से तीन सेर वाले में एक सेर डाला। उसमें दो सेर पहले ही से था। इससे १ सेर से अधिक उसमें समा न सका। पाँच सेर वाले में चार सेर बचा था, और तीन सेर वाले का तीन सेर मिलकर चार सेर दूसरे को मिल गया।

२०—चार पैसे

२१—१२, २४, ४८, ६६

२२—३

२३—१, २, ४, ८, १६

२४—४

२५—मोहन ने पहले सात मन फी रुपये के भाव से एक रुपये का और सोहन ने इसी भाव से चौदह रुपये का गेहूँ बेंचा। कुछ दिनों बाद गेहूँ का भाव चढ़ जाने से उन्होंने अपना अपना गेहूँ तेरह रुपये फी मन के भाव से बेंचे। उनको क्रमशः उन्तालिस रुपये और छब्बीस रुपये मिले। एक रुपया और चौदह रुपये वे पहले ही पा चुके थे। इस तरह दोनों को चालीस-चालीस रुपये मिले।

२६—६ छटांक

२७—साढ़े तीन मील फी घंटा

२८—आधा घंटा

२६—१५ भौंरे

३०—पहला लड़का—१, ७, १३, १६, २५; दूसरा लड़का—२; ८, १४ २०, २१; तीसरा लड़का—३६ १५, १६, २२; चौथा लड़का—४, १०, ११ १७; २३ पाँचवां लड़का—५, ६, १२, १८; २४

३१—८६६६४४६६६३७७००६ मन. १२ सेर, २ छटांक, ६ माशा; ७ रत्ती, ५ चावल।

३२—पहले पेड़ पर सात; दूहरे पेड़ पर पाँच।

३३—५२४२८८ रुपये

३४—रावण, ब्रह्मा, शिव

३५—१, ३, ६, २७ सेर

३६—६ आम

३७—१०५ भैंसें

३८—१४४० कौवे

३६—१०६४४४८०० दिन में

४०—

विविध

१—शतरंज

२—लाठी, बिल्ली

३—चौपड़

४—माली चाहै बरसना,
धोबी चाहै धूप।
साहु चाहै बोलना,
चोर चाहै चूप॥

५—नयन सरोवर पाल बिनु,
धरम मूल बिनु डाल।
जीव पखेरू पंख बिनु,
मौत नींद बिनु काल॥

६—पुस्तक

७—चारपाई, कुर्सी

८—केंचुल

६—आदमी

१०—मृदङ्ग

११—सड़क, राह

१२—तोप, टेलीफोन

१३—शंख

१४—सींग

१५—केंचुल

१६—अक्षर

१७—टट्टर

१८—धनुष-बाण

१६—रेलगाड़ी

२०—घड़ी

२१—बंदूक, टेलीफोन

२२—रेलगाड़ी

२३—दस्ताना

२४—चुप

२५—धूल

२६—लिखकर

२७—जूते की कील

२८—क्रोध में

२६—घरघराहट

३०—श्रवणकुमार

३१—जवाहर लाल

३२—मैदान

३३—दाल दलने की चक्की

३४—साहूकार का ब्याज

३५—आगरा

३६—कसम

३७—मट्ठे में मक्खन

३८—रावण और मंदोदरी

३६—पार्वती, स्वामि कार्तिक और शिव

४०—स्वयं मूर्तिकार

४१—बारहवें ने तश्तरी समेत अंडा उठा लिया

४२—मोमबत्ती

४३—क्योंकि वह जाड़े के मारे पैर सिकोड़ लेता है।

४४—स अक्षर

४५—गुरुजी जानते थे कि मोहन स को श बोलता है।

४६—रहट

४७—खाईं

४८—तलवार

४९—हरताल

५०—पानी की घड़ी

५१—नरसिंहा

५२—बाँझ का पुत्र; अँधा; अमावस्या की रात में; पूर्ण चन्द्रमा

५३—पाजामा

५४—पगडंडी

५५—चिकारा (सारंगी की तरह का एक बाजा)

५६—गोझिया (एक मिठाई, जो गेहूँ के आटे के भीतर चीनी रखकर बनती है)

५७—महुवा

५८—महुवा (महुवे का फूल पेड़ में एक नन्हीं सी खूँटी से टँगा रहता है फूल चू पड़ता है, तो खूँटी कोइया बन बन जाती है

५९—पान का बीड़ा

६०—लाल मिर्चा

६१—भौंरा

६२—घोंघा

६३—झींगा मछली

६४—कुँवा

६५—गगरी

६६—पैबंद

६७—हुक्का

६८—तराजू

६९—तराजू

७०—परछाईं

७१—आम

७२—खरगोश

७३—ऐनक

७४—ऐनक

७५—कुतुबनुमा

७६—चाकू

७७—तोप

७८—गागर

७९—चक्की

८०—चारपाई

८१—कैथ का पेड़

८२—साँप की केंचुल

८३—दूध दही मक्खन मट्ठा

८४—पैसा रुपया

८५—आग

८६—हाथी

८७—कुँवा

८८—दातुन

८९—मशक

९०—चिलम

६१—जाँत

६२—लाल मर्चा

घासीराम की पहेलियाँ

१—महुवा

२—बबूल

३—जुलाहे का एज और गजो (कपड़ा)

४—ढाक का पत्ता

५—हुक्का

६—मच्छर

७—हेंगा

८—चींटा

९—चक्की

१०—हँसिया

११—मक्खियाँ

१२—बढ़नी (झाड़ू)

खुसरो की पहेलियाँ

१—आरी

२—आग

३—दिया

४—मोरी

५—नाखून

६—नाखून

७—आरी

८—आँख

९—दर्पण

—दिये की बत्ती

—दिये की बत्ती

१२—भुट्टा

१३—भुट्टा

१४—पसीना

१५—फूट (फल)

१६—ताला-चाबी

१७—झूला (हिंडोला)

१८—चरखा

१९—चिलम

२०—रुपया

२१—कुम्हार का चाक

२२—कुम्हार का डोरा

२३—पतंग

२४—चना

२५—मोढ़ा

२६—काजल

मुकरियाँ

१—आम

२—अँगिया (चोली)

३—बुखार

४—तारा

५—जूता

६—हुक्का

७—दिया

८—लोटा

९—मच्छर

१०—मक्खी

दो सखुने

१—फेरा न था

२—दाना न था। दाना = बुद्धिमान
बीज

३—लोटा न था

४—परदा न था

५—दिया न था

६—धोती न थी

ढकोसले

ढकोसलों का कोई अर्थ ही नहीं होता। बे-मेल शब्दों को जोड़कर उनसे निरर्थक आनंद लिया जाता है। वही ढकोसला कहलाता है।

——--